

The Ramakrishna Mission



Beat aver

SAMEKATT DANG AGE AND LITER

ÍŚWARA CHANDRA VIDYÁSÁGARA.

FOURTH EDITION.

সংস্কৃত ভাষা ও সংস্কৃত সাহিত্য শাস্ত্ৰ বিষয়ক প্ৰস্তাব

শ্রীঈশ্বরচন্দ্র বিন্যাসাগর বিরচিত্র

চতুর্থ সংকরণ।

I BRARY

MUKEMU

CALCUTTA

PUBLISHED BY THE SANSKRIT PRESS DEPORTORY
"NO, 3. MIRZAPORE STREET, COLLEGE SQUARE, SECTE.





এই প্রস্তাব, প্রথমতঃ, কলিকাতাছ বীটন সোদাইটি
নামক সমাজে পঠিত হইরাছিল। অনেকে, এই প্রস্তাব
মূলিত করিবার নিমিত, সবিশেষ অনুরোধ করাতে, আমি,
তৎকালীন সভাপতি মহামতি প্রীয়ত ডাক্তর মোয়েট মহোদল্লের অকুমতি লইরা, তুই শত পুস্তক মুদ্রিত করিরা বিভরণ
করি।

বে প্রস্তাব যে সমাজে পঠিত হয়, সে প্রস্তাব সে সমাক্রের স্বাস্পদীভূত হইয়া থাকে; এজন্ত, আমি উক্ত ডাক্তর
ক্রেনাছেলাম। কিন্তু তিনি, অনুগ্রহ প্রদর্শন পূর্বক, আমাকে
বিনা মূল্যে সেই অধিকার প্রদান করেন। তদমুসারে,
কামি এই প্রস্তাব পুনরায় মুদ্রিত ও প্রচারিত করিলাম।

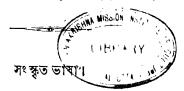
আমি বিলক্ষণ অবগত আছি, এরপ গুৰুতর প্রস্তাব বেরপু সঙ্কলিত হওয়া উচিত ও আবশ্যক, কোনও রপেই নির্দিপ হয় নাই। বন্ধুতঃ, এই প্রস্তাবে বহুবিস্তৃত সংক্ষত সংহিত্য শাস্ত্রের অন্তর্গত কতিপয় স্থাসিদ্ধ প্রস্ত্রের নামোলেথ করে হইরাছে। বীটন সোমাইটিতে, এক ঘটা মাত্র সময়, শস্তাব পাঠের নিমিত্ত, নির্মিপত আছে; সেই সময়ের মধ্যে বাছাতে পাঠ সম্পন্ন হয়, সে বিষয়েই অধিক দৃষ্টি রাশিয়া, স্ক্রান্ত সংক্ষিপ্ত প্রণালী অবলহান করিতে হইরাছিল।

এক্ষণে, এরপ অসমাক সঙ্কলিত প্রস্তাব পুনমুদ্রিত করিবার তাৎপর্য এই যে, আমার কিন্তপর আত্মীর ভূরোভূরঃ কহিয়াছিলেন, এই প্রস্তাব পাঠ করিলে, সংস্কৃত কালেজের ছাত্রদিশের উপকার দর্শিতে পারে, অতএব ইহা পুনমুদ্রিত করা আবশ্যক; তঘাতিরিক্ত, অক্তান্ত লোকেও, এই প্রস্তাব পাঠ করিবার নিমিত, ওৎস্ক্র্য প্রকাশ করিয়াছিলেন; তৎপ্রস্কু, আমি মানস করিয়াছিলাম, প্রক্রত প্রস্তাব সংক্ষ্তভাষা ও সংক্ষৃত সাহিত্যশাস্ত্র বিষয়ক এক প্রস্তাব রচনা করিয়া, মুদ্রিত ও প্রচারিত করিব। কিন্তু, নিস্তান্ত আমি সে মানস পূর্ণ করিতে পারি নাই; এবং কিছু কালও যে সম্যক রূপে তাদৃশ প্রস্তাব সঙ্কলনের উপযুক্ত অবকাশ পাইব, তাহারও সন্তাবনা নাই; এজন্য, আপাততঃ, এই প্রস্তাব যথাবন্ধ মুদ্রিত ও প্রচারিত হইল।

बिद्रेषद्रहस मगी।

কলিকাতা, সংস্কৃতকালেজ। ১৪ই চৈত্র, সংবৎ ১৯১৩।

সংস্কৃত ভাষা ও সংস্কৃত স্কৃতিত্যশাস্ত্র।



সংস্কৃত অতি প্রাচীন ও অতি উৎকৃষ্ট ভাষা। এই অদ্ভূত ভাষার ভূরি ভূরি শব্দ, ভূরি ভূরি পাতৃ, ভূরি ভূরি বিভক্তি, ও ভূরি ভূরি প্রত্যর আছে, এবং এক এক শব্দে ও এক এক পাতৃতে নানা প্রত্যর ও নানা বিভক্তির যোগ করিয়া, ভূরি ভূরি মুতন শব্দ ও ভূরি ভূরি পদ দিল্ধ করা যাইছে পারে। এরপ অভিপ্রায়ই নাই বে এই ভাষাতে অতি বিশ্বদ রূপে ব্যক্ত করিতে পারা ষায় না; এবং এরপ বিষয়ই নাই যে এই ভাষাতে স্কুচাফ রূপে সঙ্কলিত হইতে পারে না। অতি প্রাচীন কাল অব্ধি, অতি প্রাণান প্রধান পণ্ডিভেরা, নানা বিষয়ে নানা এন্থ রচনা করিয়া, এই ভাষাকে সম্যক মার্চ্জিত ও অলঙ্কৃত করিয়া গিয়াছেন।

নংকৃত ভাষায় ছই পদ পরম্পর সন্নিহিত হইলে, পূর্ব্ব, পর, অথবা উভয়, বর্ণই প্রায় ব্রপান্তর প্রাপ্ত হয়। যে প্রক্রিয়া দ্বারা এই রূপান্তরপ্রাপ্তি সিদ্ধ হয়, তাহাকে সন্ধি বলে। সন্ধিপ্রক্রিয়া দ্বারা ভাষার অশ্রাব্যতাপরীহার;
ও স্থাব্যতাসম্পাদন হইয়া থাকে। আর, প্রক্রিয়াবিশেষ
দ্বারা অনেক পদকৈ এক পদ করা যায়। এই অনেক
পদের একপদীকরণপ্রণালীকে সমাস বলে। সমাসপ্রতি দ্বারা সংক্ষিপ্রতা ও স্থাব্যতা সম্পন্ন হইয়া থাকে। কিছু
ইহা অবশ্য স্বীকার করিতে হইবেক, সমাসঘটিত বাক্য
সকল অপেক্ষাকত হুরহ, আরুত্তি মাত্র তত্ত্বাক্যের অর্থবোধ নির্মাহ হইয়া উঠে না। সমাসপ্রণালী অবলম্বন
করিয়া, ইচ্ছানুরূপ দীর্ঘ পদ প্রস্তুত করা যাইতে পারে।
প্রাচীন এন্থকর্ত্তারা তাদৃশ সমাসপ্রিয় ছিলেন না। কিন্তু
নব্যেরা সচরাচর অতি দীর্ঘ দীর্ঘ সমাস করিয়া থাকেন।
কোনও কোনও উৎকৃত্ত কাব্যএন্থেও, বিংশতি পদ পর্যান্ত
একপদীকৃত দেখিতে পাওয়া বায়।

যাহা হউক, সংস্কৃত বৈয়াকরণেরা সন্ধি, সম্পাস, পদসাধন, ও প্রক্তিপ্রতার্যোগে নূতন নূতন শব্দ সঙ্ক ন
করিবার যে সমস্ত অভিনব পথ প্রস্তুত করিয়া গিরাছেন,
তদ্দারা সংস্কৃত এক অভুত ভাবা হইয়া উঠিয়াছে। সংস্কৃত্
ভাষায় কি সরল, কি বক্র, কি মধুর, কি কর্কণ, কি
ললিত, কি উদ্ধৃত, সর্বপ্রপার রচনাই সমান স্থানর রুপ্রে
সম্পন্ন হইয়া উঠে। সংস্কৃত রচনাতে এরপ অসাধারণ
কৌশল প্রদর্শিত হইতে পারে যে তদ্দর্শনে বিশ্বরাপ

সংস্কৃত রচনাতে শব্দঘটিত যে সকল কেশিল প্রদর্শিত হৃদতে পারে, তাহার কতিপায় উদাহরণ উদ্ধৃত হইতেছে। নিম্নেযে প্লোক উদ্ধৃত হইল, উহা কেবল ভ, র, ১৭৫ ছুই ব্যঞ্জন বর্ণে রচিত।

ष्ट्रिरिमिभीरिमिभीरैभूभारैरिमरेमिरे । भेरीरेभिमिरकाभैरभीवभिरिभैरिभा: ॥१८ । ६६ ॥ श्विलावर ।

নিহ্মলিখিত শ্লোক কেবল দ এই এক মাত্র ব্যঞ্জন বর্ণে রুচিত।

हाददो दुइदुइदि दादादो दुददी दहो:।
दुइदि दददे दुई ददादद ददोदद:॥ १८। ११४॥
भिष्णभानवसः।

যমক রচনার চাতুর্য্য প্রদর্শনের নিমিত্ত, নিম্নলিখিত ক'তপ্র শ্লোক উদ্ধৃত হইল।

> नव पलाश पलाश वनं पुर: स्कुट पराग पराग तपङ्कजम् । स्वदु लतान्त जतान्त मलोकयत् स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरै: ॥ ६ । २ ॥ भिल्लान्य ।

नसमा नसमा नसमा नसमा गममाप समीच्य वसन्तन भ:। भ्रमस् भ्रमस् भ्रमस् भ्रमस्व्कलतः खलु कामिजनः ॥ २ । १६ ॥ नत्लाम्यः।

धनं विदार्थ्यार्ज्जनवार्णपूर्गं ससार वार्णोऽयुगलोचनस्य । धनं विदार्थ्यार्ज्जनवार्णपूर्गं ससार वार्णोऽयुगलोचनस्य ॥ १५ । ५० ॥ कित्राजार्ज्ज्जनीय ।

बभी मक्तान् विक्रतः समुद्रो बभी मक्तान् विक्रतः समुद्रः । बभी मक्तान् विक्रतः समुद्रो बभी मक्तान् विक्रतः समुद्रः ॥ १० । १८ ॥ ভঞ্জিবার ।

निम्नलिथि इरे (क्लांक, आिंक इरेंड आंत्र किंत्री शोठ किंतिल (यंत्रेश इत्र, अस इरेंड आंत्र किंत्री शोठ किंतिलि अविकल (मरेंत्रश इत्र । वाचनाजिन मानासे साराजावनमा ततः। मन्तसारगराजेभे भारीचावज्जनम्बनि॥ १८ । ३३ ॥ निम्ननज्जवचारीमा भेजे रागरसात्तमः। ततमानवजारासा सेना मानिजनाच्वा॥ १८ । ३४ । निश्लान्दमः। নিম্নলিখিত প্লোক নানা দিকে এক্ প্রকার পাঠ করা ধার।

दे वा का नि नि का वा दे वा िक का स्व स्व का िक वा। का का रे भ भ रे का का नि स्व भ व्य व्य भ स्व नि॥१८।२५॥। किशोऽखर्क्नीयः।

সংস্কৃত ভাষায় সরল, মধুর, ললিত প্রভৃতি রচনা কিরূপ ছইতে পারে, ভাছারও উদাছরণ প্রদর্শনের নিমিত্ত, কয়েকটি স্থল উদ্ধৃত ছইডেছে।

सखे पुग्रहरीक, नैतदतुक्पं भवतः; सुद्रजनसुस एव मार्गः; धेर्यधना हि साधवः। किं यः कश्चित् प्राक्तत इव विक्रवीभवन्तमात्मानं न क्यात्मि। कृत-स्ववापूर्व्वीऽयमदोन्द्रियोपस्रवः, वेनास्येवं कृतः। क ते तह्रेयं, कासाविन्द्रियजयः, क तहिष्यवं चेतसः, क सा प्रथान्तिः, क तत् कुलकमागतं बद्धाचर्यः, क सा सर्व्वविषयनिक्त्युकताः क ते गुक्पदे्याः. क तानि श्रुतानि, क ता वैराग्यवृद्धयः, क तदुपभोगविद्देषितं, क सा संयमिताः, क सा भोगानासुपर्यक्तिः, क तत् यौवनातुष्यासनम्। सर्वया निष्मला प्रदाः, निगुणो

धर्माग्रास्त्राभ्यासः, निर्येतः संस्तारः निर्वातारको गुरूपदेशविवेकः, निष्प्रयोजना प्रयुद्धताः निष्कारणं न्नानम् ; यस्त्र भवाद्या अपि रागाभिषद्भैः कल्षी-कियन्ते प्रसादेशाभिभ्रयन्ते। कथं करतलाइ लिता-मपहतामचमालामपि न लच्चयसि ; चही विगत-'चेतनत्वम्; चपह्नता नामेयम्; दूदमपि तावद-पक्रियमाण्यमनयानाय्येया निवाय्येतां ऋदयमिति ।

द्रति परिसमापिताचारां, निर्वर्त्तितसन्धोचिता-चारां, शिलातले विख्वअमुपविष्टां निस्तमुपस्त्य, नातिटूरे समुपविद्य, मुह्नत्तीमव स्थिता चन्द्रापीड़: सविनयमवादीत् भगवति त्वत्यसादप्राप्तिपोत्या हितेन कुद्धहतेनाकुलीकियमाणो मानुषतास्त्रको लिघमा बलाइनिच्छन्तमपिमां प्रश्ननमाणि नियोजयति । जन-यति हि प्रभुप्रसादलवोऽपि प्रागल्थमधीरप्रकृते: ; स्वल्याप्येकदेशावस्थानकालकला परिचयसुत्पादयति ; चातुराष्ट्रपचारपरिग्रन्थः प्रण्यमारोपयति । तद्यदि नाति-खेदकर्मिव, ततः कथनेनास्नानमनुप्रास्त्रमिक्सामि । कामध्री।

> वनस्पतीनां सरसां नदीनां तेजिखिनां कान्तिस्तां दियाच ।

निर्वाय तखाः स पुरः समन्तात् त्रियं दधानां ग्ररदं दंदर्ग ॥ ३,। १॥ तरङ्गसङ्गाच्चपत्तैः पलाग्रैः ज्वालात्रियं सातिशयां दर्धाना । सधूमदीप्राग्निबचीनि रेजुः ताम्नोत्पलान्याकुलषट्पदानि ॥ २। २॥ विबागतैसीरवनै: सचर्डि निजां विलोक्यापहरतां पयोभि:। कूलानि सामर्घतयेव तेतुः सरोजनच्नीं स्थलपदाहासै:॥२।३॥ नियातुषार नैयनाम्बुकलीः पतान्तपर्यागतदच्छविन्दुः। चपाबरोदेव नदत्यतङ्गः बुसुद्दतीं तीरतर्वादेनादी ॥ २ । ४ ॥ वनानि तोयानि च नेत्रकली: पुष्यै: सरोजैस निलीनसङ्गै:। परसारां विसायवन्ति लच्छी-मालोकयाञ्चक्रिवादरेगा ॥ २ । ५ ॥ प्रभातवाता इतिक स्पिताकृतिः कुसुद्वतीरेखुपिशङ्गविग्रहम्।

निरास सङ्गं कुपितेव पश्चिनी न माक्निनीयं संहते ज्यसङ्गमम्॥ २। ६॥ दत्तावधानं मधुले हिगीती प्रशान्तचेष्टं इरिशं निषांसु:। **चानगीयम् त्यान इंसनादान्** सच्चे समाधिं न दर्धे स्गावित्॥ २। ७॥ गिरेनितक्षे महता विभिन्नं तोवावशेषेण हिमाभमध्वम् । सरिना खास्युचयमाद्धानं **यैलाधिपस्थानुचकार सन्द्रीम् ॥ २।**८॥ गर्जन् हरि: सामासि गैलकुक्ते प्रतिध्वनीनासासतान् नियस्य कर्म बबन्ध कसितुं सकोपः प्रतक्षयव्यक्रोन्द्रनांदान्॥ २। ८॥ बह्चतामांसि नवोत्पलानि बतानि चात्रोषत षट्पदानाम्। बाधायि वान् गत्ववहः सुगत्व-स्तेनारविन्द्यतिषङ्गवांस ॥ २ । १० ॥ लतानुपातं कुसुमान्यस्ह्वात् ्स नद्यवस्कन्दसुपास्प्रयञ्च ।

कुद्धलाचार्वायलोपवेर्यं काकुत्स्य दूषत् स्वयमान चार्तः॥ २।११॥ तिग्मांशुरश्चिक्त्र्रितान्यदूरात् प्रािच्च प्रभाते सलिलान्यपम्यत्। गभसिधाराभिरिव द्रुतानि तेजांसि भानोर्भुवि सम्मृतानि ॥ २ । १२ ॥ दिग्यापिनीलीचनलोभनीया 'स्जान्वयाः स्रेहमिव स्वन्तीः। ऋज्वायताः शस्यविशेषपंती-स्तुतोष पश्चन् विल्यान्तरालाः ॥ २। १३॥ वियोगदु:खानुभवानभिन्नै: काले नृपांशं विचितं ददड्रि:। चाहार्ययोभारहितैरमायै-रैचिष्ट पुन्धि: प्रचितान् स गोष्ठान् ॥ २।१४॥ स्त्रीस्रषणं चेष्टितमप्रगल्भं चारूख्यवकाख्यपि वीचितानि । ऋजूंच विष्ठासस्तः खभावान् गोपाङ्गनानां मुमुद्रे विलोक्य ॥ २ । १५ ॥ विवृत्तपार्खं कचिराङ्गहारं समुद्वच्चारुनितम्बविम्बम् ।

यामन्द्रमन्यध्वनिद्यातालं गोपाङ्कृारत्यमनन्दयत्तम् ॥ २ । १६ ॥ विचित्रसुचै: अव्मानमारात् कुद्रहर्वं बस्तु ततान तस्य। मेघात्ययोपात्तवनोपशोभम् कदस्वकं वातमञं स्गाणाम् ॥ २ । १७ ॥ सितारविन्दप्रचयेषु लीनाः संसक्तफेनेषु च सैकतेषु। कुन्दावदाताः कलक्तंसमालाः प्रतीयिरे त्रोवसुर्वेनिनादै: ॥ २ । १८ ॥ न तळालं यन सुचारपङ्गजम् न पङ्कजं यदलीनषट्पदम्। न षट्पदोऽसौ न जुगुच्च यः कलं न गुन्धितं तस जहार यनानः॥ २।१८॥

ভটিকাব্য।

चयार्ष्वराते स्तिमितप्रदीपे प्रव्यायक्ते स्वप्तजने प्रबुद्धः । कुष्यः प्रवासस्यक्तत्ववेषा-सदृष्टपूर्त्रां वनितामपस्यत् ॥ १६ । ४ ॥ सा साधुसाधारणपार्थिवद्धेः स्थित्वा पुरस्तात् पुरुह्नतभासः। जेतु: परेषां जयशब्दपूर्व तस्यान्त्रन्तिं बन्धुमतो बबन्ध ॥ १६ । ५ ॥ **अ**थानपोढार्गलमणगारं कायामिवाद्यतलं प्रविष्टाम् । सविसायो दाशरथेसानूजः प्रोवाच पूर्वार्डविस्टतल्पः॥ १६। ६॥ लब्बान्तरा सावरणेऽपि गेहे योगप्रभावो नच दृख्ते ते। विभिष चाकारमनिर्देतानां चणालिनी हैमिमवोपरागम्॥ १६। ७॥ कार्त्वं ग्रुभे कस्य परित्र हो वा किं वा सद्भ्यागमकारणं ते। त्राचच्च मला विश्वनां रघूणां मनः परस्त्रीविसुखप्रवृत्ति ॥ १६। ८॥ तमबवीत् सा रारणानवद्या या नीतपौरा खपदोन्मुखेन। तखाः पुरः सम्प्रति वीतनाथां जानी इ राजक धिदेवतां माम् ॥१६। ८ ॥

वस्वीवसारामभिस्य साई सौराङ्ग्यबद्घोत्यवया विभ्रत्या । समग्रातौ त्विय सूर्व्ववंश्ले , सति प्रपन्ना करुणामवस्थाम् ॥ १६ । १०॥ विशीर्णतल्पादृश्यतो निवेश: पर्व्यस्त्रयातः प्रभुणा विना मे । विद्**ष्वयत्यस्तिमग्नसू**र्थं दिनान्तमुग्रानिलभिन्तभेषम् ॥ १६ । ११ ॥ निशासु भास्त्रलन्पुराणां यः सञ्चरोऽभूदभिसारिकाणाम्। नद्नुखोल्काविचितामिषाभिः स वाह्यते राजपथ: शिवाभि:॥ १६ ११२॥ चास्तालितं यत् प्रमदाकराग्रै-र स्टङ्कधीरध्वनिमन्वगच्छत्। वन्यैरिदानीं महिषैसदमाः म्हजाचर्त कोश्रात दीर्घकाणाम् ॥१६।१३॥ वचोषया यष्टिनिवासभङ्गात् **च्दङ्गयन्तापगमादलास्याः** । प्राप्ता दवोल्काइतघेषवर्ची: कीकामयूरा वनवर्ष्टिगत्वम् ॥ १६ । १४ ॥

सोपानमार्गेषु च येषु रामा निचिप्तवत्यसर्णान् सरागान । **सद्योहतत्यङ्गभिगस्रदिग्धं** ब्याष्ट्रै: पहं तेषु निधीयते मे ॥ १६ । १५ ॥ चित्रद्विपाः पद्मवनावतीर्णाः करेगुभिद्त्तस्यालभङ्गाः। नखाङ्गुग्राघातविभिन्नकुम्भाः संरव्यसिंहप्रकृतं वहन्ति ॥ १६ ।१६ ॥ स्तमोषु वोषित्रतिवातनानाम् उत्नान्तवर्णेनमधूसराणाम् । सनोत्तरीयाणि भवन्ति सङ्गात् निर्मोत्रपद्य: फणिभिविमुक्ता: ॥१६।१०॥ कालान्तरम्यामसुधेषु नक्त-मितसतो रूढ़त्याङ्गरेषु। त एव मुक्तागुगाग्राद्वयोऽपि हर्स्येषु सूर्क्कान्त न चन्द्रपादाः ॥१६।१८॥ चावज्यं शाखाः सदयञ्च यासां पुष्पासुत्रपात्तानि विलासिनीभि:। वन्यै: पुलिन्दैरिव वानरैसा: क्रियन्त उद्यानलता मदीयाः ॥१६।१८॥

रात्रावनाविष्कृतदीपभास: कान्तामुखत्रीवियुता दिवापि । तिर्राक्ष्यन्ते क्षमितन्तुजाबै-र्विच्छिन्नभूसप्रसरागवाचाः॥ १६। २०॥ बलिकियावर्ज्जितसैकतानि स्नानीयसंसर्गमनाप्नुवन्ति । उपान्तवानीरम्टहाणि दृद्धा म्युत्यानि दूये सरयूजलानि ॥ १६ ! २१ ॥ तर्इसीमां वसतिं विस्ञ्य मामभ्युपेतुं कुलराजधानीम्। हिला तनुं कारणमानुषीं मां यथा गुरुस्ते परमात्मसत्तिम् ॥ १६ । २२ ॥ तथेति तस्याः प्रणयं प्रतीतः प्रत्यग्रहीत् प्राग्रहरो रघूणाम् । प्रपक्षिव्यक्तसुखप्रसादा यरीरबन्धेन तिरोबभ्रव ॥ १६ । २३ ॥

রয়ুবংশ্যা

सुकुमारमहो लघीयसां इट्टं तज्ञतमप्रियं यत:।

सहसैव समुद्रिरम्थमी चपयन्येव हि तन्मनीषिण: ॥ १६ । २१ ॥ उपकारपर: खभावत: सततं सर्वजनस्य सज्जनः। असतामनियं तथायहो गुरु इहोगकरी तदुव्वति:॥१६। २२॥ परितप्यत एव नोत्तम: मरितप्तोऽप्यपरः सुसंदृतिः । परवृद्धिभराहितव्यय: स्तृटनिर्भित्वदुराधयोऽधमः ॥ १६ । २३ ॥ **अनिराक्षततापसम्पदं** फलचीनां समनोभिक्षिकताम्। खलतां खलतामिवासतीं प्रतिपद्येत कथं बुधो जन: ॥ १६ । २८ ॥ प्रतिवाचमदत्त केथवः यपमानाय न चेदिग्रभ्जे। चतुद्धक्षुक्ते धनध्वनिं निह गोमायुक्तानि केशरी ॥ १६ । २५ ॥ जितरोषर्या महाधिय: सपदि कोधिनतो लघुकानः।

विजितेन जितस्य दुर्भंते-र्मतमद्भि:सच्च का विरोधिता॥ १६ । २६ ॥ वचर्नरसतां महीयसो न खलु खेति गुरुत्वमुद्धतै:। किमपैति रजोभिरौवरै-रवकीर्णस्य मणेर्महार्घता ॥ १६ । २० ॥ परितोषयिता न कश्चन खगतो यस गुणोऽसि देहिन:। परदोषकथाभिरल्पक: स्वजनं तोषयितुं किलेच्छिति ॥ १६ । २८ ॥ सहजात्मदृशः खुर्णये परदोषेचणदिव्यचनुषः । खगुणोच्चगिरो मुनिव्रता: परवर्णेग्रन्थेष्वसाधवः॥ १६ । २८॥ प्रकटान्यपि नैपुणं महत् परवाच्यानि चिराय गोपितुम्। विवरीतुमथासनो गुणान् स्यमाकौयलमाय्येचेतसाम् ॥ १६ । ३० किमिवाखिललोककी तितं कथ्यत्यात्मगुर्णं महामनाः।

विह्ता न लघीयसोऽपर: खगुणं तेन वदत्यसी खयर्ख १६। ३१॥ भिष्पालवस

দংস্কৃতভাষা এক্ষণে আর কথোপকথনে ও লৌকিক ব্যব-দারে প্রচলিত নহে। ভারতবর্ষীয় পণ্ডিতেরা কহিয়া াাকেন, সংক্ষত দেবভাষা। ভারতবর্ষীয়েরা, আদিকাল মব্ধি, ঐ দেবভাষায় কথোপকথন ও লেকিক ব্যবহার নর্ম্বাছ করিতেন ; তদমুসারে সংস্কৃত ভারতবর্ষীয় আদিম নবাদী লোকদিগের ভাষা হয়। কিন্তু, ইয়ুরোপীয় পণ্ডি-তিরা, শব্দবিদ্যার অনুশীলন প্রভাবে, নিরূপণ করিয়াছেন, স্কৃত ভারতবর্ষের আদিম নিবাদী লোকদিগের ভাষা 🕏 ; ক্লংস্কৃতভাষী লোকেরা পৃথিবীর অন্য প্রদেশ তে আসিয়া, ভারতবর্ষে আবাদ গ্রহণ করিয়াছেন। ই প্রদেশ ইরান। তাঁহাদের গবেষণা দ্বারা নির্দ্ধারিত য়াছে, অতি পূর্ব্ব কালে, ইরানের আদিম নিবাসী াকেরা, সময়ে সময়ে, ভারতবর্ষ, গ্রীস, ইটালি, জর্মনি স্থৃতি প্রদেশে বাস করিয়াছেন। ইঁছারা ইরানে অব-তিকালে একজাতি ও একভাষাভাষী ছিলেন। ঐ এক তি, ভিন্ন ভিন্ন প্রদেশে অবস্থিত হইয়া, হিন্দু, এীক, মক, জর্মন প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন জাতি হইয়াছেন ; এবং, এক ভাষাই, ক্রমে ক্রমে রূপান্তর প্রাপ্ত 🕏 ইয়া, ভারত- 📩 বর্ষে সংস্কৃত, গ্রীসে গ্রীক, ইটালিতে লাটিন, জর্মনিতে জর্মন প্রস্তৃতি চুভিন্ন ভিন্ন ভাষা হইয়া উচিয়াছে। কালক্রে, বিভিন্ন প্রাদেশে এই সকল ভাষা এরপ রপাস্ত্রর প্রাপ্ত ইইয়াছে যে উহাদিগের পরস্পর কোনও সম্বন্ধ আছে, ইহা আপাততঃ প্রতীয়মান হয় না। কিন্তু এই সমস্ত যে এক মূল ভাষার পরিণামবিশেষ মাত্র, এ বিষয়ে সংশয় ইই বার বিষয় নাই। ইয়ুরোপীয় পণ্ডিভেরা এ বিষয়ে যে সমস্ত প্রমাণ প্রদর্শন করিয়াছেন, সংক্ষেপে সে সকলো উল্লেখ করিলে হাদরক্ষ হত্ত্যা কঠিন। বিশেষতঃ বাঙ্গালা ভাষার অদ্যাপি এরপ শ্রীরৃদ্ধি হয় নাই যে ও সমস্ত বিষয় ইহাতে সংক্ষেপে ও বিশাদ রূপে ব্যক্ত কর যাইতে পারে; এ নিমিত, ফলিতার্থ মাত্র উল্লিখিই ইইল।

সাহিত্যশাস্ত্র।

সংস্কৃত আলক্ষারিকেরা সাহিত্যশান্তকে তুই প্রধাত। তাথে বিভক্ত করেন, শ্রব্য কাব্য ও দৃশ্য কাব্য। তাঁহারা এই তুই বিভাগের মধ্যেই, সমুদ্র সাহিত্যশান্ত সমানে শিত করিয়াছেন। শ্রব্য কাব্য ত্রিবিধ, পদ্যময়, গদ্যম গদ্যময়, থণ্ড কাব্য, কোম্ববার, ধণ্ড কাব্য, কোম্ববার। গদ্যময় কাব্যকে আলক্ষারিকের

কধা ও আখ্যায়িকা এই ছই ভাগে বিভক্ত করিয়া ধাকেন।
কিন্তু এ উভয়ের বৈলক্ষণ্য এমন সামান্য বে ইহাদিগের
ভাগদ্বয়ে বিভাগ অনাবশ্যক ও অকিঞ্চিৎকর। গদ্যপদ্যমর কাব্যকে চম্পূ বলে। চম্পূ কাব্যের বিভাগ নাই।

মহাকাব্য।

কোনও দেবতার, অথবা সদ্ধশজাত অশেষসাদ্ধ-দম্পন্ন ক্ষত্রিয়ের, কিংবা একবংশোদ্ভব বহু ভূপতিদিগের ্বিত্ত লইয়া যে কাব্য রচিত হয়, তাহাকে মহাকাব্য वर्षा । भशकाया माना मर्शा वर्षा ९ शतिरक्राम विख्ला। দর্গদংখ্যা অফীধিক না হইলে, ভাহাকে মহাকাব্য বলে 🖫 । সঃস্কৃতভাষায় যত মহাকাব্য আছে, ভাহাতে দ্বাবিং-াতির অধিক দর্গ দেখিতে পাওয়া যায় না। কোনও 📲 হাকাব্য আদ্যোপাস্ত এক ছন্দে রচিত নহে; এক এক িএক এক ভিন্ন ভিন্ন ছল্ফে রচিত। সর্গের অবসানে দ, হুই, অথবা তদধিক অন্য অন্য ছন্দের শ্লোক থাকে। দল সর্গই যে এক এক ভিন্ন ভিন্ন ছন্দে রচিত, এমন নছে। াকাব্যে ছুই, ভিন, চারি, পাঁদ সর্গত এক ছলে রচিড বিতে পাওয়া যায়। কোনও কোনও সর্গ নানা ছন্দেও চত হইয়া থাকে। সর্গ সকল অতি সংক্ষিপ্ত অথবা অতি ছত নছে। সর্গের শেষে পর সর্গের রুক্তান্তিস্থচনা থাকে। মহাকাব্য সকল আদিরস অধবা বীররস প্রধান, মধ্যে
মধ্যে অন্যান্য রুসেরও প্রদক্ষ থাকে। কবি, কিংবা বর্ণ
নীর বিষয়, অথবা নায়কের নাম অনুসারে মহাকাব্যের
নাম নির্দেশ হয়।

রঘুবংশ।

সংক্ত ভাষায় যত মহাকাব্য আছে, কালিদাসপ্রণীত রমুবংশ সর্বাপেক্ষা সর্বাংশে উৎক্রট। কালিদাস কীদৃশকবিত্বশক্তিসম্পন্ন ছিলেন, বর্ণনা করিয়া অন্তে: হৃদয়ক্ষম করা হুঃসাধ্য। যাঁহারা কাব্যের যথার্থরূপ রসা স্থাদে অধিকারী, সেই সহাদয় মহাশয়েরাই বুঝিলেপারেন, কালিদাস কিরপ কবিত্বশক্তি লইয়া ভূমওলে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন। তিনি সর্বোৎক্রট মহাকাব্য সর্বোৎক্রট থওকাব্য, সর্ব্বোৎক্রট নাটক লিখিয়া গিয়াছেন। বোধ হয়, কোনও দেশের কোনও কবি, আমাদে কালিদাসের ত্যায়, সকল বিষয়ে সমান সেভিগ্যশালিও ক্রমতাপন্ন ছিলেন না।

তিনি যে অলোকিক কবিত্বশক্তি পাইয়াছিলেন স্বরচিত কাব্যসমূহে সেই শক্তি সম্পূর্ণ রূপে প্রদর্শি করিয়া গিরাছেন। তাঁহার বর্ণনা সকল পাঠ করিয়া চমং ক্রত ও মোহিষ্ঠ ছইতে হয়; তাহাতে অত্যুক্তির সংগ্র াত্র দেখিতে পাওয়া যায় না; আন্ত্রোপান্ত স্বভাবোক্তি মলস্কারে অলঙ্কৃত। বস্তুতঃ, এবংবিধ সম্পূর্ণুরূপ স্বভাবানু-ায়িনী ও একান্ত হাদয়গ্রাহিণী বর্ণনা সংস্কৃত ভাষায় আর দখিতে পাওয়া যায় না। কালিদাদের উপমা যার পর নাই ানোহারিণী; বোগ হয়, কোনও দেশের কোনও কর্বি উপমা বৈষয়ে কালিদাসের সমকক্ষ নছেন। তিনি এরূপ সজ্জেপে.) এরূপ লোকসিদ্ধ বিষয় লইয়া, উপমা সঙ্কলন করিয়াছেন ্ব পাঠক মাত্রেরই, অনায়াসে ও আরুত্তি মাত্র, উপমান ও পমেরের সৌদাদৃশ্য হাদয়ক্ষম হয়। তাঁহার রচনা সংক্ষত চনার আদর্শ স্বরূপ হইয়া রহিয়াছে। ফাঁহারা তাঁহার র্বে সংস্কৃত রচনা করিয়া গিয়াছেন, কিংবা ঘাঁছারা হার পরে সংস্কৃত রচনা করিয়াছেন, কি কবি, কি ত্য অন্ত গ্রন্থকার, কাহারই রচনা, তাঁহার রচনার স্থায়, কারিণী ও মনোহারিণী নছে। তাঁহার রচনা সরল, ্ও ললিত। তিনি একটিও অনাবশ্যক অথবা পরি-াহ শব্দ প্রয়োগ করেন নাই। কালিদাদের গ্রন্থ পাঠ লে, ইহা স্পষ্ট প্রতীয়মান হয় যে, ঐ সমস্ত তাঁহার নীর মুখ হইতে অক্লেশে ও অনর্গল নির্গত হইয়াছে, াবা ভাবসঙ্কলনের নিমিত্ত, তাঁহাকে এক মুহূর্ত্তও । করিতে হয় নাই। বস্তুতঃ, এব্লপ রচনাও এব্লপ দ্বশক্তি এ উভয়ের একত্ত সজ্ঘটন অভি বিরল। এই खरे, कानिमाम**श्र**ीा कार्तात्र এउ श्रीमत 🕫 এउ

গৌরব; এই নিমিন্তই, ভারতবর্ষীয় লোকেরা কালিদাসকে সরস্থতীর বরপুল্ল বলিয়া নির্দেশ করিয়া থাকেন; এই নিমিন্তই, প্রসন্ধরাঘবকর্ত্তা জয়দেব, স্বীয় নাটকের প্রস্তাবনাতে, কালিদাসকে কবিকুলগুরু বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন; এবং এই নিমিন্তই, কি স্বদেশে কি বিদেশে, কালিদাসের নাম অক্যাপি দেদীপ্যমান রহিয়াছে।

কালিদাস, এইরপ অলোকিক কবিত্বশক্তি ও এই রপ অদ্বিতীয় রচনাশক্তি সম্পন্ন হইরাও, এরপ্ অভিমান শৃত্য ছিলেন এবং আপনাকে এরপ সামাত্য জ্ঞান করিতেন যে শুনিলে বিন্মরাপন্ন হইতে হয়। তিনি রযু বংশের প্রারম্ভে লিখিয়াছেন,

मन्दः कविवशः प्राधी गमिष्यास्युपहास्यताम्। प्रांशुलस्ये फले मोहादुद्वास्त्रस्य वामनः ॥१॥३॥

যেমন বামন, উন্নতপুরুষপ্রাপ্য ফলের গ্রহণাভিলাষে, বাং প্রসারিত করিয়া, উপহাসাম্পদ হয়, দেইরূপ, অক্ষম আদি কবিকীর্ত্তিলাতে অভিলাষী হইয়াছি, উপহাসাম্পদ হইব।

কালিদাস, অদ্বিতীয় বিজ্ঞোৎসাহী, গুণআহী, বিখ্যাজ নামা বিক্রমাদিত্যের সভার, নবরত্নের অন্তর্কর্তী; স্থৃতরা উনবিংশতি শত বৎসর পূর্ব্বে প্রান্তর্ভুত হইরাছিলেন। কালিদাসের যে সমস্ত গুণ বর্দিত হইল, প্রায় তৎপ্রাণী বাবতীয় কাব্যেই সে সমূদ্য স্থাস্পট লক্ষিত হইরা থাকে রযুবংশে স্থাবংশীয় নরপতিগণের চরিত্র বর্দিত হইরাহো মই মহাকাব্য ঊনবিংশতি দর্গে বিভক্ত। প্রথম আচি সর্গে দলীপ, রয়ু, অজ এই তিন রাজার বর্ণন আছে। নবম মবি পঞ্চদশ পর্যান্ত দাত দর্গে দশরপ্রের ও দশরথতনয় ামচন্দ্রের চরিত্র বর্ণিত হুইরাছে। অবশিষ্ট চারি দর্গের দশ অবধি অগ্নিবর্গ পর্যান্ত, রামের উত্তরাধিকারীদিগের তান্তে সঙ্কলিত আছে। রয়ুবংশের আদি অবধি অন্তর্গার্থত্ত দর্কাংশই দর্কাঙ্গ অনুনর। যে অংশ পাঠ করা যায়, দই অংশেই অদিভীয় কবি কালিদাদের অলোকিক দবিত্বশক্তির দম্পূর্ণ লক্ষণ স্থান্স্ট লক্ষিত হয়। কিন্তু মতদেশীয় সংস্কৃতব্যবসায়ীরা এমনই সন্থান্ম ও এমনই দক্ত যে সংস্কৃত ভাষার দর্কপ্রধান মহাকাব্য রমুবংশকে মতি সামান্য কাব্য জ্ঞান করিয়া থাকেন।

কুমারসম্ভব।

কালিদাসের দ্বিতীয় মহাকাব্য কুমারসম্ভব। কুমার ন্ত্রির অনেক অংশে রয়ুবংশের তুল্য। এই মহাকাব্যের লৈ রক্তান্ত এই; তারকনামে এক মহাবল পরাক্রান্ত অভি-কিন্তি অস্তুর, ত্রন্দান্ত বরের প্রক্রাবে, অত্যন্ত গর্মিত ও জ্জিয় হইয়া, দেবতাদিগকে স্ব স্ব অধিকার হইতে চ্যুত রিয়া, স্বয়ং স্বর্গরাজ্য অধিকার করে। দেবতারা, ভূদিশা-তিত্র ইইয়া, ত্রন্ধার শ্রণাগত হইলে, তিনি তাঁহাদিগকে এই বলিয়া আশাদ প্রদান করেন যে পার্ম্বতীর গর্ডে
শিবের যে পুত্র জন্মিবেন, তিনি ভোমাদের দেনাপতি হইয়া,
তারকাস্করের প্রাণ সংহার করিয়া, তোমাদিগকে পুনর্মার
স্ব অধিকার প্রদান করিবেন। তদনুসারে, দেবতারা
উল্মোগী হইয়া হর গৌরীর পরিণয় সম্পাদন করিলে,
কার্ত্তিকেয়ের জন্ম হয়। অনস্তর, তিনি, দেবলৈয় সমভিব্যাহারে সমরসাগরে অবতীর্ণ হইয়া, ত্র্র্কৃত্ত তারকাস্করের
প্রাণ সংহার পূর্ম্বক, দেবতাদিগকে আপন আশান অধিকারে পুনঃ স্থাপিত করেন। এই রুতান্ত স্ক্রান্স রূপে
কুমারসস্তবে সবিস্তর বর্ণিত হইয়াছে।

কুমারসম্ভব সপ্তদশ সর্গে বিজ্ঞ । তন্মধ্যে প্রথম সাত সর্গেরই সর্বন্ধ অনুশীলন আছে ; অবশিষ্ট দশ সর্গ একবারে অপ্রচলিত ও বিলুপ্তপ্রায় হইয়া আদিয়াছে— এমন অপ্রচলিত যে ঐ দশ সর্গ অদ্যাপি বিদ্যমান আছে বলিয়া, অনেকেই অবগত নহেন । এই দশ সর্গ, কালিদাসের অলোকিক কবিত্বশক্তির সম্পূর্ণ লক্ষণাক্রাপ্ত হইয়াও, যে এরূপ অপ্রচলিত ও অপরিজ্ঞাত হইয়া আছে, তাহার হেতু এই বোধ হয়, অইম সর্গে হর গৌরীর বিহার বর্ণনা আছে ; তাহাও, সামান্ত নারকা নারিকার বিহারের ত্যায়, বর্ণিত হইয়াছে । নবমে হর গৌরীর কৈলাসগমন এবং দশমে কার্ত্তিকেয়ের জন্মর্ক্তাপ্ত বর্ণনিরী ঘটিত অপ্লাল

বর্ণনা দেখিতে পাওয়া ষায়। ভারতবর্ষীয় লোকেরা হর
গোরীকে জগৎপিতা ও জগশাতা জ্ঞান করেন। জগৎপিতা ও জগশাতা সংক্রান্ত অল্লীল বর্ণনা পাঠ করা
একান্ত অনুচিত বিবেচনা করিয়া, লোকে কুমারসম্ভবের
শব দশ সর্গের অনুশীলন রহিত করিয়াছে। আলরারিকেরাও কুমারসম্ভবের হরগোরীবিহারবর্ণনাকে অত্যন্ত
মনুচিত ও অত্যন্ত দৃষ্য বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন।
একাদশ অবধি সপ্তদশ পর্যান্ত সাত সর্গে কার্তিকরের বাল্যলীলা, সৈনাপত্যগ্রহণ, তারকান্ত্রের সহিত
হথ্যাম ও সেই সংগ্রামে তারকান্ত্রের নিপাত, এই
মন্ত রক্তান্ত সবিক্তর বর্ণিত হইরাছে। এই সাত সর্গে
শ্রীল বর্ণনার লেশ মাত্র নাই। কিন্তু অন্টম, নবম, দশম,
ই জ্বিন সর্গের দোবে, ইহারাও একবারে বিল্পপ্রপ্রায়
ইয়া আছে।

এরপ কিংবদন্তী আছে, এক কুন্তকার কালিদাদের
রম মিত্র ছিলেন। কালিদাদ, কুমারসন্তব রচনা করিয়া,
কুন্তকার মিত্রকে দেখাইতে লইরা যান। কুন্তকার, পাঠ
রিরা, সমুখবর্ত্তী একখান কাঁচা সরার উপর রাখিয়া দেন।
হাতে কালিদাস বোধ করিলেন, এই এন্থ কাঁচা ছইছে; এবং সেই নিমিত্ত, তিনি তৎক্ষণাৎ ঐ পুন্তক হল্তে
ইয়া, খণ্ড খণ্ড করিয়া, ছিঁড়িয়া কেলিলেন। কুন্তকার
দর্শনে সাতিশায় সক্ষুচিত ছইপেন এবং অবশেষ প্রয়াদেশ

প্রথম সাত সর্গ মাত্র সঙ্কলন করিতে পারিলেন; অবশিষ্ট দশ সর্গ বিলুপ্ত ছইয়া গোল। এই অমূলক অকিঞ্চিৎকর কিংবদন্তী অবশ্বনে করিয়া, অনেকেই সিদ্ধান্ত করিয়া রাখিয়াছেন, কুমারসম্ভবের প্রথম সাত সর্গই বিদ্যমান আছে, অবশিষ্ট দশ সর্গ একবারে লোপ পাইয়াছে।

কুমারসম্ভবের যে শেষভাগের কথা উল্লিখিত হইল, ইহার পুত্তক বাঙ্গালা দেশে পাওয়া বায় না। বাঙ্গালা দেশে কুমারসম্ভবের অন্থাবিধ এক শেষ ভাগ আছে। এই শেষ ভাগ পাঠ করিলে, ইহা স্পাই প্রতীয়মান হয় কুমারসম্ভবের শেষ ভাগ বিলুপ্ত হইরাছে এই স্থির করিয়া, এতদ্দেশীয় কোনও আধুনিক কবি ঐ অংশ রচনা করিয়া গায়াছেন। উহা, পাঠ করিলে, কালিদাসের রচিত বলিয়া কোনও ক্রমে প্রতীতি জম্মিতে পারে না।

কুমারসম্ভবে যে বৃত্তান্ত বর্ণিত হইয়াছে, শিবপুরাণেও তাহা দেখিতে পাওয়া যায়। এই ছুই এছে, ইতিবৃত্তের বেরূপ প্রকা আছে, ছুই এক শ্লোকেরও সেইরূপ প্রকা দেখিতে পাওয়া যায় (১)। যদি শিবপুরাণকে বেদ

শিবপুরাণ, উত্তরখণ্ড, চতুর্দ্দশ অধ্যায়। কুমারসম্ভব, বিতীয় দর্গ।

⁽१) तदिच्छामि विभी ख्रष्टं सेनान्यं तस्य धान्तये। कस्त्रीवस्वच्छिदं धन्त्रेभवस्येव सुसुचवः॥ यमोऽपि विलिखन् भूमिं दस्हेनास्त्रीमतित्वा॥ विषद्वचोऽपि संबर्धेत्र ख्रयं छेत्नसास्रतस्॥

াসবিরচিত, ও তদ্মুদারে কালিদাদের কুমারসম্ভব পেক্ষা প্রাচীন, এন্থ বলিয়া অঙ্গীকার করা যায়, ভাহা ংলে, ইহাও অবশা স্বীকার করিতে €য়, কালিদান গবপুরাণের বৃত্তান্ত লইয়া কুমারসম্ভব রচনা করিয়াছেন, বং মধ্যে মধ্যে, ঐ গ্রন্থের প্লোক, অধিকল উদ্ধৃত করিয়া, াপন কাব্যে নিবিষ্ট করিয়াছেন। কিন্তু কালিদাস, লোকিককবিত্বশক্তিসম্পন্ন হইয়া, যে আপন কাব্যে ভাদীয় শ্লোক অবিকল উদ্ধৃত করিবেন, ইহা কোনও মে সন্তাবিত নছে। যে কয়েকটি শ্লোকে এক্য দৃষ্ট ইতেছে, কুমারসম্ভবের অথবা কালিদাসের অক্যাক্ত দ্বের রচনার সহিত, সেই সেই শ্লোকের রচনার সম্পূর্ণ াসাদৃশ্য দৃশ্যমান হইতেছে ; কিন্তু শিবপুরাণের কোনও েড্রেব্রু রচনার সহিত কোনও অংশে উহাদের সাদৃশ্য াখিতে পাওয়া যায় না। বিশেষতঃ, শিবপুরাণ কুমার-ম্ভব অপেক্ষা প্রাচীন কি না, এ বিষয়ে সম্পূর্ণ সংশয় াছে। যাবতীয় পুরাণ বেদব্যাসপ্রণীত বলিয়া প্রসিদ্ধ। চন্তু পুরাণ সকলের রচনাপ্রণালী পরস্পর এত বিভিন্ন, ।বং এক বিষয় ভিন্ন ভিন্ন পুরাণে এরূপ বিভিন্ন প্রকারে ক্ষলিত হইয়াছে, যে এ সমস্ত গ্রন্থ এক ব্যক্তির রচিত লিয়া, কোনও ক্রমে প্রতীতি জম্মে না। যাঁছাদের ংক্ষ,ত রচনার ইতর বিশেষ বিবেচনা করিবার শক্তি াছে, তাঁহারা, নিরপেক হইরা, বিষ্ণুপুরাণ, ত্রন্ধবৈবর্ত্ত-•

পুরাণ, ভাগবতপুরাণ প্রভৃতি পাঠ করিলে, অনারাসে বুঝিতে পারেন, এই সকল গ্রন্থ এক লেখনীর মুখ হইতে বিনির্গত নহে। শেস্তবিক, পুরাণ সকল এক ব্যক্তিরও রচিত নয়, এক কালেও রচিত নয়। বোধ হয়, পুরাণনামপ্রাদি গ্রন্থ করের অধিকাংশই প্রাচীন নহে। শিবপুরাণ যে বিক্রমাদিত্যের সময়ের পুর্বের রচিত গ্রন্থ, এবং তাহা দেখিয়া কালিদাস কুমারসম্ভব লিখিয়াছেন, এবং তাহা হইতে অবিকল শ্লোক উদ্ধৃত করিয়া আপন কাব্যে নিবিষ্ট করিয়াছেন, পুরাণের উপর নিতান্ত ভক্তি না ধাকিলে এরপ বিশ্বাস হওয়া কঠিন; বয়ং বিপরীত পদ্দই বিলক্ষণ হাদয়ক্ষম হয়। যোগবাশিষ্ঠে ও কুমারসম্ভবেও শ্লোকের জক্য আছে (২)। কিন্তু যোগবাশিষ্ঠ যে আধুনিব গ্রন্থ, প্রাচীন ও ঋবিপ্রণীত নহে, এ বিষয়ে কেন্দ্রন্থ অহংশে সংশয় হইতে পারে না।

যোগবাশিষ্ঠ, ভূটেকলাসনিবাসী রাজজীসত্যচর, ঘোষাল বাহাদুরের মুক্তিত পুস্তকের ১২৩ পৃষ্ঠা কুমারসম্ভব, চতুর্থ সর্গ।

⁽३) व्याकाशभवा सरव्यती।श्रफरीं हृदशोपविद्ववांप्रथमा दृष्टिरियान्य कस्पयत्॥

[00]

কিরাতার্জ্জুনীয়।

রমুবংশ ও কুমারসম্ভবের পর, সংক্ষৃত মহাকাব্যে ইল্লেখ করিতে হইলে, উৎকর্ম ও প্রাথম্য অনুসারে র্ম্বাঞ্জে করিতে হয়। এই হাকাব্যের রচনা অতি প্রগাঢ়, কিন্তু কিঞ্চিৎ হ্লেছ টালিদাসের রচনার স্থায় সরল নহে। রচনাপ্রণালী দৃষ্টে পট বোর হয়, কিরাভার্জ্জ্বনীয়কর্ত্তা ভারবি কালিদাসেই কর কালে, এবং মাম, শ্রীহর্ম প্রভৃতির বহু কাল পূর্বের্ম গান্তর্ভুত হইয়াছিলেন।

কিরাতার্জ্জনীয়ের স্থুল রুত্তান্ত এই; যুধিষ্ঠির প্রস্তৃতি পঞ্চাওব, রাজ্যাধিকার হইতে নিক্ষাশিত হইরা, ছৈতবদে দি করেন। এক দিবস, ব্যাসদেব আসিয়া তাঁহাদিগবে হেন, দৈব অনুগ্রহ ব্যতিরেকে, তোমাদের নফ রাজ্যের নফ্জারের সম্ভাবনা নাই; অতএব, অর্জ্জুন হিমালয়ে য়া ইন্দ্রের আরাধনা করুন। তদনুসারে, অর্জ্জুন নির্দ্ধিটানে গিয়া দেবরাজের আরাধনা আরম্ভ করেন। দেবরাজে, দীয় আরাধনায় তুই হইয়া, তাঁহাকে শিবের আরাধনায়রতে পরামর্শ দেন। অর্জ্জুন শিবের আরাধনা আরম্ভ রিলে, মৃক নামে এক হুর্বান্ত দানব, বরাহের রূপ ধারশ রিয়া, তাঁহার প্রাণ সংহার করিতে আইনে। সেই সময়ে, বিও, কিরাতরাজের আকার পবিগ্রহ করিয়া, অর্জ্জুনের

আর্থ্রমে উপস্থিত হন। অর্জ্জুন, বরাহরূপী দানবের প্রাণদণ্ডর নিমিন্ত, শরাসনে শর সন্ধান করিয়াছেন, এমন সমরে, কিরাভরাজ, এক শর নিক্ষেপ করিয়া, বরাহের প্রাণসংহার করিলেন। এই উপলক্ষে, কিরাভরাজের সহিত অর্জ্জুনের সংগ্রাম উপস্থিত হইল। সেই সংগ্রামে, অর্জ্জুনের অ্যাধারণ বল বীর্য্য দর্শনে, যৎপরোনাস্তি প্রীত ও প্রান্ত হইরা, কিরাভরূপী মহাদেব তাঁহাকে ধনুর্বেদ শিক্ষা করাইলেন। সেই শিক্ষার প্রজাবে, অর্জ্জুন স্ক্রবিত্যার অদ্বিতীয় ও অপ্রতিহতপ্রভাব হইরা উচিলেন।

ভারবি কবিত্বশক্তি বিষয়ে কালিদাস অপেক্ষা ক্যুন; কিন্তু ভারতবর্ষের এক জন অতি প্রধান কবি ছিলেন, তাহার কোনও সংশয় নাই। কোন সহ্বদয় ব্যক্তি, এই মহাকাব্যের প্রথম, দ্বিতীয়, তৃতীয়, চতুর্থ, বষ্ঠ, একাদশ, দ্বাদশ, ত্রয়োদশ সর্গ পাঠ করিয়া, সাতিশয় প্রীত ও চমৎক্রত না হন এবং পদে পদে অসাধারণ কবিত্বশক্তির সম্পূর্ণ প্রমাণ না পান। কিরাতার্জ্জ্নীয় অফাদশ সর্গে বিভক্ত।

[৩৫]

শিশুপালবধ।

কাব্যকর্ত্তা মাঘনামা কবি স্বগ্রন্থের শেষে লিখিয়াছেন,

———— सुनविकी त्तिंदुराभयादः

काव्यं व्यथत्त शिशुपालवधाभिधानस्॥

মাঘ, কবিকীর্ত্তি লাভের দুরাশাগ্রস্ত হইনা, এই শিশুপাল-ধিনামক কাব্য রচনা করিলেন।

মাঘ , অতিপ্রধান কবি ছিলেন এবং তৎপ্রণীত শিশুশালবধ অতি প্রধান মহাকাব্য। এই মহাকাব্যের স্থুল
ভাস্ত এই; রুফ, মুধিন্ঠিরের রাজস্থা যজে নিমন্ত্রিত হইরা,
পরিবারে ইন্দ্রপ্রস্থ প্রস্থান করেন। যিনি সর্বাংশে সর্বশ্রুষ্ঠ হন, তিনিই যজে অর্থ পাইরা থাকেন। মুধিন্ঠির,
নাজস্থী সমাপ্ত হইলে, ভীত্মের উপদেশ অনুসারে, রুফকে
র্বাংশে সর্বশ্রেষ্ঠ স্থির করিরা, অর্থ দান করেন। রুফের
শত্ষস্পুল্র শিশুপাল তাঁহার অত্যন্ত বিদ্বেমী ছিলেন।
তিনি, রুফের এইরূপ অসামান্ত সন্মান দর্শনে, অস্থ্যাপরশ হইরা, ভীত্মের যথোচিত তিরক্ষার করিরা, স্বপক্ষীর
রপতিগণ সমভিব্যাহারে, সভামণ্ডণ হইতে প্রস্থান করিদন এবং দৃত দ্বারা রুফের অনেক তিরক্ষার করিরা পাঠালেন। অনস্তর, উভর পক্ষে ঘোরতর সংগ্রাম উপস্থিত
ইল, এবং সেই সংগ্রামে রুফ শিশুপালের প্রাণ সংহার
রিলেন।

শিশুপালবধ কিরাতার্জ্জুনীয়ের প্রতিরূপ স্বরূপ। মাম, কিরাতার্চ্জুনীয়কে আদর্শ স্বরূপ করিয়া, শিশুপালব রচনা করিয়াছেন, তাহার কোনও সংশায় নাই। ভারবি যে প্রণালীতে কিরাতার্জ্জুনীয় রচনা করিয়াছেন, মাঘ শিশু-পালবধের রচনাকালে, আদ্যোপান্ত, সেই প্রণালী অবলম্বন করিয়াই চলিয়াছেন। কিরাতার্জ্জুনীয়ে, মহর্ষি ব্যাস আসিয়া পাণ্ডবদিগকে কর্ত্তব্যের উপদেশ দিতেছেন; শিশুপালবরে, দেবর্ষি নারদ আসিয়া রুফকে কর্ত্তব্য কর্ম্মের অনুষ্ঠানে উদযুক্ত করিতেছেন। কিরাতার্জ্জুনীয়ে, যুধি-र्षित, जीम, त्यां भिनी, अहे जिन करनत ताकनी जि मश्कां ख বাদানুবাদ; শিশুপালবধেও রুফ, বলরাম ও উদ্ধবের সেইরূপ রাজনীতি সংক্রাস্ত বাদানুবাদ। কিরাতার্জ্জুনীয়ে, তপস্থা নিমিত্ত, অর্জ্জুনের হিমালয় পর্বতে অর্বর্ডান; ি শিশুপালবধেও, ক্লফের ইন্দ্রপ্রস্থ প্রস্থান কালে রৈবভক পর্বতে অবস্থান। কিরাতার্জ্জুনীয়ে, হিমালর পর্বতের বছবিস্তৃত বর্ণনা এবং বর্ণনা সংক্রাস্ত শ্লোক সকলের অধিক অংশ যমকালঙ্কারযুক্ত; শিশুপালবধেও, রৈবতক পর্বতের অবিকল সেইরূপ বর্ণনা ও সেইরূপ ষমকালঙ্কুত শ্লোক। কিরাতার্জ্কুনীয়ে, স্থরাঙ্গনাদিগের বনবিহার, নায়কসমা-গম, বিরহ, মান প্রভৃতির বর্ণনা আছে ; শিশুপালবধেও, অবিকল সেই সমস্ত বর্ণনা আছে। কিরাভার্জ্জুনীয়ে, কিরাতরাজ, অর্জ্জুনের উত্তেজনার নিমিক, তাঁহার নিকট

[09]

ত প্রেরণ করেম; শিশুপালব্ধেও, শিশুপাল কৃষ্ণের র্থ সনার্থে তাঁহার নিকট দূত প্রেরণ করেন। অনস্তর ভয় কাব্যেই উভয় পক্ষের সৈক্সমজ্জা, সৈত্যপ্রয়াণ ও ংগ্রাম বর্ণন আছে। কিরাতার্জ্জুনীয়ের পঞ্চদশ সর্গে যুদ্ধ-নি ও একাক্ষর, দ্যাক্ষর, যমক প্রভৃতি শ্লোক অনেক; ভিপালবধেরও ঊনবিংশ সর্গে যুদ্ধবর্ণন ও প্ররূপ একা-া, দ্বাক্ষর, যমক প্রভৃতি শ্লোক অনেক। কিরাতার্জ্জনীয়ে, ত্যেক সর্গের শেষ শ্লোকে সর্গসমাপ্তিস্থচক লক্ষ্মীশব্দের য়োগ আছে; শিশুপালবধেও, প্রত্যেক মর্গের শেষ াকে দর্গদমাপ্তিস্থচক শ্রীশব্দের প্রয়োগ আছে। কোনও ল ইহাও দেখিতে পাওয়া যায়, শিশুপালবধে কিরা-ৰ্জ্বনীয়ের ভাব অবিকল ভিন্ন ছনেদ সঙ্কলিত হইয়াছে। াতঃ, অভিনিবেশ পূর্ব্বক, উভয় কাব্য আদ্যস্ত পাঠ রলে, ইহা বিলক্ষণ প্রতীয়মান হয়, কিরাভার্জ্কুনীয় নর্শ ও শিশুপালবধ ভৎপ্রতিরূপ। উভয় কাব্যের াপ্রণালী আলোচনা করিয়া দেখিলে, বিপরীত পক নও ক্রমে হাদয়কম হয় না। কিরাতার্জ্জুনীয় শিশু-ববধ অপেকা প্রাচীন এন্থ, ইহাতে সংশয় হুইবার য় নাই।

মাঘ অদ্ভূত কবিত্বশক্তি ও অদ্ভূত বর্ণনাশক্তি পাইয়া-দন। যদি তাঁহার, কালিদাস ও ভারবির স্থায়, দয়তা থাকিত, তাহা হইলে তদীয় শিশুপালবং সংস্কৃত ভাষার সর্বপ্রধান মহাকাব্য হইড, সন্দেহ নাই।
তিনি সকল বিষুরেরই বহুবিস্তৃত বর্ণনা করিরাছেন। বর্ণনা
সকল আরস্তে একাস্ত মনোহর, কিন্তু অবসানে নিভার
নীরদ। মাঘ অধিক বর্ণনা এত অধিক ভাল বাসিতেন, নে
শেষ অংশ নিভান্ত অশক্তিকৃত হইতেছে দেখিয়াও, কার
হইতে পারিতেন না। কখনও কখনও, ইহাও দেখিতে
পাওয়া যায়, একটি শ্লিষ্ট অথবা স্থ্রপ্রাব্য শব্দের অনুরোধে
একটি শ্লোক রচনা করিয়াছেন। সেই শ্লোকের, সেই
শব্দটি ভিন্ন, আর কোনও অংশেই কোনও চমৎকারিড
দেখিতে পাওয়া যায় না। তাঁহার রচনা প্রগাঢ়, ওজর্ম
ও গান্ডীর্যাব্যঞ্জক, কিন্তু কালিদাসের অথবা ভারবি
ন্যার পরিপক্ত নছে।

অপ্রাদঙ্গিক বিষয়ের বহুবিস্তৃত বর্ণনা মার্ষ্মের ত প্রধান দোষ। তিনি বিংশতিসর্গাত্মক কাব্যের নয় অপ্রাদঙ্গিক বিষয়ে সমর্পিত করিয়াছেন। কৃষ্ণ, ইন্দ্রুও প্রস্থান কালে, প্রথম দিন রৈবতক পর্বতে অবস্থান করে এই উপলক্ষে, মাঘ রৈবতক প্রস্তৃতির অত্যন্ত্ম অধিক ব করিয়াছেন। চহুর্থ সর্গো রৈবতক বর্ণন, পঞ্চমে শার্দা সন্নিবেশ, যঠে ঋতুবর্ণন, সপ্রমে বনবিহার, অইমে ও বিহার, নবমে সন্ধ্যাবর্ণন, দশমে স্থরাপান ও বিহ একাদশে প্রভাতবর্ণন, দ্বাদশে সৈক্যপ্ররাণ; এইরূপ এক সর্গো এক এক বিষয় মাত্র বর্ণিত হইয়াছে। মাদ, ান্ত বর্ণনাতে, স্বীয় অন্তুত কবিত্বশক্তি ও বর্ণনাশক্তির রা কাষ্ঠা প্রদর্শন করিয়াছেন। কিন্তু এই সকল বর্ণনা মন অতিবিস্তৃত, তেমনই অপ্রাণাসক, প্রকৃত বিষয় শেণালবন্ধে উহাদের কোনও উপযোগিতা দেখিতে ওয়া যায় না। এই নয় সর্গ পরিত্যাগ করিলেও, ব্যের ইতিরত্ত কোনও ক্রেমে অসংলগ্ন হয় না। শিশুপালবন্ধ, এইরপ দোষাপ্রিত হইরাও, যে এক ছাৎক্ট মহাকাব্য, তাহার সন্দেহ নাই। কিন্তু ভারতশিয় পণ্ডিতেরা যে ইহাকে সর্কোৎকৃট মহাকাব্য বলিয়া দ্বিশ করিয়া থাকেন (৩), ইহা কোনও ক্রমে অঙ্গীকার করিতে পারা যায় না। সম্যক সহ্বদয়তা সহকারে পর্য্যানিলনা করিয়া দেখিলে, ইহা অবশ্যই স্বীকার করিতে হইযে শিশুপালবন্ধ রম্বুংশ, কুমারসম্ভব ও কিরাতার্জ্বলুত্বপেক্ষা নিক্ট।

⁽१) खपमा कालिटासस्य भारवेर्घगौरवस्। नैषघे पदलालिस्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥ गुजाती नगरेषु काञ्ची नारीषु रस्था पुरूषेषु विष्णुः। षुगङ्गान्द्रपतीच रामः काळोषु अघः कविकालिटासः॥

নৈষ্ধচরিত।

এরপ কিংবদন্তী আছে, শ্রীহর্ষ দেবতার আরাষন করিয়া তৎপ্রসাদে অলোকিক কবিত্বশক্তি লাভ করিয়া ছিলেন; নৈষধচনিত সেই দেবপ্রসাদলবা অলোকিব কবিত্বশক্তির কল। শ্রীহর্ষের যে কবিত্বশক্তি অসাধার ছিল, তাহার কোনও সংশয় নাই; কিয়ু তাঁহার তাদৃদী সহাদয়তা ছিল না। তিনি নৈষধচরিতকে আদ্যোপার অত্যুক্তিতে এমন পরিপূর্ণ করিয়াছেন, এবং তাঁহার রচন এমন মাধুর্যবির্জ্জিত, লালিত্যহীন, সারল্যশৃত্য ও অপরি পাক্ক যে ইহাকে কোনও ক্রমে অত্যুৎক্রট কাব্য বলিয় নির্দ্দেশ, অথবা পূর্বোল্লিখিত মহাকাব্যচতুত্তীয়ের সহিত্তুলনা করিতে পারা যায় না।

প্রীহর্ষের অত্যক্তি এমন উৎকট, যে তদ্বারা, তদী কাব্যের উপাদেয়ত্ব না জন্মিয়া, বরং হেয়ত্বই ঘটিয়াছে তিনি নলরাজার বর্ণনা কালে কহিয়াছেন, "নলরাজা যুদ্ধযাত্রাকালে সৈত্য দ্বারা যে ধূলি উপাপিত হইয়াছিল সেই ধূলি ক্ষীরসমুদ্রে পতিত হইয়া পঙ্কভাব প্রাপ্ত হয় উৎপত্তিকালে চল্রের গাত্রে সেই পঙ্ক লাগিয়া কলক হয়য় আছে"(৪)। নল রাজা যধন, অশ্বারোহণ করিয়া, বয়য়্রব

⁽४) बदस्य वालास्य बनोद्धतं रजः प्जुरत्रतापाननधूममञ्जिम। तदेव गला पतितं सुधान्युधौ दधाति पङ्कीभवदङ्कतां विधौ क्षश्यमर्थः।

মভিব্যাহারে, উপবনবিহারে গমন করিতেছেন, ছির্ব দীয় অথের এইরূপ বর্ণনা করিয়াছেন, "আমাদিগের লবার নিমিত্ত এই পৃথিবী কয় পদ হইীবেক; অভএব মুদ্রও স্থল হউক; এই মনে করিয়াই যেন অশ্বর্গণ, সমু-ার জল শুক্ষ করিয়া স্থল করিবার নিমিত্ত, পদ দ্বারা ধূলি ধাপিত করিতেছে" (৫)। নৈষ্যচরিত এইরূপ উৎকট নিায় পরিপূর্ণ। এরূপ উৎকট বর্ণনা পাঠ করিয়া, কোন দৃদয় ব্যক্তি প্রীত বা চমৎকৃত হইবেন।

শ্রীহর্ষ অত্যন্ত অনুপ্রাসপ্রিয় ছিলেন। সংস্কৃত ভাষার
মুপ্রাস সাভিশার মধুর হইয়া থাকে, কিন্তু অত্যন্ত অধিক
লে, অত্যন্ত কর্কশ হইয়া উঠে। স্কৃতরাং, অনুপ্রাসবাহুল্য
য়া, নৈষৰচরিতের মাধুর্য্য সম্পাদন না হইয়া, সাভিা কার্কশাই ঘটিয়া উঠিয়াছে। কিন্তু এতদ্দেশীয় লোকেরা,
শেষতঃ নৈয়ায়িক মহাশয়েরা, এমন অত্যুক্তিপ্রিয় ও অনুসভক্ত যে তাঁহারা সকল কাব্য অপেক্ষা নিষৰচরিতের
বিক প্রশংসা করিয়া থাকেন। তাঁহাদের মতে নিষধত সংস্কৃত ভাষায় সর্ব্বপ্রধান মহাকাব্য (৬)। যাহা

यात् मध्यानिमयं नियत्पदं धरा तदम्शोधिरपि स्थलायताम् । तीव वाह्नैर्निजवेगदर्पितैः पयोधिरोधचामसुबृतं रजः॥ ध्यथमर्गा ७० स्नारु।

६) चरिते नैषधे काव्येक साधः कव सार्धिः।

ছউক, নৈষধচরিতে মধ্যে মধ্যে অনেক অত্যুৎকৃষ্ট অংশ আছে। অত্য অত্য অংশ পাঠ করিয়া, যেরূপ অসন্তুষ্ট ও বিরক্ত হইতে হীয়, ঐ সকল অত্যুৎকৃষ্ট অংশ পাঠ করিয়া, সেইরূপ প্রাত ও চমৎকৃত হইতে হয়।

এই মহাকাব্য ছাবিংশতি সর্গে বিভক্ত, এবং সকন মহাকাব্য অপেক্ষা বৃহৎ। ইহাতে নল রাজার চরিত্র বর্নিট হইয়াছে।

নৈষধচরিতের বিষয়ে এক অতিকেতিকাবছ কিংবদন্তী প্রচলিত আছে। প্রীছর্ম, নৈষধচরিত রচনা করিয়া, স্বীয় মাতৃল প্রধান আলঙ্কারিক মন্মট ভউকে দেখাইতে লইর যান। মন্মট ভউ, আদ্যোপাস্ত পাঠ করিয়া, প্রীছর্মনে, বাপু ছে! যদি তুমি কিছু পূর্বের তোমার এই খানি আনিতে, তাছা হইলে আমার প্রথমের অনেব লাফ হইত। বহু পরিপ্রথমে অনেক এন্থ পাঠ করিয়া, আমা অলঙ্কার এন্থের দোষপরিচ্ছেদের উদাহরণ সংগ্রহ করিছে হইরাছে। কিন্তু সে সমরে তোমার নৈষধচরিত পাইকে আমায় এত পরিশ্রম করিতে হইত না; এক গ্রন্থ হইকে সমুদ্র উদাহরণ উদ্ধৃত করিতে পারিতাম।

ভট্টিকাব্য।

ভটিকাব্যে রামের চরিত্র বর্দিত হইরাচ্ছে। এই মহা-†ব্য দ্বাবিংশতি সর্গে বিভক্ত। এম্বর্কর্ত্তা স্বরচিত কাব্যের গবে আপনার একপ্রকার পরিচয় দিয়াছেন, কিন্তু নাম ার্দ্দেশ করেন নাই। প্রামাণিক প্রাচীন টীকাকার জ্বর-ঙ্গল কছেন, এই মহাকাব্য ভটনামক কবির রচিত। টিকাব্য নাম দ্বারাও ইহাই সম্যক প্রতিপন্ন হই-চছে। ^{*}কিন্তু অধুনাতন টীকাকার ভরতমল্পিক, আপন তের প্রতিপোষক প্রমাণ প্রদর্শন ব্যতিরেকেই, ভটি-াব্যকে ভর্ত্তহরিপ্রণীত বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন। ভর্ত্তৃ-রি ও এই কাব্যের রচয়িতা, উভয়েই অতি প্রধান বৈয়া-রণ হিলেন, বোধ হয়, এই সাদৃশ্য দর্শনেই, ভরতমল্লিকের ান্তি জন্মিয়াছিল। এন্থকর্ত্তা কাব্যের শেষ প্লোকে (৭) বিধিয়াছেন, আমি, বলভীপতি নরেন্দ্র রাজার রাজধানীতে াকিয়া, এই কাব্য রচনা করিলাম। যদি ভরতমল্লিক এই দাক দেখিতেন, তাহা হইলে তিনি ঐ ভ্রমে পতিত হই-চন না। যেরূপ জনঞ্জি আছে, তদমুসারে ভর্তৃহরি

⁽०) काव्यमिदं विह्तिं मया वस्थां चीधरचेननरेन्द्रपातितायाम् । कोर्त्तिरतो भवतासृपद्य तस्य चेमकरः चितियो यतः प्रसानामः॥

শ্বরং রাজা ছিলেন। যে ব্যক্তি শ্বরং রাজা হন, তান,
শ্বমুক রাজার রাজধানীতে থাকিয়া এই প্রস্থ রচনা করিলা
লাম, আপন এছে কদাচ এরপ নির্দেশ করেন না
ভরতমল্লিক শেষ চারি প্লোকের টীকা করেন নাই; তাহা
তেই বোধ হইতেছে, এই চারি প্লোক তাঁহার দৃষ্টিপং
পতিত হয় নাই।

ভটিকাব্যের রচনা স্থানে স্থানে অতি স্থল্পর । বিশেষতঃ, দ্বিভীয় সর্গের প্রারস্তে যে হৃদয়্রপ্রাহিণী শরদ্বর্ণন আছে, তদ্বারা গ্রন্থকর্তার অসাধারণ কবিত্বশক্তির বিলক্ষ্ণ প্রমাণ পাওয়া যাইতেছে। কিন্তু ব্যাকরণের উদাহরণপ্রদর্শন গ্রন্থকর্তার যেরপ উদ্দেশ্য ছিল, কবিত্বশক্তি প্রদর্শন ভাদৃশ উদ্দেশ্য ছিল না। এই নিমিত্তই, ভটিকাব্যে অধিকাংশ অত্যন্ত নীরস ও অত্যন্ত কর্কশ। যদি, তিনি ব্যাকরণের উদাহরণপ্রদর্শনে ব্যগ্র না হইয়া, কাব্যরচনার মনোনিবেশ করিতেন, ভাহা হইলে ভটিকাব্য উৎকৃষ্ট মহাকাব্য মধ্যে পরিগণিত হইতে পারিত, সন্দেশহ নাই।

এই বে ছয় মহাকাব্যের বিষয় উল্লিখিত হইল, ইহারাই অত্যন্ত প্রসিদ্ধ ও অত্যন্ত প্রচলিত। ভারতবর্ষের দর্ম প্রদেশেই এই ছয়ের সচরাচর অনুশীলন আছে।

রাঘবপাগুবীয়।

এই মহাকাব্যের প্রণালী স্বতন্ত্র। 🗪 দ্বা দ্বার্থ কাব্য। s অর্থে রামের চরিত্র বর্ণন প্রতিপন্ন হয়, অপর অর্থে াষ্ঠিরপ্রভৃতি পঞ্চ পাণ্ডবের বৃত্তান্ত বর্ণন লক্ষিত হয়। এই া এক শ্লোকে অর্থদ্বয় সমাবেশ দ্বারা রাঘব ও পাণ্ডব, গের রক্তান্ত বর্ণন সমাধান করিয়া, কবি স্বীয় অসাধারণ াতা প্রদর্শন করিয়াছেন। রাঘবপাগুবীয়ের উপক্রমণিকা শে অন্থকর্তার নাম কবিরাজ্বপণ্ডিত বলিয়া নির্দ্দিষ্ট ছে। কিন্তু বোধ হয়, ইহা তাঁহার উপাধি, নাম নছে। াধি দ্বারাই বিশেষ বিখ্যাত ছিলেন, এ নিমিত, এম্ব-গ আপন এন্থে উপাধিরই নির্দ্দেশ করিয়াছেন। কবি পে উপাধি অথবা নাম পাইয়াছিলেন, তদনুরূপ কবিত্ব-চ প্রাপ্ত হন নাই। ইনি কবিত্ব বিষয়ে, পূর্ব্বনির্দ্ধিট াদিগের অপেক্ষা, অনেক অংশে ন্যুন। এই কাব্য াদশ সর্গে বিভক্ত। পূর্ব্বোক্ত কাব্য সকল যেমন সর্ব্বত্ত লিভ, বাঘৰপাণ্ডবীয় সেব্ধপ নহে , ইহা অত্যন্ত বিরল-ার; এত বিরলপ্রচার, ষে অনেকে ইহার নামও অব-নহেন। কবিরাজ স্বএন্থে নির্দেশ করিয়াছেন, তিনি দেব রাজার সভায় ছিলেন এবং ভৎকর্ত্তৃক প্রোৎ-তে হইয়া রাম্ববপাগুবীয় রচনা করেন। কামদেব জয়ন্তী-ার রাজা ছিলেন এবং মধ্যদেশ হইতে সোমপায়ী

বেদজ্ঞ রাহ্মণ আনাইরাছিলেন। ইহা দেখিয়া অনেবে বোধ করেন, কামদেবেরই অপর নাম আদিস্থর। আদিস্থরেরও ম্বিদেশ হইতে বেদজ্ঞ রোহ্মণ আনরনের কিংবদন্তী আছে।

গীতগোবিন্দ।

গীতগোবিন্দ জয়দেবপ্রণীত। এই মহাকাব্যের রচন ঘেরপ মধুর, কোমল ও মনোহর, সংস্কৃত ভাষার সেরণ রচনা অতি অলপ দেখিতে পাওয়া যায়। বস্ততঃ, এরণ ললিতপদবিস্থাস, প্রবণমনোহর অনুপ্রাসচ্চটা ও প্রসাদ গুণ প্রায় কুত্রাপি লক্ষিত হয় না। তাঁহার রচনা ঘেরণ চমংকারিণী, বর্ণনাও তদ্ধেপ মনোহারিণী। জয়দেব রচন বিষয়ে য়েরপ অসামান্য নৈপুণ্য প্রদর্শন করিয়াছেন, ফা তাঁহার কবিত্বশক্তি তদনুবায়িনী হইত, তাহা হইদে তাঁহার গীতগোবিন্দ এক অপূর্বে মহাকাব্য বলিয়া পির্চাণত হইত। জয়দেব, কালিদাস তবভূতি প্রভৃতি প্রসাধান কবি হইতে অনেক ন্যুন বটে, কিন্তু তাঁহার কবিছ শক্তি নিতান্ত সামান্য নহে। বোধ হয়, বাঙ্গালা দেখে বত সংস্কৃত কবি প্রায়ভূতি হইয়াছেন, তল্মধ্যে ইনি দর্বেরণ্ড ইটা

গীভগোবিন আভোপাস্ত সঙ্গীতময়, কেবল মধ্যে ^ম

চ আছে। সঙ্গীতসমূহে রাগ তানের বিলক্ষণ সমা-আছে। অনেকানেক কলাবতেরা ভাষাসঙ্গীতের ় গীতগোবিন্দ গান করিয়া থাকেন। গীতগোবিন্দে ও ক্লফের লীলা বর্ণিত ছইয়াছে। জয়দেব পরম বৈফৰ নন, এবং প্রাণাট ভব্তিযোগ সহকারে, বৈষ্ণবদিগের াদেবতা রাধা ও ক্লফের লীলা বর্ণন করিয়াছেন। এরপ কিংবদন্তী আছে, এবং বৈষ্ণবসম্প্রাদায়ের কেরা স্কাদ্যাপি বিশ্বাস করিয়া থাকেন, যে গীতগোবি-ं "देहि पदपञ्चवसुदारस्" এই অংশটি क्रक अप्र-ার আবাদে আদিয়া স্বহস্তে লিখিয়া গিয়াছেন। রাধার ভঞ্জনের নিমিত্ত, যথন কৃষ্ণ অনুনয় করিতেছেন, সেই । "मम शिरसि मग्डनं देचि पदपञ्चवमुदारम्," এই ্য লিখিত আছে। ইহার অর্থ এই, (ক্লফ্ট রাধিকাকে তেছেন) তোমার উদার পদপল্লব আমার মস্তকে ণস্বরূপ অর্পণ কর। জয়দেব ''**ন**য়েন্ত্রন'' পর্যান্ত चेया, এই ভাবিया, "देहि पदपञ्जवसुदारम्" এই শ সাহস করিয়া লিখিতে পারিতেছেন না, যে প্রভুর কৈ পদার্পণের কথা কিরুপে লিখিব। পরিশেবে, মংশ লিখিতে কোনও ক্রমে সাহস না হওয়াতে, সে া লেখা রহিত করিয়া, তিনি স্নানে গমন করিলেন। ্কফ অত্যন্ত রদিক, সামাত্য নায়কের ত্যায় বর্দিভ দ, অপরাধ এছণ করেন এরপ নছেন; বরং তাঁছার

প্রণায়নীর পদপল্লব তদীয় মস্তকে অর্পিত বর্ণন করিলো প্রসন্নই হয়েন। অভএব তিনি, প্রস্তুত বিষয়ে স্বীয় পয়ি তোষ দর্শাইবার এবং পরমভাগবত জয়দেবকে চরিতার্গ করিবার নিমিত্ত, জয়দেবের স্নানোত্তর প্রত্যাগমনৌ কিঞ্চিৎ পূর্বের, তদীয় আকার অবলম্বন করিয়া, স্নাতপ্রতা াত জয়দেবের ন্যায়, তাঁহার গৃহে উপস্থিত হইলেন জয়দেবের ত্রাহ্মণী পদ্মাবতী রীতিমত অন্ন ব্যঞ্জন প্রস্তুর্গ করিয়া দিলেন। জয়দেবরূপী রুষ্ণ সেই অন্ন ব্যঞ্জন আহা করিলেন এবং আহারাস্তে জয়দেবের পুস্তক বহিষ্ট্ कतिया, "देक्ति पदपञ्चवसुदारस्" এই অংশ সহ লিখিয়া রাখিলেন। অনস্তর পদ্মাবতী, শব্যা প্রস্তুত করি তাঁহাকে শয়ন করাইয়া, রীতিমত তদীয় পাত্রাবশিষ্ট প্রদৰ্গী পাইতে বসিলেন। এই অবসরে প্রকৃত জয়দেবও ক করিয়া গৃহ প্রত্যাগমন করিলেন। জয়দেব জানিতেন, পर বতী প্রতিদিন পাত্রাবশিষ্ট প্রদাদ পাইয়া থাকেন, প্রা শ্বেও কদাপি তাঁহার আহারের পূর্বেজলগ্রহণ করেন ন সে দিবস তাঁহাকে অত্যে আহারে প্রবৃত্ত দেখিয়া, চমংগ হইয়া হেতু জিজ্ঞাসা করিলে, তিনি পূর্ব্বাপর সমস্ত ব্যাগ বর্ণন করিলেন। জয়দেব, যৎপরোনাত্তি বিস্ময়াপন্ন হই शुरुक উদ্ঘাটন করিয়া দেখিলেন,"**देसि परपञ्जवसुरार** এই অংশটি লিখিত রহিয়াছে। তিনি বুঝিতে পারিনে ভক্তবংগল ভগবান্ স্বয়ং আসিয়া লিখিয়া গিয়াছে

। শরনাগারে প্রবেশ করিয়া দেখিলেন, শয্যা পার্ভিড ছে, প্রভু অস্তর্হিত হইয়াছেন। তথ্ন, আপনাকে গরোনাস্তি ভাগ্যবান্ ও প্রভুর অসাধারণ ক্লপাপাত্র। করিয়া, জয়দেব প্রভুর প্রসাদ বলিয়া প্রাবভীর নাবশিষ্ট গ্রহণ দ্বারা আত্মাকে চরিভার্থ করিলেন। কেন্দ্রবিল্ গ্রামে জয়দেবের বাস ছিল (৮)। বীরভূমির নশ ক্রোশ দক্ষিণে, অজয় নদের উত্তরভীরে, কেন্দ্রলি ন যে গ্রাম আছে, জয়দেব তাহাকেই কেন্দ্রবিল্ নামে দিশ করিয়াছেন। প্র কেন্দ্রলি গ্রামে অদ্যাপি, জয়-রে স্মরণার্থে, প্রভিবৎসর পৌষমাসে বৈফবদিগের । হইয়া থাকে। জয়দেব কোন সময়ে প্রায়ভূতি ।ছিলেন, তাহার নিশ্চয় হওয়া হুর্ঘট।

খণ্ডকাব্য।

চানও এক বিষয়ের উপর লিখিত অনতিদীর্ঘ যে কাব্য, স্কারিকেরা তাছাকে খণ্ডকাব্য বলেন। খণ্ডকাব্য চাব্যের প্রণালীতে রচিত, কিন্তু মহাকাব্যের সম্পূর্ণ াক্রান্ত নহে। কোনও কোনও খণ্ডকাব্য, মহাকাব্যের সর্গবস্ধে বিভক্ত নয়। আর যে সকল খণ্ডকাব্য

⁽म) वर्षितं जयदेवजेन हरीरदं प्रवृष्णेन । जेन्दुनिस्वसस्द्रमभागरीहिसीरमस्येन ॥

[00]

সর্গবন্ধে বিভক্ত, ভাহাতেও সর্গসংখ্যা আটের আহি । নহে।

মেঘদূত।

সংস্কৃত ভাষায় যত খণ্ডকাব্য আছে, মেঘদূত সর্বাংশে সর্বোৎকৃষ্ট। এই দশাধিক শতশ্লোকাত্মক খণ্ডকাব কালিদাসপ্রণীত। মেঘদূত এরপ ক্ষুদ্র কাব্য বটে; কিঃ ইহার প্রায় প্রত্যেক শ্লোকেই অদ্বিতীয় কবি কালিদাদে অলোকিক কবিত্বশক্তির সম্পূর্ণ লক্ষণ স্কুম্পাই লক্ষিত হয়

কুরেরের ভূত্য এক যক্ষ, অত্যন্ত দ্রৈণতা বশতং, আগাকর্মে অবহেলা করাতে, কুবের তাহাকে এই শাপ দেন হ তোমাকে একাকী এক বংসর রামগিরিতে অবস্থিতি করিছে হইবেক। তদলুসারে, সে তথার আট মাস বাস করিয়, স্বীয় প্রিয়তমার অদর্শনত্বংখে উন্মন্তপ্রায় হয়। পরিশেষে আবাঢ়ের প্রথম দিবসে, নভোমগুলে নূতন মেঘের উদ্দদেখিয়া, বাহাজ্ঞানশূত্য হইল, আপন প্রিয়ার নিক্ষ সংবাদ লইয়া যাইবার নিমিত্ত, মেঘকে সচেতন বোদ সম্বোধন করিয়া, দেতিগুভারগ্রহণপ্রার্থনা জানাইল, এয় রামগিরি হইতে আপন আলয় অর্যান্ত পথ নির্দেশ করিয় দিতে আরম্ভ কুরিল। এই বিষয় অতি স্থানর রূপে মেছ

কালিদাস এই কাব্যে নানা গিরি, নদী, উপবন, গ্রাম, গের, ক্লের, দেবালয় ও রাজদানী এবং হিমালয়, অলকা, ক্লের আলয়, যক্লের ও যক্ষপত্মীর বিরহীবস্থা প্রভৃতির র্ণন করিয়াছেন। ঐ সমস্ত বর্ণনে এমন অসাধারণ কবিত্বাক্তি ও অনন্যসামান্য সন্থানয়তা প্রদর্শিত হইরাছে যে দি কালিদাস মেঘদূত ব্যতিরিক্ত অন্য কোনও কাব্য রচনা করিতেন, তথাপি তাঁহাকে অদ্বিতীয় কবি বলিয়া অঙ্গীনার করিত্বেত হইত। মেঘদূতের রচনা কালিদাসের আভাত্য কাব্যের রচনা অংশেক্ষা কিঞ্চিৎ তুরুহ।

ঋতুসৎহার।

কালিদাসপ্রণীত এই খণ্ডকাব্য ছয় সর্গে বিভক্ত। এক

ক সর্গে বধাক্রমে গ্রীন্ম, বর্ষা, শরৎ, হিম, শিশির, বসস্তু,

অতু বর্মিত হইয়াছে। যে স্বভাবোক্তি কাব্যের প্রধান

লক্ষার, ঋতুসংহার আফ্রোপাস্ত ভাহাতে অলক্ষ্ত।

স্তু রূপক, উৎপ্রেক্ষা প্রভৃতি অলক্ষার এতদ্দেনীয়

াকের অধিক প্রিয়, স্বভাবোক্তির চমৎকারিত্ব তাঁহাদের

দৃশ হাদয়ন্সম হয় না। এই নিমিত্ত, অনেকেই ইহাকে

কেই কাব্য বলেন না। কেহ কেহ ঋতুসংহারকে রয়্
শা, কুমারসম্ভব, মেঘদূত, অভিজ্ঞানশকুস্তুল, বিক্রমো
শী এই সকল সর্কোংক্রফ কাব্যের রচয়িতা কালিদাদের

প্রণীত বলিয়া অঙ্গীকার করিতে সন্মত নহেন। ঋতু সংহার রমুবংশ প্রভৃতি অপেক্ষা অনেক অংশে কুল বটে, কিন্তু যে সমস্ত গুণ থাকাতে, রমুবংশাদির এত আদ ও এত গোরব, কুসংস্কারবিবর্জিত ও সহাদমপদবীনে অধিরাট হইয়া, অভিনিবেশ পূর্বকি পাঠ করিলে, ঋতুসং হারে সে সমস্ত গুণের লক্ষণ সুস্পাই লক্ষিত হয়। অন্যাদ ঋতুর অপেক্ষা গ্রীষ্ম ঋতুর বর্ণন সাভিশায় মনোহর।

নলোদয়।

নলোদয়ের প্রত্যেক শ্লোক যমকালক্কারযুক্ত। এ কাব্য কালিদাসপ্রণীত। ইহাতে নল রাজার রুতা। সজ্জেপে বর্ণিত হইয়াছে। কালিদাস, যমকের দিকে সম্পূর্ণ দৃষ্টি রাখাতে, স্বপ্রণীত অন্যান্য কাব্যের ন্যা। নলোদয়কে স্বীয় অলোকিক কবিত্বশক্তির লক্ষণে লক্ষি করিবার অবকাশ পান নাই।

এরপ কিংবদন্তী আছে, কালিদাস ঘটকর্পরের গ খর্ম্ব করিবার নিমিত্ত নলোদর রচনা করেন। ঘটকর্পর কালিদাসের ন্যার, বিক্রমাদিত্যের নবরত্বের অন্তর্মবর্তী ইনি যমকালঙ্কারযুক্ত দ্বাবিংশতি শ্লোক রচনা করেন। ও দ্বাবিংশতিশ্লোকাত্মক কাব্যও ঘটকর্পর নামে প্রাসিধ্ ঘটকর্পরের, বিশেষ প্রশাংসা করা যায়, এমন কোনও ই। গ্রন্থকর্ত্তা শেষ শ্লোকে কহিয়াছেন, "বে কবি, যমক
থিয়া, আমাকে পরাজয় করিতে পারিবেক, আমি ঘটর্ণর অর্থাৎ কলদীর খাপরা দ্বারা তাহার বীরি বহন করিব"
)। কবির এই প্রতিজ্ঞাবাক, দর্শনে এক প্রকার স্পাই
াধ হইতেছে, ঘটকর্পরঘটিত প্রতিজ্ঞা দ্বারাই তাঁহার ও
হার কাব্যের নাম ঘটকর্পর হইয়াছে। এরপ কিংশ্বী আছে, ঘটকর্পরের এই গর্ষিত প্রতিজ্ঞা দর্শনে,
বপরবশ্ হইয়া, কালিদাদ নলোদয় রচনা করেন। ঘটরি অপেক্ষা নলোদয়ে যমকের আড়মর অনেক অধিক।
। প্র কিংবদন্তী সমূলক হয়, তাহা হইলে, কালিদাদ
কর্পরের যমকরচনাগর্ম্ব বিলক্ষণ থর্ম্ব করিয়াছিলেন।

সূর্য্যশতক।

স্থ্যাশতক মন্ত্রতউপ্রশীত। মন্ত্রতউ এক শত শ্লোকে গ্রি ও ডদীয় মণ্ডল, কিরণ, অর্থ ও সারথির বর্ণনা ও করিয়াছেন। এরূপ কিংবদন্তী আছে, মন্ত্রতউ এই শ্লোকাত্মক স্থ্যান্তব রচনা কদিয়া কুষ্ঠ ব্যাধি হইতে হইয়াছিলেন। স্থ্যাশতকের রচনা অতিপ্রগাঢ় ও

⁽८) जीवेय वेन कविना यमकैः परेखा। तक्षे वहेयसदकं घटकपरेख ़ी

অভিস্কার; ইহাতে অসাধারণ কবিত্বশক্তিও প্রদর্শিত হইয়াছে। কিন্তু ময়ুরভটের বেরূপ রচনাশক্তি ও বেরূপ কবিত্বশক্তি ছিন, তাহা বিষয়াস্তরে প্রয়োজিত হইলে, তিনি স্থ্যশতক অপেক্ষা অনেক অংশে উৎকৃষ্ট কার্ রচনা করিয়া যাইতে পারিতেন।

কোষকাব্য।

প্রস্প্রনিরপেক শ্লোকসমূহকে কোষকাব্য বলে।

অমৰুশতক।

সংস্কৃত ভাষার যত কোষকাব্য আছে, তন্মধ্য অমণ্
শতক সর্ব্বোৎকৃষ্ট। এই শতপ্লোকাত্মক কাব্যের রচন
অতি উত্তম। রচনা দেখিয়া স্পক্ট বোধ হর, ইহা প্রাচ্ন
এন্থ। এই কাব্যে অসাধারণ কবিত্বশক্তি প্রদর্শিত ক্র
রাছে। কালিদাসের এন্থ পাঠ করিলে, অন্তঃকরণে ফ্রে
অনির্বাচনীয় আছ্লাদের সঞ্চার হয়, অমকশতকের পাঠ
তদনুরূপ হইয়া থাকে। অমক যে এক জন অতি প্রশ্ কবি ছিলেন, তাহার কোনও সংশয় নাই। অমক অদি
লিখিয়া যাইতে পারেন নাই, যথার্থ বর্টে; কিন্তু বা
লিখিয়া বিয়াছেন, তাহাতেই তাঁহার প্রধান কবি বর্গি
চিরক্ষরণীয় হইধার সম্পূর্ণ সংস্থান হইয়াছে। অমকশতক আদিরসাশ্রিত কাব্য; কিন্তু এক টীকার, প্রথমতঃ আদিরস পক্ষে ব্যাখ্যা করিয়া, পক্ষান্তরে ান্তিরসাশ্রিত করিয়া ব্যাখ্যা করিয়াছেন। টীকাকার, মকশতকের শান্তি পক্ষে ব্যাখ্যা করিতে উত্তত হইয়া, বল উপহাসাম্পদ হইয়াছেন। তাঁহার ত্রভাগ্য ক্রমে, চটি প্লোকেরও শান্তি পক্ষে সম্যক অর্থসমারেশ হইয়া ঠ নাই।

শান্তিশতক

এই শাস্তরসাশ্রিত শতক কাব্য শিহ্নণপ্রণীত। শিহ্নণ ম কবি ছিলেন; এবং অর্থলাভার্থে পরোপাসনা, লোভ, মাসঙ্গ ইত্যাদির নিন্দা, এবং বিষয়ের অনিত্যতাপ্রতি-ন ও মদৃজ্যালাভসন্তোব প্রভৃতির, স্বীয় শতকে সং-র ন্যায় বর্ণন করিয়াছেন। শাস্তিশতকের রচনা উত্তম। মায় পর্য্যালোচনা করিলে, শাস্তিশতক উৎকৃষ্ট কাব্য।

তিশতক, শৃঙ্গারশতক, বৈরাগ্যশতক।

নীতিশতকে নানা স্থনীতির উপদেশ আছে। শৃঙ্গার কের সমুদার শ্লোক আদিরসাশ্রিত 👂 বৈরাগ্যশতক সর্বাংশে শান্তিশতকের তুল্য। তিনের মধ্যে নীতিশতং সর্বোৎকৃষ্ট। এই তিন শতকের রচয়িতার নাম ভর্ত্ইরি ভর্ত্ইরির রচনার্থ উত্তম এবং কবিত্বশক্তিও বিলক্ষণ ছিল অনেকে কহিয়া থাকেন, এই ভর্ত্ইরিই বিক্রমাদিজ্যে সহোদর। যেরূপ জনশ্রুতি আছে, তদনুসারে বিক্রম দোদর ভর্ত্ইরি অত্যন্ত নীতিপরায়ণ ও অত্যন্ত লৈ ছিলেন এবং পরিশেষে, স্ত্রীর উপর বিরক্ত হইয়া, বৈরাগ্ অবলম্বন করিয়াছিলেন। তাঁহার অবস্থার দহিত তি কাব্যার্থের যেরূপ ঐক্য ইইতেছে, তাহাতে এই তিন কাম্ তাঁহার রচিত, এ কথা নিতান্ত অসক্ষত বোধ হয় না।

আর্য্যাসপ্তশতী।

এই সপ্তশতশ্লোকাত্মক কাব্য আর্য্যা ছন্দে রচিত, দিমিত ইহা আর্য্যাসপ্তশতী নামে প্রসিদ্ধ । প্রস্তৃক্র দাম গোবর্দ্ধন, এ নিমিত্ত গোবর্দ্ধনসপ্তশতী নামে নির্দিষ্ট হইয়া থাকে। গোবর্দ্ধন সংকবি ছিলেন । তাঁহা রচনা সরল ও মধুর। জয়দেব গীতগোবিন্দের প্রারাজ্ব গোবর্দ্ধনের সবিশেষ প্রশংসা করিয়াছেন (১০)।

⁽१०) प्रङ्कारोत्तरसत्त्रमेयरवनेराचार्व्यगोवर्तन-साद्वीं कोऽपि न विश्वतः।

[69]

গদ্যকাব্য।

কাদম্বরী।

সংস্কৃত ভাষায় গদ্য সাহিত্য গ্রন্থ অধিক নাই। বে ক খানি গদ্যএন্থ দেখিতে পাওয়া ৰায়, তন্মধ্যে কাদ-সর্বশ্রেষ্ঠ। কাদম্বরী গদ্যে রচিত বর্টে, কিন্তু অভি ান কাব্যু মধ্যে পরিগণিত। এই গ্রন্থ বাণভট্টপ্রণীত। ভট মহাকবি ও সংস্কৃত রচনায় মহাপণ্ডিত ছিলেন। শোস্ত্রে যে সকল বিষয়ের বর্ণন করিতে হয়, বাণভট আন্তে ভাষার কিছুই পরিত্যাগ করিয়া যান নাই। া যাহা বর্ণন করিয়াছেন, তাহাই অসাধারণ। তাঁহার া সকল কাৰুণ্য, মাধুর্য্য ও অর্থের গাস্ভীর্য্যে পূর্ণ। রচনা মধুর, কোমল, ললিত ও প্রগাঢ়। রচনার গ্ৰ প্ৰশংসা এই, বাণভট্ট যে সকল শব্দ বিন্যাস মাছেন, ভাহার একটিও পরিবর্ত্তসহ নছে। এই প্রন্থে চন্দ্রাপীড়নামক রাজকুমার ও গন্ধর্মরাজ াথের কন্যা কাদম্বরীর বৃত্তান্ত বর্ণিত হইয়াছে। এই ফাব্যের যে স্থলে, মহাশ্বেভানাম্নী এক ভপস্বিনী, পীড়ের নিকট, পরিদেবিতপরিপূর্ণ আত্মরতান্ত বর্ণন তছেন, ঐ অংশ এমন মনোহর যে বোধ হয় কোনও ার কোনও কবি ভদপেকায় অধিক মনোছর রচনা বা

[&\rangle]

বর্ণনা করিতে পারেন নাই। মহাশ্বেভার উপাখ্যান এ অত্যুৎক্রট কাবেয়ুর সর্কোৎকৃষ্ট ভাগ।

কাদম্বরী, এইরূপ অশেষগুণসম্পন্ন হইয়াও, দোষস্পা শৃত্য নহে। বাণভট মধ্যে মধ্যে শব্দশ্লেষ ও বিরোধাড়া ঘটিত রচনা করিয়াছেন। ঐ সকল স্থলে প্রস্কৃত্তি। অসাধারণ নৈপুণ্য প্রদর্শিত হইয়াছে; এবং ভারতবর্ষী পণ্ডিভেরাও ঐরূপ রচনাকে চিত্তরঞ্জন জ্ঞান করিয়া থাকে যথার্থ বটে; কিন্তু ঐ সকল স্থল যে হুরুছ্ক ও নীরা ইহা অরশ্যই স্বীকার করিতে হইবেক। এভদ্বাতিরিং মধ্যে মধ্যে দীর্ঘসমাস্ঘটিত অতি দীর্ঘ দীর্ঘ বাক্য আছে এই দ্বিষ দোষস্পর্শ না থাকিলে কাদম্বরীর ন্যায় কার্য গ্রন্থ অতি অম্পে পাওয়া যাইত।

পুর্জাগ্য ক্রমে, বাণভট আপন গ্রন্থ সমাপন করি বাইতে পারেন নাই। তিনি যে পর্যান্ত লিখিয়া গির ছিলেন, তাহা কাদম্বরীর পূর্ব্বভাগ নামে প্রসিদ্ধ। ত পুত্র উপাখ্যানের উত্তরভাগ সঙ্কলন করিয়াছেন। বিপুত্র পৈতৃক অলেকিক কবিত্বশক্তি বা অসাধারণ রদ্দ করের উত্তরাধিকারী হয়েন নাই। উত্তর ভাগ কোন ক্রমে পূর্ব্ব ভাগের যোগ্য নহে।

দশকুমারচরিত।

দশকুমারচরিত এক অত্যুত্তম গদ্য গ্রন্থ। কিন্তু গাংশে তাদৃশ উৎকৃষ্ট নয়। রচনা অতি উত্তম বটে, কাদম্বরীর রচনার স্থায় চমৎকারিণী ও চিত্তহারিণী । এই প্রস্থেনানা বিষয়ের বর্ণনা আছে; কিন্তু বর্ণনা ৰ ষেত্রপ কেভুকবাহিনী, সেত্রপ রসশালিনী নছে। করিলে প্রীত ও চমৎকৃত হওয়া যায়, দশকুমারচরিত প অন্থ নয়। প্রান্থকর্তার নাম দণ্ডী। দশকুমারচরিতশব্দে দশ কুমারের বুত্তাস্তবর্ণনাত্মক বুঝায়। কিন্তু যে দশকুমারচরিত দণ্ডিপ্রাণীত বলিয়া লত, তাহাতে আর্ট কুমারের চরিত্র মাত্র বর্ণিত আছে। াং, এই গ্রন্থ অসম্পূর্ণবং বোর হইতেছে। ষেরূপে র আরম্ভ হইতেছে, তাহা কোনও ক্রেমে সংলগ্ন হয় না। আমরা যে সকল ব্যক্তি ও বৃত্তান্তের বিষয় বিসর্গও অবগত নছি, এককালে দেই সকল বিষয়ের ষ্ট হইতেছে। সমাপ্রিও আরস্তের ত্যায় অসংলগ্ন। া কুমারের বৃত্তাস্ত সম্পূর্ণ রূপে বর্ধিত হইল, এরূপ তি হয় না। এইরূপে দশকুমারচরিতের উপক্রম ও ংহার উভয়ত্রই ন্যুনতা প্রতিভাসমান হইতেছে। ^{5পক্রমের ন্যুনতাপরিহারের নিমিন্ত}ু, পূর্বাপীঠিকা এক উপক্রমণিকা রচিত হইয়াছে। এই উপক্রম-

ণিকাতে, দশ সংখ্যা পূর্ণ করিবার নিমিত্ত, আর ফ্লা কুমারের বৃত্তান্ত সুক্ষলিত হইরাছে। এই অংশও দণ্ডী নিজের রচিত বলিয়া প্রচলিত। কিন্তু উপক্রমধ্রিকার ও দশকুমারচরিতের রচনা পরস্পার এরূপ বিসংবাদিনী যে ও উভয় এক লেখনীর মুখ হইতে বিনির্গত বলিয়া কোনং ক্রমে প্রভীতি হয় না।

দশকুমারচরিতের ধেরপ এক উপক্রমণিকা আন্নৈ সেইরপ এক পরিশিষ্টও আছে। ইহার নাম শেষ অর্থা কথার অবশিষ্ট অংশ। এই অবশিষ্ট অংশ চক্রপাণি নিক্ষিতনামক এক মহারাষ্ট্রীয় ব্রাহ্মণের রচিত। আমরা পর্যান্ত এই পুস্তক দেখিতে পাই নাই। স্ক্রিবিধ্যা সংক্ষৃতবেতা প্রীয়ুত হোরেস্ হেমেন্ উইলসন্ ঐ পুরু দেখিরাছেন। তিনি কহেন যে চক্রপাণি নিজ্ক রচ উৎকর্ষ সাধনের নিমিত্ত, যথেষ্ট প্রায় করিয়াছিলেন, তি তাহার রচনা দণ্ডীর রচনা অপেকা নিক্ষট। বিশেষ উপাধ্যানভাগ এমন অসার ও অকিঞ্চিৎকর যে করিলে পরিপ্রাম পোষায় না।

অনেকে অনুমান করেন, দণ্ডী গ্রন্থকর্তার নাম না ইহা তাঁহার উপাধি মাত্র। যাহারা, সংসারাশ্রম পরিডা করিয়া, সন্মাস ধর্ম গ্রহণ করে, তাহাদিগকে দণ্ডী কা এই অনুমান নিভান্ত অসঙ্গত বোধ হয় না। আর, ব গুন্থকর্তার বিষয়ে বে এক কিংবদন্তী প্রচলিত আছে, তা

ও উক্ত অনুমানের বিলক্ষণ পোষকতা হইতেছে। দণ্ডী-গের নিয়মিত বাসস্থান নাই, তাঁহারা সর্বাদা পর্যাচন রন; কেবল বর্ষা চারি মাদ, পর্য্যটনৈ অশেষ ক্লেশ দয়া, কোনও গৃহস্থের আবাদে আশ্রয় গ্রহণ করেন। মাদের দণ্ডীও গৃহস্থের ভবনে বর্ষা চারি মাস বাস রতেন, এবং সেই অবকাশে এক এক খানি গ্রন্থ রচনা . রতেন। যে বার যে গৃহস্থের আশ্রয়ে থাকিতেন, বর্ষাস্তে ম্থানকালে, স্বরচিত পুস্তক খানি তাহার হস্তে সমর্পণ রয়া যাইতেন। দশকুমারচরিত দণ্ডীর এক বর্ষা চারি সের রচনা। আর, কাব্যাদর্শ নামে দণ্ডীর যে অলঙ্কার ্ব আছে, ভাহাও আর এক বর্ষা চারি মাসের পরিশ্রম। । এই কিংবদন্তী অমূলক না হয়, তাহা হইলে, দশ-ারচরিতের উপক্রমে ও উপসংহারে যে ন্যুনতা আছে, হারও এক প্রকার কারণ উপলব্ধ হইতেছে। যেহেতু, विषयी देश अभितिमा कतिया थारकन, मुखी रा वर्षार्ड কুমারচরিত রচনা করেন, সেই বর্ষাতেই তাঁছার প্রাণ-াঁগ হয়। এই নিমিত্ত, তিনি দশকুমারচরিতের কথা াপ্ত ও পূর্বাপরসংলগ্ন করিয়া যাইতে পারেন RI

[७१]

বাসবদন্তা।

বাসবদতা স্থবন্ধুনামক কবির রচিত। স্থবন্ধু স্বএনে সমাপিকাতে, বরকচির ভাগিনের বলিয়া, আত্মপার প্রাদান করিয়াছেন (১১)। বরকচি বিক্রেমাদিত্যের ন রত্নের অন্তর্মন্তী ছিলেন। বিক্রেমাদিত্যের মৃত্যুর গ স্থবন্ধু বাসবদতা রচনা করেন; এবং গুণগ্রাহী বিক্রমাদি

বাণভটের কাদম্বরী ও স্থবন্ধুর বাদবদত্তা এ জ গ্রন্থ এক প্রণালীতে রচিত। বোধ হয়, এয়প রচণাপ্রণা স্থবন্ধুই প্রথম উদ্ভাবিত করেন। বাণভট যে বিক্রমা ত্যের সময়ের অনেক পরে প্রাম্নভূত হইয়াছিলেন, তার কোনও সংশয় নাই। এই গ্রন্থে কল্পকিত্রনামক ও রাজকুমার ও বাদবদতানাদ্দী এক রাজকুমারীর বৃত্ত বর্মিত হইয়াছে।

স্থবন্ধু বাসবদন্তারচনাতে যথেক নৈপুণ্য প্রদ করিয়াছেন। কিন্তু তাঁহার তাদৃশ অসাধারণ কবিত্বশ ছিল না। কি রচনা, কি বর্ণনা, কি কথাযোজনা, মুগ

⁽११) इति श्रीयरक्तिभागिनेवसुवन्युविरचिता वासवर स्थायिका समाप्रा।

⁽१२) सारसवत्ता निष्ठता नवका विखसन्ति चरित नो कर्ष सरसीप, की तिथेषं गतवति भुवि विक्रामादित्ये॥ ठानदर्ग

দত্তা সর্বাংশেই মধ্যবিধ। পাঠ করিলে, এই এছ্

দ কবির রচিত বলিয়া প্রতীতি হয় না। কিন্তু এন্থের

ন্ত যে কয়েকটি শ্লোক আছে, এবং এন্থের মধ্যে কবি

শ্লোকে কুপিত সিংহের বর্ণনা করিয়াছেন, তাহা

শ্ভ মনোহর।

চম্পুক্বি।

মামরা বে কয়েক খানি চপুকাব্য দেখিয়াছি, তন্মধ্যে ব প্রশংসার যোগ্য এক খানিও নাই। কালিদাস ও উ, ভারবি ও ভবভূতি, মাঘ ও গ্রীহর্ষদেব প্রভৃতি। কবিরা এ বিষয়ে হস্তক্ষেপ করেন নাই। আর, কোনও প্রধান কবি চপ্পুকাব্য রচনা করিয়া থাকেন, ছা অজ্ঞাপি বিজ্ঞমান নাই, নয় এপর্য্যস্ত উদ্ভাহর নাই।

দামরা যে সাত খানি চম্পুকাব্য দেখিয়াছি, তন্মধ্যে জবিরচিত অনিকদ্ধচিতে সর্ব্বোৎকৃষ্ট। দেবরাজের দক্তি ও কবিত্বশক্তি নিতান্ত সামান্ত ছিল না। যে দেবকে বিদ্যোৎসাহিতা ও গুণাঞাহিতা বিষয়ে দ্বিতীয় দিনিত্য বলিয়া গণনা করিতে হয়, তাঁহার রচিত মারণ ও চিরঞ্জীববিরচিত বিদ্যোদতর কিণী নিতান্ত চম্পুনহে। এতদ্যাতিরিক্ত, অনস্তুভত প্রণীত গরত, তামুদত্তবিরচিত কুমারভাগবিদ্ধি, রামনাথক ত

চক্রশেধরচেভোবিলাসচম্পূ, এবং রূপগোস্বামিলি। বা আনন্দরন্দাবনচম্পু, এই কয়েক চম্পুকে কাব্য নাচ নির্দ্দেশ করিতে পারা যায়, এমন কোনও বিশেষ গ দেখিতে পাওয়া যায় না।

দৃশ্য কাব্য।

মহাকাব্য প্রভৃতির কেবল প্রবর্ণ হয়, এই নির্মি উহাদিগকে প্রব্য কাব্য বলে। নাটকের, প্রব্য কারে ম্যায়, প্রাবণ হয় ; অধিকন্তু, রঙ্গভূমিতে নট দ্বারা অজি কালে, দর্শনও হইয়া থাকে। এবং ইছাই নাটনে প্রধান উদ্দেশ্য। এই নিমিত্ত নাটকের নাম দৃশ্য কাং দৃশ্য কাব্য দ্বিষিঃ রূপক ও উপরূপক। রূপক না প্রকরণ প্রভৃতি দশবিধ। উপরূপক নাটিকা, ত্রো প্রভৃতি অফীদশবিধ। আলঙ্কারিকেরা দৃশ্য কাব্যের[ু] যে অফীবিংশতি বিভাগ নির্দেশ করিয়াছেন, তাহা বিশেষভেদগ্রাহক তাদৃশ কোনও লক্ষণ নাই। সর্ব্বপ্রা ভেদ নাটকের যে সমস্ত লক্ষণ নিরূপিত আছে, 🖣 কাব্যের অন্তান্ত ভেদও সেই সমুদয় লক্ষণে আক্রা আলক্কারিকেরা অন্যান্য ভেনের, অক্কশখ্যার ন্যুনা প্রভৃতি যে কয়েকটি বিশেষ লক্ষণ নিরূপণ করিয়াট তাহা এত দামভি যে দে অনুরোধে, দৃশ্য কাব্যের প

গতি বিভাগ কম্পনা না করিয়া, যাবতীয় দৃশ্য কাব্যকে দ নাটক নামে নির্দেশ করিলেই স্থায় ভুগত হইত। প্রত্যেক নাটকের প্রারম্ভে স্থত্তবার, অর্থাৎ প্রধান স্বীয় সহচরী অথবা অন্য তুই এক সহচরের সহিত ামিতে প্রবিষ্ট হইয়া, কবির ও নার্টকের নাম নির্দ্দেশ এবং প্রদক্ষ ক্রমে নাটকীয় ইতিবৃত্ত অবতীর্ণ করিয়া এই অংশকে প্রস্তাবনা কছে। যে স্থলে ইতি-। স্থুল স্থুল অংশের এক প্রকার শেষ হয়, সেই সেই পরিচ্ছেদ কম্পিত ছইয়া থাকে। এ পরিচ্ছেদের অহ্ন। নাটকে এক অবধি দশ পর্য্যন্ত অঙ্কসংখ্যা তে পাওয়া যায়। নাটক আন্তোপান্ত গদ্যে রচিত, । মধ্যে মধ্যে শ্লোক থাকে। আদি অবধি অস্তু পৰ্য্যস্ত ভাষায় রচিত নহে, ব্যক্তিবিশেষের বক্তব্য ভাষা-বে সঙ্কলিত হইয়া থাকে। রাজা, মন্ত্রী, ঋষি, পণ্ডিত, প্রভৃতি প্রধান পুরুষেরা সংস্কৃতভাষী ; স্ত্রী, বালক, প্রধান পুৰুষদিগের ভাষা প্রাক্তত। প্রাক্তত সংস্কৃতের ংশ। আলঙ্কারিকেরা এই অপভংশের, কিঞ্চিৎ 🕨 বৈলক্ষণ্য নিবন্ধন, সপ্তদশ ভেদ কম্পানা করিয়া-ন্ত্রীলোকের মধ্যে পণ্ডিভা তপস্বিনীরা সংস্কৃত-। অশুভ ঘটনা দ্বারা সংস্কৃত নাটকের উপসংহার নাই। সংস্কৃত ভাষার আদির্দ্র, বীররস ও ৰ প্ৰধান নাটক অনেক।

মহাকাব্য, খণ্ডকাব্য, ও কোষকাব্যের ন্যায়, সংগ্রাষায় নাটকত্ব অনেক আছে। কালিদাস প্রত্ প্রধান কবিগণ এই ভাষায় নাটক রচনা করিয়া গিয়াছে এক সময়ে এই ভারতবর্ষে রঙ্গভূমিতে সংস্কৃত নাটা অভিনয় হইত।

ভারতবর্ষীর পণ্ডিতেরা ভরতমুনিকে সংস্কৃত না শাব্রের সৃষ্টিকর্তা বলিয়া নির্দেশ করিয়া থাকেন। তাঁহ ইহাও কহেন, এই ভরতমুনি অপসরাদিণের নাট্যব্যাপা উপদেষ্টা। অপসরারা, ইহার নিকট উপদিষ্ট হা দেবরাজ ইন্দ্রের সভার, নাটকের অভিনয় করিয়া থাট এরপ নাট্যাচার্য্য যে কোনও কালে বিপ্তমান ছিলেন এ বিষয়ে সংশার হইতে পারে না। কিন্তু, সংস্কৃত আল রিকেরা, স্ব স্থান্থে, মধ্যে মধ্যে, ভরতস্থত্র বলিয়া প্রা উদ্ধৃত করিয়া থাকেন। ভাহাতে ইহাই প্রভীয়মান ভেছে, নাটকরচনা বিষয়ে সংস্কৃত ভাষায় এক ও প্রাচীন গ্রন্থ ছিল; ভারতবর্ষীর পণ্ডিভেরা, অবিসংখা প্রামান্য সংস্থাপনের নিমিত্ত, প্র গ্রন্থ শ্রন্থিশীত বা নির্দেশ করিয়াছেন।

কেবল এই বিষয়েই নছে, অক্সান্থা বিদ্যা বিষয়ে প্রথা লক্ষিত হইতেছে। সর্বাপেকা প্রাচীন ব পাণিনি মুনির প্রণীত বলিয়া প্রচলিত। ঐ ব্যাব বার্ত্তিক কাত্যায়ন মুনির রচিত, ভাষ্য পতঞ্জলি ীত, বলিয়া প্রাসিদ্ধ। যে সর্পরাজ অনস্তদেব, পুরাণের অনুসারে, সনাগরা সদ্বীপা পৃথিবী ক্লুণমণ্ডলের উপর । করিয়া আছেন, পভঞ্জলি তাঁহার অবতার। সর্পের তার মুনির রচিত বলিয়া, ঐ ভাষ্য কৃণিভাষ্য নামে যাবতীয় পুরাণ মহর্ষি ব্যাদের রচিত বলিয়া লিত। ধর্মশাস্ত্র সকল মনু, অত্রি, হারীত, যাজ্ঞবল্ক্য ্যতি এক এক মুনির রচিত বলিয়া প্রসিদ্ধ। সাঞ্জ্য পাতঞ্জন, ন্যায় ও বৈশেষিক, বেদাস্ত ও মীমাংসা ছয় দর্শন, যথাক্রমে, কপিল ও পতঞ্জলি, গোতম ও দ, ব্যাস ও জৈমিনি, এই ছয় মুনির নামে প্রচলিত। দকল যে ইদানীস্তন কালের রচিত গ্রন্থ, তাছার সংশয় নাই-এত ইদানীয়ন, যে কোনও মও তন্ত্রে ইঙ্গরেজদিগের ও লণ্ডন নগরের নির্দ্দেশ তে পাওয়া যায় (১০)। এই সকল তন্ত্ৰ শিবপ্ৰোক্ত য়া প্রচলিত। বেদ সকল সৃষ্টিকর্ত্তার নিজের রচিত য়া প্রসিদ্ধ। এই রূপে, নব্য কাব্য ও সংগ্রহ গ্রন্থ ', প্রায় সমুদয় সংস্কৃত শাস্ত্রই এক এক মুনির, অথবা তার, প্রণীত বলিয়া পরিগণিত হইয়া থাকে।

⁽१३) पूर्व्याकाये नवसतं षडभीतः प्रकीर्त्तितः। फिरक्नभाषया तन्त्रास्तेषां संसाधनाङ्ग्रीतः। अक्षिपा मग्रुकानाञ्च संरामेष्ट्रपराजिताः। द्वःरेजानव षट् पञ्च सम्युजाद्यापि काविनः॥ स्म्युज्जाद्यापि काविनः॥ स्म्युज्जाद्यापि काविनः॥

অভিজ্ঞানশকুস্তল, বিক্রমোর্বশী, ঘালবিকাগ্নিমিত্র।

সংস্কৃত ভাষায় যত নাটক আছে, শকুন্তলা সে সকল অপেক্ষা সর্বাংশে উৎকৃষ্ট। এই অপূর্ব্ব নাটকের, व्यापि व्यवि व्यस्त शर्यास, मर्खाः गर्सा क्रसम्बन्धः। যদি শত বার পাঠ কর, শত বারই অপূর্ব্ব বোগ হইবেক। এই নাটক সাত অক্টে বিভক্তী ইহাতে তুষান্ত ও শকুন্তলার বৃত্তান্ত বর্ণিত হইরাছে। প্রথম অক্ষে হুমান্ত ও শকুন্তলার সার্কাৎকার, তৃতীয় অঙ্কে উভয়ের মিলন, চতুর্থে শকুন্তলার প্রস্থান, পঞ্চমে শকুন্তলার হুত্মন্ত-সমীপগমন ও প্রত্যাখ্যান, ষষ্ঠে রাজার বিরহ, সপ্তমে শকুস্তলার সহিত পুনর্মিলন; এই সকল স্থলে কালিদাস স্বীয় অলেকিক কবিত্বশক্তির পরা কাষ্ঠা প্রদর্শন করিয়া-ছেন। উত্তম সংস্কৃতজ্ঞ সদ্ধদয় ব্যক্তি অভিজ্ঞানশকুন্তন পাঠ করিলে, অবশ্যই তাঁহার অন্তঃকরণে এই প্রতীতি জন্মিবেক যে মনুষ্যের ক্ষমতায় ইছা অপেক্ষা উৎকৃষ্ট রচন সম্ভবিতে পারে না। বস্তুতঃ, কালিদাসের অভিজ্ঞান শকুন্তল অলোকিক পদার্থ।

ভারতবর্ষীয়েরাই যে, স্থদেশীয় কাব্য বলিয়া, শকুন্তলার এত প্রশংসা ক্ষেন, এমন নছে; দেশান্তরীয় পণ্ডিতেরাও শকুন্তলার এইরূপ, অথবা ইহা অপেকা অধিক, প্রশংসা রেয়াছেন। নানাবিদ্যাবিশারদ, অশেবদেশভাষাজ্ঞ, পুবিখ্যাত সর্ উইলিয়ম্ জোপা, শকুন্তলা খ্রাঠ করিয়া, এমন প্রীত হইয়াছিলেন যে কালিদাসকে স্বদেশীয় অদ্বিতীয় াবি শেক্সপীরের তুল্য বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন; এবং দৰ্মনিদেশীয় অতি প্ৰধান পণ্ডিত ও অতি প্ৰধান কবি, ' গটি, শকুন্তলার সর্ উইলিয়ম্ জোপাকত ইঙ্গরেজী অনু-াদের কর্ম্তরকৃত জর্মন অনুবাদ পাঠ করিয়া, লিখিয়াছেন, 'যদি কেছ বসস্তোর পুষ্পা ও শারদের ফল লাভের অভিলাষ গরে, যদি কেই চিত্তের আকর্ষক ও বলীকরণকারী বস্তুর মভিলাষ করে, যদি কেছ প্রীতিজ্ঞানক ও প্রাফল্লকর বস্তুর মভিলাষ করে, যদি কেছ স্বর্গ ও পৃথিবী এই ছুই এক ামে সমাবেশিত করিবার অভিলাষ করে, তাহা হইলে, ছ অভিজ্ঞানশকুম্বল! আমি তোমার নাম নির্দেশ করি; । वर **जाहा इहेरलहे मकल वला इहेल"।** यिन विरम्भीय লাক, অনুবাদের অনুবাদ পাঠ করিয়া, এত প্রীত ও এত মংকৃত হইতে পারেন, তবে স্বদেশীয়েরা যে, সেই বিষয় ল পুস্তকে পাঠ করিয়া, কত প্রীত ও কত চমৎক্ত ্ইবেন, ভাহা সকলেই অনুভব করিতে পারেন।

বিজ্ঞার্কেশী পাঁচ অঙ্কে বিভক্ত। এই নাটকে পুরুরবাঃ

উর্বানীর বৃত্তান্ত বর্নিত হইরাছে। বিজ্ঞার্কেশীর আড্রো
ান্ত শকুন্তুলার স্থায় সর্বাঙ্কস্থলর নহে। কিন্তু, চতুর্ব

বিক্লে, উর্বানীর বিরহে একান্ত অধীর ও বিচেতন হইনা,

পুররবাং, তাঁহার অন্নেষণের নিমিত্ত, বনে বনে অফু করিতেছেন, এই বিষয়ের যে বর্ণন আছে, তাহা অত্যন্ত মনোহর—এমন মনোহর, যে কোনও দেশীয় কোনও কবি উহা অপেকা অধিক মনোহর বর্ণনা করিতে পারেন না, এ কথা বলিলে নিভান্ত অসঙ্গত হইবেক না।

কালিদাদের তৃতীয় নাটক মালবিকাগ্নিমিত্র। মান বিকাগ্নিমিত্র উত্তম নাটক বটে, কিন্তু অভিজ্ঞানশকুন্তল ও বিক্রেমোর্বাদী অপেকা অনেক ন্যুন। এই নাটক পাঁচ অঙ্কে বিভক্ত। ইহাতে মালবিকা ও অগ্নিমিত্র রাজায় উপাখ্যান বর্দিত হইয়াছে। বোধ হয়, কালিদাস সর্বপ্রথয় এই নাটক রচনা করিয়াছিলেন।

বীরচরিত, উত্তরচরিত, মালতীমাধব।

এই তিন নাটক ভবভূতির প্রাণীত। ভবভূতি এক জন
জাতিপ্রধান কবি ছিলেন। কবিত্বশক্তি অনুসারে গণন
করিতে হইলে, কালিদাস, মাঘ, ভারবি, প্রীহর্ষদের
ও বাণভটের পর তদীয় নাম নির্দ্দেশ, বোধ হয়, অসক।
নহে। ভবভূতির রচনা হৃদয়গ্রাহিণী ও অভিচমং
কারিণী। সংস্কৃত ভাষায় যত নাটক আছে, ভবভূতি
প্রণীত নাটকজায়ের রচনা সে সকল অপেকা সম্বিধ

খুগাঢ়। ইনি, অন্য অন্য কবির ন্যায়, মধুর ও কোমল চনাতে প্রবীণ ছিলেন; অধিকস্তু, ুইঁহার নাটকে য় মধ্যে অর্থের যেরূপ গান্তীর্য্য দেখিতে <u>পাতরা</u> া, অহা অহা কবির নাটকে প্রায় সেরপ দেখিতে পাওয়া ানা। ভবভূতির বিশেষ প্রশংসা এই যে, অন্য অন্ত বরা, অনাবশ্যক ও অনুচিত স্থলেও, আদিরস অব-র্ণ করিয়াছেন ; কিন্তু ইনি সে বিষয়ে অত্যন্ত বধান ; স্থানাবশ্যক স্থলে, কোনও ক্রেমে, স্বীয় রচনাকে াদিরসে দূষিত করেন নাই, আবশ্যক স্থলেও অভ্যন্ত সাব-ন হইয়াছেন। ইঁহার যেমন বিশেষ গুণ আছে, মনই কয়েকটি বিশেষ দোষও আছে। রচনার দোষে ানে স্থানে অর্থবোধ হওয়া তুর্ঘট; এবং ঘধ্যে মধ্যে ক্ষত ও প্রাক্কত ভাষাতে এমন দীর্ঘসমাসঘটিত লা আছে যে তাহাতে **অর্থ**বোধ ও র**সাস্বা**দ বিষয়ে লক্ষণ ব্যাঘাত জন্মিয়া উঠে। নাটকের কথোপকথন লে দেরপে দীর্ঘসমাসঘটিত রচনা অত্যস্ত দৃষ্য।

বীরচরিতে রাদের বিবাহ অবধি মাবণবধের পর অনোধ্যা ত্যাগমন ও রাজ্যাভিষেক পর্যান্ত বর্দিত হুইরাছে। বীররসাঞ্জিত নাটক। বীরচরিতে ভবভূতির কবিত্ব-কৈ বিলক্ষণ প্রাদর্শিত হুইয়াছে; কিন্তু যে সমস্ত গুণ কিলে নাটক প্রাদংসনীয় হয়, সে সমুদ্য তাদৃশ অধিক ই। তথাপি, রামচরিতের এই অংশ দীইয়া অন্য অন্য কবি যে সকল নাটক রচনা করিয়াছেন, বীরচরিত সকল অপেকা স্কাংশে উত্তম, তাহার সন্দেহ নাই।

উত্তরচরিতে বারচরিতবর্ণিতাবশিষ্ট রামচরিত বর্ণি হইরাছে। উত্তরচরিত তবভূতির সর্বপ্রধান নাটন এই নাটক করুণারসাশ্রিত। বর্ণনা সকল কারুণ্য, মাগু ও অর্থের গান্তীর্য্যে পরিপূর্ণ। রচনা মধুর, ললিত প্রগাঢ়। কলতঃ, শকুন্তলা আদিরস বিষয়ে যেমন সর্ব্বে কট নাটক, উত্তরচরিত করুণরস বিষয়ে সেইরপ। নাটক পাঠ করিলে, মোহিত হইতে ও অঞ্চপাত করি হয়।

মালতীমাণব আদিরসাশ্রিত নাটক। তবভূতি নাটকে আপন রচনাশক্তি ও কবিত্বশক্তির এক প্রেদর্শন করিয়াছেন; এবং প্রস্তাবনাতে গর্বিত বাবে কছিরাছেন, " যাছারা আমার এই নাটকে অন প্রদর্শন করে, তাছারাই তাছার কারণ জানে, তাদের নিমিত্ত আমার এ যত্ন নয়; আমার কাব্যের তা গ্রহণসমর্থ কোনও ব্যক্তি এই অসীম ভূমগুলের কো স্থানে থাকিতে পারেন, অথবা কোনও কালে উং ছইতে পারেন" (১৪)। কিন্তু ভবভূতি, অসাগারণ উং

⁽१४) ये नाम के चिदिह्ह नः प्रथयन्यवर्ता ज्ञानन्ति ते किमिष तान् प्रति नेष यह्नः । ज्ञात्मस्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधन्त्री भाजो हायं निर्विधिषुता च प्रस्वी ॥

পোদনের নিমিত্ত বেরূপ প্রায়াস পাইয়াছিলেন, এবং ভাবনাতে ষেরূপ অসদৃশ অহস্কার প্রদর্শন করিয়াছেন, লতীমাধ্ব তত উত্তম নাটক হয় নাই। ইহাতে রচনার তুর্য্য ও মাধুর্য্য আছে এবং অর্পেরও অসাধারণ গান্তীর্য্য हिं, वर्षार्थ वर्ष्ट ; किंखु कोलिमाम इचास ও भकूसनात, নাহর রূপে নিবদ্ধ করিয়াছেন, মালতী ও মাধবের বৃত্তান্ত াভূতি সেরূপ মনোহর করিতে পারেন নাই। বিশে-ঃ, অর্থবোধের কট ও অভিদীর্ঘ সমাস প্রভৃতি ভূতির যে সমস্ত দোষ আছে, সে সমুদ্র মালতী-াবেই ভূরি পরিমাণে উপলব্ধ হয়। আমরা, মালতীমাধব ১ করিয়া, ভবভূতির কবিত্বশক্তি ও রচনাশক্তির ^{গংসা} করিতে প্রস্তুত আছি; কিন্তু মালতীমাধবকে যুৎকৃষ্ট নাটক বলিয়া অঞ্চীকার করিতে কোনও ক্রমে ত নহি। ভবভূতি যত অহস্কার ককন না কেন, হার মালতীমাধব কালিদাসের শকুস্তুলা, 🔌 হর্মদেবের বিলী এবং তাঁহার নিজের উত্তরচরিত অপোকা অনেক শে ম্যুন। ভবভূতি স্বপ্রণীত নাটকত্রয়ের মধ্যে, বোধ মালতীমাধবকেই সর্কোৎকৃষ্ট স্থির করিয়াছিলেন। গাঠকবর্গের বিবেচনা যেরূপ পক্ষপাতশূন্য হয়, কর্তাদের নিজের বিবেচনা সর্বাদা সেরূপ হইয়া উঠে

না। বোধ হয়, সন্ধায় পাঠক মাত্রেই উত্তরচরিতকে ভূতির সর্ব্বোৎকুট নাটক জ্ঞান করিয়া থাকেন।

রত্নাবলী ও নাগানন।

রত্বাবলী এক অত্যুৎকৃষ্ট নাটক—এমন উৎকৃষ্ট অনেকে রভাবলীকে যাবতীয় নাটক অপেক্ষা সম মনোহর জ্ঞান করিয়া থাকেন। সে যাহা হুট্ উৎকর্ষ অনুসারে পৌর্বাপর্য্য স্থির করিতে হই শকুন্তলার পরে রভাবলীর নাম নির্দ্দেশ হওয়া উচি রত্বাবলী চারি অঙ্কে বিভক্ত। এই নাটকে বৎসরা সাগরিকার বুতান্ত বর্ণিত হইয়াছে। রাজদর্শনান সাগরিকার বিরহ, সাগরিকার সহিত অকমাৎ রাষ সাক্ষাৎকার, ও রাজমহিষী বাসবদত্তার বেশে সাগরি রাজসমাগম, দ্বিতীর ও তৃতীর অক্ষে এই সকল বি বর্ণন কালে, কবি যেরূপ কৌশল ও যেরূপ ক্রি প্রদর্শন করিয়াছেন, শকুন্তলা ভিন্ন আর নাটকেই সেরূপ দেখিতে পাওয়া যায় না। নন্দও উত্তম নাটক বটে, কিন্তু রত্নাবলী অপেকা আ ब्रुग्न । রত্বাবলী ও নাগাননদ শ্রীহর্ষদেবপ্রণীত। শ্রীহর্ষ

শ্রীরের রাজা ছিলেন। কছলণরাজতরক্ষিণীর সপ্তম তরক্ষের্ধদেবের রক্তান্ত বর্ণিত আছে। রাজতরক্ষিণীতে রত্বালী ও নাগানন্দের উল্লেখ নাই, কিন্তু এরপ লিখিত। নিছে, প্রীহর্ষদেব অশেষদেশভাষাজ্ঞ, সর্ব্ব ভাষায় সংকবি। সমস্ত বিদ্যার আধার ছিলেন (১৫)। রত্বাবলী ও নাগান্দের প্রস্তাবনাতে রাজজীহর্ষদেবপ্রশীত বলিয়া নির্দেশ।ছে, এবং রাজতরক্ষিণীতেও রাজা শ্রীহর্ষদেব সংকবি লিয়া লিখিত আছে; স্থতরাং, রাজতরক্ষিণীর শ্রীহর্ষদ্ব যে রত্বাবলী ও নাগানন্দের রচয়িতা, এরপ নির্দেশ নতান্ত অসক্ষত বোর হয় না। বিশেষতঃ, আর কানও প্রস্তে আর কোনও রাজা শ্রীহর্ষদেবের উল্লেখ দখিতে পাওয়া যায় না। শ্রীহর্ষদেব, কিঞ্চিৎ অধিক মাট শত বংসর পূর্বের, কশ্মীরের সিংহাসনে আরোহণ গরিয়াছিলেন।

এরপ প্রবাদ আছে, ধাবক নামে এক কবি রত্বাবলী

নাগাননদ রচনা করেন; শ্রীহর্ষদেব, অর্থ প্রদান দ্বারা

াবককে সন্মত ও সন্তুষ্ট করিয়া, ঐ হুই নাটক আপন নামে
প্রচলিত করিয়াছেন। প্রাসিদ্ধ প্রধান আলঙ্কারিক মন্মট
চটের লিখন দ্বারাও এইরূপ প্রতিপন্ন হইয়া থাকে (১৬)।

⁽१५) सीऽशेवदेशभाषातः सर्वभाषास सत्विः।

कत्स्विवद्यानिधिः प्राप व्याति देशान्तरेव्विष ॥ ७।६११।
(१६) श्रीन्तविदेर्धानकादीनासिव धनसः।

काराधिकारे

কিন্তু ধাবক ও শ্রীহর্ষদেবে সহজ্র বৎসরেরও আ

অন্তর। উভয়ে এক সময়ের লোক নহেন। কালিদার্

মালবিকাগ্নিমির্ট্রের প্রেক্তাবনাতে, প্রাচীন নাটকলেখা
বলিয়া, ধাবকের নামোল্লেখ আছে (১৭)। তদমুশারে

ধাবক বিক্রমাদিত্যের সময়েরও পূর্বের প্রান্তর্ভূত হইয়া
ছিলেন। স্থতরাং, ঐ লোকপ্রবাদ ও তন্মূলক মন্মটে
দিল্ধান্ত অমূলক বোধ হইতেছে। আর, যখন শ্রীহর্ষ
দেবের সৎকবিত্ব ও অশেষবিদ্যাশালিত্ব প্রামাণিক পুরার্

এন্থ দ্বারা প্রতিপন্ন হইতেছে; তখন, অমূলক লোকপ্রবাদ
ও তন্মূলক মন্মটের লিখন রক্ষার নিমিত্ত, ধাবকান্তঃ
কম্পনা করিয়া, শ্রীহর্ষদেবের কবিকীর্তি লোণ কর
কোনও ক্রমে স্থায়ানুগত বোধ হইতেছে না।

য়চ্ছকটিক।

মৃক্ছকটিকের রচনা ও বর্ণনা দেখিলে স্পান্ট বোধ হয় ইহা অতি প্রাচীন গ্রন্থ। বোধ হয়, সংস্কৃত ভাষায় একং যত নাটক আছে, মৃক্ছকটিক সর্ব্বাণেক্ষা প্রাচীন। গ্রন্থ কর্ত্তার নাম শৃক্তক। শৃক্তক, বিক্রমাদিত্যের পূর্ব্বে, ভূমওণে

⁽१७) प्रधितयश्यां भावकसौमिञ्जकविषुच्चादीनां प्रवश्चानिः क्रस्य वर्त्तमानकनेः काखिदासस्य कतौ विं कतो बद्धमानः।

ছুর্ভ হইয়াছিলেন (১৮)। যৃচ্ছকটিকলেখক সংক্রি

বংক্ত রচনায় অভিপ্রবীণ ছিলেন। এই নাটকের

কুষানে অভি উৎক্রুষ্ট বর্ণনা আছে
কুষানে সকল

তর্মুক্র; আফ্রোপান্তের রচনা অভি প্রাঞ্জল। সমুপর্য্যালোচনা করিলে, যৃচ্ছকটিক অভি উত্তম কাব্য

া; কিন্তু সর্কাংশে প্রশংসনীয় নাটক বলিয়া গণনীয়
তে পারে না। ইহা অবশ্যই স্বীকার করিতে হইবেক,
কটিক নাটকাংশে শকুন্তলা, রত্বাবলী ও উত্তরচরিত
পক্ষা অনেক ন্যুন।
প্রভাবনাতে যৃচ্ছকটিক শুদ্রকপ্রশীত বলিয়া নির্দেশ

হ। কিন্তু, প্রভাবনার সমুদ্র অংশ বিবেচনা করিলে,

কে রাজার গ্রন্থকর্তৃত্ব বিষয়ে নানা সংশ্র উপস্থিত

.হ। পেন্তু, প্রভাবনার সন্ধার অংশ বিবেচনা কারলে, কি রাজার গ্রন্থকর্তৃত্ব বিষয়ে নানা সংশয় উপস্থিত । প্রস্তাবনাতে লিখিত আছে, "গজেব্রুগমন, চকোর-ন, পূর্ণচক্রবদন, স্থঘটিতকলেবর, অগাধবুদ্ধিশালী

तिष्य वर्षसस्खेषु कर्नयतिषु पार्थिय।
तिष्यते च दशन्यूने ह्यस्यां भृति भविष्यति ॥
स्रद्धको नाम वीराणामधिषः सिद्धसत्तमः।
न्यपान् सर्वान् पापरूपान् विद्वतान् यो इनिष्यति ॥
चित्रतायां समाराध्य नस्तते भूभरापसः।
ततस्तिषु सहस्रेषु दशाधिकशतत्वे ॥
भविष्यं नन्दराज्यञ्च चाण्क्यो यान् इनिष्यति ।
याक्ततीर्थं सर्वपापनिर्मुक्तिं योऽभिनस्ति ॥
ततस्तिषु सहस्रेषु सहस्रास्यधिकेषु च ।
भविष्यो विक्रमादित्यो राज्यं सोऽल प्रनस्ति ॥
कूमादिक्रां स्थ यूषुरावस्थां ॥ ।

শূদ্রক নামে প্রাসদ্ধ কবি ছিলেন" (১৯)। "শূদ্রক र পুত্রকে নিংহাদনে অধিষ্ঠিত দেখিয়া, মহানমান্ত্রে অর্থমেশ যজ্ঞ ক্রেরিয়া, এবং এক শত বৎসর দশ*্*দি আয়ুঃ লাভ করিয়া, অগ্নিপ্রবেশ করিয়াছেন"(২০) ু শু রাজা, কবি ও অগাধবুদ্ধিশালী হইয়া, গজেন্দ্রগা চকোরনয়ন, পূর্ণচত্র্রদন, স্থ্ঘটিতকলেবর ইত্যাদি বিশে দ্বারা আপন গ্রন্থে আপনার বর্ণন করিবেন, সম্ভব ৫ হয় না। বিশেষতঃ, এক শত বৎসর দশ দিবস অ লাভ করিয়া, অগ্নিপ্রবেশ দ্বারা স্বীয় প্রাণত্যাগের বি স্বত্রন্থে নির্দেশ করা কোনও ক্রমে সংলগ্ন ছইতে পা ইহাতে, অনায়াদে এরূপ অনুমান করা ধাই পারে, মৃচ্ছকটিক শূদ্রক রাজার প্রণীত নছে, অথবা, প্রস্ত নাংশ শৃদ্রকের মৃত্যুর পর অন্য দ্বারা রচিত ও মৃচ্ছকটি যোজিত হইয়াছে। কিন্তু, প্রস্তাবনা ও নাটকের রনচ এরপ সৌসাদৃশ্য যে এই ছুই বিষয় বিভিন্ন লেখনীর হইতে বিনির্গত, এরূপ প্রতীতি হওয়া হুর্ঘট। বিশেষ প্রস্তাবনা গ্রন্থকর্তা ভিন্ন অন্য ব্যক্তি দারা লিখিত ৷ এরপ ব্যবহার অদৃষ্টচর ও অঞ্চতপূর্ব। সংস্কৃত নাটা

बन्ध्वा चायुः मताब्दं दमदिनवहितं सूद्रकोऽनिं प्रवि

⁽१८) एतत्कविः किल दिरहेन्द्रगतिसकोरने तः परिपूर्धेन्दुसुखः सुवियस्य। दिजसुख्यतमः कविवभूव प्रियतः सुद्धक इत्यगाधसन्तः। (२०) राजानं वीक्य प्रसंपरमसुद्येनास्त्रभेधेन चेद्वा।

প্রস্তাবনা নাটকের অবয়ব স্বরূপ, ভাছা অন্য ব্যক্তি দারা ক্ললিত হওয়া কোনও ক্রমে সম্ভব বোধ হয় না।

যুদ্রারাক্ষস।

মুদ্রারাক্ষস বিশাখদেবপ্রণীত। প্রস্তাবনায় নির্দ্ধিট

বাছে, বিশাখদেব রাজার পুত্র। বিশাখ সৎকবি ও সং
ত্বরচনা বিষয়ে অতি প্রবীন ছিলেন। কিন্তু তাঁছার রচনা

ম্যক প্রাঞ্জল ও ললিত নছে। যাহা হউক, মুদ্রারাক্ষস এক

ত্যুত্তম নাটক। চাণক্য, নন্দবংশকে রাজ্যচ্যুত করিয়া,

ন্দুগুপ্তকে পাটলিপুত্রের সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত করেন।

কন্তু রাজ্যত্রট নন্দবংশের অমাত্য রাক্ষস অত্যন্ত প্রতু
রায়ণ ও নীতিবিদ্যায় অন্ধিতীয় ছিলেন। তিনি চন্দ্র
প্রের প্রতিপক্ষ থাকিলে, তদীয় সিংহাসন বন্ধুমূল হয়

া; এই নিমিত্ত চাণক্য, স্বীয় অসাধারণ কৌশলে ও

তি প্রভাবে, রাক্ষসকে চন্দুগুপ্তের প্রধান অমাত্যের পদ

নীতার করান। এই বিষয় মুদ্রারাক্ষসে স্কুন্দর রূপে

নিত হইয়াছে।

[४०]

বেণীসংহার।

বেণীসংহার ৯ ভটনারায়ণপ্রণীত। এরপ কিংব 🚜 আছে, রাজা আদিশূর কান্যকুজ্ঞ হইতে গৌড়দেনুনি পঞ্চ ত্রাহ্মণ আনয়ন করেন, ভউনারায়ণ তাঁছাদের মং এক জন। এই নাটক নাটকের প্রায় সমুদয় লক্ষণে অলক্ষত সাহিত্য দর্পণের ষষ্ঠপরিচেছদে, নাটক সংক্রাপ্ত বিষয়ে উদাহরণ প্রদর্শনের নিমিত্ত, বেণীসংহার হইতে যত উদ্ধ হুইয়াছে, অন্য কোনও নাটক হুইতে তত নহে। কিন্তু ভট নারায়ণের রচনা প্রাচীন কবিদের রচনার ন্যায় মনো হারিণী নছে। রচনার ন্যুনতা প্রযুক্তই বেণীদংহা নাটকের সমুদয় লক্ষণে আক্রান্ত হইয়াও, কাব্য অং শকুস্তলা, রত্নাবলী, উত্তরচরিত, মৃচ্ছকটিক, মুদ্রারাক্ষ প্রভৃতি অপেকা অনেক ক্যুন। বেনীদংহার বীররসাঞ্রি নাটক। ইহাতে কুৰুপাণ্ডবযুদ্ধ বর্ণিত হইয়াছে। স্থা **म्हात्न दीत ७ करून तम मः क्रांख উত্তম উত্তম तम्ना**ः উত্তম উত্তম বর্ণনা আছে।

বে সকল নাটকের বিষয় উল্লিখিত হইল, সংস্কৃত তার্ব তত্ত্বাতিরিক্ত অনেক নাটক আছে; বাহুল্যভয়ে এ স্থা সে সকলের উল্লেখ করা গেল না। সমুদ্রে বিরাশি খার্চ নাটকের নাম গ্রাওয়া বিয়াছে; তন্মধ্যে তেত্তিশ খার্চ র বিদ্যমান বলিয়া বিজ্ঞাত; অবশিষ্ট সকলের
পেকে ও সাহিত্য দর্পণে উল্লেখ আছে, এবং
কা প্রদর্শনের নিমিত্ত, অনেকেরই কোনও কোনও
ল উদ্ধৃত হইয়াছে। কুন্দমালা, উদাত্তরাঘব,
নরামায়ণ প্রভৃতি কতিপায় নাটকের উদ্ধৃত অংশ
নে বোধ হয়, ঐ সকল নাটক অত্যুৎকৃষ্ট।

উপাখ্যান।

গণ্পাচ্চলে বালকদিগের নীতি শিক্ষার নিমিন্ত, মনুষ্য,
পক্ষীর কণ্পিত বৃত্তান্ত ঘটিত যে সকল গ্রন্থ

ह, অথবা গ্রন্থকর্তারা স্বেচ্চা অনুসারে নানা লেকিক
লোকিক বৃত্তান্ত ঘটিত যে সকল গ্রন্থ রচনা করিয়াভারতবর্ষীয় পণ্ডিভেরা উহাদিগকেও কাব্য নামে
শি করিয়া থাকেন । কিন্তু, কি কথাযোজনা, কি রচনা,
বর্ণনা, কোনও অংশেই উহারা কাব্যনামের যোগ্য
। সংস্কৃত উপাধ্যানগ্রন্থ কেবল গদ্য, কেবল পদ্য, ও
পদ্য উভয়াত্মক আছে । কিন্তু তাহারা প্রকৃত রূপে
শ্রণীতে পরিগণিত হইতে পারে না । এই নিমিত্ত
ছলে তাহাদের উল্লেখ করা যায় নাই । উপাধ্যানের
বিশেষ প্রাসিদ্ধ, এক্ষণে তাহাদের
সংক্ষেপে উল্লেখিত হইতেছে ।

[bx]

পঞ্চন্ত্র ও হিতোপদেশ।

পঞ্চতন্ত্রের রচনাপ্রণালী দৃটে স্পট বোৰ হা 🖋 অতি প্রাচীন এন্থ। প্রাচীন বলিয়া উহার রচনা অভ সরল। এরূপ সরল সংস্কৃত গ্রন্থ আর দৃষ্টিগোচর। না। পঞ্চামের প্রাচীনত্ব ও তরিবন্ধন সরলত্ব ব্যট আর কিছুই বিশেষ প্রশংসনীয় নহে। রচনার মাগু नारे, कथारगाजनात हार्जुर्ग नारे ; अधिकखु, मरध्य म বহুতর অসার ও অসম্বন্ধ কথা আছে। বোধ হয়, কো বিশেষ গুণ নাই বলিয়াই, পঞ্চন্ত্ৰ একান্ত উপো হুইয়া আছে; অন্ত অন্ত এন্তের ন্যায়, সচরাচর স প্রচলিত নছে। লিপিকরপ্রমাদ বশতঃ, পঞ্চন্ত্রের স্থা স্থানের পাঠ এমন অপভংশিত হইয়া গিয়াছে যে অর্থ ও ভাৎপর্য্যগ্রহ হওয়া হুর্ঘট। পঞ্চতন্ত্রে, বিষ্ণুশর্মা রাজপুত্রগণ শ্রোতা এই প্রণালীতে, মনুষ্য, পশু, গ উপাখ্যানচ্ছলে, নীতি উপদিষ্ট হইয়াছে। সংস্কৃতবেত্তারা পঞ্চন্ত্রকে পারদ, আরব, প্রভৃতি দেশীয় উপাখ্যানের মূল বলিয়া নির্দেশ করিয়া

ছিতোপদেশকর্ত্তা গ্রন্থারন্তে প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন, তন্ত্রের ও অন্যান্য গ্রন্থের সার সঙ্কলন করিয়া, লি^{র্চি} আরম্ভ করিলাম (২১)। বাস্তবিক, হিতোপদেশ

⁽२१) पञ्चतन्त्रात्त्रधात्यसाद्यन्यादाहस्य विख्यते।

ন্ত্রর প্রতিরূপ স্বরূপ। পঞ্চতন্ত্রের দোষ গুণ অধিকাংশই চাপুনেশে লক্ষিত হয়। বিশেষ এই, পঞ্চতন্ত্র অপেকার পর্টেশের রচনা কিঞ্চিৎ গাঢ়, এবং প্রস্তুত বিষয়ের গদ্য অথবা দৃটীকরণ বাসনায়, নানা প্রামাণিক এন্থ তে প্রমাণ, দৃষ্টান্ত, উদাহরণ স্বরূপ উত্তম উত্তম প্রোক ইক উদ্ধৃত হয়াছে। কিন্তু প্রস্তুকর্তার সম্যক সহৃদয়র অসন্তাব প্রযুক্ত, অনেক স্থলেই উদ্ধৃত প্রোক সকল দংলগ্ন হইয়া উঠিয়াছে; সেই সেই স্থলে প্রকৃত বিষয়ের হত ঐ সকল প্রোকের কোনও সম্বন্ধ দেখিতে পাওয়ার না। প্রন্থকর্ত্তা লিখিয়াছেন, উপাখ্যানচ্ছলে বালকগকে নীতি উপদেশ দিতেছি (২২)। কিন্তু, মধ্যে মধ্যে দিরস্ঘটিত এক একটি অতি অল্লীল উপাখ্যান আছে। লক্দণের নিমিত্ত নীতিপুস্তক লিখিতে আরম্ভ করিয়া, বুঝিয়া, প্রস্থকর্ত্তা ঐ সকল অল্পীল উপাখ্যান সঙ্কলন রিলেন, বলিতে পারা যায় না।

কোন ব্যক্তি পঞ্চন্ত্র ও হিতোপদেশ রচনা করিয়ান, তাহার স্থিরতা নাই। অনেকে বিষ্ণুশর্মাকে এই ভয় এন্থের রচয়িতা বলিয়া থাকেন; কিন্তু তাহার কোনও।
মাণ নাই। পঞ্চন্ত্রে ও হিতোপদেশে বিষ্ণুশর্মা বক্তা,
জপুত্রগণ শ্রোভা; বোধ হয়, তদ্ধশনেই বিষ্ণুশর্মা

⁽२२) बन्नवे भाजने लग्नः संस्कारी नान्यया भवेत्। कथाष्ट्रजेन बाजानां नीतिस्तदिह कैष्यते॥

গ্রন্থকর্ত্তা বলিয়া তাঁহাদের জান্তি জন্মিয়া থাকিবেক।
ছই প্রন্থ আন্ত্যোপান্ত গল্পে রচিত, কেবল মধ্যে মধ্যে এ
ন্তরের শ্লোক উদ্ধৃত হইয়াছে। লল্প্লাল হিতোপান্ত নারায়ণপণ্ডিতপ্রণীত বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন (২৩
কিন্তু, তাহার কোনও প্রমাণ পাওয়া যায় না।

কথাসরিৎসাগর।

কথাসরিৎসাগর সোমদেব ভউপ্রণীত। উহা অতি রুর
পুস্তক। সোমদেব স্বপ্রদ্রের শেবে লিখিয়াছেন, কশ্মীরে
অধিপতি অনস্তদেবের মহিবী স্থ্যবিতীর চিত্তবিনোদ সম্প
দনের নিমিত্ত, আমি এই গ্রন্থ রচনা করিলাম। কল্পানের নিমিত্ত, আমি এই গ্রন্থ রচনা করিলাম। কল্পানের নিমিত্ত, আমি তরক্ষে অনস্তদেব ও স্থ্যবিতীর বৃত্তা।
আছে। রাজতরঙ্গিণীর গণনা অনুসারে, অনস্তদেব কিঞ্চি
অধিক আটি শত বৎসর পূর্বের, কশ্মীরমণ্ডলের সিংহাসলে
অধিরত হইয়াছিলেন। তদনুসারে, সোমদেবের কথাসারিং
সাগর আটি শত বৎসরের পুস্তক। এই অনস্তদে বরত্বাবলী
কর্ত্তা শ্রিহিদেবের পিতামহ। কথাসরিৎসাগরে যে সম্ব

⁽२३) काह्र समें चीनारायण पंडित ने नीतिशास्त्रि कथानिकों संपद्ध करि संस्कृतमें एक प्रक्रण वर्णा . नाम वितोपदेश धर्त्री। ब्रोबनीडि।

াখ্যান আছে, তাহা তাদৃশ মনোহর নহে। এ সমুদ্র ল অলোকিক ও অভুত ব্যাপারে পরিপূর্ণ। অলোকিক অতি বৃত্তান্ত ঘটিত উপাখ্যান সকল এক সময়ে সাতিশ্র নাহর ছিল, কিন্তু একণে আর তাহাদের তাদৃশ চমং-রজনকত্ব নাই। সোমদেবের লিখন অনুসারে বোধ হই-ছে, বৃহৎকথা নামে এক বহুবিস্তৃত উপাখ্যান এন্থ ছিল, নি তাহার সারসংগ্রহ করিয়াছেন। এই গ্রন্থ আভ্যো-ন্ত পদ্যে রচিত।

বহুবিস্তৃত সংস্কৃত সাহিত্যে যে সমস্ত প্রধান গ্রন্থ ছে, তাহাদের বিষয় সংক্ষেপে উল্লিখিত হইল। স্কৃত কবিরা আদিরস, করুণরস ও শাস্তরস সংক্রাস্ত যে ল বর্ণনা করিয়াছেন, তাহা যেরপ মনোহর, তাঁহাদের ছা, বীর, ভয়ানক প্রাস্তৃতি রস সংক্রোস্ত বর্ণন তাদৃশা াহর নহে। কলতঃ, তাঁহারা মধুর ও ললিত বর্ণনাতে গে নিপুণ, উদ্ধত, ওজস্বী ও প্রাণাচ বর্ণনাতে তদমুরূপ গুণ নহেন। নায়ক নায়িকার প্রথমদর্শন, পূর্বরাগ, া, বিরহ, প্রবাস, শোক, বৈরাগ্য, উপবন, বসস্তু, লতা, গ প্রস্কৃতির বর্ণনা যেরপ হৃদয়্রগ্রাহিণী; য়ুদ্ধ, ভয়,

[64]

উপসংহার।

সংস্কৃত ভাষা ও সংস্কৃত সাহিত্যশাস্ত্রের ি সজ্জেপে উল্লিখিত হইল। অনেকে সংস্কৃত ভাষার জ শীলন একান্ত অকিঞ্চিৎকর জ্ঞান করিয়া থাকেন। নিমিত্ত, সংস্কৃত ভাষার কলোপধায়কতা বিষয়ে সংক্ষেকিঞ্চিৎ বর্ণন করিয়া প্রস্তাব সমাপন করিব।

সংস্কৃত ভাষার অনুশীলনে নানা ফল। ইয়ুরোপে শ
বিস্তার যে ইয়তী প্রীর্দ্ধি হইয়াছে, সংস্কৃত ভাষার অ
শীলন ভাহার মূল। ইয়ুরোপীয় পণ্ডিভেরা সংস্কৃত ভাষার
অনুশীলন দ্বারা অস্ত অস্ত ভাষার মূলনির্ণয়, স্বরূপর্প
জ্ঞান ও মর্প্যোস্ডেদে সমর্থ হইয়াছেন; এবং এই পৃথি
যে নানা মানবন্ধাতির আবাসন্থান, ভাহাদের কে কে
প্রেণীর অন্তর্গত, কে কোন দেশের আদিম নিবাসী লো
কে কোন প্রদেশ হইতে আসিয়া কোন প্রদেশে য
করিয়াছে; ইত্যাদি নির্দ্ধারণ করিতে আরম্ভ করিয়াছে
কিন্তু, ইয়ুরোপীয় শন্ধবিস্তা যাবৎ সংস্কৃত ভাষার সহার
প্রাপ্ত হয়ুরাই, তত দিন পর্যান্ত এই সকল বিষয় অন্ধর্গ
আচ্ছর ছিল; এই নিমিত্তই, ভাক্তর মোক্ষ র্প
সংস্কৃত ভাষাকে সকল ভাষার ভাষা বলিয়া নির্দে
করিয়াছেন। •

দ্বিতীয়তঃ, সংস্কৃত ভাষার অনুশীলনের এক অতি প্রধান এই বে, ইদানীস্তন কালে ভারতবর্ষে হিন্দী, বাঙ্গালা ৰু ্ যে সকল ভাষা কথোপকথনে ও লীেকিক ব্যবহারে চলিত আছে, দে সমুদয় অতি হীন অবস্থায় রহিয়াছে। া একপ্রকার বিধিনির্বন্ধ স্বরূপ হইয়া উঠিয়াছে যে, রি পরিমাণে সংস্কৃত কথা লইয়া ঐ সকল ভাষায় ন্নবেশিত না করিলে, তাহাদের সমৃদ্ধি ও জীর্দ্ধি পাদন করা বাইবেক না। কিন্তু, সংস্কৃত ভাষায় পূর্ণব্লপ ব্যুৎপত্তি লাভ ব্যভিরেকে, তৎসম্পাদন কোনও ত সম্ভাবিত নহে। ইহা অবশ্য স্বীকার করিতে হই-ক, ভারতবর্ষীয় সর্ব্বসাধারণ লোক বিজ্ঞানুশীলনের কল-গগী না হইলে, ভাহাদের চিত্তক্ষেত্র হইতে চিরপ্রস্কৃত গংস্কারের সমূলে উদ্মূলন হইবেক না; এবং হিন্দী, াঙ্গালা প্রভৃতি তত্তৎ প্রদেশের প্রচলিত ভাষাকে ারস্বরূপ না করিলে, সর্ব্বসাধারণের বিষ্ঠানুশীলন সম্পন্ন ওয়া **সম্ভ**ব ন**হে। স্থত**রাং, ইয়ুরোপীয় কোনও ভাষা ইতে পুরাবৃত্ত পদার্থবিত্তা প্রস্তৃতি ঐ সকল প্রচলিত গৰায় সক্কলিত হওয়া অভ্যাবশ্যক। কিন্তু, সংস্কৃত না গনিলে, কেবল ইঙ্গরেজী শিখিয়া, আমরা যে ঐ মছোপ-ারক গুৰুতর বিষয় সম্পন্ন করিতে পারিব, ইছা কোনও তে সম্ভাবিত নছে।

ত্তীয়তঃ, পূর্বকালীন লোকদিগেরঃআচার, ব্যবহার,

রীডি, নীডি, ধর্ম, উপাসনা ও বুদ্ধির গতি প্রভৃতি বি সকল মনুধ্যমাত্তের অবশ্যত্তের, ইছা বোধ হয়, স্কুরু অঙ্গীকার করিয় থাকেন। অহ্য অহা দেশ সংক্রোৠে সমস্ত বিষয় তত্তদেশীয় পুরাবৃত এন্দ্ দ্বারা অবগর্ত হও বায়। সংকৃত ভাষায়, রাজভরকিণী ব্যতিরিক্ত, প্রায় পুরার্ত্ত গ্রন্থ এক খানিও নাই। রাজতরক্ষিণীতেও এই ক বিস্তৃত ভারতবর্ষের এক অতি ক্ষুদ্র অংশ কশ্মীরের পুরা; মাত্র সঙ্কলিত আছে। সেই সঙ্কলিত পুরাবৃত্তও সর্ব্বদাধাঃ লোক সংক্রাম্ভ নহে। কে কোন সময়ে সিংহাসনে আরে হণ করিয়াছিলেন, কে কত দিন রাজ্যশাসন ও প্রজাপাল করিয়াছিলেন, কে কোন সময়ে সিংহাসনভটে হইয় ছিলেন, কে কাহাকে সিংহাসনভ্রত করিয়া স্বীয় ক্ষমতা রাজ্যাস্পদ অধিকার করিয়াছিলেন , এইরূপ, কেবল রাজ ্রদিণের বৃত্তা**ন্ত মাত্র সক্কলিত হইয়াছে। স্থত**রাং, প্রক পুরারতের নিতান্ত অসন্তাবস্থলে বেদ, স্মৃতি, দর্শন, পুরা ইতিহাস, সাহিত্য প্রভৃতি শাস্ত্রের অনুশীলন ব্যতিরেনে পূর্বকালীন ভারতবর্ষীয়দিগের আচার ব্যবহার প্রভৃ পরিজ্ঞানের আর কোনও পথ নাই।

চতুর্থতঃ, যাবতীয় সাহিত্যশান্তের অনুশীলনে ।
আমোদ, যে উপকার, যে উপদেশ লব্ধ হইয়া থাবে
সংস্কৃত সাহিত্যশাস্ত্র সেই আমোদ, সেই উপকার, বে
উপদেশ প্রদানে অসমর্থ নহে।

[64]

এই সমস্ত সংস্কৃত ভাষার অনুশীলনসাপেক।

কেলে, এতদেশে ঘাঁহারা লেখা পতার চচর্চা করিয়া

কিল্, তাঁহারা যে এইরূপ মহোপকারিণী সংস্কৃত ভাষার

ফুশীলনে একান্ত উপেক্ষা করেন, ইহা অপ্প আক্ষেপের

য়য় নহে।

मन्त्रुर्ग

PRINTED BY PITAMBABA VANDYOPADHAYA,
AT THE SANSKRIT PRESS.
62, AMHERST STREET, 1879.

পিটার পারলির আখ্যায়িকা।

প্ৰথম ভাগ।

পিটার পারনির ইউরোপ ত্রমণের বিবরণ।
হেরারু ক্লের ২র সংস্কৃত শিক্ষক
শ্রীসুক্ত পণ্ডিত লালগোপাল গোস্বামী

কৰ্তৃক

অসুবাদিত।

দ্বিতীয় সংস্করণ।

৩১ নং পটলডাকা द्वीট।

PUBLISHED BY BOSE BROTHER'S

54/1 COLLEGE STREET,

CALCUTTA.

Printed at the Radharaman Press, 122, Amherst street.

পিটার পারলির ইউরোপ ভ্রমণ।

প্রথম পরিচেছদ।

আমার নাম পিটার পারলি। আমি বয়সে রুদ্ধ, এবং দামার একথানি পা ভাঙ্গা। আমি অনেক দেখিয়াছি ও অনেক শুনিয়াছি, এবং সেই বৃত্তান্তগুলি গল্প করিতে ভাল বাসি। বালকেরা স্বভাবতঃ গল্প শুনিতে ভাল বাসে, এই নিমিত্ত আমাকে দেখিতে পাইলেই ভাহারা চতুর্দ্ধিকে বেন্টন করিয়া বসে, এবং আমিও ভাহাদিগকে অবসর ক্রমে আপন জ্রমণ বৃত্তান্ত বলিতে আরম্ভ করি। এক্ষণে দামার ইউরোপ ক্রমণ বৃত্তান্ত বলিতেছি, প্রবণ কর।

বোধ হয় ভোমরা সকলেই ইউরোপের নাম শুনিনাছ। ভূচিত্রে দৃষ্টিপাত করিলেই দেখিতে পাইবে যে, য দেশের উত্তর দীমায় উত্তর মহাসাগর, দক্ষিণ সীমায় চ্মধ্য দাগর, পূর্বে সীমায় আসিয়াছিত রুসিয়াও পশ্চিম দামায় আটলান্টিক মহাসাগর, জর্ম্মণ সমুদ্র, ও ইংলিস প্রণালা, ভাহাকেই ইউরোপ কহে।

ইউরোপ অতি বিস্তৃত দেশ, এবং পৃথিবীর সকল । দশ অপেক্ষা ইহার অধিবাসীর সংখ্যা অধিক। কিন্তু অতি বিস্তৃতে হইলেও বিস্তার আফ্রিকা দেশের তিন ভাগে একভাগ। কেবল অধিবাসীর সংখ্যা আফ্রিকা অপেক্ষ চারি গুণ, এবং আমেরিকা অপেক্ষা ছয় গুণ অধিক ইউরোপের সকল স্থানেই বৃহৎ বৃহৎ নগর, ধর্মালয় মনোহর রাজভবন, এবং প্রাচীন নগরের ভগ্নাবশে দেখা যায়। এই দেশ অনেক ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র রাজ্যে বিভক্ত এবং প্রত্যেক রাজ্যের অধিবাসীর আচার, ব্যবহার, রীতি নীতি, ভাষা ও পরিচ্ছদাদি বিভিন্ন।

ইউরোপের মধ্যে ইংলগুবাসীদিগের ভাষা ইংরাজী এতদ্যতীত, আমেরিকান, আইরিস,এবং কচ্দিগের ভাষাধ ইংরাজী, তবে কেবল উচ্চারণের কিছু ইতর বিশেষ আছে আয়ারর্লগু বাসীরা ইংরাজ শাসনের অধীন। ইংরাজ ব্যতীত ইউরোপের ফ্রেঞ্চ্দেশবাসীদিগকে ফরাসী, হলগুর অধিবাসীদিগকে গুলন্দাজ, ডেনমার্কের অধিবাসীদিগকে ওলন্দাজ, ডেনমার্কের অধিবাসীদিগকে ডেন্, রুসিয়ার অধিবাসীদিগকে রশিয়ান, হঙ্গেরীর অধিবাসীদিগকে হঙ্গেরীয়ান, তুরুক্বের অধিবাসীদিগকে টর্ক্ প্রীসের অধিবাসীদিগকে গ্রীক্, ইটালির অধিবাসীদিগকে ইটালিয়ান, স্পেনের অধিবাসীদিগকে স্পানিয়ার্জ্ম এক পর্ট্ গাল দেশবাসীদিগকে পোর্ট্ গিস্ কহে।

জর্মাণী রাজ্য অনেক ভাগে বিভক্ত। তাহার মধে অষ্ট্রীয়া, প্রসিয়া, সাক্ষনী, এবং স্থইজর্লগু প্রধান। এই সমস্ত দেশের বিবরণ ক্রমে ক্রমে বলা যাইবে।

দ্বিতীয় পরিচেছদ।

ইউরোপের উত্তর সীমা স্থিত দেশ, অর্থাৎ নরওয়ে, চ্ইডেন, ডেক্মার্ক, ল্যাপ্লাণ্ড, এবং ক্রসিয়ার উত্তর সীমা, মতিশয় শীতল। বিশেষতঃ শীতকালে এই সকল দেশে চয়স্কর শীতের প্রাত্নভাব হয়। এ দেশবাসীরা শীতকালে, শেম এবং পশুর ছাল বস্ত্রস্করপ ব্যবহার করে।

স্থ ইডেনের অধিবাসীরা অতি দরিন্ত, কিন্তু সরল এবং

ংপথাবলম্বী। স্থ ইস্দিগকে দেখিলেই অতি আমোদপ্রিয়

এবং সন্তোষী বলিয়া বোধ হয়। ক্সিয়া এত দূর পর্যান্ত

রস্ত্ত, যে ইহার উত্তর সীমান্তিত দেশ সকল কানাডার

য়য় শীতল, এবং দক্ষিণ সীমা সেই পরিমাণে উষ্ণ।

সিয়ার অধিবাসীরা সচরাচর মূর্থ এবং নির্বোধ।

দেশের বড়লোক ও ধনবান্ ব্যতীত, সকলেই ক্রীত
বিশ্বাবাপ্রা।

প্রদিয়া দেশ রুসিয়ার সহিত সংযুক্ত; কিন্তু অধিাসীরা সর্বতোভাবে বিভিন্ন। প্রসিয়ানেরা জর্মান্ কিন্তা
রাসী ভাষায় কথাবার্তা কহিয়া থাকে। ইহারা অতিশর
ক্রিপ্রা জর্ম্মনির উৎকৃষ্ট ভাগ এবং সমগ্র হঙ্গেরী
বীরার সমাটের অধীনস্থ। অধীয়ানেরা সচরাচর পরিামী এবং আমোদী।

ইউরোপের মধ্যবর্তী আল্পস্ পর্ববিত্তগ্রেণী, ইউরোপের ত্রব সীমা এবং জার্মনিকে বিভাগ করিতেছে। আল্লস্ পর্বতের শিথর দেশে যে দেশ স্থাপিত, তাহাকে স্থইজ র্লন্ড কছে। এ দেশবাসীরা অতিশয় পরিশ্রমী এবং স্বদেশ প্রিয়। স্থইজর্লণ্ডের বিপরীত দিকেই হলগু দেশ। এই দেশের আরে! একটী নাম নেদারল্যাগু। হলগু এ প্রকার সমতল, যে এখানে একটীও পর্বত দেখা যায় না। আর সমুদ্র তীরবর্তী স্থান সকল এ প্রকার নিম্ন যে সমুদ্রের জল হইতে দেশরক্ষার নিমিত্ত সমুদ্রতীর অভি উচ্চ ভেড়া (বৃহৎ মাটীর প্রাচীর) দ্বারা বেপ্তিত। এদেশে তাহাকে (Dikes) ডাইক্স কহে।

ইটালী দেশ অতি স্থন্দর ও স্বাস্থ্যকর। এদেশবাসী দিগকে পূর্বের রোমান কহিত। এক্ষণে ইহাদিগকে ইটালীয়ান্ কহে। ইটালী দেশবাসীরা অতি কুসংস্কারা বিষ্টা, এবং উগ্রস্থভাব সম্পন্ন। ইহাদিগের কল্পনাশভি অতি প্রবল। ইহারা অতিশয় সঙ্গীত ও কাব্যপ্রিয়, এবং চিত্র বিদ্যাতে প্রায় সকলেরই পারদর্শিতা দেখা যায়।

শেশন ও পোটু গালবাসীর। প্রায় এক প্রকারের লোক। কিন্তু ইহাদিগের আচার ব্যবহার, এবং ভাষার ও কিছু বিভিন্নতা আছে। এই ছুই দেশীয় লেছুকেরা পরস্পারকে ত্বলা করিয়া থাকে। স্পানিয়ার্ডদিগের পোষাক নৃতনবিধ। ইহারা বাটীর বাহিরে গমন করি বার সময় কোটের পরিবর্ত্তে এক প্রকার ছোট ক্লোক্ ব্যবহার করিয়া থাকে। এপর্যান্ত ইউরোপন্থিত যে সমস্ত জাতির বিষয় থিত হইল, তাহারা সকলেই খ্রীফ্রধর্মাবলন্ধী, এবং ইবেলের মত গ্রহণ করিয়া থাকে। কিন্তু তুরুদ্বনিসীরা হা নহে। এদেশবাসীদিগকে টক্ কহে। টর্কেরা সলমান, এবং কোরাণের মতাবলন্ধী। তুরুদ্দিগের চার ব্যবহার পরিচ্ছদাদি এবং ভাষা, ইউরোপের স্থাস্ত জাতিদিগের অপেক্ষা সম্পূর্ণ বিভিন্ন। ইহারা ইধর্মাবলন্ধীদিগকে অতিশয় ঘুণা করিয়া থাকে গ্রীসদেশ তুরুদ্ধের দক্ষিণ। এককালে গ্রীকেরা থিবীর অতি প্রধান জাতির মধ্যে গণ্য ছিল। কাল-দে তুরুদ্দিগের শাসনাধীন হয়, এবং অনেক দোরাত্মা অত্যাচার সহ্য করিয়া সম্প্রতি স্বাধীন হইয়াছে।

তৃতীয় পরিচেছদ।

ীক্দিগের বিশেষ বৃত্তান্ত পরে প্রকাশিত হইবে।

পারলির ইংলও গমন।

কয়েক বৎসর পূর্ব্বে আমি নাবিকের কার্য্যে নিযুক্ত রা ইট্রনাপে গমন করিয়াছিলাম। আমি বোল্ড রো শামক জাহাজে নিযুক্ত হই. এবং বোফ্টন নগর ৈত ইউরোপ যাত্রা করি। কাপ্তেন ফিলিপ্ নামক ক ব্যক্তি আমাদিগের জাহাজের (কাপ্তেন) অধ্যক্ষ লেন। কয়েক দিবসাবধি আমরা ক্রমাগতঃ পূর্ব্বাভি- মুখে গমন করিতে লাগিলাম। এই সময়ে আমাদিগে জাহাজ আটলাণ্টিক মহাসাগরে ছিল। কিয়দিবসের পা এক দিন সহসা ঝড় উঠিল। সমুদ্রে ঝড়ের সময় অবস্থা করা অসমসাহসীকের কার্য্য তাহা বোধ হয় সকলোঁ জ্ঞাত আছ।

ঝড় উঠিবামাত্র সাগরে মহা তরক্স উপস্থিত হইল ।

'সমুদ্রের জল প্রবল বেগে ঘুরিতে লাগিল, এবং তরঃ প্রবাহে আমাদিগের জাহাজ আলোড়িত হইল। চতুর্দিনে স্থন মেঘ গর্জনের স্থায় ভয়ঙ্কর শব্দ উঠিল, এবং জাহা জ্বস্থ সকলেই তটস্থ হইয়া রহিলেন। কাপ্তেন চীৎকার পূর্বক নাবিকদিগকে ডাকিতে লাগিলেন। জাহাজে পাল সকল বায়্বেগে ফাঁপিয়া উঠিল, এবং পরস্পারে সহিত আঘাত লাগিয়া পট্পট্ শব্দ হইতে লাগিল উত্তাল তরক্সবেগে জাহাজ একবার অত্যুচ্চ পর্বতে আরোহণ করিতে লাগিল, এবং অক্যবার প্রায় সাগরগর্ভে বিলীব হইবার উপক্রম হইল। অবশেষে তরক্ষের আঘাতে জায়া

জাহাজস্থ সকলেই ভয়ে শ্রিয়মান হইলেন। প্রথা আমি সমুদ্রের উপর একটা তুষার পর্বত দেখিয়া খ্যাকু হইলাম, কারণ যদি সেই পর্বত বায়ুবেগে আমাদিগে জাহাজের উপর পড়ে, তাহা হইলে জাহাজধা চুর্ণ হইরা যাইবে। বে সময়ে আমরা এই প্রকার অবস্থায় অবস্থিত আছি,

নমত কালে রাত্রি উপস্থিত হইল, এবং রাত্রি প্রভাত

ইলে, পর দিবসে যে আর প্রাতঃকালের মুখ দেখিতে

নাইব, তাহার কোন আশা রহিল না। কিন্তু সোভাগ্য
চমে যামিনী পোহাইল, এবং উষা উপস্থিত হইল।

ঠিয়া দেখি, ঝড় থামিয়াছে, এবং তুষার পর্বত অনেক

শ্চাতে পড়িয়াছে। আমরা কিয়দ্রে আগমন করিয়াই

।ক খানি ভগ্ন জাহাজ দেখিতে পাইলাম। আমরা ভগ্না
শিষ্ট জাহাজের নিকটবর্ত্তী হইয়া দেখিলাম, কেবল

হাতে একজন মাত্র লোক জীবিত আছে।

সেই ব্যক্তি আমাদিগের জাহাজ দেখিবামাত্র চীৎ-ার করিতে লাগিল, এবং হাত উঠাইয়া সাহাষ্য প্রার্থনা গরিল। কিন্তু সে সময়েও তরঙ্গের অবস্থা এ প্রকার গবল, যে ভগ্নাবশেষ জাহাজের নিকটবর্তী হওয়া তুরাহ। বিশেষে আমরা অনেক আয়াসে তাহাকে আমাদিগের গহাজে উঠাইয়া লইলাম্।

ভগ্ন জাহাজে যে ব্যক্তি জীবিত ছিলেন, তিনি একন ইট্টালিয়ান, এবং তাঁহার নাম লিও। আমি তাঁহাকে
ামার্দিগের জাহাজে উঠাইয়া লইবার নিমিত্ত আগ্রহ
হকারে পরিশ্রম করিয়াছিলাম, এই নিমিত্ত উক্ত ব্যক্তি
ামাকেই প্রাণদাতা স্বরূপ জানিয়াছিলেন। লিও এক
কার ধাতুর লোক। আমার গল্পের অনেক স্থলেই

লিওর বৃত্তান্ত কথিত হইবে। লিও সেই ভগ্ন জাহাজের কাপ্তেন ছিলেন। তিনি ব্যতীত সকলেই জলমগ্ন হইয়াছিল।

আমর। লিওকে জাহাজে উঠাইয়া লইয়া অভাই দেশাভিমুখে গমন করিতে লাগিলাম। বাতাস অনেক নিবৃত্ত হইল, জাহাজ স্থির ভাবে চলিতে লাগিল, এবং মেঘান্তরিত সূর্যাতেজ প্রথর হইল। উত্তাল তরঙ্গমর সাগর ভীষণ মূর্ত্তি পরিত্যাগ পূর্বক দর্পণের স্থায় স্বচ্ছ হইল। বস্তুতঃ সমুদ্র স্থির ভাব ধারণ করিলে যে প্রকার প্রীতি প্রদ হয়, ঝড়ের সময় তাহার সম্পূর্ণ বিপরীত।

অবশেষে অমুকূলবায়ুবশে আমরা বোষ্টন্ হইতে ত্রিশ দিবসের পর ইংলণ্ডের উপকূল সমীপে উপনীত হইলাম। তোমরা ভূচিত্রে দেখিতে পাইবে, যে ফ্রান্স এবং ইংলণ্ডের মধ্যে যে অপ্রশস্ত জলভাগ আছে, তাহাকে ইংলিস চ্যানেল (খাত) কহে। আমরা ইংলিস খাতের মধ্য দিয়াটেম্স নদার মুথে উপনীত হইলাম। টেম্স নদা ইংলণ্ডের সকল নদা অপেক্ষা দীর্ঘ। আমরা নদার ভিতর প্রবেশ করিয়া সবিস্ময়ে দেখিলাম, যে শত সহত্র জাহার নদার ইভস্ততঃ গমনাগমন করিতেছে।

এই প্রকার টেমস্নদা দিয়া লগুন নগরে উপানীত হইলাগ। লগুন নগর ইংলণ্ডের কেন, পৃথিবীর মধ্যে একটী বৃহৎ এবং বিস্তৃত নগর। যে স্থানে আমাদিগের জাহাজ নোঙ্গর করিল, সে স্থালে এত জাহাজ ছিল তাহার মাস্তলগুলি এক দৃশ্যে একটা বিস্তৃত অরণ্যের ায় বোধ হইতে লাগিল।

অসংখ্য জাহাজ দেখিয়া আমি স্বগত কহিতে লাগিন্ম, যে এই জাহাজ কত শত নদ নদী, সাগর উপসাগর, র হইয়া, কত শত দেশ হইতে বাণিজ্য দ্রব্য বহন বিক ইংলণ্ডে উপস্থিত হইয়াছে, এবং এদেশ হইতে গপ্রকার শিল্পজাত দ্রব্য লইয়া অন্যদেশে যাইবে। জাহাজ দ্বারা সৃষ্টধর্ম্ম প্রচারকেরা, পৃথিবীর সজ্যাভ্য প্রদেশে যাইয়া ধর্ম প্রচার করিভেছেন। ইংলণ্ড থবার স্ববিশ্রেষ্ঠ দেশ।!

চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

আনেরিকার বোইন, ফিলাডেলফিয়া, বাল্টীমোর,
নর্লিটন, নিউইয়র্ক, এই পাঁচ নগরের বাটার সংখ্যা
ং অধিবাসীর সংখ্যা লগুন নগরের তুল্য। অর্থাৎ
পাঁচটী নগর একত্রিত করিলে, তবে লগুন নগরের
নিহয়। ভিন্ন ভিন্ন দিক হইতে লগুন নগর দেখিলে এক
র সম্পূর্ণ বিভিন্ন দেখায়। (Black Frier's bridge)
চ ফুায়ারস্ ব্রীজ হইতে সেন্টপলস কেথিড্রেল প্রভৃতির
টী সর্ববাপেক্ষা স্থন্দর। লগুনের রাস্তাতে এত জনতা,
কোন কোন সময়ে গমনাগমন গুক্ষর হইয়া উঠে। প্রায়
রাচর পরস্পারের সম্মুখীন হইয়া দাঁড়াইয়া পভিতে হয়।

করেকবৎসর পূর্ব্বে একজন আমেরিকার আদি অধিবাসী লগুনের লোকসংখ্যা গণিবার নিমিত্ত এক গার্চি ছড়ি এবং এক খান ছুরি লইয়া বাটীর বাহির হইলেন।

তিনি কোন লোককে সমুখে দেখিলেই, ছুরি দার ছড়িতে এক একটা দাগ দিতে আরম্ভ করিলেন। উত্ত ব্যক্তি ছুই চারি পদ অগ্রসর হইতে না হইতেই, ছড়ী দাগে পরিপূর্ণ হইল, এবং তিনিও লোক সংখ্যায় নিরা হইয়া ছড়িটা পরিত্যাগ পূর্বক চলিয়া গেলেন।

আমি লিওর সহিত নগর দর্শনে গমন করিলাঃ লিও অনেক দেশ ভ্রমণ করিয়াছেন, এবং একজন বিখ্যা পর্য্যটক। তিনি ইতিপূর্নের কিছু কাল লগুনে অবস্থা করিয়াছিলেন, এবং এখানকার সম্বন্ধীয় অনেক বিষ্ণা ছিলেন। আমরা প্রথমেই সেন্টজেমস্ প্রাসা দেখিতে গমন করিলাম। রাজা বৎসরের কিছু কা এই স্থানে বাস করিয়া থাকেন। সেন্টজেমস্ প্রাসাদে পর আমরা ওয়েষ্টমিনিন্টার আবি দেখিতে গম করিলাম। ওয়েষ্টমিনিন্টার আবি একটা ধর্ম্মালা এবং অতি প্রাচীন কালের নির্শ্বিত। এই স্থানে ইংলগ্রে বিখ্যাত লোকেরা সমাহিত হইতেন ও হইয়া থাকে এবং এই স্থানেই নূতন রাজা অতি সমৃদ্ধি সহকাট সিংহাসনে অভিষিক্ত হন। ওয়েষ্টমিনিন্টার আবির গ্রামার উচ্চচুড় প্রাসাদ (tower) দেখিতে গমন করিলাম

লগুনের টাউরার এককালে কারাগার স্বরূপ ব্যবহৃত হিত। পূর্বকালে অনেক বন্দী এই স্থানে অতি নিষ্ঠুর গার বারা হত হইত। এই স্থানে আমরা অনেকগুলি দুপশু আবদ্ধ দেখিতে পাইলাম। তাহার মধ্যে দুই হটী সিংহ ও ব্যাঘ্র ছিল। কিন্তু এক্ষণে অন্তগুলি নান্তরিত হইয়াছে। এখন পর্যন্ত এই স্থানে পূর্বতন . জাদিগের ব্যবহৃত মণি মুক্তা বারা খচিত, বহুমূল্য জমুকুট, সাধারণের দর্শনার্থ স্থাপিত আছে। লগুনের উরার সম্পর্কীয় একটী গল্প বলিতেছি, গ্রাবণ কর।

কয়েক বৎসর পূর্বের ইংলণ্ডে এডওয়ার্ড নামক এক জা ছিলেন। তৎকালে তাঁহার বয়স ঘাদশ বৎসর ল; রিচার্ড নামে তাঁহার এক খুড়া ছিলেন। তিনি অতি সং প্রকৃতির লোক। রিচার্ডের আর একটী নাম ক্রুক্ ক্। রিচার্ড ক্রুকব্যাক্ রাজা হইবার মানসে এডওয়ার্ড তাঁহার কনিষ্ঠ সহোদরকে এই টাউয়ার মধ্যে আবন্ধ রয়া রাখেন, এবং কিছুকাল পরে, ইহাদিগের প্রাণকরিয়া আপনি তৃতীয় রিচার্ড নাম গ্রহণ পূর্বক লড্রের অধীশ্বর হন।

টাউরার দেখা হইলে আমরা এক বাগান দেখিতে ন করিলাম। এই উদ্যানটা অতি মনোহর। চারি ই রক্ষশ্রেণীতে পরিপূর্ণ, এবং মধ্যে মধ্যে লতাকুঞ্জ ফুটিত পুম্পের সহিত অপূর্ব্ব শোভা ধারণ করিতেছে। এই উদ্যানে নগরের সকল লোকেই পাদ চারণের নিঃ আসিয়া থাকে, এবং এই স্থানে প্রায় সকল পরি।ি লোকের সহিত সাক্ষাৎ হয়।

লগুন নগরে একটা পশালয় আছে, এবং নানা ে হইতে অনেক বহা ও গ্রাম্য গশু পক্ষা এই স্থানে সং . হীত হইয়াছে। ভিন্ন ভিন্ন দেশীয় বৃক্ষাদিও এখা অনেক।

সদ্ধ্যার পর আমরা নাট্যশালায় গমন করিলাম। ইং জিতে ইহাকে (Theatre) থিয়েটার কহে। আমি সময়ে ইংলণ্ডে গমন করিয়াছিলাম, তথন ইংলণ্ডের রা সিংহাসনে একজন রাজা রাজত্ব করিতেন। এজ ভিক্টোরিয়া ইংলণ্ডের অধীশরী। সে দিবস রাজা সেই নাট্যশালায় উপস্থিত ছিলেন।

এ ছলে সৌভাগ্য ক্রমে আমাদিগের রাজদর্শন হই রাজার গাত্রাবরণের চতুর্দিকে জরির কাজ করা, এ বক্ষঃস্থলে হীরকের তারাকৃতি ধুক্ধুকী। রাজা না শালায় প্রবেশ করিবার সময় সকলকে অভিবাদ করিলেন, এবং সকলেই মহানন্দে করতালী দিলে অভিনয়ের পর কয়েক সহস্র লোক একত্রিত হই সমস্থরে (God save the king) পরমেশ্বর রাজার রক্ষা কর, এই গান্টী গাহিতে লাগিল।

নাট্যশালায় বসিবার অতি অল্লক্ষণ পরেই শা

হেসা পকেটে হাডিদিয়া দেখি যে, আমার পকেটবুক াই। তাহাতে কিছু টাকা ছিল। তাহার পরক্ষণেই মকিত হইয়া দেখিলাম যে, আমার ঘড়ি এবং চেন াই। ইহা নিশ্চয় যে কেহ অপহরণ করিয়াছে, কিন্তু কমন করিয়া অপহরণ করিল তাহা বুঝিতে পারি-াম না। চোর এ প্রকার সতর্কতার সহিত চুরি. রিয়াছিল, যে আমি কিছুই জানিতে পারি নাই ও াই কারণে কাহাকেও কিছু বলিতে পারিলাম না। কবল প্রতিজ্ঞা করিলাম যে ভবিষ্যতে অতি সাবধান ইয়া চলিব। যদি তুমি কখন লগুনে যাও, তাহা হইলে াকেটস্থ দ্রব্য এবং ঘড়িও চেনের উপর সর্ব্বদা মন

প্রায় মধ্যরাত্রে নাট্রশালা ভঙ্গ হইল। আমি এবং
নিও উভয়ে নাট্রশালা পরিত্যাগ করিয়া বাসন্থানাভিমুখে
লিলাম। আমরা একটা অপ্রশস্ত গলির মধ্য দিয়া
হৈছে, এমত সময়ে এক দিক্ হইতে গোঁ গোঁ শব্দ
দর্গে প্রবিষ্ট হইল। শ্রবণমাত্র বোধ হইল যেন কোন
্যক্তি বিপদগ্রস্ত হইয়া এই শব্দ করিতেছে। আমরা
ভয়ে শব্দ অমুসরণ করিয়া যাইতে যাইতে এক দ্বারে
পিস্থিত হইলাম, এবং বিশেষ বোধ হইতে লাগিল যে
ক সেই বাটীর ভিতর হইতে আসিতেছে। আমরা
হিসে নির্জর করিয়া দ্বারে করাদ্বাত করিলাম, কিন্তু

কোন উত্তর পাইলাম না। তাহার পর অনভোপায় হইয়া সজোরে ধাকা দিবা মাত্র দার খুলিয়া গেল। আমরা বাটার ভিতর প্রবিষ্ট হইলাম, এবং ইতস্ততঃ সঞ্চরণ করিতে করিতে একটা ঘরে গিয়া উপস্থিত হই লাম। উপস্থিত হইয়া দেখি যে সেই ঘরে একটামাত্র আলোক মিট্ মিট্ করিয়া জ্বলিতেছে এবং অতি অপরি চহুন্ন এক বিহানাতে এক জ্বীলোক মুমূর্ব্ অবস্থায় শয়ন করিয়া আছে। জ্বীলোকটার পার্যদেশে ছইটা বালক। একটার বয়স প্রায় ছয় বৎসর এবং আর একটার কিছু অধিক। ছোট বালকটা নিজিত ছিল, এবং জ্যেষ্ঠি জাগরিত হইয়া অশ্রুপ্র নিয়নে কাঁদিতেছে, এবং এক এক বার তাহার মাতার চরমাবস্থার শীতল গণ্ডস্থল, জন্মের মত চুম্বন করিতেছে।

আমি এই সকল ব্যাপার অবলোকন করিয়া ক্রড বেগে পথে উপস্থিত হইয়া উচ্চৈঃস্বরে সাহায্য প্রার্থনা করিতে লাগিলাম; কিন্তু কেহই উত্তর প্রদান করিলনা। আমি প্রত্যেক দারে করাঘাত করিয়া চীৎকার করিতে লাগিলাম, কিন্তু তাহাতেও কেহ অগ্রসর হইল না অবশেষে প্রত্যাগমন করিয়া দেখি যে জ্রীলোকটী কাল প্রান্দে পতিত হইয়াছে। আমরা প্রাতঃকাল পর্যান্ত সেই স্থানে অপেক্ষা করিলাম, এবং তৎপরে দেখি যে কয়েব

কার্য্য সমাধা করিলেন, এবং অনুগ্রহপূর্বক কালকদিগকে আশ্রয় দিলেন।

অবশেষে জ্ঞান্ত হইলাম জ্রীলোকটী আহারাভাবে অসময়ে মৃত্যুমুখে পতিত হইল। কি আশ্চর্য্য !!! পৃথিবীর মধ্যে মহাসমুদ্ধশালী নগরেও লোকে আহারাভাবে প্রাণত্যাগ করে। সমৃদ্ধশালী দেশমাত্রের অধিবাসীদিগের অধিক অর্থের আবশ্যক, ইহা আমাদিগের বিবেচনা করা কর্ত্ত্ব্য। তোমরা যদি কথন ইংলণ্ডে যাও,
ভাহা হইলে অত্যে অধিক পরিমাণে অর্থ সংগ্রহ করিবে,
মৃতুবা সেখানে মহাবিপদাপন্ন হইতে হইবে।

পঞ্চম পরিচ্ছেদ।

উইগুসর কাসেল।

বোধ হয় তোমরা উইগুসর কাসেলের বৃত্তান্ত প্রবণ দরিয়া থাকিবে। ইহা লগুন হইতে প্রায় দশ ক্রোশ দন্তর। এক্ষণে ইংলগুের রাণী এই প্রাসাদেই বৎসরের মধিক কাল অতিবাহিত করেন। উইগুসর কাসেল মতি প্রশস্ত হর্ম্ম। ইহার চতুর্দ্দিক উচ্চ প্রস্তর নির্ম্মিত শাচীরে বেপ্টিত, এবং ভাহার চারিদিকেই ঘর। এই শাসাদ্টী এক পর্ববতের উপরে স্থাপিত। প্রাসাদের খিস্থলে রাজ্পভাকা উড়িয়া থাকে। দূর হইতে উইগু-

সর কাসেল দেখিতে অতি মনোহর। আমি ইতিপূর্বে অনেকবার উইগুসর কাসেলের বৃত্তান্ত শুনিরাছিলা। এই নিমিত্ত তাহার প্রত্যেক স্থান দেখিবার নিমিং কৌতৃহলাক্রান্ত হইলাম।

আমরাউইগুসর কাসেলে যাইবার কালে, এক স্থান্থ ভবনের নিকটবর্তী হইলাম। সেই বাটীর চারিদিনে ফুলের বাগান এবং বৃক্ষ সকল ফল পুষ্পে স্থানাভিত আমি পার্শ্বত এক ব্যক্তিকে জিজ্ঞাসা করিলাম, এট কাহার বাসস্থান, সে উত্তর করিল, লর্ড পারসির। তৎপদে আর এক বাড়ী দেখিয়া জিজ্ঞাসা করাতে জানিতে পারি লাম, সে ডিউক অব্ সসেক্রের বাটী। তাহার পর তৃতী বাটী দেখিয়া জিজ্ঞাসা করাতে জানিতে পারিলাম, সেট আরল অব্ হারোবীর বাটী।

আমি আরল্, ডিউক, লর্ড কাহাকে কহে কিছু বুঝিতে না পারিয়া নিকটবর্তী এক ব্যক্তিকে জিজ্ঞাদ করিলাম। তিনি আমাকে বিদেশী দেখিয়া অমুগ্রহপূর্ব্ব কহিলেন; ইংলণ্ডে কতকগুলি লোকের ব্যারণ, ভাই কাউণ্ট, আরল্, মারকুইস, এবং ডিউক এই সমস্ত উপাণি আছে। তাহারা সকলেই লর্ড এবং কোন কোন সমা জায়গীর পাইয়া জমিদারদিগের মধ্যে গণ্য হইঃ থাকেন। ইহারা সচরাচর সমৃদ্ধিশালী।

ক্রমাগত ছুই ঘণ্টা শকটারোহণে গমন করিয়া আমা

ট্রব্ধসর কাসেলে উপনীত হইলাম। এই সময়ে রাজা এই প্রাসাদে উপস্থিত ছিলেন না। স্থতরাং আমরা ফয়েক মহল দেখিতে অনুমতি পাইয়াছিলাম। সকল মহলই উত্তমরূপে স্থসজ্জিত। তাহার মধ্যে কয়েকটা গৃহে অতি উৎকৃষ্ট ছবি আছে।

ষষ্ঠ পরিচেছদ।

উইওসর কাসেলে সেণ্টজর্জ্জ নামে এক (গির্জা) ধর্মা
শয় আছে। আমি সেণ্টজর্জ্জ দেখিতে গমন করিলাম।

ই স্থানে ইংলণ্ডের কয়েকজন রাজা সমাহিত আছেন।

দেখ ? অন্ত লোকদিগের ন্থায় রাজারাও মৃত্যুর হস্ত হইতে

শরিত্রাণ পান না। প্রিন্সেস্ সারল্টও এই খানে সমাহিত

ইয়াছিলেন। তিনি জীবিত থাকিলে ইংলণ্ডের বর্ত্তমান

দ্বীশ্রী হইতেন।

প্রিন্সেস্ সারলটের দয়ার পরিচয় দিতেছি শ্রাবণ

চর। এই সময়ে একজন দরিদ্র লোকের প্রাণদণ্ডের আজ্ঞা

ইয়া বধ্যভূমিতে তাহার কাঁসী হইবার উপক্রম হইতে
চল। তাহার বন্ধু বান্ধবেরা বিবেচনা করিলে, যদি কোন

চমে সারলটের অনুগ্রহ প্রার্থনা করিতে পারি, তাহা

ইলে ইহার পরিত্রাণ হয়।

তাহারা এই স্থির করিয়া দারলটের অনুগ্রহ প্রার্থনা

করিল, সারলটও স্বভাবস্থলভ দয়ার বশবর্তী হইর
তাহাদিগের উপকার সাধনে সম্মত হইলেন। সারল
পিতামহের নিকট গমন করিয়া তাঁহার পদতলে পড়িলে
এবং কহিলেন বে, বে পর্যান্ত না আপনি আমাকে বন্দী
জীবন ভিক্ষা দেন, সে অবধি আমি কোন ক্রমেই আগ
নার পদতল হইতে উঠিব না। সারলটের পিতামহ তাহা
তেই সম্মত হইলেন, এবং দোষী ব্যক্তির অপরা
মার্চ্জনা করিলেন। যে সময়ের কথা বলিলাম, তথন সার
লটের বয়স ঘাদশ বৎসর। সারলটের অকাল মৃত্যুা
সকলেই শোকসূচক পরিচছদ পরিধান পূর্ববক বিলা
করিয়াছিলেন।

রাজারা যে ভবনে বাস করেন, ইংরাজিতে তাহারে PALACE (প্যালেস্) কহে। রাজারা প্রায় পাঁ। কিম্বা আট ঘোড়ার গাড়িতে ভ্রমণ করেন, এবং রাজাের সকলেই রাজাকে সম্মান করিয়া থাকেন। ইংলাে অনেকগুলি রাজা ছিলেন। তাহার মধ্যে কতকগুলি ভার এবং কতক অংশ মন্দ। ইংলাগ্রের রাজাদিগের ইতিহা পাঠ করিলে জানিতে পরিবে, তাঁহাদিগের মধ্যে কতর গুলির বিবরণ অতি প্রীতিপ্রাদ, কিন্তু অধিকাংশই জ্বা চরিত্রের লোক ছিলেন। ইংরাজীতে রাণীকে Queel "কুইন" কহে।

তোমাদিগকে ইংলণ্ডের এক রাণীর বৃত্তান্ত ব্রি

ছি, প্রবণ কর। কয়েক বৎসর পূর্ব্বে ইংলণ্ডে মার্গাটনান্নী এক রাণী ছিলেন। তিনি ষষ্ঠ হেন্রীর স্ত্রী,
চহেনরী অতি ত্ববিল রাজা ছিলেন বলিয়া তাঁহার শক্রবিজ্ঞান করিয়া তাঁহাকে কারাবন্ধ করেন। রাজাকে
বিজ্ঞ করিয়া তাঁহাকে কারাবন্ধ করেন। রাজাকে
বিজ্ঞ করিয়াই শক্রগণ রাণীর উদ্দেশে ধাবমান হইল।
স্তু মার্গারেট ইতিপূর্ব্বেই আপন শিশু সস্তানকে লইয়া
কটস্থ এক অরণ্যে প্রবেশ করিয়াছিলেন, স্কুতরাং শক্রত্রামনোরও ইইয়াছিল।

এক দিবস মার্গারেট আরণ্যমধ্যে বিচরণ করিতে বিতে এক দস্তার সন্মুখে পতিত হন। দস্তা কাহাকে ল, তাহা বোধ হয় তোমরা সকলেই জ্ঞাত আছ। দস্তা। সহায় শৃত্য স্থানে অবস্থান করিয়া, মমুঘ্যের প্রাণনাশ করতঃ অর্থ এবং বহুমূল্য স্রব্যাদি অপহরণ করিয়াকে। পূর্বেকাক্ত দস্তা মার্গারেটের সন্মুখীন হইয়া কহিল, দামার নিকট যে সমস্ত অর্থ আছে আমাকে প্রদান কর। গিরেট উত্তর করিলেন আমি অর্থ কোণায় পাইব, আমি দামার দেশের অর্থহীনা রাণী, এবং এই বালক তোমার জপুত্র। দস্য এই বাক্য শ্রেবণ করিয়া বিন্মিত হইল, ং জামু পাতিয়া ক্ষমা প্রার্থনা করিল। রাণী তাহাকে দা করিলেন, এবং দস্তাও মার্গারেট্কে সঙ্গে করিয়া বিন্মির বাহিরে পৌছাইয়া দিল।

ইংলণ্ডে মেরী নাম্বী আর এক রাণী ছিলেন, এদেশের

অধিকাংশ লোকের সহিত তাঁহার ধর্মসম্পর্কীয় মতে একতা ছিল না। মেরী প্রজাদিগকে স্বীর মত প্রহণ কর ইতে চাহিয়াছিলেন, কিন্তু কেছই তাঁহার কথা প্রাছ্ম ক নাই। অবশেষে মেরী কুপিতা ছইয়া প্রায় তিন দ লোককে অগ্নিদম্ব করিয়া বধ করেন। হত ব্যক্তিদিং মধ্যে কতকগুলি পুরুষ এবং কতকগুলি ত্রালোক ছিলে এই ঘটনার নিমিত্ত লোকে তাঁহাকে শোণিতশোষক মেকহিত। এই কালে ইংলণ্ডের ভন্তলোকেরাও ধর্মবিষয় বিভিন্ন মতাবলম্বীদিগের উপর অতি নিঠুর ব্যবহ করিতেন।

সপ্তম পরিচেছদ।

আমরা লগুনে উপস্থিত হইয়া দেখি, আমাদির্গে জাহাজ বোল্ডহীরো লগুন পরিত্যাগ করিয়া হন গমনে উদ্যুত হইয়াছে। আমার ইচ্ছা ছিল, ইংলা থাকিয়া আরও অনেক বিষয় দেখিব, কিন্তু তাহা হা না। লগুন ব্যতীত ইংলণ্ডে আরও অনেক নগর আরে লিজারপুল বিখ্যাত বাণিজ্য স্থান। বারমিংহাম—এ নগরে তরোয়ার ছুরি, কাঁচি, ষ্টিলপেন্ প্রস্থাত হয়। মাঞ্চেইর,—এই নগরে নানা প্রকার প্রস্তুত হয়। মাঞ্চেইর,—এই নগরে নানা প্রকার প্রস্তুত হইয়া থাকে। এই কয়েকটা ব্যতীত ইংলা আরও অনেক প্রধান নগর আছে।

জানি আয়র্লণ্ডে বাইতে উদ্যুত্ত হইয়াছিলাম। আয়র্লণ্ড
ইরীস্দিগের বাস্থান, এবং ইংলণ্ডের পশ্চিম্ দীমাত এক দ্বীপ,ও ইংলণ্ডের শাসনাধীন। ইংলণ্ডের উত্তর
কে স্কট্লণ্ড। স্কট্লণ্ড অতি স্করে দেশ। স্কটলণ্ডের
ধিবাসীদিগকে স্কচ্ কহে। স্কচেরা অতি সামাজিক এবং
দ্বমান। এদেশে ছই প্রকার লোক আছে। তাহার
ধ্যু পার্ববতীয় প্রদেশবাসীদিগকে হাইলাণ্ডার, এবং
দ্বস্থলবাসীদিগকে লোলাণ্ডবাসী কহে। হাইলাণ্ডবাসীগের পরিচ্ছদ বিভিন্ন প্রকার। তাহারা হাঁটুর উপর
গিন্ত এক প্রকার ছোট ঘাগ্রা পরিয়া থাকে। হাঁটুর
ন্মভাগ খোলা রাখে। ইহারা যে ভাষায় কথা বার্তা
হ, তাহাকে ইরস্ ভাষা বলে। ভারতবর্ষীয় লোকেরা
ইলাণ্ডবাসী সৈন্তদিগকে নেঙ্টা গোরা কহে।

তুমি ম্যাপ দেখিলেই এই সমস্ত স্থান দেখিতে ইবে। আমি এই সকল স্থান দেখিবার নিমিত্ত অতি-কোতৃহলাক্রাস্ত হইয়াছিলাম; কিন্তু ফুর্ভাগ্য বশতঃ মাদিগের জাহাজ চলিয়া যাইবে বলিয়া মনোরথ সিদ্ধানাই গিলও আমাদিগের সঙ্গ পরিত্যাগ করিয়া ইটালী শৈ গমন করিলেন, এবং আমিও হলও যাইবার মৃত্ত জাহাজে আবোহন করিলাম।

আমি তোমাদিগকে ইংলণ্ডের বিবরণ অতি সংক্রেপে ইলান, সময়ান্তরে বিস্তারিত বিবরণ কহিবার মানস রহিল। ইংলগু অতি কুন্দর দেশ। ইহার চারিদিনে স্প্রাসিদ্ধ নগর, এবং প্রত্যেক নগর জনতায় পরিপূ
ইংলগুর অধিবাসীর সন্ধ্যা প্রার ছই কোটি সন্তর লা
এবং এত দিনে লোক সংখ্যা আরও বাড়িয়াছে। ইং
শুন্তর লোকসংখ্যা প্রায় ইউনাইটেড্ষেটের দিগুণ হইটে
ইংলগু এবং ক্ষটলগু এই ছই দেশকে একত গ্রেট্রীটে
কহে। এ দেশে ধনীর সন্ধ্যা অনেক বটে, কিন্তু আ
কাংশই দরিদ্র। এক সহস্র আট শত বংসর পূর্
গ্রেট্রটেন্বাসারা সম্পূর্ণ অসভ্যাবস্থায় কাল্যাশ
করিত। প্রিষ্টীয় দশম শতাব্দী হইতে ইহারা উমতিশা
পদার্পন করিতে আরম্ভ করিয়া, এক্ষণে পৃথিবীর এ
প্রধান সভ্যজাতির মধ্যে গণ্য হইয়াছে। গ্রেট্রট
অনেক মহৎ লোক জন্মগ্রহণ করিয়াছেন, এবং এক্ষণে
দেশ পৃথিবীর এক প্রধান প্রতাপশালী দেশ মধ্যে প
হইয়াছে।

অফ্টম পরিচেছদ।

আমরা জাহাজে পাল তুলিয়াটেমস্ নদী দিয়া স্থ পথে যাত্রা করিলাম। জাহাজ নদীর মুখে আসিতে আসিতেই রাত্রি উপস্থিত হইল। এই সময়ে মন্দ্র বায়ু বহিতেছিল, এবং যামিনী, কুজুঝটিকা বশতঃ মে কারে আচ্ছন্ন হইল। আমাদিপের কাহাক পালভরে ্বেগে যাইডেছিল। কিয়ৎক্ষণ পরেট আমরা এক াণ শব্দ প্রবেণে চমকিও হইলাম: বোধ হইল যেন াদিগের জাহাজ কোন পর্বতে প্রতিহত হইল। সতর হরে অসিয়া বুঝিতে পারিলাম আমাদিগের জাহাজ া একখানি জাহাজে প্রতিহত হইয়াছে, এবং ধারুার দুই আমরা চুমকিত হইয়াছিলাম। ধাকা এমত ल लाशियां हिल, (य (म काशकथानि हुर्न इरेया कल-হইবার উপক্রম হইয়াছে। আমরা সম্বর জাহাজত্ব াদিগকে রক্ষা করিবার চেষ্টা করিলাম, এবং কয়েক ক পিনেসে উঠাইতেছি, ইতিমধ্যে জাহাজখানি াগর্ভে নিমগ্র হইল। আমরা যে কয়েকজনকে তুলিয়া ম. তাহার মধ্যে কাপ্তেন, তাঁহার স্ত্রী ও ছটী শিশু ন, আর চুই জন নাবিক ছিল। কাপ্তেনের নাম াক। হটরীক হলগুবাসী। তাঁহারা হলগুর প্রধান হইতে আসিতেছিলেন। হটরীক কহিলেন, যে তিনি পরিবারে পরিবৃত হইয়া কয়েক বৎসরাবধি এই কুদ্র জে বাঁস করিভেছিলেন। বস্তুতঃ হলণ্ডের কাপ্তেন-র এই রীতি,যে তাঁহারা পুত্র পরিবার সহ জাহাজেই शन निर्फिक्षे कार्यन। व्यामत्रा लखन स्ट्रेंट इय **শর মধ্যে আমেফার্ডাম নগরে পৌছিলাম।**

নবম পরিচেছদ।

হলতের মধ্যে আমেন্টার্ডাম এক বৃহৎ নগর, এন হলতের অধিবাসীদিগকে ডচ্ কহে ইহা তোমরা জান ডচ্দিগের ভাষাও সম্পূর্ণ বিভিন্ন। ইহারা Hous (বাড়ীকে) Huis ছইস্, ঘোটককে পার্ড এবং কুর্ . রকে Hund (হণ্ড) বলিয়া থাকে।

আমি কাপ্তেন হটরীকের সহিত আমেন্টার্ডাম না দেখিতে গমন করিলাম। পথিমথ্যে বাইতে যাই। এক প্রকার অপূর্বে গাড়ী দেখিয়া বিস্ময়ান্নিত হইলাম এই গাড়ীতে চাকা বা স্প্রীং কিছুই নাই, কেবল কয়ে খণ্ড কার্চ্চের উপর স্থাপিত। পথিমধ্যে কাপ্তেন হটয়ী হলণ্ডের অনেক বিবরণ কহিতে লাগিলেন। হলা আমেন্টার্ডাম ব্যতীত হেগ, রটার ডম্, লীডন্, হারকে প্রম্ভৃতি অনেক নগর আছে। তাহার মধ্যে হেগ না রাজার বাসস্থান।

হলগু দেশ অতি সমতল, এবং চারি দিকে খাল ব বেপ্তিত। অধিবাসীরা সচরাচর নৌকাযোগে গতা করিয়া থাকে। হলগুর অধিকাংশ ভূতাগ জলমা ছি কিন্তু ইহারা ডাইক্স ঘারা জলকে স্থলে পরিণত ব য়াছে। আবার কোন কোন সময়ে জল প্রবাহে ডাই। ভগ্ন হইরা লোকের আবাস স্থান প্রাবিত হয়, এবং আ কের প্রাণহানিও হইয়া থাকে। কাপ্তেন হটরীক ব নে, এদেশে Stork সারস নামে এক প্রকার পক্ষী ছে। সারস দেখিতে প্রায় হংসের ভার, সারসদিগের নক জননী বৃদ্ধাবস্থায় উপনীত হইলে সন্তানগণ তাহাগকে পৃষ্ঠদেশে বহন করিয়া লইয়া যায়। হলগুবাসীরা রস পক্ষীর অভিশয় যত্ন করিয়া থাকে। এদেশীয়াগের এই প্রকার সংক্ষার যে, যদ্যপি কোন সারস হারও বাটীর উপর বাসা করে, তাহা হইলে গৃহামীর সমূহ মঙ্গল হইয়া থাকে। কেহ ভ্রম ক্রমেও সারস ক্ষীর উপর কোন অত্যাচার করে না, এই নিমিত্ত প্রতিহের উপরে সারসপক্ষীর কুলায় দেখা যায়।

দশম পরিচেছদ। মহান্তভব পিটারের গ্লা।

আমেন্টার্ডেম নগরের কয়েক ক্রোশ দূরে সার্ডাম
ক এক নগর আছে। অতি পূর্বকালে এই নগরে
ক্রিজ নির্মিত হইত এই কারণে, এই স্থানে অনেক
ক্রির বাস ছিল। এই ছুতারদিগের মধ্যে মান্টারপিটার
ক এক ব্যক্তি ছিলেন। তোমরা কি কেহ মান্টার

টারের গল্প শুনিয়াছ

ই বদি না শুনিয়া থাক, বলিতেছি
কর। একদিবস ছুতার মগুলী মান্টার পিটারকে
ক্রার সম্রাট বলিয়া জানিতে পারিয়া বিশ্মিত হইল,
পরস্পার বলিতে লাগিল, ইনি সম্রাট হইয়া কি

নিমিত্ত সামাত্ত লোকদিগের সহিত সামাত্ত কার্য্যে প্রের্ হইয়াছেন ?

পিটার এই বাক্য শ্রেষণ করিয়া তাহাদিগকে সংছ ধন পূর্বক কহিলেন, আমি রুসিয়া দেশের সম্রাট রুসিয়া এই স্থান হইতে অনেক দূর উত্তরে অবস্থিত আমার প্রজারা জাহাজ নির্মাণ করিতে জানে না। প্রকারে জাহাজ নির্মাণ করিতে হয়, ইহাই জানিবা নিমিত্ত আমি এখানে আসিয়াছিলাম। এক্ষণে আমি শিষ্ করিয়াছি, এবং দেশে প্রত্যাগমন করিয়া লোকদিগ শিক্ষা দিব। এই ঘটনার কয়েক বৎসর পরে পিটা স্থাদেশে যাইয়া প্রজাদিগকে জাহাজ নির্মাণ এবং অপর পর কারুকার্য্য শিক্ষা দিয়াছিলেন।

পিটার ক্রসিয়া দেশে সেণ্টপিটসবর্গ নামক নগ স্থাপন করেন, এবং অস্থান্ত অনেক মহৎ কার্য্য সম্পাদ করিয়া ভুবনবিখ্যাত হইয়াছিলেন। এই নিমিত্ত লোড তাঁহাকে (Peter the great) মহাত্মা পিটার কহিত সংকার্য্য করিলেই সকলে সেই কর্ম্মের প্রশংসা করিং থাকেন। স্বার্থপর লোকেরা দেশের অধীশর ইইলে লোকের নিকট সমাদর প্রাপ্ত হন না।

একাদশ পরিচেছদ।

আমরা ক্রেক সপ্তাহ আমেফার্ডেম নগরে অতিবাহি

রিয়া ডেন্মার্কে বাত্রা করিলাম, এবং ডেন্মার্কের রাজ-ানী কোপেনহেগেন নগরে উপস্থিত হইলাম। ডেন্মার্ক-। াসীরা তাহাদিগের স্বদেশীয় ভাষায় কথাবার্ত্তা করে।

এক দিবস আমি বেড়াইতে বেড়াইতে দেখিলাম, ক রাস্তার এক স্থানে জনতা হইয়াছে, এবং এক াক্তিকে লইয়া টানাটানী করিতেছে। আমি গোল-াগের রুত্তান্ত অবগত হইবার নিমিত্ত আগ্রহ সহকারে নতার নিকট গমন করিয়া দেখি, যে ধৃত ব্যক্তির চতু-নকে এত লোক দাঁড়াইয়াছে যে. তাহাকে দেখিতে াইলাম না, কেবল জনতার মধ্য হইতে এক ব্যক্তি াজী কথা কহিতেছে শুনিতে পাইলাম। আমি অধিক গতৃহলাক্রাস্ত হইয়া অতি কক্টেজনতাভেদ করিয়া থি যে, যে ব্যক্তিকে তাহারা টানাটানী করিতেছে সে ামার পরিচিত জেকিন্স। আমি বিনয় সহকারে ভাহা-গকে কহিলাম যে তোমরা এই ব্যক্তিকে মৃক্ত কর দ্তু কেহই আমার বাক্যে কর্ণপাতও করিল না। অব-াবে আমি বলপূর্ব্বক তাহাদিগের হস্ত হইতে জেঙ্কিন্সকে ক্ত করিতে চেফা করিয়া, যে তাহার হাত ধরিয়াছিল. াহাকে এক **ধাৰু। দিলাম। সে** একটু প**শ্চাদ্বৰ্তী হই**বা-ত্র আমি জেঙ্কিন্সের সহিত উর্দ্ধখাসে দৌড়াইতে আরম্ভ ^{রিলাম}। কিন্তু অতি অল্লদূর যাইতে না যাইতেই, হারা আসিয়া আমানিগকে পুনর্কার বেষ্টন করিল।

তাহাদিগের মধ্য হইতে ছুই বা তিন ব্যক্তি ক্ষেক্কিল করেল,এবং চারি পাঁচ জনে আমাকে বেইটন করিল আমি ইহাদিগের সহিত বাক্য ব্যয় রুধা মনে করিলাম কারণ, তাহারা কেহই আমাদিগের ভাষা বুঝিতে সমানহে। তাহারা অবশেষে আমাদিগের ভাষা বুঝিতে সমানহে। তাহারা অবশেষে আমাদিগেকে কারাগারে লইয় গেল, এবং এক অন্ধকার গৃহে আবদ্ধ করিয়া রাখিল জেক্কিলকে আমি এই ঘটনার কারণ জিজ্ঞাসা করালে সে কহিল, কোন ব্যক্তি একজনের একটী ঘড়ী অপহয় করিয়াছে এবং ইহারা আমাকেই সেই ব্যক্তি মে করিয়া ধরিয়াছে। ইহাই সমস্ত গোলযোগের কারণ আমি কাপ্তেন ফিলিপ্কে এই সকল রুভান্ত এবং আমাদিগের ছর্দ্ধশার বিষয় বিলয় পাঠাইলাম। তিনি সহয়ে মাাজিপ্তেটের নিকট গমন করিয়া সমস্ত বুভান্ত বলিলেল আমরা তুই এক দিবদের মধ্যে কারামুক্ত হইলাম।

আমি অতি অল্লকাল ডেক্মার্কে অবস্থান করিয়া ছিলাম। ডেক্মার্কবাসীরা নৃত্যগীত অতিশর ভালবাদে আমি একদিবস ডেক্মার্কের এক পথ দিয়া গমন করিয়ে করিতে দেখিলাম, একব্যক্তি রাস্তার মধ্যস্থলে শরু করিয়া আছে। তাহার নিকট গমন করিয়া অবগত হা লাম যে, সে মদ্যপান করিয়া জ্ঞানশৃশ্য হইয়া মৃত্য পড়িয়া আছে। সে দিবস অতি শীতল বায়ু প্রবাহি হইতেছিল, এই নিমিত্ত তাহার শরীর এবং অঙ্গুলী স য় অসাড় হইয়া পড়িয়াছে। আমি অন্যান্য লোকের হায়ে তাহাকে তাহার বাটা লইয়া গেলাম। বাটাতে ব্যক্তির স্ত্রী এবং তিনটা পুত্র ছিল। রাত্রির মধ্যেই আপন পুত্র এবং পরিবারদিগকে অকূল পাথারে সাইয়া কালগ্রাসে পতিত হইল। এই ব্যাপার অবশ্বন করিয়া আমি প্রতিজ্ঞা করিলাম, যে প্রত্যেক করিতে চেন্টা করিব। ডেন্মার্ক ও অতি সমতল দেশ। এখানে সচরাচর ক্রটিকা হইয়া থাকে। ডেন্মার্কের অধিবাসীর সংখ্যায় বিশ লক্ষ হইবে। আমরা যে সময়ে তথায় গমন রয়াছিলাম, সে দেশের তৎকালীন রাজার নাম সপ্তম

वानक शतिरुक्त।

ऋईए७न् ।

কোপেন হেপেন নগরে এক মাস অভিবাহিত করিয়া
নরা করিয়ায় সেন্টপিটার্সবর্গে যাত্রা করিলাম।
নরা ইউরোপের ম্যাপ দেখিলেই বুঝিতে পারিবে যে
াপেন হেগেন হইতে সেন্টপিটর্স বর্গ যাইতে হইলে
ন্টিক সাগরই প্রশস্ত পথ। আমি জেক্কিসকে অনুরোধ
ালে ভিনি আমাদিগের সহচর হইলেন, এবং আমরা

জাহাজারোহণ করিয়া সেণ্টপিটর্সবর্গ অভিমুখে প্রস্থা করিলাম।

জেক্ষিন্স আমার পূর্ব্বে আমেরিকা হইতে ইউরোদ উপস্থিত হইয়া স্কুইডেনের প্রধান নগর ষ্ট্রকহলমে ক্রি কাল অবস্থান করিয়াছিলেন। তিনি পথিমধ্যে উক্তদে সম্প্রকীয় অনেক গল্প করিতে লাগিলেন।

জেকিন্স কহিলেন প্রকারন্য নগরে কভকগুলি লো আছে, তাহারা রাত্রিকালে পাহারা দিয়া থাকে। এদে এই দলভুক্ত লোকদিগকে (Watch man) ওয়াচ মা কহে। ওয়াচম্যানেরা রাত্রিকালে "সর্ব**ণক্তিমান**, পা মেশ্রের মহাস্ত্র, অগ্নি হইতে আমাদিগের নগরকে রু ককন" এই বলিয়া পথে পথে চীৎকার করিতে থাকে স্থইডেন যদিও অতি বিস্তৃত দেশ, কিন্তু প্রায় সমস্ত শ্ব পাহাড় পর্ববত এবং বন জঙ্গুলে আর্ত। অধিবাসীরা সবল এবং প্রিয়দর্শন। স্থইডেনে প্রায় ক্রি লক্ষ লোকের বাস। এখানে শীত অতিশয় প্রকা স্কুইডেনে এই প্রকার এক প্রথা আছে, যে তাহারা মাসের প্রথম দিবসে এক প্রাস্তরে যাইয়া. অগ্নি জানি সেই স্থানে আমোদ আহলাদে রত হইয়া, আমৌ প্রকাশ করিতে থাকে। আবার যে দিবস হইতে গ্রীনে ় হ্রাস হয়,তাহারা সেই দিবসে নিশাকালে প্রাঙ্গণের ^{ব্র} র্ভাগে এক ধ্বজা পুতিয়া তাহার চারি দিগে নৃত্য ^{ক্রো}

ইরূপে কয়েক ঘণ্টা অভিবাহিত করিয়া ভাহারা ধর্মা-য়ে গমন করে, এবং ঈশ্বরের নিকট আশ্রেয় যাচ্ঞা রিয়া পুনর্কার আমোদে প্রবৃত্ত হয়।

আমি তোমাদিগকে স্থইজারলণ্ডের এক রাজার গান্ত বলিতেছি, শ্রবণ কর। এই দেশে অতি পূর্ব্ব-লে ভাদশ চারল্স (Charles the XII.) নামে চ রাজা ছিলেন। তিনি পঞ্চদশ বৎসর বয়ঃক্রম কালে ংহাসনে অধিরূঢ় হন। ডেন্মার্ক, প্রসিয়া, রুসিয়া ভৃতির সন্নিকটস্থ রাজগণ চারলস্কে অতি অল্লবয়স্ক খিয়া মনে করিলেন, যে তাঁহারা অতি সূহক্তে চারল্সের জ্য হস্তগত করিতে সমর্থ হইবেন। মনোমধ্যে এই র করিয়া তাঁহারা চারল্দের রাজ্য আক্রমণের উদ্যোগ রতে লাগি**লেন। এদিকে চারল্স এই সমস্ত ব্যাপার** গেত হইয়া কতকগুলিু সৈন্ত সংগ্রহ করিয়া একেবারে মার্কে আসিয়া অবতীর্ণ হইলেন। ডেন্মার্কে উপস্থিত বোমাত্র একদল ডেকা সৈশ্য তাঁহার সন্মুখীন হইল, ে উভয় সৈতা তুমুল যুদ্ধ আরম্ভ করিল। অবশেষে াল্স° যুদ্ধে জয়লাভ করিয়া সন্ধি করিলেন, এবং মার্কের রাজাকে এই মর্ম্মে সন্ধি পত্রে স্বাক্ষর করাইয়া লেন, যে তিনি আর কখন স্থইসদিগের উপর কোন নার অত্যাচারে প্রবৃত্ত হইবেন না। এই প্রকারে মার্কের অধিপতিকে সন্ধিসূত্রে বন্ধ করিয়া প্রত্যাবর্ত্তন

কালে লাভাতে রুসিয়ার এক দল সৈহাকে করেন। রুসিয়ান্ সৈত্তদল, চারলসের সৈত্তগণ অপেক চতুগুণ অধিক ছিল, এবং পিটার ভাহাদিগের সে नाग्रक ছिलেन। এই ঘটনার পরেই চারল্স সদৈ পোলাণ্ডে যাত্রা করেন, এবং পোলাগুরাজকে সিংহা চ্যত করিয়া তৎপদে আর এক জনকে অভিষেক কা **িলেন। তিনি পুনঃ পুনঃ জয়ে এ প্রকার উদ্রিক্ত হই** ছিলেন, যে অবশেষে রুসিয়ান্দিগের দেশে গমন করি তাহাদিগকে আক্রমণ করিতে অভিলাষী হন। রুসিং অন্তর্গত পোটোলা নামক এক নগরে, চারল্সের গৈ গণ রসিয়ান্ সৈতাদিগের সম্মুখীন হইল। উভয় সৈ পরস্পর সাক্ষাৎ হইবামাত্র যুদ্ধ আরম্ভ হয়, এবং তৃ সংগ্রামের পর চারল্সের সৈত্তগণ পরাস্ত হইয়া এ সকলেই নিহত হইল। চারল্স অনভোপায় হ কয়েকজন সহচরের সহিত পলায়ন করিলেন, কিন্তু রা য়ান্ সৈন্যগণ তাঁহার অনুসরণ করিল। চারল্স 🔊 কষ্টে তুরুকে উপস্থিত হইয়া স্থলতানের শরণাপন্ন হই শক্র হস্ত হইতে মুক্ত হইলেন। এই স্থানে তিনিপীড় ভাণ করিয়া ক্রমাগত দশ মাস কাল শ্যাগত রহিলে

এই প্রকারে কয়েক মাস অতিবাহিত করিয়া চার এই স্থান হইতে পলায়নের চেফা করিতে লাগিলে কিন্তু একে তুরক হইতে তাঁহার দেশ অনেক দূর,তাহা বার তিনি চারিদিকে শক্ত ঘারা বেপ্লিড, স্থতরাং
ায়নের কোন আশু স্থােগ পইলেন না। অবশেষে
রল্স অনেক চিন্তার পর সাহসের উপর নির্ভর করিয়া
টো মাত্র বন্ধুকে সঙ্গে লইয়া, শক্ত মধ্য হইতে পলায়ন
রলেন, এবং অনেক বিপদ অতিক্রম করিয়া স্থইডেনে
শন্তিত হইলেন।

এই সকল ঘটনার পরেও চারল্সের রণকগুরুন বুত্ত না হওয়াতে, তিনি বিংশতি সহস্র সৈন্য সংগ্রহ বুয়া নরওয়ে আক্রমণ করিতে গমন করিলেন।

এক দিবস তিনি শক্রদিগের পার্ম দিয়া যাইতে-লন, এমন সময়ে শক্রগণ তাঁহাকে লক্ষ্য করিয়া মান ছাড়িল। চারল্স গোলা দারা আহত হইবামাত্র র্তু মাত্রে সেই স্থানে পঞ্চত্ব প্রাপ্ত হইলেন।

তোমাদিগের সকলের মনোযোগ সহকারে চারল্সের ন্তি পাঠ করা কর্ত্তব্য। ইহাঁর বৃত্তাস্ত তোমাদিগের তিপ্রদ হইবে। চারল্সের বৃত্তাস্ত পাঠ করিলে মরা-জানিতে পারিবে, যে তিনি এক জন সাহসী ায, এবং প্রজাগণের উপকার করিয়া যশোলাভ তে ইচ্ছুক ছিলেন। প্রজাগণের মঙ্গলের নিমিত্তই ন কত শত লোককে বধ করিয়াছেন এবং আপনাকে বিপদে নিক্ষেপ করিয়াছিলেন।

ত্রয়োদশ পরিচেছদ।

নরওয়ে।

নরওয়ে ইউরোপের উত্তরভাগে অবস্থিত। অত্র লোকেরা ডেন্স ভাষায় কথাবার্ত্তা কছে। ইহারা ডেন দিগের স্থায় স্থরাপানে আসক্ত নহে। নরওয়েবাসী . অতি সরল এবং আতিথেয়। নরওয়ের উত্তরভাগের সমূ একটী পাক্ আছে, তাহাকে মেল্ট্রম কহে। এদেশবাসী ইহার অবস্থাকে দশগুণ বুদ্ধি করিয়া বর্ণন করিয়া থাকে কতকগুলি লোকে কহে. এই পাকের জল চতুর্দিট মহাবেগে বর্ত্ত্বাকার হইয়া ঘুরিতেছে, এবং বজ্র শর্মে স্থায় অনবরত শব্দ হইতেছে। কোন জাহাজ ঘটনাক্রা এই স্থানে আসিয়া উপস্থিত হইলে পাক দ্বারা আরু হয়, এবং জলের আঘাতে চুর্ণ হইয়া পাকের মধ্যয় উচ্চশির হইয়া সাগর গর্ভে প্রবেশ করে। সময়ে বৃহদাকার তিমি মৎস্থ অতি দূর হইতে জল ঝে আকৃষ্ট হইয়া পাকের মধ্যে পতিত হইয়া বিনষ্ট হা তিমি মৎস্তেরা আবর্ত্ত দারা আকৃষ্ট হইবামাত্র জানি পারিয়া বিধিমতে পলাইবার চেফ্টা করিতে থাকে, 🍕 যখন জানিতে পারে যে পরিত্রাণের আর কোন উর্গ নাই.সেই সময়ে অতি করুণসূচক আর্দ্তনাদ করিতে ক্য আবর্ত্তমধ্যে নীত হয়, এবং জলবেগে প্রাণত্যাগ করে জেকিন্স নরওয়েতে যান নাই, কিন্তু সুইডেনে গ

ন কালীন এই দেশের অনেক বৃত্তাস্ত শুনিয়াছিলেন।
ন কহেন বস্থা পশুর মধ্যে এখানে বস্থা বরাহের সন্ধ্যা
ধক। এখানকার বস্থা বরাহগণ কাহারও কোন অপর করে না। কথিত আছে একজন নরওয়েবাসী এক
নদী পার হইবার নিমিত্ত এক নৌকাতে আরোহণ
রয়াপর পারে বাইবার উপক্রম করিতেছে, এমত সময়ে
হবস্থা বরাহ তীর হইতে লক্ষ্ণ প্রদান পূর্বক তর্নীতে
ক্রিত হইল, এবং নৌকার এক পার্ষে উপবেশন
রিল। তরণী পর পারে উপস্থিত হইবামাত্র বরাহ
গ্রীর ভাবে এক লক্ষ্ণে তীরে পতিত হইয়া অভীফ্ট দেশে
ভান করিল।

নরওয়ে দেশের এই এক প্রকার রীতি,যে কোন ব্যক্তির দেহ সমাধি ক্ষেত্রে লইয়া যাইবার কালে এক ব্যক্তি ার সর্ব্বাত্যে বেহালা বাজাইতে বাজাইতে গমন করে। দশের অন্যান্য অংশের লোকেরা মৃত ব্যক্তিকে "তুমি ন মরিলে ? তোমার স্ত্রী পুত্র তোমাকে ভাল বাসিত না" এই প্রকার প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করে।

নরওঁয়েতে প্রায় পঞ্চদশ লক্ষ লোকের বাস। এদেশে ইরাজা নাই, অধিবাসীরা স্থইডেনের রাজাকেই আপনগের অধীশ্বর বলিয়া মানে। স্থইডেনের প্রধান নগর
নগেন। (Bergen) এদেশ গ্রীষ্মকালে অভিশয় উষ্ণ এবং
নিলাল সেই পরিমানে শীতল হয়। নরওয়েবাসীরা

শীত নিবারণের নিমিত্ত পশুলোম ঘারা প্রস্তুত বস্ত্র ব্যব হার করে। এদেশ এ প্রকার শীতল যে এক শত বংদ পূর্বের এক দিবস প্রায় সপ্ত সহস্র স্থাস নৈন্য এক পর্বন উল্লন্ডন করিতেছিল, তাহারা পর্ববতের কিয়দ্দুরে আসিব মাত্র শীত প্রভাবে তাহাদিগের শরীর অবশ হইয়া আয়ে এবং অতি অল্প কাল মধ্যে প্রত্যেকে যে যে ভাবে ছিন্ সে সেই ভাবেই প্রাণত্যাগ করিল।

পঞ্চদশ পরিচেছদ।

ল্যাপলাও।

ল্যাপলাগু ইউরোপের উত্তর দিকের প্রান্তভা ত্থাপিত। ল্যাপলাগু একটাও বৃহৎ নগর নাই। এটে অতি অমুর্বর, এবং অধিকাংশ স্থান মরুভূমিতে ব্যাপ্র ল্যাপলাগুর অধিবাসীরা যাযাবর, অর্থাৎ তাহাদিটে বাসস্থানের কোন স্থিরতা নাই। এদেশীয়েরা শীতকা কুটারে এবং গ্রীক্ষকালে হরিণচর্ম্মনির্মিত তাম্পুতে কার তিপাত করিয়া থাকে। বংসরের মধ্যে নয় মাস কাল ও স্থানে শীত অতিশয় প্রবল থাকে। শীতকালে রাটি ভাগ অধিক হয়, এমন কি ছই তিন মাস কেহ সূর্যে মুখ দেখিতে পায় না। এই সময় অরোরা বোরিয়নী নামক নক্ষত্রের আলোকে জন্ধকার বিনষ্ট হয়।

কৃষ্ণবর্ণ বিড়ালের উপর ল্যাপলাগুবাসীদিগের প

ায় ভক্তি। প্রত্যেক গৃহস্থের এক একটা কুষ্ণবর্ণ বিভাল দুখা ষায়। এদেশবাসীরা ইফানিফ কার্য্যে এবং সকল ধকার আপদ বিপদের পরামর্শ বিড়ালকে জিজ্ঞাসা চবিয়া থাকে। ইহারা অরণ্যে শিকার বা মৎস্য ধরিতে াইবার কালে কাল বিডালকে সঙ্গে করিয়া লইয়া যায়। mপলাণ্ডের লোকেরা চক্রহীন শকটে আরোহণ করিয়া ভিস্ততঃ গমনাগমন করে। হরিণই ^{*}এদেশীয়দিগের ধুধান সহায়। যদি ইহারা হরিণের সাহায্য না পাইত. াহা হইলে কোন ক্রমেই ল্যাপলাণ্ডে মনুষ্ট্যের বসতি ইত ন। দেখ ল্যাপলাগুবাসীরা হরিণ দ্বারা চক্রেহীন কট চালায়,ইরিণের মাংদে জীবিকা নির্ব্বাহ করে, এবং রিণের চর্ম্মে বস্ত্র প্রস্তুত ক্রিয়া শীত নিৰারণ করে, ও হা দারা তম্ব প্রস্তুত করিয়া তাহাতে সপরিবারে বাস রিয়া থাকে। এদেশজাত হরিণকে রেন্ডিয়ার বা লগা হরিণ কহিয়া থাকে। বল্গা হরিণ এক দমে বিশ ক্রাশ গাড়ী টানিয়া যায়। জগদীশ্বর সকল দেশীয় াকদিগকে স্থাপে রাখিবার নিমিত্ত এক এক উপায় र्फिके कित्रश मियार्कन ।

হরিণ ল্যাপলগুবাসীদিগের জীবনোপায়, আরব বা হারা বাসীরা উষ্ট্রবারা আপনাদিগের জীবিকা নির্বাহ রিয়া থাকে,এবং কামেক্ষাট্কাবাসীরা কুকুরের সাহায্য হণ করে। এই প্রকার প্রত্যেক দেশেই এক এক প্রকার পশু মনুষ্যের সাহায্যে ত্রতী আছে। ইহা দার
স্পান্ধ প্রতীয়মান হইতেছে যে, পশুগণ আমাদিগের ফ্
সমূহের সহায়; স্ত্তরাং পশুদিগের উপর নির্দিয় ব্যবহা
করা মনুষ্যগণের কর্ত্তব্য কর্মা নহে। বালক বালিকাগণ
আমার বোধ হয় তোমরা এই সকল বৃত্তান্ত পাঠ করিঃ
কুদাপি পশুদিগের উপর ক্রীড়াচ্ছলেও নিষ্ঠুর ব্যবহার
ত্রতী হইবে না

ষষ্ঠ দশ পরিচেছদ। দেণ্টপিটার্সবর্গের বিবরণ।

কয়েক সপ্তাহ পরে, আমরা কোপেনহেগেন্ পরি
ত্যাগ করিয়া সেন্টপিটার্সবর্গে উপনীত হইলাম। সেন্ট
পিটার্সবর্গ অতি বিস্তৃত নগর, এবং রুসিয়ার রাজধানী।
ইতিপূর্বে উক্ত হইয়াছে, যে প্রায় এক শত বৎসর পূর্বে
মহাত্মা পিটার (Peter the great) এই নগর স্থাপন
করেন। রুসিয়ার অধিবাসীরা সচরাচর মূর্থ, কিন্তু অন
কেই সর্বন। প্রফুল্ল চিত্তে কাল যাপন করিয়া থাকে। এ
দেশের অধিকাংশ অধিবাসী ধনী লোকদিগের ক্রেতিদার
ক্রসিয়ার ধনবান লোক ক্রেতিদাসদিগের উপর অতিশ
ত্র্বেবহার করিয়া থাকেন। পৃথিবীর সমস্ত দেশ অপেদ
ক্রসিয়া অতি বিস্তৃত। এদেশের অধিবাসীর সংখ্যা প্রা
এক কোটি দশ লক্ষ হইবে। অধিবাসীর অধিকাংশ দ্বি

বং অসভ্য। আমি সেণ্টপিটার্সবর্গে ক্রমাগত ছই মাস ল অবস্থান করিয়া অনেক বিবরণ জ্ঞাত হইয়াছিলাম। এক দিবস ভ্রমণ করিতে করিতে আমার একজন রাজ ব্যবসায়ীর সহিত সাক্ষাৎ হয়। তিনি মক্ষো রের ব্যবসায় কার্য্য করিয়া থাকেন। আমি কৌত্ গাক্রান্ত হইয়া, মক্ষো প্রভৃতি অন্যান্য নগরের বিবরণ ভ্রোসা করাতে, তিনি আহ্লাদ সহকারে, আমাকে াদ্যোপান্ত কহিলেন। মক্ষো নগর মহাত্মা পিটারের মস্থান।

গগনমণ্ডল আচ্ছন্ন করিয়া, দিবাভাগকে নিবিড় অন্ধকারে পরিণত করিল, এবং অতি সম্বর, প্রায় সমুদ্র মস্কোনগর, তস্মাবশেষ লইয়া গেল। এ দিকে নেপোলিরনের সৈদ্ধাণ পলায়ন কালীন প্রভৃত তৃষার রাশিতে সমাহিঃ হইতে লাগিল, এবং বহুসংখ্যক সৈন্থের মধ্যে কয়েকজন্মাত্র, বিজ্ঞান্তের ও তুর্দ্দশার সংবাদ লইয়া ফ্রান্সে উপনীর হইল।

রসিয়ানদিগের ভ্রমণের শকট অতি স্থপ্রদ। তাহার চক্রহীন শকটের উপর পশুলোম বিস্তরণ করিয়া সমর তৈজসপত্র লইয়া ভাহাতে আরোহণ করে। শকটে সচরাচর চারি কিম্বা ছয় ঘোড়া যোজনা করে, এবং অধিব দূর যাইতে হইলে তাহারা শকটমধ্যেই পানাহার সম্পন্ন করিয়া থাকে। ইহাদিগকে পথিমধ্যে অবতরণে ক্রেশ সহ্য করিতে হয় না। অতিশয় শীতের সময় এই প্রকার গাড়ীতে কোন ক্লেশ হয় না। আমি সেন্টপিটার্গ বর্গে অবস্থান কালীন প্রাম্কোভিয়া নাম্মী এক যুব্রী কন্থার গল্প শ্রবণ করিয়াছিলাম। প্রাম্কোভিয়ার গল্প ভামাদিগের প্রীতিপ্রাদ হইতে পারে, অমুমান করিয়া কহিতেছি, প্রবণ কর।

ষোড়শ পরিচেছদ।

লপোলোফ নামক এক ব্যক্তি ক্রসিয়ায় বাস ^{কা} তেন। কোন সময়ে ক্রসিয়ার সম্রাট, বা **ভ্ছা**র, লগে নাফের প্রতি কুপিত হইরা তাঁহাকে দ্রী এবং একটা াশু কন্তার সহিত আসিয়ান্থিত সাইবিরিয়া দেশে ার্ব্বাসিত করিয়াছিলেন। সাইবিরিয়া অতি অরণ্যময় াদেশ, এবং সেণ্টপিটার্সবর্গ ইইতে অনেক দূরে অৰ-_{ইত।} এদেশের অরণ্যের সর্বস্থানই বন্যজন্তুতে পরি-ৰ্ণ, এবং কয়েকজন নিৰ্ববাসিত ব্যক্তি ব্যতীত এখানে ন্য লোকের বাসস্থান নাই। স্থতরাং এমতস্থলে পোলোফ যে, কোন বন্ধু বান্ধব পাইবেন ভাহারও ন্তাবনা ছিল না। মানব জ্বাতির স্বভাব এই যে তাহারা াক সহবাস ব্যতিরেকে কদাপি নিৰ্জ্জন স্থানে বাস রিতে সমর্থ হয় না, এবং এই নিমিত্ত সির্বাসিত ক্তিদিগকে **অনেক ক্লেশ স**হ্য করিতে হয়। স্থতরাং পোলোফও সেই কন্টের হস্ত হইতে পরিত্রাণ পান ই। লপৌলোফের শিশু কন্যাটীর নাম প্রাক্ষোভিয়া। क्षित्रा कालक्रा शक्षम् वर्ष शमार्थन कतिल। াষে।ভিয়ার স্বভাবটা প্রীতিপ্রদ ছিল বলিয়া, তাহার তা মাতা তাহাকে অতিশয় স্নেহ করিতেন।

এক দিবস প্রাস্কোভিয়া দেখিল বে তাহার পিতা ত তুঃখিতান্তঃকরণে বসিয়া জাছেন, এবং জননী দিতেছেন। প্রাস্কোভিয়া তাঁহাদিগের এই প্রকার স্থা দর্শন করিবামাত্র ক্রতগতি পিতা মাতার সমীপ-াঁ হইল, এবং কৃছিল ভোমাদিগের কি হইয়াছে: ভোমরা কাঁদিতেছ কেন; আমাকে বল, আমি ভোমা দিগের ছংখ দূর করিব। এই কাব্য শ্রবণ করিরা প্রাক্ষোভিয়ার মাতা কহিলেন, বাছা! আমরা এককারে দেউপিটার্সবর্গে বাস করিতাম। সেখানে আমাদিগের ধন ছিল, বন্ধু ছিল, সহায় ছিল, এবং সুখ ছিল। কিছ ছুলাগ্য বশতঃ সম্রাট আমাদিগকে এই দূরবর্তী বিজ্ঞা ভানে নির্কাসিত করিয়াছেন। এক্ষণে আমরা অরি ছঃখের দশায় কালাতিপাত করিতেছি।

প্রাক্ষেভিয়া কহিল মা! আমি সমাটের নিকট গম করিয়া কহিব যে আমার পিতা নির্দ্দোষ। আরও কহিং যে আমরা সেখানে অতি কয়ে কালাতিপাত করিতেছি এবং অবশেষে অতি কাতরতার সহিত সেণ্টপিটার্সবর্গ প্রত্যাবর্ত্তনের অমুমতি প্রার্থনা করিব। সমাট অহি দয়ালু, বোধ হয় এ প্রকার যথাযথ প্রার্থনা অগ্রাহ করিবেন না। প্রাক্ষোভিয়ার পিতা মাতা প্রথা তাঁহাকে সমাটের নিকটে গমনের মানস হইতে নির্হ হইতে কহিলেন, কিন্তু প্রাক্ষোভিয়ার পীড়াপীড়িছে অগত্যা সম্মত হইতে হইল। সম্মত হইলেন বলৈ, কিই পথিমধ্যে পাছে প্রাক্ষোভিয়ার কোন বিপদ উপশ্বি

প্রাকোভিয়া দেণ্টপিটার্সবর্গে বাইবার নিমিত্ত প্র^{ক্} হইল। তাহাকে অনেক দুর বাইতে হইবে, কিন্তু ^{ক্} ইবার কেহ নাই, পথখরচের এক পয়সাও সম্বল
ই। প্রান্ধোভিয়া জানু পাতিয়া ঈশ্রের নিকট
গ্রদমর্পণ করিয়া প্রার্থনা করিল "হে পরমেশ্বর!
মই অসহায়ের সহায়, নির্ধনের ধন, আমি তোমার
গর নির্ভর করিয়া বহুদুরস্থিত অপরিচিত দেশে যাইতে
গ্রত ইইলাম। আমি একাকিনী, আমার সঙ্গে কেহ
ই, অসহায়া ইইয়া গভীর অরণ্য, বিজ্ঞন প্রান্তর, ভয়য়র
মত্মি, এবং অত্যুক্ত পর্বত পার ইইতে ইইবে, প্রভু;
ম আমার সহায় ইও এবং তোমারই উপর নির্ভর
রিয়া আমি অকূল ছুরাশা সাগরে ঝাপ দিলাম।" এই
কারে প্রার্থনা সমাপন করিয়া প্রান্ধোভিয়া পিতা
তার নিকট ইইতে বিদায় গ্রহণপূর্বক পদত্রজ্ঞে সঞাট
গীপে প্রস্থান করিল।

এক দিবস প্রাক্ষোভিয়া অরণ্যের মধ্য দিয়া যাইছে এমত সময়ে ঝড় বৃষ্টি আরম্ভ হইল, এবং অতি
ক্ষণ পরেই তাহার সম্মুখবর্তী পথে এক প্রকাণ্ড
কৈহ শাখা প্রশাখা সহিত, বায়ুবেগে ভূমিতলে পতিত
ল। - প্রাক্ষোভিয়া ভয়ত্রস্তা হইয়া নিবিড় অরণ্যে
বেশ করিল। ক্রেমে রাত্রি উপস্থিত হইল, প্রাক্ষোয়া আর গন্তব্য পথ দেখিতে পায় না।

প্রথমে পথভ্রম্ভী হইয়া অন্ধকারেই ইতস্ততঃ ঘুরিয়া ড়াইতে লাগিল, কিন্তু অবশেষে ক্ষুধায় কাতর, এবং

জলে আর্দ্র হইয়া, সমস্ত রাত্রি সেই বিজ্ঞন বিপিনে আ বাহিত করিল। প্রভাত হইবামাত্র এক ব্যক্তি সহস সেই স্থানে উপস্থিত হইয়া, প্রাস্কোভিয়ার এই প্রকা অবস্থা অবলোকন করতঃ দয়ার্দ্র হইয়া তাহাকে একখানি গাড়ীতে উঠাইয়া গ্রাম মধ্যে লইয়া গেল। গ্রামে উপক্রি হইয়া শক্ট হইতে অবতরণকালে প্রাক্ষোভিয়ার পদ্য শন হইল এবং সে কাদায় পড়িয়া গেল,ও তাহার সর্বাঃ কর্দ্ধমাক্ত হইল। প্রাক্ষোভিয়া এই প্রকার অবস্থা প্রত্যেক বাটীর দ্বারে দ্বারে, গমন করিয়া আশ্রয় প্রার্থন করিল, কিন্তু আশ্রায় প্রদান দূরে থাকুক্ সকলেই তাহানে দুর দুর করিয়া তাড়াইয়া দিল। কেহ কহিল এটা চো কেহ বলিল এটা অতি ছুফ লোক, এবং গ্রামস্থ বালকেয় ভাছার এই প্রকার অবস্থা দেখিয়া চোর চোর বলি তাহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ বেডাইতে লাগিল। প্রাস্কোজি নিরূপায় ও ক্ষুধা তৃষ্ণায় কাতর হইয়া, এক ধর্মালয়ে সমীপবৰ্ত্তী হইল,এবং অভ্যস্তরভাগে প্রবেশ করিয়া দে যে, দ্বার রুদ্ধ। অবশেষে অনস্থোপায় হইয়া ধর্মানয়ে সোপানে উপবেশন পূর্বক পরমেশ্বরের প্রার্থনায়-নিযুক্ হইল। এই সময়ে এক জ্রীলোক সেই স্থানে উপঞ্ হইল, এবং প্রাক্ষোভিয়ার এই প্রকার অবস্থা দর্শন করুণার্দ্র হইয়া ভাষাকে আপন গুছে লইয়া গেল, এর যথোচিতরূপে আহার করাইয়া কয়েকখানি বস্ত্র প্রদ্

রিল। প্রান্ধোভিয়া এই স্থানে কয়েক দিবস অবস্থান রিয়া, সেই স্ত্রীলোকটীকে ধস্তবাদ দিয়া পুনর্ব্বার গস্তব্য দেশ প্রস্থান করিল।

এইরূপ অবস্থায় কিছু কাল থাকিতে২ শীত উপস্থিত ল। ইতিপূৰ্বেক কথিত হইয়াছে যে, ৰুসিয়াতে অতান্ত তের প্রান্থলিব। শীতল বায়ু প্রবাহিত হইবামাত্র রি দিক হইতে তুষার পড়িতে আরম্ভ হইল। প্রাস্কো-য়ার শীতবস্ত্র কিছুই ছিল না, স্থতরাং তুষার ধবলিত । দিয়া যাইবার সময় তাহার সর্বাঙ্গ কাঁপিতে লাগিল। হার সোভাগ্যবলে এক ব্যক্তি চক্রহীন শকটারোহণে ই পথ দিয়া যাইতে যাইতে প্রাস্কোভিয়ার নিকটবর্ত্তী ল, এবং তাহার ছুৰ্দশা দর্শনে করুণার্দ্র হইয়া তাহাকে পন শকটে উঠাইয়া লইল। প্রাক্ষোভিয়ার শীতবস্ত্র ই দেখিয়া তিনি, একটা মেষ চৰ্ম্মের কোট্ ভাহাকে লন। এই প্রকার কটে অনেক দূর অতিবাহিত ^{রুরা} প্রাক্ষোভিয়া অবশেষে পীড়াগ্রস্ত হয়, এবং অধিক গমনে অসমর্থ হইয়া এক দয়ালু ব্যক্তির আশ্রয় গ্রহণ র। এই ব্যক্তির অমুগ্রহে চিকিৎসিত হইয়া ক্রমে ম রোগ হইতে মুক্ত হয়, এবং কিছুকাল পরে বল-প্ত হইয়া সম্রাট সদনে গমনোদ্ধেশে প্রস্থান করে। পথে এই প্রকার অশেষ কফ্ট সহু করিয়া অবশেষে ক্ষোভিয়া এক বৎসর পরে রুসিয়ার রাজধানী সেন্ট-

পিটার্সবর্গে উপনীত হয়, এবং সম্রাট প্রাসাদে গম করিয়া মহিষীর সহিত সাক্ষাৎ করে। সম্রাটমহিষী সাধ প্রহে তাহাকে নিকটে স্থান দিলেন। প্রাক্ষোভিয়া মরি ষীর অমুগ্রহে অমুগৃহীতা হইয়া আপনার বৃত্তান্ত আদ্যে পাস্ত নিবেদন করিল। মহিষী আমুপূর্ব্বিক সমস্ত এক ুক্রিয়া করুণার্দ্রা হইলেন, এবং তাহার পিতামাতাট মুক্ত করিয়া দিতে স্বীকৃতা হইয়াছিলেন। প্রাস্কোভি প্রাসাদ পরিত্যাগ করিয়া বাসস্থানে যাইবার নিমি রাজ্ঞাকে অভিবাদন করিলে, তিনি তাহাকে কিছু আ দিয়া সে দিবসের মত বিদায় দিলেন। রাজ্ঞী সঞা সমীপে প্রাস্কোভিয়ার বৃত্তান্ত আদ্যোপাস্ত বর্ণনা করিয়ে সমাট তাহার পিতামাতাকে মুক্ত করিয়া দিতে স্বীকৃষ হইয়া সাইবিরিয়ায়এক দৃত পাঠাইয়া দিলেন। লোফ এবং তাহার স্ত্রী আপনাদিগের মুক্তির সংবা প্রাবণ করিয়া, অতুল আনন্দে নিমগ্ন হইলেন, এবং অন্তি বিলম্বে দেণ্টপিটার্সবর্গ অভিমুখে যাত্রা করিলেন কিছকাল পরে দেণ্টপিটার্স বর্গে উপস্থিত হইলে, তাঁথ দিগের প্রাক্ষোভিয়ার সহিত সাক্ষাৎ হইল। প্রাশে ভিয়া পিতামাতাকে দেখিয়া তাঁহাদিগকে গাঢ় আলি করিয়া, আনন্দাশ্রু বিদর্জ্জন করিতে লাগিল। এ প্রকারে লপোলোফ কন্তার সহিষ্ণৃতা এবং সাহনে গুণে, পুনর্বার বন্ধুবর্গে পরিবৃত হইয়া সেণ্টপিটার্স্বা

থে কালাতিপাত করিতে লাগিলেন। দেখ দেখি, ংসন্তানগণ পিতামাতার কি পর্য্যন্ত উপকার করিতে মর্থ হয়, অসৎ সন্তানগণ পরিবারের কণ্টকতুল্য হইয়া াকে।

সপ্তদশ পরিচেছদ। পারলির প্রসিয়ায় যাতা।

আমাদিগের সেণ্টপিটার্সবর্গে পঁহুছিবার অব্যবহিত রেই কাপ্তেন ফিলিপ আমাদিগের জাহাজ বোল্ডহীরে৷ নি বিক্রয় করিয়া আর এক খানি জাহাজ নিযুক্ত করতঃ মেরিকায় প্রত্যাবর্ত্তনের উদ্যোগ করিতে লাগিলেন। ন্ত্র আমি ইউরোপে অন্যান্ত দেশ দেখিবার নিমিত্ত প্রকার কৌতৃহলাক্রান্ত হইয়াছিলাম, যে কোন প্রকা-ই স্বদেশ প্রত্যাবর্তনে সম্মত ইইলাম না। আমি দ্কীন্সের নিকটে আপন অভিপ্রায় প্রকাশ করাতে তিনি মার সহচর হইতে স্বীকৃত হইলেন। এই প্রকারে মরা ছই জনে সেণ্টপিটার্সবর্গ পরিত্যাগ করিয়া এক নি জাহাজে আরোহণ করিয়া, বাল্টিক সাগরে উপ-চ হইলাম, এবং অতি অল্প সময় মধ্যে প্রসিয়া দেশের টিজ নামক নগরে অবতীর্ণ হইলাম। ডাণ্টিজ অতি বৃহৎ এবং সমৃদ্ধিশালী নগর। আমি এবং ^{ম্কীন্স} উভয়ে এই স্থানে কয়েক দিবস অভিবাহিত

করিয়া, পরে প্রদিয়ার রাজধানী বারলীন্ নগরে উপনী হইলাম। পথিমধ্যে আমরা কখন বা পদপ্রক্ষে, কথা উজ কোচে ভ্রমণ করিয়াছিলাম। এদেশের লোকের উজে কোচকে (Speed Wagon) অর্থাৎ ক্রতগামী শকা কছে। আমরা প্রসিয়ান্দিগের ভাষা বুঝিতে পারিতাম না-বিলয়া অনেক সময়ে অস্থবিধা হইত, কারণ প্রসিয়ানের জন্মাণভাষায় কথাবার্তা কহিয়া থাকে। আমাদিগের ময়ে ক্রেক্টান্স অতি অল্প হেম্বুক্ত ভাষা কহিতে পারিত বিলয় সম্পূর্ণ অস্থবিধা হয় নাই, কারণ আমরা দেখিলাম বেইউরোপের সম্পায় দেশের লোকেই কতক পরিমাণে ক্রেক্ত ভাষা বুঝিতে ও কহিতে পারে।

প্রসিয়া দেশের অনেক স্থান জঙ্গলে পরিপূর্ণ। কয়ে বৎসর গত হইল, এক দল শিকারী, পশুবধের নিমি প্রসিয়ার এক অরণ্যে প্রবেশ করে। তাহারা ইতন্ত পশু অম্বেশ করিতেছে, ইত্যবসরে বনের মধ্যে মনুষ্যা কৃতি এক জন্ত দেখিয়া চমকিত হইল। শিকারীরা অদৃষ্ট পূর্বে পশুর নিকটবর্তী হইবামাত্র দে পলায়নে, তংগ্র হইল। শিকারীরা সেই জন্তর পশ্চাৎ ধাবিত হইলে, বিঅতি ক্রতবেগে নিকটস্থ পর্বিতের এক গুহায় প্রবে করিল। শিকারীরা কয় জনে গুহার চতুর্দ্দিক বেষ্টন করি! অবশেষে তাহাকে ধরিল। এই জন্তু বনমানুষ। বনমান বেরা বনে বাস করিয়া থাকে, কথা কহিতে পারে শি

কেবল বানরের ন্যায় চীৎকার করে। রুক্ষের পত্র এবং উদ্ভিদের মূলই ইহাদিগের উপজীবিকা। শিকারীরা ভাহাকে ধরিয়া নগরে লইয়া গেল, এবং কথা কহা শিখাইবার বিস্তর প্রয়াস পাইল, কিন্তু ভাহাতে কোন ফল দর্শিল না। এই জন্তুর সভাব অভি ক্রে। কেহ নিকটে আসিয়া কোন প্রকারে বিরক্ত করিলেই ভাহাকে আঘাক্ষ করিবার চেক্টা করিত। বেচারা এত চেক্টাতেও কোন ক্রে শিক্ষালাভ করিতে সমর্থ হইল না।

তাহার পর আমরা বার্লিনে উপস্থিত হইলাম। পূর্ব্বেই বলিয়াছি যে বার্লিন অতি বৃহৎ এবং সমৃদ্ধিশালী নগর। এই নগরের চতুদ্দিক প্রস্তরনির্দ্ধিত প্রাচীরে বেপ্তিত। প্রসিয়ার রাজা (এক্ষণে সম্রাট) কোন সময়ে বার্লিনে এবং কোন সময়ে পোইউজম নগরে বাস করিয়া থাকেন। প্রসিয়ার অধিবাসীর সংখ্যা আমেরিকার ইউনাইটেড-ইটেটর তুল্য। প্রসিয়াদেশের এই প্রকার রীতি যে ভাহার। মস্তকের সমৃদ্য় কেশ মৃগুন করতঃ কেবল উদ্ধি দেশে গোলাকৃতি কতকটা স্থানে চুল রাখে।

আমি তোমাকে প্রসিয়ার এক রাজার গল্প বলিতেছি শ্রবণ কর। প্রায় এক শত বৎসর পূর্বের প্রসিয়া দেশে ফুড্রিক্ নামে এক রাজা ছিলেন। এই রাজার রাজত্ব লালে প্রসিয়ার চতুর্দ্দিকের রাজগণ একত্র হইয়া ফুড্-রিকের সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হয়। ফুেড্রিকও যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইয়া স্বয়ং সেনানায়ক হন, এবং অনেক স্থলে য়ৄয় করেন। কোন কোন মুদ্ধে তিনি পরাজিত হইয়াছিলেন বটে, কিন্তু অনেক মুদ্ধেই জয়লাভ করিয়াছিলেন। অতি অল্প রাজাই ফ্রেড্রিকের ন্যায় সেনানায়ক হইয়া য়ৄয় করিয়া থাকেন। ফ্রেড্রিক্ কহিতেন যে, আমার সহা্রতার নিমিত্ত যে সমস্ত লোক মুদ্ধন্দেত্রে উপস্থিত হইয়া প্রাণ বিসর্জ্জনে উদ্যুত হয়, সে স্থলে আমি তাহাদে অধিনায়ক হইয়া বিপদ হইতে দূরে থাকিব, ইহা কখন কর্ত্তব্য নহে। এই সমস্তকারণেই লোকে তাঁহাকে (Frederic the great) মহাত্মা ফ্রেড্রিক্ কহিত। তির্দ্ধিজয়ী অপেক্ষা একজন পরোপকারক বলিয়াই বিখ্যা ছিলেন।

কথিত আছে মহাত্মা ক্ষেত্রিক্ এক দিবস খী উপবেশন গৃহে বসিয়া আছেন, এমত কালে ভৃত্যা ডাকিবার প্রয়োজন হওয়াতে ঘণ্টা বাজাইলেন। কি ঘণ্টার শব্দে কেহই উপস্থিত হইল না দেখিয়া, তি নিঃশব্দ পদসঞ্চারে গৃহের বহির্ভাগে আসিয়া দেখেন ভাঁহার বালক ভৃত্য একথানি কান্ঠাসনে উপবেশন করি নিদ্রাণত আছে। বালক ভৃত্যেরা সচরাচর সামান্ত আজ প্রতিপালনের নিমিত্ত নিযুক্ত হয়, এবং সর্বাদা আজান থাকাই তাহাদিগের কর্ত্ত্যা।

মহাত্মা ফ্রেড্রিক্ তাহাকে জাগাইবার নিমিত্ত অগ্রস

হইতেছেন, এমত সময়ে দেখিতে পাইলেন যে, বালকের

শকেটে এক খণ্ড কাগজ রহিয়াছে। তিনি কোঁতুহলাক্রান্ত হইয়া পত্রের মর্ম্ম অবগত হইবার নিমিত্ত অতি

আস্তে তাহার পকেট্ হইতে পত্রখানি বাহির করিয়া

পড়িলেন। এই পত্রখানি বালকের মাতা পাঠাইয়াচিলেন। তাহার মর্ম্ম এই যে, বালক আপনার বেতনেরু

কিয়লংশ মাতার সাহায্যের নিমিত্ত পাঠাইয়াছিল, তাহার

য়াতা দেই অর্থ পাইয়া এই লিখিয়া পাঠায়াছিলেন যে,

য়াহা! পরমেশর তোমার ভাল করিবেন,এবং তুমি সচ্চরত্রতার পুরস্কার পাইবে।

ক্রেড্রিক্ পত্র পাঠ করণানন্তর ধীরে ধীরে পুনর্বার হে প্রবেশ করিলেন, এবং কয়েকটা ভূকেট (প্রসিয়া দশের এক প্রকার স্থবর্ণ মুদ্রা) বাহির করিয়া পত্রের হিত সেই বালক ভূত্যের পকেটে রাখিয়া দিলেন। হার পর পুনর্বার সজোরে ঘণ্টা বাজাইবামাত্র ভূত্যের দ্রা ভঙ্গ হইল, এবং সে ভটস্থ হইয়া রাজার সম্মুখে পস্থিত হইল। রাজা ভাহাকে সম্ভাষণ করিয়া কহিলেন ভামার স্বচ্ছন্দে নিলা হইয়াছিল ? ভূত্য নম্রভাবে ক্ষমা ার্থনা করিবার উপক্রম করিতেছে, এমত সময়ে সহসা কেটে হাত পড়াতে চমকিত হইয়া উঠিল, মুখ পাণ্ডুবর্ণ ইল,এবং রাজার দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া কাঁদিতে লাগিল। ভাহাকে কহিলেন ভোমার কি হইয়াছে ? ভৃত্য রাজার পদতলে পতিত হইয়া কহিল, মহাত্মন ! বোধ হয় কোন ব্যক্তি আমার সর্বনাশের উদ্যোগ করিতেছে। এই টাকা কি প্রকারে আমার পকেটে আদিল, আমি তাহার কিছুই জানি না। রাজা ভাহার বাক্য প্রবণ করিয়া কহিলেন, বন্ধো! আমাদিগের নিজিতাবস্থাতে পরমেশ্বর সর্বনা করণা বিতরণ করিয়া থাকেন। এই টাকা তুমি ভোমার মাতার কাছে পাঠাইয়া দাও, এবং আমার প্রণাম জানাইয়া কহিও যে, অদ্য হইতে আমি ভোমার এবং ভোমার মাতার রক্ষণাবেক্ষণের ভার গ্রহণ করিলাম।

সর্বপ্রধান যুদ্ধ জয় অপেক্ষা মহাত্মা ফুেড্রিকের এই সমস্ত কার্যাই যথার্থ প্রশংসার কার্যা। বেচারা ভূতা বে কেবল কর্ত্তব্য কর্ম্ম অবহেলনের নিমিত্তই ক্ষমা প্রাপ্ত হইল, তাহা নহে, সে মাতার প্রতি অবিচলিত ভক্তির পুরক্ষারও প্রাপ্ত হইয়াছিল।

মহাত্মা ফুেড্রিকের যে কেবল এই সমস্ত গুণ ব্যতীর আর কিছু ছিল না, তাহা নহে। তিনি একজন অসাধারণ পণ্ডিত ছিলেন। কিন্তু ধর্ম্ম সম্পর্কে যদি তাঁহার অধিব ভক্তি থাকিত, তাহা হইলে তিনি সংসাঁরৈ আরও সুধী হইতে পারিতেন, তাহাতে আর কোন সন্দেহ নাই।

व्यक्तीमभ शतिरुह्म।

পারলির ভিয়ানায় গমন।

জেন্কীন্স এবং আমি এক সপ্তাহ বার্লিনে অবস্থান করিয়া, অধীয়ার রাজধানী ভিয়ানা নগরে গমন করিলাম। আমরা পদব্রজেই গমন করিয়াছিলাম। জর্ম্মণির সরাই সকল অতি কোতুকাবহ। দেখিতে অনেকটা গোলাবার্ডীর সদৃশ, এবং অশ্ব, গাভী, গর্দ্দভ, শৃকর ও মনুষ্য প্রভৃতি সকল জীবজন্ত এই স্থানে আশ্রয় প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

আমরা পথশ্রান্তে গাঢ় নিদ্রায় অভিভূত আছি, এমত সময়ে একটা কোলাহল শব্দে জাগ্রত হইলাম। নিদ্রাভঙ্গ হইবামাত্র দেখি যে একদিকে কতকগুলা শ্কর গোঁৎ গোঁৎ করিতেছে, অন্য দিকে, গর্দভে চীৎকার করিতেছে, এবং সকল প্রকার জন্তুর স্বর একসঙ্গে মিলিত হইরা একটি মহাকলরব হইয়। দাঁড়াইয়াছে। জন্মণীর অরণ্যে বন্য শ্করের অত্যন্ত উপদ্রব। ইহারা সন্মুখ্ম্ব চুইটা দন্ত ঘারা অগ্রবর্ত্তী শক্রকে বিদীর্ণ করিয়া ফেলে। শ্কর শিকাক জন্মাণির বিশিষ্ট ভদ্রলোকদিগের একটি প্রধান আনোদ। একদিবস আমরা জন্মণির এক অরণ্যে ভ্রমণ করিতেছিলাম, ইতিমধ্যে দেখি যে একটা বন্য শ্কর অভিজ্ঞতবেগে পলাইতেছে। তাহার পরক্ষণেই দেখিলাম যে, প্রায় দশ বারটা শিকারী কুকুর তাহার পশ্চাঘর্তী হই-

য়াছে। তাহাদিগের মধ্যে ছুইটা কুকুর প্রাণপণে দৌড়িয়া, একটা,শৃকরের কাণ,এবং আর একটা, গ্রীবাদেশ কামড়াইয়া ধরিল। শৃকর সজোরে গাত্র সঞ্চালন করাতে ছুইটা কুকুরই ভূতলে নিক্ষিপ্ত হইল, এবং শৃকরও এই অবকাশে আপন তীক্ষ দন্ত ঘারা কুকুর ছুইটার উদর বিদীর্ণ করিয়া পলাইতেছে, ইতিমধ্যে এক অখারাচ পুরুষ অখ হইতে লক্ষ প্রদান পূর্বক তাহার সম্মুখবর্ত্তী হইল। শৃকর তাহাকে দন্তাঘাত করিবার উপক্রম করিতেছে, ইত্যবকাশে তিনি নিমেষ মধ্যে একটী স্থতীক্ষ বর্ষা ঘারা তাহার গ্রীবাদেশ ভেদ করিলেন, বর্ষা গ্রীবাভাগে প্রবিষ্ট হইবানাত্র চারিদিক্ রক্তে প্লাবিত হইল, এবং শৃকরও ঘুরিয়া ভূমিতলে পড়িল।

শৃকরের এই অবস্থা দেখিয়া অশ্বারোহী ব্যক্তি
সজোরে ভেঁপু বাজাইতে লাগিলেন, এবং তাহার অলক্ষণ
পারেই আরও কয়েকজন অশ্বারু পুরুষ আসিয়া সেই
স্থানে উপস্থিত হইল। এই কোতুক দেখিবার নিমিত
আমরাও অগ্রসর হইয়া তাহাদিগের সমীপবর্তী হইলাম,
এবং শিকারীদিগের সহিত কথোপকথন করিতে করিতে
জানিতে পারিলাম যে, শৃকরহস্তা কেবল একজন শিকারী
নহেন, তিনি অস্ত্রীয়াদেশের সমাট, এবং অপরাপর অশ্বারোহী তাঁহারই সম্রান্ত পারিষদ। স্থতীক্ষ বল্লান প্রান্ত্রোগে
ক্ষিপ্রহস্ত না হইলে, শৃকর শিকারে গমন করা অসংসাহ-

সিকের কার্য্য। আমেরা এই ঘটনার ছুই দিবস পরেই ভয়েনা নগরে উপস্থিত হইলাম।

উनिविश्म পরিচেছन।

ভিয়ানা নগর।

ভানিউব ইউরোপের সর্বব্রপ্রধান নদী, এবং এই নদীরী
টারে ভিয়ানা নগর স্থাপিত। ভিয়ানা নগর দেখিতে
তি মনোরম এবং প্রীতিপ্রাদ, ও ইউনাইটেডফেটের
কল নগর অপেক্ষা বৃহৎ। ভিয়ানার অধিবাসীরা অভিত্য আমোদপ্রিয়। শীতকালে ডানিউব নদীর জল
বারে পরিবর্ত্তিত হইলে, নগরবাসীরা নানা প্রকার চক্রত্য পরবর্তিত হইলে, নগরবাসীরা নানা প্রকার চক্রত্য পরবর্তিত হইলে, নগরবাসীরা নানা প্রকার চক্রত্য পরবর্তিত হইলে, নগরবাসীরা নানা প্রকার চক্রত্য প্রারে পরিবর্তিত হইলে, নগরবাসীরা নানা প্রকার চক্রত্য কারোহণ পূর্বক নদীর উপর বহুবিধ ক্রীলোকরাও এই আমোদের সাহায্য করিয়া থাকে। চক্রহীন
কিট গুলির আকার বিভিন্ন প্রকার হইয়া থাকে।
ত্রকগুলি অধ্যের আরা, কতকগুলি হংসের ন্যায়, এবং
ত্রকগুলি ব্যাত্রের আকারের মত নির্শ্বিত হয়। এই
কারের গাড়ীকে এখানে স্লেজ্ করে।

ত্রীলোকেরা শীত নিবারণের নিমিত্ত পশুলোমজাত ব্র ব্যবহার করে, এবং অনেক প্রকার বহুমূল্য শিরো-ব্যবহার করিয়া থাকে। ঘোটক কিম্বা হরিণ ঘারাই সুেজ্ টানাইরা থাকে, এবং প্রত্যেক ঘোটকের গলার
চতুর্দ্দিক কিন্ধিনী ঘারা বেন্টন করিয়া দেয়। ভিয়ানা
নগরের নিকটবর্ত্তী এক উদ্যান আছে, তাহাকে প্রেটার
কহে। এই উদ্যানের পরিসর প্রায় চারি মাইল। গ্রীম্ব
কালে বহুসংখ্যক লোকে এই স্থানে সমবেত হইয়া
আনোদ আহলাদ করিয়া থাকে। উদ্যানে প্রবেশ করি
লেই দেখিতে পাইবে, কোথায় এক দল বালক ক্রীজা
করিতেছে, কোথাও প্রণায় যুগল এক বৃক্ষের অন্তরারে
বিসিয়া প্রেমালাপ করিতেছে, কোন স্থানে বা কতকগুরি
লোক উচ্চৈঃস্বরে সংগীতালাপ করিতেছে, কোন স্থানে
বালিকারা একত্রিত হইয়া রক্জুক্রীড়া করিতেছে, এবং
উদ্যানের নিভৃতস্থানে গন্ধীরপ্রকৃতি পণ্ডিতেরা বিস্ফা
সংসারের আদি, অন্ত, কার্য্য, কারণ, স্থ্য, তুঃখ, মায়
মোহ প্রভৃতি চিন্তায় নিময় আছেন। এই উদ্যানটাবে
দেখিলেই প্রমোদ কানন বলিয়া প্রতীতি হইয়া থাকে।

বিংশ পরিচেছদ। অধীয়া।

অপ্তিরা অতি বৃহৎ দেশ। এদেশের অধিবাসীর স্থা প্রায় আমেরিকার ইউনাইটেডফেটের দ্বিগুণ হইবে। ভিয়ানা ব্যতীত এখানে আরও অনেকগুলি বড় বর্চ নগর আছে। অব্বীরার কতকগুলি অধিবাসী অতি পরিশ্রেমী এবং কতকগুতি অতি অলস। কিন্তু ইহাদিগের মধ্যে অনেকই শিল্পী। ইহারা ঘড়ী নির্ম্পাণে অতিদক্ষ, এবং প্রতি বংসর এদেশে অনেক ঘড়ী প্রস্তুত হইয়া থাকে। বালক গালিকাদিগের নিমিত্ত অনেক প্রকার পুতুলও এখানে নির্মিত হয়। আমরা একদিবস একটী গ্রামের প্রতিরূপ দেখিলাম। প্রতিরূপটী অতি স্থানর, এবং স্থাকেলি নির্মিত হইয়াছে। এই প্রতিরূপের মনুষ্যাকৃতি পুতলিকাগণ প্রায় ছই ইঞ্চি উচ্চ (Inch) এবং তাহাদিগের মধ্যে কতকগুলি বেড়াইতেছে, কতকগুলি কর্ম্মে নিযুক্ত মাছে, এবং কতকগুলি বেড়াইতেছে, কতকগুলি কর্ম্মে নিযুক্ত মাছে, এবং কতকগুলি বুতা করিতেছে। প্রতিরূপের এক প্রান্তব্যে কতকগুলি হামিক পুরুষ রণসভ্জায় প্রস্তুত হইয়া গমন করিতেছে, এবং তাহাদিগের মধ্যে একজন স্বাচাক্ বাজাইতেছে।

বোধ করি তোমরা সকলে কলে দাবা খেলার গল্প

শবণ করিয়াছ। এই আশ্চর্যাজনক পুর্তলিকাটীও এই

যানে নির্দ্মিত হইয়াছিল। এই কলে একটা তুরক দেশী
য়ের প্রতিরূপ স্থাপিত আছে। তাহার সম্মুখে টেবিল,

ববং দাবা বড়ে স্থাপিত। কেহ একটা বড়ে চালিলেই

সই পুর্তলিকাও চালিবে। এমন কি কেহই এপর্য্যন্ত এই

ইত্রলিকাকে খেলায় পরাস্ত করিতে পারে নাই। এই

মুহুত পুর্তলিকা পৃথিবীর সর্বস্থানেই দর্শনার্থ নীত হইয়া-

ছিল,এবং এক্ষণে লণ্ডনে ক্রীফটল প্যালেসে স্থাপিত আছে। এদেশে জিপ্সী নামক এক প্রকার জাতি আছে। তাহারা যাযাবর, অর্থাৎ তাহাদিগের কোন নির্দ্দিন্ট বাসস্থান নাই। পুত্র পরিবার লইয়া ইউরোপের সর্বস্থানেই ভ্রমণ করিয়া থাকে। জিপ্সীরা কহে, তাহারা লোকের অদ্টলিপি বলিতে পারে; কিন্তু অপহরণ কার্য্যই ইহাদিগের প্রধান বাবসায়।

এক দিবস জেন্কীন্স এবং আমি ভ্রমণ করিতে করিতে এক আরণ্যে উপস্থিত হই, এবং সেই খানে দিবাবসান হয়। আমরা অন্ধকারে পথ ভূলিয়া ইতস্ততঃ ভ্রমণ করিতে করিতে দূর হইতে এক আলোক দেখিতে পাইলাম। আমরা রাত্রিকালে বনের মধ্য দিয়া অতি কফৌ সেই আলোক স্থানে উপস্থিত হই, এবং দেখি যে প্রায় বিশক্ষন জিপ্সী সেখানে বসিয়া আছে।

আমরা তাহাদের সমীপবর্তী হইয়া কহিলাম যে,
আমরা পথ হারাইয়াছি, এবং অদ্য এই স্থলেই রাত্রি
যাপন করিতে ইচ্ছা করি। তোমরা অনুগ্রহপূর্বক কিছু
খাদ্য এবং একটু শয়নের স্থান প্রদান কর। তীহারা
আমাদের প্রার্থনায় স্বীকৃত হইল, এবং কিছু মাংস, রুটী,
ও মদ্য আনিয়া দিল। আমরা আহার করিয়া তাহাদিগেরই এক তামুতে শয়ন করিলাম। অর্দ্ধ রাত্রে পদ
সঞ্চালন শব্দে আমার নিদ্রা ভঙ্গ হইল। আমি সভয়ে

ইতন্ততঃ দৃষ্ঠি সঞ্চালন করিয়া দেখি যে, একজন জিপ্সী জেন্কীন্সের সমীপবর্তী হইয়া তাহার পকেট অমুসন্ধান করিতেছে। আমি এই ব্যাপার অবলোকন করিয়া জেন্কীন্দ পকেটে হাত দিয়া দেখে, যে তাহার বিশ ডলার সেই ব্যক্তি অপহরণ করিয়া পলাইয়াছে। আমরা যামিনীর অবশিষ্ট ভাগ বসিয়া কাটাইলাম, এবং প্রাতঃকালে অপহরণ রুৱান্ত তাহাদিগকে বলাতে তাহারা উচ্চ হাস্য করিয়া কহিল "যদি তোমাদিগের ধনরক্ষারই বাঞ্ছা ছিল, তাহা হইলে কোন সংসঙ্গে প্রবিষ্ট হইলে ভাল হইত।" আমরা ইতি কর্ত্তব্য বিমৃত হইয়া সেই স্থান হইতে অভীষ্ট দেশে প্রস্থান করিলাম, এবং উভয়ে বিবেচনা করিলাম, যে, আজি আমাদিগের একটী শিক্ষা লাভ হইল।

একবিংশ পরিচেছদ। তুরক্ষের বিবরণ।

ভুকুক দেশ অধীয়ার পার্স্থে অবস্থিত। আমরা টুরকে গমন করি নাই। কারণ, পূর্বেই অবগত হইয়াছি-নাম যে, ভুরকের অধিবাসীরা অতি নিষ্ঠুর, এবং তাহারা বাইবেলে বিশ্বাস করে না। মহম্মদনামক এক ব্যক্তি ভাহাদিগের ধর্মপ্রান্তক, এবং মহম্মদ লিখিত কোরাণই ইহাদিগের ধর্মপুস্তক। কোরাণ অনেক আশ্চর্য্য কথায় পরিপূর্ণ। মুসলমানের। সেই আশ্চর্য ঘটনা গুলিকে অতি আগ্রহসহকারে বিশাস করিয়া থাকে। কোরাণের এক স্থানে লিখিত আছে, যে এক দিবস রাত্রি কানে মহম্মদ স্বর্গে নীত হন, এবং স্বর্গীয় অনেক আশ্চর্য্য জনক ব্যাপার দর্শন করিয়া পুনর্ববার নরলোকে প্রত্যাবর্ত্তন করেন। তুরুক্দেরাও এই সকল ঘটনাবলা নিঃসন্দিঞ্চ চিত্তে বিশাস করিয়া থাকে।

কনফাণ্টিনোপল তুরুকের রাজধানী। এই নগর পৃথি
বার অতি বৃহৎ নগর সমূহের মধ্যে পরিগণিত। তুরুকের
ভূপালকে স্থলতান্ কহে। স্থলতান্ অনেকগুলি বিবাহ
করেন, এবং তাহাদিগকে স্থলতানা বলে। তুরকের অধি
বাসীরা শাশুধারণ করিয়া থাকে। ইহারা অতিশয় তার
কৃটপ্রিয়। কোন কোন লোকের তামাক খাইবার নব
প্রায় ছয় ফুট পর্যান্ত লম্বা হইয়া থাকে।

ভূরক্ষবাসীরা চেয়ার টেবীল ব্যবহার করেন, তাহারা জামু পাতিয়া ভূমির উপরেই উপবেশন করিয় থাকে। ইহাদিগের মধ্যে আহারের সময় কুঁটো ছুরি প্রেভৃতির ব্যবহার নাই। এক ব্যক্তি মাংস প্রভৃতি খাদ্য কাতিয়া দেয়, এবং অপরাপর সকলে আহার করিছে থাকে। ভূরকদেশে টুপীর ব্যবহার নাই। লোকে শিরস্ত্রাণ (পাগড়ী) ব্যবহার করিয়া থাকে।

ञूतरकत निक्त निरक औमरनम। औमरनरमत वि

বাসীকে গ্রীক কহে। গ্রীকেরা প্রীষ্টধর্ম্মাবলম্বী। তুরজেরা খ্রীষ্টধর্মাবলম্বীদিগকে স্থাণা করিয়া থাকে। এককালে গ্রীসদেশ তুরজের অধীন ছিল, এবং এই সময়ে গ্রীকেরা তুরজদিগের অনেক অত্যাচার সহু করিয়াছে।

গ্রীসদেশ যে কেবল দেখিতেই স্থন্দর তাহা নহে,
আদিমকালে গ্রীসদেশবাসিগণ পৃথিবীর প্রধান স্থন্দ
সম্প্রদায় মধ্যে গণ্য ছিল। যদি কখন গ্রীসদেশে ভ্রমণ
করিতে যাও, দেখিবে সহস্র সহস্র বংসরের শত শত
নগরের ভগ্নাবশেষ আজি পর্যান্তও শোভা পাইতেছে।
গ্রীসদেশে আথেন্স নামে একটী বিখ্যাত নগর আছে।
এই নগরে মিনার্ভা দেবীর মন্দিরের ভগ্নাবশেষ আজি
পর্যান্তও বর্ত্তমান আছে, তাহাকে পার্থিওন কহে।
এই মন্দির সত্যযুগে নির্ম্মিত হইরাছে, কিন্তু আজি পর্যান্ত
ইহার শোভা বিনষ্ট হয় নাই।

গ্রীদের আদিম অধিবাসীরা অতি সাহসী, সরল, বিদান, এবং শিল্পী ছিল। ইহাদিগের দারা পৃথিবীর মনেক বিখ্যাত কার্য্যসমূহ সম্পাদিত হইয়াছে।

পূর্বকালে জরাজেস্ নামে পারস্যদেশে এক প্রবল

এতাপান্থিত নরপতি ছিলেন। তিনি বহুসংখ্যক সৈত্য

নিমন্ত লইয়া গ্রীসদেশ আক্রমণ করেন। গ্রীকেরা

প্রধার অতুল সাহসের সহিত যুদ্ধ করিয়াছিল, যে

অবশেষে জরাক্সেস্ গ্রীস জয় অসাধ্য বিবেচনা করিয়া, স্বদেশে প্রত্যাবর্তন করেন।

প্রীসদেশ সম্পর্কীয় অনেকগুলি মনোরম গল্প আছে। আমি তাহার মধ্যে তোমাদিগকে একটা গল্প বলিতেছি শ্রেবণ কর। এক কালে গ্রীস দেশে তেমন্ এবং পিথিরি মাস্ নামে ছই ব্যক্তি বাস করিত। তাহাদিগের পরস্পরের অত্যন্ত মিত্রতা ছিল। কিছু দিবস পরে ডেমন্ কোন অপরাধে রাজদণ্ডে দণ্ডিত হয়, এবং রাজা তাহাস্প্রাণদণ্ডের আজ্ঞা প্রদান করেন। ডেমন্ দণ্ডাজ্ঞা শ্রেব করিয়া সকরণ ভাবে রাজার নিকট এই প্রার্থনা করিল যে সে অন্তিমকালে একবার তাহার পুত্র পরিবারদেদর্শন করিবে, এবং তাহার পর পুনর্ব্বার রাজসকাশে উপস্থিত হইয়া প্রাণদানে প্রস্তুত হইবে।

রাজা প্রথমে এই প্রস্তাবে স্বীকৃত হইলেন না, কিং তংপরে অনেক অনুনয় বিনয়ের পর, এই পর্যান্ত স্বীকার করিলেন থে, যে পর্যান্ত ডেমন্ আপন পরিবারদিগকে দর্শন করিয়া প্রত্যাবর্ত্তন না করে, সেকাল পর্যান্ত তাহার বন্ধু পিথিয়স্ তাহার পরিবর্ত্তে বন্দী থাকিবে। যদি ডেমন্ নির্দিন্ট কালের মধ্যে উপস্থিত না হয়, তাহা হইলে তাহার বন্ধুর প্রাণদণ্ড হইবে। পিথিয়স্ রাজার প্রস্তাবে স্বীকৃত হইয়া ডেমনের স্থানে বন্দী হইল, এবং ডেমনণ্ড পরিবারদিগকে দেখিবার নিম্বত প্রস্থান করিল।

ডেমনের পরিবারেরা কিছু দূরে ছিল এই নিমিত্ত তাঁহার যাইতে বিলম্ব হইয়াছিল।

অবশেষে ডেমন্গৃহে উপস্থিত হইয়া আপন পরিজনদিগকে সমস্ত বৃত্তান্ত কহিয়া বলিলেন, আমি তোমাদিগকে
কণ কালের নিমিত্ত দেখিতে আসিয়াছি। এক্ষণে আর
অধিকক্ষণ থাকিতে পারিব না। কারণ, কালবিলম্ব হইলে
প্রিয়বলু পিথিয়সের প্রাণদণ্ড হইবে। এক্ষণে বিদায় হই।
ডেমনের এই বাক্য প্রবণ করিয়া তাহার পুত্র প্রিবার
ডেমনের গলা ধরিয়া কাঁদিতে লাগিল, এবং কহিল,
গাগরা তোমাকে কখনই ষ্টিতে দিব না।

এদিকে রাজা ডেমনের কাল বিলম্ব দেখিয়া ডেমন্ থার প্রত্যাগমন করিবে না, ইহাই স্থির করিলেন, এবং থাহার পরিবর্ত্তে পিথিয়সকে বধ্যভূমিতে লইয়া যাইতে থাদেশ দিলেন।

পিথিয়স্ বধ্যভূমিতে নীত হইল, এবং এক উচ্চ

ক্ষের উপর দাঁড়াইলে, চারিদিকে সহস্র ২ লোক উচ্চ

স্মি বেফান করিল। রাজাও পারিষদবর্গে পরিবৃত হইয়া

সেই স্থীনে উপনীত হইলেন। সকলেই মনে নিশ্চয়

দিরিল যে পিথিয়সের মৃত্যুকালে আসম। ইতিমধ্যে জনতা

াধ্যে মহান কোলাহল উপস্থিত হইল। তাহার মধ্যে

ইতে এক জন উচ্চৈঃস্বরে কহিতে লাগিলঃ আমাকে পণ

দিও, পথ দেও, গমন করি। এই বাক্য শ্রবণে সকলেই

বিশ্বয়াধিত হইয়া দেখে যে, ডেমন্ উপস্থিত হইয়াছে, এবং তীত্রবেগে বধ্যঞ্মির অভিমুখে আসিতেছে। ডেমন্ জনতা ভেদ করিয়া মঞ্চের নিকটবর্তী হইল, এবং পিথিয়সের গলা ধরিয়া কহিল, আমি উপস্থিত হইয়াছি, আমি আসিয়াছি, আর তোমাকে জীবন বিসর্জ্ঞন দিতে হইবেনা, আমিই এক্ষণে মরিতে প্রস্তুত আছি। রাজা পিথিয়স, এবং ডেমনের অকপট মিত্রতা দর্শন করিয়া করুণার্দ্র হইয়া কহিলেন, ভয় নাই, তোমাদিগের কাহাকেও মরিতে হইবে না, আমি তোমাদের অপরাধ মার্জ্ঞনা করিতেছি, এবং এক্ষণ হইতে তোমরা স্বাধীন হইলে। আপনাদের অভীষ্ট স্থানে গমন কর, এবং অকপট মিত্রভার উপমা জগৎবাদীদিগকে দেখাও। রাজবাক্যে সমস্ত লোক মহা কোলাহল করিয়া উঠিল, এবং বফুদ্বয়ও গাঢ় আলিঙ্গন করিয়া সে স্থান হইতে প্রস্থান করিল।

গ্রীকেরা পুরাকালে সহস্র বৎসর পর্যান্ত স্বাধীনভাবে কাল্যাপন করিয়া, অবশেষে ছুই সহস্র বংসর অতীত হইল, তাহারা রোমানদিগের দারা মাক্রান্ত এবং তাহাদিগের অধীনস্থ হয়। এই সময় হইতে তাহাদিগের সমস্ত গৌরব অস্তমিত হয়, এবং গ্রীকেরা মহৎ হইটে সামান্ত জাতির মধ্যে পরিগণিত হইতে লাগিল।

এই অবস্থায় কয়েক শতাব্দী অভিবাহিত করিয়া তাহারা তুরক্দিগের ধারা আক্রান্ত এবং তাহাদিণের মধীনস্থ হয়। তুরকেরা গ্রীকলিগকে দাসের ন্থায় ব্যবহার করিত। অবশেষে গ্রীকেরা তুরকদিগের অত্যাচার সহ্থ করিতে অসমর্থ হইয়া রণভূমিতে অবতীর্ণ হইল, এবং তুমূল সংগ্রামের পর যুদ্ধে জয়লাভ করিল ও অনেক দিনের পর গ্রীসে পুনর্বার স্বাধীনতার পতাকা উজ্ঞীয়নান হইল। এক্ষণে গ্রীকেরা স্বাধীনভাবে কাল্যাপুনু করিতেছে।

षाविश्म পরিচেছদ।

ইটালী নগৰ।

আমরা ভিয়ানায় এক মাস অতিবাহিত করিয়া ইটা-নীর প্রধান নগর রোমে উপনীত হইলাম।

রোম নগর ইটালীর একটি প্রধান স্থান। রোমে, St. Peter's church) দেউপিটার্সচর্চ্চ নামে এক র্ম্মালয় আছে, তাহার মত রহৎ অট্টালিকা পৃথিবীর বার কোন দেশে নাই। ইটালীর প্রধান যাজক এই গাসাদে বাস করেন। রোমান কাথলিক সম্প্রদায়ের গান বাজককে পোপ্ কহে, এবং তিনিই রোমের রাজা। রামান কাথলিক সম্প্রদায় পোপকে প্রায় দেবতাস্বরূপ গান করিয়া থাকেন। তাঁহারা কহেন পোপ্ কোন করিয়

অবথা সম্পাদন করেন না। কিন্তু আমি জ্ঞাত আছি, রোমের অনেক পোপ ্অতি ছফ্ট লোক ছিলেন।

রোম নগরে এবং ইটালীর অপরাপর ভাগে অনে প্রাচীন প্রাসাদের ভগ্নাবশেষ দেখা যায়। সেগুলি আজিও দেখিতে অতি মনোহর।

ু তুই সহত্র বৎসর পূর্বে রোমের অধিবাসীরা তংকালীন পৃথিবার সর্বত্রেষ্ঠ জাতি মধ্যে পরিগণিত ছিল।
এক্ষণ পর্যান্তও তাহাদিগের কীর্ত্তিকলাপ অবনীমগুলে
দেদীপ্যমান আছে। রোমে কোলিসিয়ম নামক প্রানাদ
আজি পর্যান্ত বর্ত্তমান আছে। এই প্রানাদ তুই সহত্র
বৎসর পূর্বেব নির্দ্মিত হইয়াছিল। কোলিসিয়মের আকার
একটি নাট্যশালার স্থায়, এবং ইহার পরিসর এত,যে এই
স্থানে বহুসহত্র লোকের সমাবেশ অতি স্বচ্ছন্দে নির্বাহিত
হইতে পারে। রোমের পূর্বেকালের অধিবাসীরা অতি
ক্ষমতাশালী ও ঋদ্মিনস্ত ছিলেন। যুদ্ধ বিদ্যায় ইহার
তৎকালে পৃথিবীর সকল জাতি অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ ছিলেন।
এক্ষণ পর্যান্তও পৃথিবীর কোন স্থানই রোম নগরের
ভগ্নাবশেষ প্রাসাদ, বা নগরের সৌন্দর্য্য অতিক্রম করিতে
পারে নাই।

ইটালীতে নেপল্স নামে আর একটি স্থন্দর নগর আছে। নেপল্সের নিকটেই বিস্তৃভিয়স নামে আগ্রে গিরি আছে। এই পর্বত হইতে অগ্নি নির্গত হইতে আর হইলে, সহস্র সহস্র বন্ধাঘাতের স্থায় শব্দ হইতে আরম্ভ হয়, এবং প্রভূত ধূম ও গলিত ধাতু নিঃস্ত হইরা নিকটস্থ নগর সমূহ প্লাবিত করিয়া কেলে।

আঠার শত বৎসর পূর্ব্বে একবার এই পর্বত হইতে
অগ্নাপত হইয়া নিকটস্থ অনেক গ্রাম এবং নগর ভূগর্ভে
নিহিত করে। এই সময়ে পম্পীয়াই ও হারকুলিয়ন নামে
ছই নগরও বিনফ্ট হইয়া যায়। অবশেষে অতি অল্পদিবস
অতীত হইল পম্পীয়াই নগরের উপরিস্থ আবর্জনা স্থানান্তরিত করাতে সম্পূর্ণ নগর ভূগর্ভ হইতে প্রকাশিত
হইয়াছে। অফাদশ শত বৎসর ভূগর্ভ মধ্যে ছিল, কিন্তু
আজিপর্যান্ত ইহার প্রাসাদ এবং অট্টালিকা ও রাজ্পগ
বিনফ্ট হয় নাই।

তোমরা রোমের ইতিহাস পাঠ করিলেই ইহার প্রাচীন কালের বিবরণ সকল জানিতে পারিবে। তবে এক্ষণে এই মাত্র বলিতে পারি যে, দ্বাদশ শত বৎসর পূর্বেব পৃথিবীর কোন রাজ্যই রোমের সমকক্ষ ছিল না। কিন্তু তাহার পরেই চিরকালের নিমিত্ত রোমরাজ্যের পতন হয়। রোম যে এক কালে অতি সমৃদ্ধিশালী নগর ছিল,তাহার ভ্যাবশেষ অট্টালিকাই আজি পর্য্যস্ত জগতে সে বিষয়ের সাক্ষ্য প্রদান করিতেছে।

ইটালীর আধুনিক অধিবাসিগণ ভাহাদিগের পূর্ব্ব-পুরুষ হইতে সম্পূর্ণ বিভিন্ন। ভাহারা রোমে বাস করি- তেছে সভ্য, রোমের ঐশব্য ভোগ করিতেছে সভ্য প্রাচীন রোমানদিগের শোণিত তাহাদিগের শরীরে প্রবা হিত হইতেছে সভ্য, কিন্তু তাহাদিগের আচার, ব্যবহার রীতি, নীতি, বল,বীর্ঘ্য,সাহস,অধ্যবসায়,সম্পূর্ণ বিপরীত যাহাদিগের পূর্বর পুরুষেরা পৃথিবীর অন্যান্য অংশ্যে লোকদিগের কুসংস্কার দূর করিয়াছেন, এক্ষণে তাহারাই মহাকুসংস্কারে আছেয় হইয়া কাল্যাপন করিতেছে।

ত্রয়োবিংশ পরিচেছদ।

আমি রোম নগরে জেন্কীন্সের সহিত বিভিন্ন হইলাম।
ক্রেন্কীন্স আমেরিকায় বাইবার নিমিত্ত নেপল্স গমন
করিলেন, এবং আমি স্থইজরর্লণ্ডে গমন করিলাম। ইটালীর মধ্য দিয়া বাইতে বাইতে দেখিতে পাইলাম, ইটালার অধিবাসীরা আঙ্গুর কুড়াইতেছে। তাহারা আঙ্গুরের
রসে স্থরা প্রস্তুত করিয়া থাকে। ইহা শুক্ষ হইলে মননা
হয়।

অবশেষে আমি আল্পস্ পর্বতের উপর উপস্থিত ছইলাম। আল্পস্ ইউরোপের সর্বব্রধান পর্বত। ইহার শিখরদেশ এত উচ্চ যে সর্বদা বরফে আর্ত থাকে।

আমি ইতিপূর্বেক কখন আল্পন্ন পর্বেতে আসি নাই, স্কুতরাং চারিদিকের শোভা দর্শন করিতে করিতে দিবার সান হইল। সূর্য্যকে অন্ত হইতে দেখিয়া, গস্তব্যস্থানে গমন করিতে উদ্যত হইতেছি, এমত সময়ে দেখি যে দশ বার জন লোক অন্ত্র শস্ত্র লইয়া আমাকে বেফীন করিল।

আমি সভয়চিত্তে কারণ জিজ্ঞাসা করাতে তাহারা ইটালী ভাষায় উত্তর দিল, স্বতরাং আমি কিছুই বুঝিতে পারিলাম না। তাহারা আর অপেকা না করিয়া আমাকে ারিল, এবং জঙ্গলের মধ্য দিয়া এক ভগ্নাবশেষ প্রাসাদ রুর্গে লইয়া গেল। তাহারা ঘোর তিমিরাচছর পথ দিয়া চুগর্ভন্থ এক গৃহে আমাকে রাখিয়া আসিল। আমি ক্ষণ-াল এইখানেই থাকিলাম। আমার পার্শ্বস্থ লোকেরা ্য সকল কথা বলিয়াছিল, তাহার একটাও বুঝিতে পারি াই। স্থতরাং তাহাদিগের অভিপ্রায় জানিতেও অসমর্থ हिंगां ছिलां म । অবশেষে স্থির করিলাম যে ইহারা দম্যু, মামার নিকট টাকা কড়ি যাহা আছে, ভাহা অপহরণ দ্রাই ইহাদিগের উদ্দেশ্য. অথবা হয় ত আমাকে বিনষ্ট ারিতেও পারে। যাহা হউক, আমি এই সমস্ত বিবেচনা ^{দরিয়া} আমার সহিত যে হুটী পিস্তল ছিল, তাহা প্রস্তুত ারিরা রাখিলাম, এবং মনে ঠিক করিলাম, যে গুরু ^{ব্পত্তির} সময় ইহার সাহায্য লইব।

আমি এই সকল চিস্তার সময়াতিপাত করিতেছি, মত সমরে দেখিলাম, যে এক ব্যক্তি গৃহ মধ্যে প্রবেশ রিল। তাহাকে দেখিবামাত্র বোধ হইল, যেন ইহাকে কাথাও দেখিয়াছি, এবং তাহার আকার প্রকারে অফু- মান হয়, যেন এই ব্যক্তিই দয়্যদলের নায়ক হইবে
অপর কতকগুলি লোক তাহাকে বেষ্টন করিয়া, কয়
কহিতে লাগিল। সে কথাগুলি আমার সম্পর্কীয়, তায়
আমি আকার ইঙ্গিতে বুঝিতে পারিলাম। তাহাদিগে
কথা শেষ হইলে, তিনি আমার নিকটবর্তী হইলের
এবং সমুখে আসিয়া চমকিত হইয়া উঠিলেন। আমিয়
বিস্ময়াঘিত হইয়া দেখি, যে সেই ব্যক্তি আমার পূর্ব্বপরি
চিত লিও, ইহাকেই আমরা সমুদ্রতরঙ্গ হইতে বাঁচাইয়া
ছিলাম, এবং ইহার সঙ্গেই আমি ইংলগু পরিভ্রমণ করি

লিও যদিও দস্থাবৃত্তি অবলম্বন করিয়াছেন, তথাপি কৃতদ্ম হন নাই। তিনি তাহার পারিষদদিগকে কহিলে, যে এইব্যক্তি একসময়ে আমার প্রাণদান দিয়াছে। তৎপ্রে আমাকে কহিলেন যে তোমার কোন ভয় নাই, আমার দ্বারা তোমার কোন অপকার হইবে না, আমি কারি প্রাতঃকালে তোমাকে গস্তব্য স্থানে পঁত্রছাইয়া দিব।

পর দিবস প্রাতঃকালে লিও আমাকে সঙ্গে করিয় আরণ্যমধ্য হইতে প্রকাশ্য রাস্তায় লইয়া গেল,এবং তং কালোচিত বাক্যব্যয় করিয়া সম্ভাষণ পূর্বক বিদায়গ্রহণ করিয়া সম্বর প্রস্থান করিল। আমি একবার ভাবিলাগ যে লিওকে দস্ত্যবৃত্তি হইতে নিবৃত্ত হইতে কহি, বিশ্ব ক্ষণকালও অপেক্ষা না করাতে, আমার মন্তর্থ কথা বলিতে পারিলাম না। আমি সেই পথ দিয়া গ্রম্থ

চরিতে করিতে অবশেষে স্থইজর্লণ্ডের রাজধানী বারন্ নগরে উপস্থিত হইলাম।

স্ইজর্লাণ্ডের অধিবাসীরা পর্বত এবং জঙ্গলময় প্রদেশে বাস করে। এদেশের অধিবাসীরা, নিরীহ, সরল, এবং প্রীতিপদ। বারন্, জেনিভা, লসেনা, এই তিনটী নগর সুইজর্লণ্ডের মধ্যে প্রধান। এদেশের কেহ রাজ্ঞা ।াই, সামেরিকার ইউনাইটেড ফেটের স্থায় সাধারণ ডল্লে ।াজকার্য্য নির্বাহিত হয়।

স্থইসের স্বাধীনতাপ্রিয়। কিছু কাল অতীত হইল গহারা অব্রীয়ার অধীনস্থ হয়। তৎপরে উইলিয়ম টেল প্রভৃতি কয়েক ব্যক্তি একত্রিত হইয়া স্বদেশকে স্বাধীন ইরতে চেফা করেন। অব্রীয়ার শাসনকর্ত্তা উইলিয়ম টলের কার্য্য সকল জানিতে পারিয়া, টেল শাসনকর্তার দিরের কার্য্য সকল জানিতে পারিয়া, টেল শাসনকর্তার দিরে কার্য্য সকল জানিতে পারিয়া, টেল শাসনকর্তার দিরে কার্য্য সকর একটা টুপি রাখিলেন, এবং সমস্ত লাককে সেই বাঁশকে প্রণাম করিতে আজ্ঞা দিলেন। ইলিয়ম টেল তাহাতে সম্মত হইলেন না। শাসনকর্তা টলের অবাধ্যতাতে তাঁহার উপর ক্রুদ্ধ হইয়া তাহাকে গারাক্ষ করিলেন। উইলিয়ম টেল ধ্যুর্বিদ্যাতে পার-শা ছিলেন। শাসনকর্তা জেসলার তাঁহার নিপুণ্ডাক্ষির নিমিত্ত একটা আপেল ফল তাঁহার পুত্রের স্তকে রাখিয়া তাঁহাকে তাহা ভেদ করিতে কহিলেন।

টেল প্রথমে ভয় হেতু কোন প্রকারে সম্মত হইলেন না, কারণ যদি তাঁহার শরসন্ধান ঠিক না হয়, তাহা হইদে তাহার প্রিয়পুত্র আহত হইবে। কিন্তু শাসনকর্ত্তা বিদ্ লেন, যদ্যপি তুমি আপেল ভেদ না কর তাহা হইদে তোমার পুত্রের প্রাণ দগু হইবে।

. টেল অবশেষে অগত্যা আপেল ভেদ করিতে প্রক্র হইলেন। তিনি ধমুকে শর ষোজনা পূর্বক তীর ছাচি লেন। তীর তীত্রবেগে আপেল ভেদ করিয়া দ্ পতিত হইল, টেলের পুত্র অব্যাহত রহিল।

এক দিবদ গবর্ণর জেস্লার টেল্কে এক কারাগা হইতে অন্য কারাগারে স্থানান্তরিত করিবার মান করিয়া, তাঁহাকে দমভিব্যাহারে লইয়া যাইতেছেন, এম দময়ে এক হ্রদ পার হইবার দময় মহা ঝড়র্প্তি আরা হইল। জেদলার অত্যন্ত ভীত হইলেন, এবং মৃত্যু অনিকটবর্তী মনে করিয়া সভয়ে টেলকে নৌকা চালা ইতে আদেশ দিলেন। টেল স্বাভিমত প্রদেশে নৌক বাহিতে লাগিলেন, এবং পর্ববতের নিকটবর্তী হইয়া নৌক ত্যাগ করিয়া লক্ষ প্রদান পূর্ববক তীরে উপনীত হইয় পর্ববত মধ্যে প্রবিষ্ট হইলেন।

ঐন্থান হইতে টেল পলায়ন করিয়া লোকালয় প্রার্থ হইলেন, এবং দেশবাসীদিগকে স্বাধীনতাতে উত্তেশি করিয়া শাসনকর্ত্তা জেসলারের উদ্দেশে গমন করিশে রশেষে অনেক অমুসন্ধানের পর গবর্ণরকে প্রাপ্ত ছইরা ল স্বহস্তে ভাহার প্রাণবধ করেন। এই ঘটনার পরেই মন্ত স্ইজর্লাগুবাসী একত্রিত হইয়া আধ্রীয়ানদিগকে ল হইতে দূর করিয়া দিল। এই সময় হইতেই ইজর্লগু স্বাধীন হইল।

এক বাক্তির অধাবসায় ও যত্নে দেশের কেমন উপুণার হয়, ইহা সচরাচর দৃষ্টিগোচর হইয়া থাকে। মহৎ ক্তির অধ্যবসায় ও যত্ন সংপথে প্রবর্ত্তিত হইলে দেশের সাধারণ উপকার হয়। এমন কি স্বদেশ তাহার উদ্াণে স্বাধীনতার মুখ পর্য্যস্ত দেখিতে পারে। আর দ লোকের অধ্যবসায় ও যত্নে দেশ মরুভূমিতে পরিহুইয়া থাকে।

চতুর্বিংশ পরিচেছদ। ফ্রান্স।

অতি অল্পকাল স্থাইজর্লণ্ডে অবস্থিতি করিয়া আমি
ালে গমন করিলাম, এবং ছুই তিন সপ্তাহ মধ্যে
ালের রাজধানী পারিস নগরে উপনীত হইলাম।
ারিসের অধিবাসীর সম্ব্যাপ্রায় লগুনের অর্দ্ধেক হইবে।
উরোপের সকল স্থান অপেক্ষা পারিস ক্ষতি আনন্দাইক স্থান। নগরবাসীরা সর্ব্বদাই আমোদে রত থাকে,
বং পারিসের চতুর্দ্ধিক আমোদ স্থানে বেপ্তিত।

. 9

পারিসের এক স্থানে একটা কুঞ্জবন আছে, (Elysian field) ভাহাকে ইলিসিয়ান্ ফীল্ড কছে। এই স্থানে সকলে একত্র হইয়া কেহ বা অখাচালন, কেহ পদ চারণ, কেহ নৃত্য এবং কেহ গীত গাইয়া থাকেম। এই স্থানটী অতি মনোরম। এখানে সকলেই আনক্ষ অমুভব করিয়া থাকে। পারিসের রাজপ্রাসাদ অভি বৃহৎ, এবং চারিদিক স্থানর উপবনে বেপ্তিত। এই উপবনে অনেক ভদ্রলোক সপরিবারে প্রমণ করিতে আই সেন, শত শত বালক চারিদ্বিক ক্রীড়া করিতে থাকে।

কিছুকাল পূর্বের পারিস নগরে ব্যাফীইল নামে এই কারাগার ছিল। রাজা কাহারও উপর কুপিত হইদে তাহাকে আবদ্ধ করিয়া রাখিতেন। এই স্থানে কতক গুলি লোক প্রাণে বিনফ হইত, এবং কতকগুলি ইংকালের মত তিমিরাচছন্ন গৃহে আবদ্ধ থাকিত। কারারুদ্ধ ব্যক্তিগণ যে পুনরায় আলোকের মুখ দর্শন করিবে তাহার আর কোন আশা ছিল না। যদি কথন রাজ্য হার উপর সদয় হইতেন, তাহা হইলে নেই ব্যক্তিই এই যোৱ নরক যন্ত্রণা হইতে মুক্ত হইত।

এক সময়ে দুন্স দেশীয় এক যুবক অনেক কালাবি ব্যান্টাইল প্রগে আবদ্ধ ছিল। সে ব্যক্তি বধন বৌবনকাদ অভিবাহিত করিয়া বৃদ্ধ বরুসে পদার্পণ করে, এমন সমগ্রে বাক্তা ভাহার উপর প্রবন্ধ হইয়ে ভাহাকে কার্যাগার হইছে

মুক্ত করেন। তিনি মুক্তিলাভ করিয়া নগর মধ্যে প্রবেশ করিলেন, এবং দেখিলেন যে, তাঁহার সমস্ত বন্ধু ইছ-কাল পরিত্যাগ করিয়াছে, এবং পরিচিতের মধ্যে আর কেইই নাই। তিনিও কাহাকে চিনিতে পারিলেন না, এল লোকেও তাঁহাকে চিনিতে অসমর্থ ইইল। কারামূক্ত ব্যক্তি চারিদিক অমণ করিয়া পুনর্ববার কারাগারে উপস্থিত ইইলেন, এবং কহিলেন, আমি পুনর্ববার এই স্থানে আবন্ধ থাকিব। কারণ পৃথিবী নৃতন রূপ ধারণ করিয়াছে। আমাকে কেইই চিনিল না, এবং আমিও কোন ব্যক্তিকে চিনিতে পারিলাম না। এক্ষণে আমার এই সমকারগৃহই ভাল, আমি জীবনের অবশিষ্ট কাল অক্ষকারেই থাপন করিব।

১৭৮৯ খৃঃ অব্দের ১৪ই জুলাই শোড়ব লুইসের সময় নেসনেল এসেমব্লী ঘারা ব্যাফাইল প্রাসাদত্র্গ সমস্থান করা হয়। শোড়ব লুইসের রাজত্বকালে ক্রান্সে কোন, শৃথলা ছিল না, শাসন প্রণালী অতি কদর্য্য ছিল,এমন কি রাজা কোন ব্যক্তির উপর অতি সামাশ্য কারণে অসম্ভফ ইলেই তাহাকে খৃত করিয়া বিনা বিচারে, ব্যাফাইল প্রাসাদত্র্গে আবন্ধ করিয়া রাখিভেন। কোন কোন শমরে কেহ বা জন্মের মত ঘোর ভিমিরাচ্ছন্ন গৃহে জীবন মতিবাহিত করিয়া কালকবলিত হইত।

ষ্ট্রান্সের লোকেরা অনেক দলে বিভক্ত। তাহাদিগের

মধ্যে কতকগুলি রাজপক্ষ এবং কতকগুলি দেশীয় লোব দিগের পক্ষা অদেশীয় লোকদিসের পক্ষকে নেসনে এসেমবলী কহে।

১৭৮৯ খৃষ্টাব্দের ১৩ই জুনাই রাজা নেসনেল এনে
মব্লার ক্ষমতা হ্রাস করিবার নিমিত্ত পারিসে একদা
সৈন্য প্রেরণ করেন। নেসনেল দলভুক্ত লোকেরা প্রথা
রাজার ব্যবহারে অসম্ভক্ত হইয়া তাঁহাকে নিবারণ করে
কিন্তু রাজা তাহাদিগের বাক্যে কর্ণপাত না করানে
সকলে একত্রিত হইয়া ব্যাফ্টাইল তুর্গ আক্রমণ করিয়
রাজার জাবন বিনাশে উদ্যত হয়।

শেনেদনেল এসেমব্লীর লোকেরা প্রাসাদ তুর্গ ধাং
করিতে কৃতসংক্ষম হইয়া, তাহার পূর্বদিবস সদলে হোটে
ডি, ইনভ্যালিড্স নামক স্থানে অস্ত্র শস্ত্র সংপ্রহের নিমি
গমন করে। উক্ত স্থানের গবর্ণর নেসনেল এসেমব্লী
লোকদিগকে অস্ত্র বহনের বাধা দেওয়া তুরুহ বিবেচন
করিয়া হোটেল ডি ইন্ভ্যালিড্স (Hotel de invalids
খার মুক্ত করিয়া দিলেন। ডিইমন্ট নামক একব্যক্তি উদ
দলের অধিনায়ক পদে নিযুক্ত হইয়া সমস্ত নগরবাসীটে
অস্ত্র প্রহণ করিতে কহিলেন।

এই প্রকার ঘোষণাতে পারিস নগরবাসী সকলে একত্রিত হইয়া রাজবিককে দণ্ডারমান হইল। চারিদি হইতে অসংখ্য সেনাদল ভাহাদিগের দহিত মিলিত হই নাগিল, এবং সকলেই যথাযোগ্য অন্ত্র শস্ত্র সংগ্রহ করিয়া

নভ্চিতে অবতীর্ণ হইল। ১৭৮৯ গ্রীফীব্দের ১৪ই

রুলাই প্রাতঃকালে সেনাদিগের মহাকোলাহল আরম্ভ

য়। সকলেই কহিতে লাগিল,আইস আমরা ব্যাফীইল

গ্র্গ অগ্রে সমস্থান করি। যদি ভাহারা দুর্গ আক্রমণের

রুভিজ্ঞা করিত, ভাহা হইলে কোন ক্রমেই মনোরথ

গ্রেণে সমর্থ হইত না। কারণ ব্যাফীইলের চতুর্দ্দিক উচ্চ

গ্রেরময় প্রাচীরে বেপ্তিত, এবং ভাহার নিম্নেই অগাধ
লিল পরিখা সমস্ত দুর্গকে বেফীন করিয়াছিল। প্রত্যেক

গ্রাসাদের উপর দুর্জ্জয় কামান স্থাপিত ছিল, এবং সহজে

য় নেসনেল এসেমব্লী ব্যাফীইল প্রাসাদ দুর্গ জয়

দ্বিতে সমর্থ হইত, ভাহার কোন সম্ভাবনা ছিল না।

কয় ভাহারা ব্যাফীইল সমস্থান করার প্রভিজ্ঞা করাতেই

নায়াসে ভাহাদিগের দৃঢ় প্রভিজ্ঞা পূর্ণ হইল।

এদিকে ছুর্গের গবর্ণর ডিলোনী, ছুর্গ আক্রাস্ত হইবার পিক্রম দেখিয়া, সম্ভাবিচিত্র স্বরূপ পতাকা উড়াইলেন। ভাকা দেখিয়া প্রায় পাঁচ ছয় শঙ লোক একদল সৈন্য হিত সেতুর উপর দিয়া ছুর্গের প্রাক্সণে উপস্থিত হইল। বর্ণর তাহাদিগের সমীপবর্তী হইয়া জিজ্ঞাস। করিলেন তোমরা কি অভিপ্রায়ে এখানে আসিয়াছ। তাহার।
কহিল, অন্ত্র শস্ত্র ও যুদ্ধের উপকরণ গ্রহণ ব্যতীত আমাদিগের আর কোন অভিপ্রায় নাই। ডিলোনী তাহাদিগদে
আখাস বাক্যে সেই স্থানে রাখিয়া সেতুর কপাট তুলিয় দিতে আজ্ঞা দিয়া, প্রাঙ্গণস্থিত লোকদিগের উপর গোলাবর্ষণ করিতে আজ্ঞা দিলেন। ছুর্গের চারি দিক হইলে
ভীষণাকার কামান গর্জ্জন করিতে লাগিল, এবং অগ্রিম্দি
গোলা সমূহ আগস্তুক নগরবাসীদিগের উপর পড়িনে
লাগিল। তাহাদিগের অধিকাংশই এই স্থলে প্রাণত্যাগ

আক্রমণকারিগণ স্বদলস্থ লোকদিগের এই প্রকার দুর বন্ধা দর্শন করিয়া ক্রোধে উদ্দীপ্ত হইয়া উঠিল, এবা নগর হইতে আরও কতকগুলি সৈন্য ও কয়েকটা কামান সংগ্রহ করিয়া, অসংসাহসের সহিত তুর্গ আক্রমণ করিছে প্রস্তুর হইল। তাঁহারা হিউলী নামক এক ব্যক্তিকে সেনাপতি পদে বরণ করিলেন। হিলী নামক সেনাদন ভুক্ত এক ব্যক্তি, কয়েক গাড়ী খড়, এবং ঘাস সংগ্রহ করিয়া তুর্গের সমুখে রাখিয়া অগ্নি প্রদান করেন। আগুর্গ ভয়ক্ষর ভাবে ক্লিয়া উঠিল, এবং প্রভৃত ধূমরাশি চড়ু দ্দিকে ব্যাপ্ত হইয়া তুর্গবাসীদিগের নেত্র প্রতিরোধ করিন, স্কুতরাং তাহারা আক্রমণকারীদিগের কার্য্য সমূহ তুর্গের অভ্যন্তর হইতে কিছুই দেখিতে পাইল না। তুর্গের গবর্ণর নগরবাসীদিগকে অসংসাহসের সহিত
বুদ্ধে প্রবৃত্ত দেখিয়া, এবং দুর্গ সেতুর কিয়ৎ অংশ
তাহাদিগের অধিকৃত হইয়াছে দেখিয়া, প্রাসাদ দুর্গের
চূড়া হইতে সন্ধিপভাকা উড়াইয়া দিলেন। কিস্তু নগরবাসীরা স্বদলস্থ লোকদিগের বিনাশে উত্তেজিত হইয়া
এবং দুর্গ আক্রমণে দৃঢ়প্রতিজ্ঞ হইয়া, সন্ধিপভাকার
উপর দৃক্পাতও করিল না। গবর্ণর দিতীয়বার পতাকা
উড়াইলেন, তাহাও বিফল হইল। তখন গবর্ণর অনজ্যোপায় হইয়া এই লিখিয়া পাঠাইলেন, যে যদি তোমরা
যুদ্ধে নিরস্ত না হও, তাহা হইলে আমরা দুর্গন্থ সমস্ত
বাসগৃহে অগ্নিপ্রদান করিব।

আক্রমণকারিগণ এই বাক্যে আরও উত্তেজিত হইয়া বিগুণতর সাহসের সহিত তুর্গ আক্রমণ করিল।

শত সহস্র দর্শক চারিদিক হইতে আগমন পূর্বক
চতুর্দিক বেষ্টন করিল, এবং একজন স্ত্রীলোক সৈশ্যদিগকে উৎসাহ দিবার নিমিত্ত বামাজনোচিত কোমল
স্বভাব পরিত্যাগ পূর্বক এক কামানে স্বহস্তে অগ্নি
প্রদান কবিল।

সৈন্থগণ তুর্গ সেতুর সম্মুখে কামান স্থাপন করিয়া ফুর্ম্মি লোকদিগকে সেতু রক্ষার স্থান হইতে দূর করিল, এবং হুর্গসেতু অধিকার করিয়া লইল। গবর্ণর এই ব্যাপার দেখিয়া তাহার পরের ছোট সেতুটী ভগ্ন করিবার উপক্রম করিতেছেন, এমত মময়ে, হিলী ও হিউলী, এবং মেইলাছ নামক আর এক ব্যক্তি লক্ষ প্রদান পূর্বক ক্ষুদ্র সেতৃত্ব নিকট উপস্থিত হইয়া, গবর্ণরকে নিরস্ত হইতে কহিলেন গবর্ণরপ্ত অনন্যোপায় হইয়া য়ুদ্ধে নিরস্ত হইয়া সেতৃত্ব নিকট হইতে পলায়ন করিলেন। তথন পর্যান্তপ্ত ত্বর্গনেলাকরা গোলায়্স্তি করিতেছিল, কিন্ত তাহাতে কোফললাভ হইল না। নগরবাসিগণ গবর্ণরকে পলায় ক্রিতে দেখিয়া রণজয় শব্দে কোলাহল করিয়া উটিল এবং শক্রপক্ষীয় যে কেছ সম্মুখীন হইল, তাহারই প্রাণ নাশে তৎপর হইল। ক্রমে নগরবাসী এবং তাহাদিগে সৈম্যগণ ত্বর্গর অভ্যন্তরে প্রবিষ্ট হইয়া প্রাসাদ ত্বর্গে সর্বেষ্ট চুড়া হইতে আপনাদিগের জয় পতাকা উড়াইল

যখন নগরবাসিগণ এই কার্য্যে ব্যাপৃত আছেন, ইতা বসরে কতকগুলি লোক গবর্ণরের অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হইয় কোন স্থানেই তাহাকে অনুসন্ধান করিয়া পাইল না পরিশোষে আরণী নামক একবাক্তি গবর্ণরকে খুজি বাহির করিয়া অন্ত ত্যাগকরাইল, এবং হিউলী ও হিলী সন্মুখে আনিয়া দিল। নগরবাসিগণ চারিদিক হইটে গবর্ণরকে বেফীন করিয়া কেহ তাহার কোট খণ্ড শ করিয়া দিল এবং অপর কতকগুলি লোকে তাহাটে নানা প্রকারে অবমানিত করিতে লাগিল। সর্কাশে টেম্পালীমণ্ট নামক এক ব্যক্তি অসি প্রহারে গ্বর্ণরে

শাণিতপাত করিয়া স্বদল নির্য্যাতন জনিত ক্রোধের গান্তি করিল।

গবর্ণর হত হইলে পর, নগরবাসিগণ ডেপুটী গবর্ণরের াহিত মিলিত হইয়া কারাগারের দার সকল মুক্ত করিয়া _{দল।} কারাবাসিগণ ঘোরতর তিমিরাচ্ছ**ন** নরক সদৃশ চারাগৃহে ভূগর্ভস্থ কীটযোনির স্থায় বাস করিতেছিল। **জুন**-ারত তামসী নিশার স্থায়, অন্ধকারাবৃত গৃহে আবন্ধ াকিয়া তাহারা দিবা এবং রাত্রির প্রভেদ বিশ্বত হইয়া-ইল বহুদিবস হইতে অন্ধকারে বাসনিবন্ধন পার্থিব পদার্থ াম্হ দূরে থাকুক, মনুষ্যের আকৃতি পর্যান্ত ভাহাদিগের দয় হইতে অপসারিত হইয়াছিল, তাহাদিগের এ প্রকার গ্রাশা কদাপি মনোমধ্যে উদিত হইত না যে, তাহারা ^{বার} পৃথিবীর **আলোকাবৃত স্থানে প্রবেশ করিবে। সক-**নই স্থির করিরাছিল**, যে এই তাহাদিগের জীবনের** চরম ামার বাসস্থান, এই স্থানেই তাহাদিগের পৃথিবীর সংস্রব ালুপ্ত হইবে এবং এইস্থানেই তাহারা জীবন বিসর্জ্জন দিয়া ার্থিব শরীর ভূপর্ভস্থ কীটদিগকে উপহার প্রদান করিবে। ারাবাসীরা এইপ্রকার নিরাশাসাগরে মগ্ন হইয়া অন্যু-নে বাস করিতেছে, এমত সময়ে সহসা কারাগারের দ্বার ারিদিক হইতে মুক্ত হইল। মরীচিমালীর প্রথর কিরণ ত্তি বেগে গাঢ় অন্ধকারে প্রবেশ করিল। ঘনঘটাচ্ছন ^{ান্}বী নি**শার বিভূচ্দালোভের** ন্যায় সহস৷ কারা**গৃহ**

আলোকিত হইল। কারাবাসিগণ এই অমুউপূর্বে ব্যাপা দর্শনে অনিষ্টাপাত শক্ষায় প্রথমে চমকিত হইয়া উদ্দি পরে আলোকের স্থিতিকাল ব্যাপক দেখিয়া সবিস্থা ক্তম্বিত হইয়া উঠিল। তাহারা এমন মনে করে নাই নে ভাহাদিগের নরক যন্ত্রণার কাল অন্তমিত হইল, এবং সৃষ্ট কিরণ স্বসংবাদ বিস্তারের নিমিত্ত প্রকাশিত হইল। কার वानिश्व हात्रिमिटक भहाटकालाहल अवव कतिया ट्योड़ হলাক্রান্ত হইয়া ইতন্ততঃ বিচরণ করিবার নিমিত উল্থ ইইতেছে, এমত সময়ে নগরবাসিগণ কারাগৃহে প্রকে क्रिया जाहामिरगत कात्रामुख्यि मःवाम स्वामणा क्रिया कातारात्रिशन मुक्ति जःवान धारन कतिया महारकानाल পুর্বেক দলে দলে অন্ধকারাবৃত কক্ষ হইতে বহির্গত হইটে लागिल, ভारापिरगत ककालाविश्व एतर, পाशृवर्गभू অর্জমুক্তিত চক্ষু এবং পৃতিগন্ধযুক্ত চীর বদন দর্শন করিঃ नकरनर करूनार्क रहेरान এवः पूर्व बाक्तमनकाद्योनिगर मदन मदन धनावाम मिटल लागिटलन । कात्रावानिगन कार्र গৃহ হইতে তুর্গস্থ প্রাঙ্গণে সমবেত হইলে, নগরবাসি^গ द्याखादेन पूर्व नम्जूमि कतिया अन्तन अवनामा नैकारा (Hotel de villa) হোটেল ডি ভিলার অভিমূপে অগ্রস **হইতে লাগিল। ভাহারা হোটেল ডি ভিলার স**ন্ম উপস্থিত হইতে না হইতেই রাজপক্ষীয় এক দল ^{সৈন} সহসা ভাহাদিগকে আক্রমণ করিল, এবং ডিলো^র

প্রভৃতি কয়েকজন তাহাদিগের হল্তে নিধন প্রাথ ₅ইলেন।

এই প্রকান্তে পারিপবাসীরা তিনি ঘণ্টাকাল যুদ্ধ

রিয়া ব্যাফীটেল দুর্গ অধিকার পূর্ব্বক নগরে প্রত্যাবর্ত্তর

রিল। দিবাবসানে পারিস নগর আনন্দসূচক চিক্র
দর্পদীপমালায় শোভিত হুইল।

ব্যাফীইল প্রাসাদ ছর্গ সমভূমি হইবার তিন বৎসর
গরে ফ্রান্সের অধিবাসিগণ পুনর্ববার রাজন্রোহী হইয়া
গ্রাজা ও রাজ্ঞী এবং বহুসংখ্যক নগরবাসীকে হত্যা করে।
হাকেই French Revolution বা ফরাসী রাজালোহ কহে।

ুএই সমস্ত ঘটনার পরেই নেপোলিয়ন বোনাপাটী াবিজুতি হন।

ভূমধ্যসাগরের মধ্যে করিসিকাধীপে প্রায় শত্তর বংরপূর্বেন নেপোলিয়ন বোনাপাটির জন্ম হর। এইকালে
থিবীতে এক ব্যক্তিও নেপোলিয়নের সমকক্ষ যোজা
ইলেন না।

নেপোলিয়ন প্রথমতঃ করাসী দেশীয় একদল সেনার ধিনায়ক হন, তাহার পর সেনাপজির পদে নিযুক্ত ইয়াছিলেন। ছাবিবল বংসর বয়সের সময় তিনি অনেক বে করলাভ করিয়া পরিলেবে সমুদার ইটালী দেশ ধিবার করেন। ইটালী জর করিয়া জানুসে প্রত্যাবর্তন করার পরেই কান্স দেশীয়ের। তাঁহাকে সম্রাটের পরে
অভিষিক্ত করিয়াছিলেন। দেখা যে নেপোলিয়ন বোন।
পাটী একজন সামান্ত সৈনিক পুরুবের মধ্যে গণ্য ছিলেন,
এক্ষণে কান্স দেশের সম্রাট পদে অভিষিক্ত হইলেন,
এবং অতুল ঐশর্যের অধিপতি হইয়া মনোহর প্রানারে
বাস করিতে লাগিলেন। যত্ন এবং অধ্যবসায় থাকিয়ে
মানবগণ সকল অভিলাষ পরিপ্রণে সমর্থ হয়।

কিন্তু নেপোলিয়ন অতুল ঐশ্ব্য এবং সম্রাট পদবী
লাভেও সন্তুষ্ট হইলেন না, কারণ মনুষ্যের আশা কথনই
একেবারে তৃপ্ত হয় না। যাহার যে পরিমাণে ঐশ্ব্যের
বৃদ্ধি হয়, তাহার আশাও সেই পরিমাণে বৃদ্ধি হই।
থাকে। নেপোলিয়ন ফ্রান্সের নিকটবন্তা চুই একা
রাজ্য অধিকার করিয়া অবশেষে সমগ্র ইউরোপের অধিণ
হইবার মানস করিয়া চারি দিকে সমরানল প্রস্কা
করিলেন। নেপোলিয়ন অনেক যুদ্ধে জয়লাভ করিলেন
এবং অনেক বৃহৎ বৃহৎ রাজ্য অধিকার করিয়া তদ্দেশ
নরপতিদিগকে পদানত করিয়া রাখিলেন। জগতে
প্রত্যেক রাজা সভয়ে তাঁহার প্রতি নেত্রপাত করিলে
লাগিল, এবং তিনিও উপর্যুপরি জয়্মীলাভে উরাশি
হইয়া ভাবিলেন, তাঁহার অদৃষ্ট আর কখনই অপ্রস্
হইকেনা, এবং কালে তিনি সসাগরাধরার এক ছত্র অধি
পত্তি হইবেন। কিন্তু এই সংস্কারটা সম্পূর্ণ প্রমানুলক

জগতের কিছুই চিরস্থায়ী নহে, মমুষ্যের স্থখ দ্বঃখ চক্রের ন্যায় পরিভ্রমণ করিতেছে, এবং স্থখের কাল লোকের স্বপ্রবং প্রতীত হয়।

আমি ইতিপূর্ব্বেই বলিয়াছি যে নেপোলিয়ন ক্রসিরা আক্রমণ করিতে গিয়া বতিব্যস্ত হইয়াছিলেন, এবং এই স্থানে অনেক সৈন্য ক্ষয় করিয়া, তিনি অতি সামাুন্য পারিষদের সহিত ফুান্সে প্রত্যাবর্ত্তন করেন। নেপোলিয়ন সদেশে উপস্থিত হইয়াই উপযুক্ত সৈশ্য সংগ্রহের চেফ্টায় প্রবৃত্ত হইলেন, কিন্তু তাহাতে কোন ফললাভ হইল না। কারণ, অন্যদিক হইতে এক অভিনব বিপদ উপস্থিত হইয়া তাঁহার সৌভাগ্য সূর্য্যকে মেঘাচছন্ন করিল।

নেপোলিয়ন নৃতন সৈত সংগ্রহে ব্যস্ত আছেন, ইত্যব্দরে ইউরোপের নরপতিগণ একত্রিত হইয়া নেপোলিয়ানের বিরুদ্ধে যুদ্ধযোষণা করিলেন। নেপোলিয়ান সিংহ বিরুদে সমগ্র নরপতির সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন বটে, কিস্ত কোন ক্রমেই জয়লাভে সমর্থ হইলেন না। ইংলগু, বেলজিয়ম, প্রসিয়া, জর্ম্মিনি, হলগু প্রভৃতি কয়েক দেশের নরপতিগণ নবতি সহস্রেরও অধিক সৈত্তের সহিত বেল-জিয়মের অস্তর্গত ত্রসেল নগরের ছয় ক্রোশ দক্ষিণ এক প্রান্তরে শিবির স্থাপন করিলেন। নেপোলিয়ন বাহাত্তর হাজার সৈন্য সংগ্রহ করিয়া রণস্থলে অবতীর্ণ হইলেন। ১৮১৫ খ্রীফ্রান্সের ১৮ই জুন প্রাতঃকালে উভয় সৈত্ত পর-

পার সম্থান হইলে যুদ্ধ আরম্ভ হয়। ইংলণ্ডের সেনানায়ক ওয়েলিংটন এবং প্রসিয়ার সেনাধ্যক বুচার সেনাদিগের তথাবধান করিতে লাগিলেন। এদিকে মহাবীর নেপোলিয়ন আপন অসাধারণ বুদ্ধিমন্তা এবং রণদক্ষতার সহিত সৈল্পাগরে অবতীর্ণ হইয়া সেনাদিগকে উৎসার্থ দিতে লাগিলেন। প্রথমে ছুই পক্ষে কামান ঘারা গোলার্প্তি করিতে লাগিল, সমুদ্য রণভূমি অমানিশার লায় অক্ষকারে আছেয় হইল, এমন কি কেহ আপন পার্ক্য ব্যক্তিকে দেখিতে সমর্থ হইল না।

প্রায় ছই প্রহর ছইটা পর্যান্ত ঘোরতর মুক্ক হইন।
সকলেই মনে করিল, বুনি জয়ন্ত্রী এবারেও নেগোলিয়নকে আশ্রেয় করে। ফুল্ড সৈভাগণ প্রভূত রণদক্ষতার
সহিত যুক্ক করিতে লাগিল, এবং তাহাদিগের প্রতাগে
শক্রপক্ষীয় অনেক সৈত্য সমরশায়ী হইল। এই প্রকার
যুক্কে কয়েক ঘণ্টা অতিবাহিত হইলে বেলা চারিটার পর
নেপোলিয়নের সৈত্যগণ ক্লান্ত হইয়া পড়িল, এবং বিপক্ষণলের সৈত্যরাও ফরাসী সেনাদিগের প্রতাপে উহণীড়িও
হইয়া যুক্ক জয়ে হতাশ হইয়া পড়িয়াছিল। এদিকে
বিপক্ষ দলের সেনাপতিষয় নেপোলিয়নের সৈত্যদিগকে
ক্লান্ত, এবং আপনাদিগের সৈত্যগণকে জমোহসার
দেখিয়া, একদল প্রনিয়ান অখারোহী সৈত্য রণস্থলে
আহবান ক্লিলেন। এই দৈত্যদন্দ রংখ্যায় প্রায় জাফাদ্র

সহস্র হইবে, এবং যুদ্ধের প্রথম হইতেই ইহারা বিশ্রাম ञ्चनाञ कतिरङ्खिन। श्रीत्रांन अचारताशै रेमग्रमन, রণস্থলে অবতীর্ণ হইবার অমুমতি প্রাপ্ত হইয়াই মহোৎ-সাহের সহিত রণস্থলাভিমুখে ধাবিত হইল। একদল সৈম্য তাত্রবেগে রণস্থলাভিমুখে আগমন করিতেছে দেখিয়া ছুই দলের সৈন্ত্রগণই ভীত হইল। কারণ উভয় দুলুই এান্ত হইয়া পডিয়াছে এবং সমস্ত দিনের পর অপরাক্তে পুনর্বার নবোদ্দমোত্তেজিত সৈহাদিগের সহিত যুদ্ধ করা অসাধা বিবেচনা করিয়া উভয় দলই ভগ্নোৎসাহ হইয়। পড়িল। কিন্তু অখারোহী সৈম্মগণ নিকটবর্ত্তী হইবামাত্র নেপোলিয়নের বিপক্ষপক্ষীয় সৈত্যগণ মহারবে কোলাহল করিয়া উঠিল। তাহাদিগের উল্লাসধ্বনি, শত সহস্র বজ্র-নিনাদ সদৃশ কামান শব্দ ভেদ করিয়া চারিদিকে ব্যাপ্ত ^{ছিইল}. এবং নেপোলিয়ানের সৈক্তগণ একেবারে ভগ্নোৎ-^{দাহ} হইয়া পড়িল। নবাগত অস্থারোহী সেনাগণ রণ-ছুমিতে অবতীর্ণ হইয়া নেপোলিয়নের সৈহ্যগণ এবং চাঁহার জয়শ্রীকে আক্রমণ করিল। সহসা বিপক্ষ পক্ষীয় ^{দ্বাগত} সেনাদলদিগকে আক্রমণ করিতে দেখিয়া, নেপো-^{লিয়ন} দিনান্তে পরিশ্রান্ত সেনাদিগের সহিত মিলিত হইয়া শিকাল ঘোরতর যুদ্ধ করিলেন; কিন্তুতাহাতে সৈন্যক্ষয় ^{য়তীত} আর কোন ফললাভ হইল না। ফরাসী সৈন্যগণ ^{দণ্}কাল পরেই রণে ডক্স দিয়া পলায়ন করিল, এবং

নেপোলিয়ন ইহজদের মত জয় জ্ঞী, অতুল ঐর্থর্য, এর সমাট পদবী রণস্থলে বিসর্জ্জন দিয়া সেনাদিগের সহগার্গ হইলেন। এই যুদ্ধেই নেপোলিয়নের সৌভাগ্যসূর্গ পশ্চিম সাগরে অবগাহন করিল।

বিপক্ষ পক্ষীয় সেনাপতি ওয়েলিংটন যুদ্ধে জয়লা।
করিয়া চারিদিকে নেপোলিয়নের অন্থেষণ করিতে লাগি
লেন, কিন্তু কেহই তাঁহার অনুসন্ধান পাইল না, চারিদিকে লোক পাঠাইলেন, কেহই নেপোলিয়নের বার্গ বলিতে পারিলেন না। সকলেই মনে করিল হয় ও নেপোলিয়ন রণস্থলে প্রাণত্যাগ করিয়াছেন। কিন্তু প্রভৃষ্ট শবরাশির মধ্যে ভাঁহার মৃতদেহ দেখা গেল না।

এ দিকে নেপোলিয়ন রণস্থল পরিত্যাগ পূর্বক সমূর
তীরে উপস্থিত হইলেন, এবং সাম্রাজ্যের সীমা ত্যাগ
করিয়া আমেরিকায় পলায়নের নিমিত্ত জাহাজ অয়েগ
করিতে লাগিলেন। সমুদ্র তীরে একখানি জাহাজ অনি
লম্বে ফ্রান্সের উপকূল ত্যাগ করিবে জানিতে পারিয়া,
তিনি ছল্মবেশে জাহাজস্থকাপ্তেনের নিকট উপস্থিত হইয়
আশ্রেয় গ্রহণ করিলেন। সেখানি যে ইংরাজ বাণিজ্য
জাহাজ,এবং কাপ্তেনও একজন ইংরাজ,নেপোলিয়ন তার
পূর্বের জানিতে পারেন নাই। কাপ্তেন নেপোলিনকে চিন্টি
পারিয়া গোপনে ওয়েলিংটনকে সংবাদ দিয়া ভাঁহাকে প্র
স্থানে বেক্টন করিল, এবং নেপোলিয়ন বন্দী হইলেন।

ওয়েলিংটন নেপোলিয়নকে বন্দী করাতে ডিউক, টুপাধি প্রাপ্ত হইলেন।

আফরিকার নিকটবর্তী সেণ্ট হেলেনা নামক দ্বীপে নগোলিয়নের কারাস্থান নির্দিষ্ট হয়, এবং তিনি জীব-নর অবশিষ্টকাল এই বিজ্ঞনপ্রদেশে বন্দীভাবে কালাতি-গাত করিয়া বিস্ফোটক রোগাক্রান্ত হইয়া প্রাণত্যাগ চরেন। নেপোলিয়ন প্রথমতঃ সেন্টহেলেনা দ্বীপেই মাহিত হইয়াছিলেন, কিন্তু তাহার পর তাঁহার সমাহিত চবর, ফ্রান্সে নীত হইয়া স্ক্রাটের সমুচিত সমৃদ্ধিসহ-চারে স্থাপিত হয়।

হুরাকাঞ্জন ই মন্তুষ্যের সর্ববনাশের মূল। যদিও আকাঞ্জন বাতীত মন্তুষ্যাণ ইহকালে মানবপদবীবাচ্য হইতে বিরেন না বটে; কিন্তু ছুরাকাঞ্জনার বশবর্ত্তী হইলেই ক্রিজন পূরণের কথা দূরে থাকুক, তাহার মূল পর্যান্ত ংপাটিত হইবার সম্ভাবনা। দেখ, নেপোলিয়ন অতি মান্য গৃহে জন্ম গ্রহণ করিয়া স্বীয় অধ্যবসায় বলে মাট পদবী প্রাপ্ত হইয়াছিলেন, ইউরোপন্থ নরপতিগণ হার নাম প্রাবনাত্র লোমাঞ্চিত হইয়া উঠিতেন, এবং কলেই মনে করিয়াছিল, যে এই বীর কালে সসাগরা বার অদিতীয় অধীশর হইবেন। কিন্তু এক ছুরাকাঞ্জনার শবর্ত্তী হইয়াই নেপোলিয়নের সমস্ত স্থপসমৃদ্ধি আমূল হণাটিত হইল। যিনি ইউরোপের অদ্বিতীয় বীর, তিনি

শেষকালে এক সামান্য বিজন প্রাদেশে বন্দীভাবে কালা তিপাত করিয়াছিলেন। যাহার সমৃদ্ধি পৃথিবীর সমৃদায় সুসভ্য স্থানকে অতিক্রদকরিয়াছিল,তিনি অতি কর্ফে জীৰ নের উত্তরকাল অতিবাহিত করিয়াছিলেন। কিন্তু নেগে লিয়ন এইরূপ অসাধারণ সহিষ্ণু ছিলেন, যে তিনি ঞ কফ্টকে কফ্ট বলিয়া জ্ঞান করিতেন না। প্রথিত আ। সেষ্ট্রেলেনার কারাধাক্ষ একজন ইংরাজ ছিলেন নেপোলিয়নের সহিত তাঁহার শক্রতা থাকাতে সে वाक्ति (नालानियानाक याथके कके श्रामान कति । वि নেপোলিয়ান সেই সকল কফ নির্বিকারে সহু করিয়া ছিলেন। তিনি কহিতেন, কিছু দিন পূর্বেব আমি সমাট ছিলাম, এই অভিমান আমার মানস হইতে এরে বারে তিরোহিত হইয়াছে। আমি কড শত রাজা রাজ্যচ্যুত করিয়াছি, কত শত লোকের শোণিতে ধ প্লাবিত করিয়াছি, শত সহস্র অবলাকে বৈধব্য যন্ত্রণা দগ্ধ করিয়াছি, এবং আমাদ্বারা শত সহস্র বালক পিগ্ বিয়োগে অনাথ হইয়াছে। এক্ষণে আমার এই সম পাপের প্রায়শ্চিত আরম্ভ হইয়াছে, আমি স্কার নেপোলিয়ন নাই। আসন্ন কালেও নেপোলিয়ান আ নার পূর্ববকৃত কার্য্য স্মরণ করিয়া অমুতাপ করিতে জ করেন নাই। তিনি মৃত্যুর অনতিকাল পূর্কোই করি ছিলেন, হার, বিষয় তৃষ্ণা, ও ধর্মাতৃষ্ণায় কত প্রভো

আমি এবং সীজার, উভয়ে পরাক্রম ঘারা সমুদয় জগতী-তলস্থ লোকদিগকে বশ করিতে চেষ্টা করিয়াছিলাম, কিয় যে ক্ষণে আমাদিগের ক্ষমতার হ্রাস হইল, সেই কণেই ভাহারা বিরুদ্ধাচরণে প্রারৃত্ত হইয়াছিল, আবার যীশুঞ্জীফ প্রেমবলে তাঁহার সামাজ্য বিস্তৃত করিতে চেফা। করিয়া ক্রামে ক্রামে জগতের অধিকাংশ স্থান অধিকার করিয়াছিলেন। তিনি যদি জীবিত থাকিতেন, **তাহা** হইলে এত দিনে সমস্ত জগৎ তাঁহার সামাজ্যের অস্করে প্রবিষ্ট হইত। আমরা ইহলোক হইতে তিরোহিত হইলে লোকে মনে করিবে, যে জগতের এক ধূমকে**তু** অন্তমিত হইল, আর আজি পর্য্যন্তও জগতের শত সহস্র লোক থ্রীষ্টের প্রেমে মুগ্ধ হইয়া তাঁহার নিমিত্ত জীবন ^{বিসর্জ্}ন দিতে উদাত হয়। আমাদিগের পত্নে সকলে পুলকিত হইবে, আর প্রীষ্টের শেষ দিন মনে করিয়া আপামর সাধারণ সকলের চক্ষু হইতেই শোকাশ্রু দর-দ্রিত ধারার বিগলিত হয়। কিয়ৎকাল পরেই আমা-দিগের নাম জ্বপৎ হইতে বিলুপ্ত হইবে, আর ঞ্রীষ্টের নাম দগতের প্রলয়কাল পর্যান্ত দেদীপ্যমান থাকিয়া চারি দিকে প্রতিধ্বনিত হইবে।

এই সমস্ত খেলোক্তির অল্পকাল পরেই মহাবীর নিপোলিয়ান বোনাপার্টি ইহলোক পরিত্যাগ করেন। পঞ্চবিংশ পরিচেছদ। স্পেন ও পোর্টুগাল।

শেশনের, প্রধান নগর মাড়িত। এখানকার অধিবাসীর সংখ্যা অতি অল্প। স্পেনের অধিবাসীদিগের প্রকৃত্তি গল্পীর, এবং তাহারা অতি বৈরনির্যাতক। ইহারা সচরাচর তামকৃটের ধূম পান করিয়া থাকে। কেহ কেইন যে একজন স্পেনবাসীর মুধে, আর চিমনীতে (ধূম নির্গদনের নলে) কোন প্রভেদ নাই।

স্পেনবাসীরা অতি নিষ্ঠুর। ইহারা পশুপক্ষীদিগের মুদ্ধ দর্শন করিতে ভাল বসে, এবং ইহাতে মহা আমোদ অসুভব করে। এখানে ব্যযুদ্ধই সচরাচর দেখিছে পাওয়া যায়।

তাহারা এক বিস্তীর্ণ স্থানের চতুর্দ্দিকে বেড়া দ্বারা বেষ্টন করে, এবং তাহার পার্শ্বে (Gallery) গোলারীর ন্যায় বিসিয়া দেখিবার নিমিত্ত স্থান হয়। প্রাণ্ডী এবং অপরাপর সকল লোক উপবেশন করিলে অতি উগ্রান্তি এক বৃষকে সেই বেড়ার মধ্যে ছাড়িয়া দেয়। তৎপরে এক ব্যক্তি অখারূচ্ হইয়া এক হস্তে একটা বর্ম্ম লইয়া সেই বেষ্টিত স্থান মধ্যে প্রবেশ করে। এই লোককে এখানে (Picador) পিকাডোর কহে। এই ব্যক্তি প্রথমে বর্ষার খোঁচা দ্বারা বৃষ্টীকে রাগাইয়া দেয়, বদাণি এই ব্যক্তি সহসা অশ্ব হইতে পতিত হয়, তাহা হইলে,

ছিৎক্ষণাৎ এক ব্যক্তি একখান রঙ্গীন বন্ত্র বৃষের সন্মুখে প্রক্ষেপ করত তাহার মনকে পতিত ব্যক্তির উপর হইতে আকর্ষণ করে। এই ব্যক্তিকে চৌলোস কহে। এই প্রকার ক্রীড়াতে বৃষ অবসন্ধ হইয়া পড়িলে, এই ব্যক্তি সশত্রে রণভূমিতে উপস্থিত হইয়া, বৃষের গলদেশের শিরাতে অস্ত্রাঘাত করে, অস্ত্রাঘাতমাত্র বৃষের শোণিতে চারি দিক পরিপ্লুত হয়, এবং সকলেই চারিদিক হইতে মহাহর্ষ প্রকাশ করিতে থাকে। তৎপরে পাঁচ হয় অশ্ব যাজিত একখানি শকটে বৃষকে উঠাইয়া জয়পতাকা হত্তে করিয়া সকলে মহা কোলাহলে তীত্রনেগে নগর মধ্যে প্রবিষ্ট হয়। স্পানিয়ার্ডরা এই প্রকার নির্কৃত্র াবহারে মহাআমোদ অনুভব করিয়া থাকে। বালকগণ! গ্রুমা করি, তোমরা কদাপি এ প্রকার নির্দিয় আমোদে ত হইবে না।

পোর্টু গালের প্রধান নগর (Lisbon) লিস্বন্।
ই নগর প্রায় নিউইয়র্কের দ্বিগুণ। পর্টু গালের অধিবাক্রিনিগের স্পানিয়ার্ডদিগের সহিত অনেক সোসাদৃশ্য
ক্রিছে। এখানে নানাপ্রকার ফল প্রাপ্ত হওয়া যায়। মদ,
ক্রির, এবং কমলা লেবু, পর্টু গাল হইতে এদেশে আনীত
ইয়া থাকে। প্রায় অদ্যীতি বৎসর অতীত হইল, ইউ
ক্রিপে ভূম্কম্প হয়, এই ভূমিকম্প লিস্বনে এ প্রকার
জারে হইয়াছিল, যে প্রায় সমস্ত অট্টালিকা ভূমিসাৎ

হয়, এবং অনেক লোক প্রাণে বিনষ্ট হয়। এই সমরে
সমৃদ্ধিশালী লিস্বন নগর, মরুভূমির আকার ধার।
করিয়াছিল। পর্টুগালের অপর্টো নামক নগরে (Portermine) পোর্ট ওয়ায়িন প্রস্তুত হয়।

यড়िवः भ भित्रेटाइन।

আমি ভোমাদিগকে ইউরোপের সমুদয় দেশের বিং
রণ বলিয়াছি। আমার গল্প শুনিয়া বদি ভোমরা তৃঞ্চি
লাভ করিয়া থাক, তাহা হইলে আসিয়া, আফ্রিকা, এয়
আমেরিকার বিবরণ তোমাদিগকে কহিব, আর বিদ্
শুতিকটু বোধ হইয়া থাকে, তাহা হইলে এখান হইডে
কাস্ত হইলাম।

এক্ষণে আমি ইউরোপ পরিত্যাগ করিয়া আমেরিকা ভিমুখে প্রস্থান করিলাম। পথিমধ্যে আর কোন বিশেষ ঘটনা ঘটে নাই। কেবল এক দিবস আমরা মন্দ মন্দ মারুতবেগে পাল তুলিয়া যাইতেছি, এমত সময়ে দেখিলাম যে, একটা কৃষ্ণবর্গ বৃহদাকার পদার্থ সমুদ্র হইতে উচ্চ হইয়া উঠিল, তাহার মস্তক ঠিক ঘোড়ার ন্যায়, উঠিলা মাত্র, আবার আমাদিগের জাহাজ দেখিয়া জলমগ্র হইনা ইহাকে সামুদ্রিক সর্প কহে। আটলান্টিক এবং প্রশাধ মহাসামরে এই প্রকার সামুদ্রিক সর্প সচরাচর দৃষ্টি গোচর হয়।

কিছু দিবস পরে আমাদিগের জাহাজ বোইটন নগরে উপনীত হইল, আমি কোতৃহলাক্রান্ত হইরা, অতি সম্বর দিবারদিগকে দেখিবার নিমিত্ত জাহাজ হইতে অবতীর্ণ ইলাম। গৃহে আসিয়া দেখি সকলেই কুশলে আছে। মি প্রায় দেড় বৎসর জ্রমণ করিয়া গৃহে আসিয়া উপত্ত হইলাম। এই সময় মধ্যে আমি কত দেশ, কত শীপর্ণন করিয়াছি, কত দেশের অধিবাসীদিগের স্থুখ ছংখর্ণন করিয়াছি, কত প্রকার বিপদে পতিত হইয়াছি, এবং ত প্রকার বিপদ হইতে জন্ধার প্রাপ্ত হইয়াছি। পরমের্বি, সকল বিপদ হইতে জামাকে রক্ষা করিয়া জন্ম-মিতে আনয়ন করিলোন, তাহার নিমিত্ত ক্তত্ত্তিতে হাকে ধন্যবাদ প্রদান করিলাম। অনেক দেশ জ্রমণ্ট্রিলাম, কিন্তু কোন দেশকেই বোইটন অপেক্ষা স্থুন্দর দ্বিলাম না। কারণ জন্মভূমি সকল দেশ অপেক্ষা দ্বির এবং প্রীতিপ্রদ।

পিটার পারলির ইউরোপ ভ্রমণ।

সম্পূর্ণ।



VIDÁYA-VIDYÁLAYA!

or

A FAREWELL ADDRESS TO THE COLLEGE.

ВЪ

ALOKANÁTH NYÁYABHÚSHANA,

Late Senior Scholar and Head Pandit, Culcutta Government Sanskeit College.

বিদায়—বিদ্যালয়!

ক্রিকাতা রাজকীয় সংস্কৃত-বিদ্যামন্দিরের উল্লভরুত্তিমচ্ছাত্রচব ও ভূতপূর্ব প্রধান ব্যাক্রণাধ্যাপক

শ্রীআলোকনাথ ন্যায়ভূষণ

"আ পরিতোবাহিছ্যাং ন সাধু মঞ্চে...... "

कालिमात्र ।

কলিকাতা

আহীরীটোলা ষ্ট্রীট্ ১৪০। ৭ নং ভবন হইতে গ্রন্থকার কর্তৃক গৃঃ অব্দ ১৯০২ সালের ২৫এ জুন প্রকাশিত।

৬২ নং আমহার্স্ত ত্রীট্ সংস্কৃত যন্ত্রে, শ্রীউপেন্দ্রনাথ চক্রবর্তী দারা মুদ্রিত। ১৩০১।

िया 4 Annas. [All rights reserved.] श्रुका । काना।

সূচীপত্র।

· 연7丣 !	প ष्ठीक				
অবতরণিকা	•••		•••	•••	2
হৃদয়োজ্বাস		•••	•••		٥ ډ
চাত্রগণের প্রতি			•••		١,
উপদংহার			•••	•••	b 3
ক্রোড়পত্র	•••			•••	Ь
সংস্কৃত কলেজের		•••	>=		
তালিকা	•••				; •
বিদার				•••	>•0





বিদায়—বিদ্যালয়!

অবতরণিকা।

নমেংস্তি বিষ্যা ন তথান্তি মেধা নবান্তি বৃদ্ধি: প্রতিভোজ্জলা চ। মন্দঃ পরীক্ষার্ণবমূত্তরীতৃং দেবীং গিরাং স্থাং জননীঞ্চ বন্দে॥

()

হে সংস্কৃত-পাঠশালে ! জননি আমার,
প্রীক্ষা-সাগর হ'তে কিসে হ'ব পার ;
ব্রীক্ষাত শত শত অবিরত নানামত
দিয়াছি অকুতোভয়ে জীবন-সন্থ্রামে,
আজি কেন ভয়ে মরি পরীক্ষার নামে ?

(2)

আসিয়া করম-ধামে পরীক্ষা মা ! যত,
দিলাম করম-বশে কহিব তা' কত ;
কিন্তু এ পরীক্ষামত কিছুতেত মর্মাহত
করে নাই এত, তাই ভাবি মনে মনে,
এ ঘোর সঙ্কটে হ'ব উত্তীর্ণ কেমনে।

(9)

জননি ! যখনি যেই আশা-তস্ত ধরে', ভেসে'ছি আনন্দ-নীরে মুহুর্ত্তের তরে, বিধাতা তা' নিজ করে তথনি ছেদন করে' ডুবা'য়েছে অভাগারে ছুখের পাধারে, বিদীর্ণ করিয়া হুদি অশনি-প্রহারে।

(8)

দূরে আরোহণ করি' কত আশালতা বিশীর্ণ হইল, তা'র কি কব বারতা ; হ'তে হ'তে প্ররোহিত কত হ'ল তিরোহিত মানস-উন্থান হ'তে তুর্ভাগ্য-বাত্যায়, স্থুখের স্থপন প্রায়, বলা নাহি যায়। (()

যাঁ'দের ক্রপায় লভি' অমূল্য জীবন,
সদানন্দে হেরি বিশ্ব-বিনোদ-কানন;
সদা রাখি' বুকে বুকে কিসে আমি র'ব স্থথে,
দিবানিশি এ চিন্তায় দেহ-পাত করি',
যতন করাতে যাঁ'রা আছি প্রাণ ধরি'।

(&)

স্বার্ষপর-এজগতে যাঁহাদের গণি
অকৃত্রিম বাৎসল্যের অদ্বিতীয় খনি;
ভাগাকে বঞ্চিত করে? অনিদ্রায় অনাহারে
কত ক্লেশ সহিলেন যাঁ'রা অকাতরে,
ভৃণজ্ঞান করে' এই পাষণ্ডের তরে।

(9)

পরম-আরাধ্য সেই জননী জনকে

হারা'য়েত অনায়াসে আছি জীবলোকে;

ছলে' কভু এ জীবনে তাঁ'দের করিনা মনে,

সঁপে'ছি বিস্মৃতি-গর্ভে তাঁ'দের সন্ধান,

এমনি এ কুতম্মের বক্তময় প্রাণ!

(b)

ত্তমোদশ সহোদর ছিন্তু একদিন,
অধুনা একাকী পড়ে' আছি ভাগ্যহীন ;
অসময়ে প্রাণসম রূপে গুণে অনুপদ
দ্বাদশ অনুজ মম গিয়াছে কেলিয়া,
অথচ আছিত হিয়া পাষাণে বাঁধিয়া।

(&)

বহুকাল ধরে' নিজ ভবনে রাখিয়া,
যতনে বিহগ-শিশু পালন করিয়া,
ক্রমে যবে বৃদ্ধি পায়, তুচ্ছ অর্থ লালদায়
যেমতি শৌনিক হ'য়ে নির্মম-হৃদয়,
অনা'দে সহদা করে তা'দের বিক্রয়।

(>0)

তেমতি অন্ধের যপ্তি স্নেহের পুতলি,
দাদশটি কন্যাপুত্রে একে একে তুলি',
তুরস্ত কালের করে অকাতরে দিয়া ধরে'
এইত রহে'ছি বেঁচে' অমান-বদনে,
তবে আজি আত্মহারা হই কি কারণে ?

(>>)

এ সব আনন্দ-মূর্ত্তি হেলায় পাশরি'
যথন রহে'ছি ভবে আজো প্রাণ ধরি',
অটল হিমাদ্রি সম, তবে কেন এ বিষম
ভয়ে জড়সড় হয় পাষাণ-হৃদয়,
কেন বা নিরখি আজি বিশ্ব শৃন্যময় ?

(><)

দৈবের নিগ্রহ সহে' শিশুকাল হ'তে অসাড়-হৃদয় হ'য়ে আছি এ জগতে; ভাল মন্দ এ বিচার অধুনা করি না আর, ঢালিয়া দিয়াছি অঙ্গ নিরাশা-সাগরে, কি হবে অনধিকার-চর্চা মিছে করে'।

(>0)

দারুণ স্রোতের মাঝে ঘাত-প্রতিঘাতে অবশ হ'য়েও আমি আছিত আমাতে; চৌদিকে নিরাশা-চেউ, রক্ষা করে নাই কেউ, তবুত রেখে'ছি স্থির সংসার-সাগরে আত্মারে, জননী-পদ ধ্রবলক্ষ্য করে'।

(84)

নিয়তির গতি রোধে ছেন সাধ্য কা'র, দেবের ছুক্ষর ক্ষুদ্র নর কোন্ ছার ; এড়াই স্বকর্ম-ফল না ধরি এরূপ বল, ভবের শিক্ষায় শেষে বুঝিয়াছি সার, অদৃষ্ট-শৃঞ্বলে বন্ধ নিথিল সংসার।

(3¢)

যে তুরাত্মা প্রাণদণ্ডে হইয়া দণ্ডিত,
বধ্য-ভূমি চক্ষে দেখে' হয়গো শঙ্কিত ;
হাহাকারে জনতার যেমতি সে অভাগার
বধাগ্রেই দেহ ছাড়ি' উড়ে' যায় প্রাণ,
ঠিক্ সেই দশা মম হয় অনুমান।

(36)

বিষম সমস্থা আজি হ'ল উপস্থিত,
শিহরে অন্তর-আত্মা পরাণ স্তম্ভিত ;
চারি ধারে অন্ধকার হেরিতেছি অনিবার,
বিরাগে হৃদয়-তন্ত্রী বাজে অমুক্ষণ,
নিরস্তর হুইতেছে বামাক্ষি-স্পন্দন।

(39)

শৈশব-সঙ্গিনি মন্ধ ওমা পাঠশালে !
না জানি রাখিলে ধরে' কিবা ইন্দ্রজালে
বাঁধি' হৃদি-কারাগারে স্নেহ-ডোরে সে আমারে,
আয়স হৃদয় যা'র পরীক্ষার নামে,
হেলেনি টলেনি কভু জীবন-সঙ্গামে।

(>>)

সকল লোকের মুখে শুনি এ বচন,
নাট্যশালা মাত্র এই নিখিল ভূবন ;
না জানি কি অভিনয় রঙ্গভূমে এ সময়,
জননি ! এ নটাধমে করিতে হইবে,
বুঝিবা বিধাতা শিরে অশনি হানিবে।

(\$\$)

নতুবা এতই কেন কাঁদিছে পরাণ,
কেন বা ছঃসহ ইহা হয় অনুমান ;
পরীক্ষার স্থান ধরা ভীষণ আবর্ত্তে ভরা,—
এ কথার আগে নাহি ছিল অর্থ-জ্ঞান,
আজি ভা'র পাইলাম বিশদ প্রমাণ।

(२०)

ইতি পূর্ব্বে নেত্রপাত করিয়া তোমাতে
শরতের রাকা-শশী পাইতাম হাতে;
দূরে যে'ত তুথরাশি আনন্দ-সাগরে ভাসি
আত্মহারা হইতাম মনের উল্লাসে,
আজি কেন অন্ধকার হেরি হুদাকাশে ?

(23)

জননি ! জনমনত ছাড়িয়া তোমায়
বিদায় লইতে হ'বে কালের আজ্ঞায়,
হেন নিদারুণ কথা শুনাইতে পাই ব্যথা,
কেমনে বা বলি বাণী না সরে আমার,
অসহ্থ-বেদন গণি দৈবের প্রহার।

(२२)

কুক্ষণে গগনে আজি সমূদিল রবি,
হরিতে এ চিত হ'তে চরণেন্দু-ছবি ;
যে ছবি মা অকাতরে মানস-নয়ন-ভরে'
পঞ্চাশ বরষ ধরে' হেরে' হুইমনে,
পাশরি' সকল শোক ছিলাম ভুবনে।

(२०)

যুগ-যুগান্তের বহু স্মৃতির বল্লরীবিজড়িত হ'য়ে ধর অপূর্ব্ব মাধুরী;
এ স্থমা অনুপম
হেরিব না ত্রিভূবন পাতি পাতি করে',
কাঁদিছে পরাণ তাই মা! তোমার তরে।

(28)

ফুরা'ল সময়, ল'ব কাজে অবসর, অনিচ্ছায় হইতেছি তাই অগ্রসর ; কত কি চিন্তার স্রোত করিতেছে ওত-প্রোত, হৃদয়ের অন্তন্তন মন্থন করিয়া, পরাণ অতীত বাল্যে চাহিছে ফিরিয়া।

(२৫)

মূহ্-বিকম্পিত-পদে আনত-বদনে,
থীরে ধীরে আসি তাই অনিশ্চিত-মনে;
ক্তু ভাবি যাই ফিরে', ক্তু ভাসি নেত্র-নীরে,
ছলিছে সবেগে হৃদি সংশয়-দোলনে,
চরম বিদায় আজি চাহিব কেমনে।

(२७)

এ জীবনে এইরূপে আর এক দিন
কাঁদিল বিষধ-মনে এই ভাগ্য-হীন;
জননি গো, যে দিবদে পরিহরি' কালবশে
পূজ্য গুরু স্লেহ্ময় সহপাঠিগণে,
প্রবেশিল অবিজ্ঞাত সংসার-কাননে।

(২৭)

জননি ! তথন কিন্তু আজিকার মত,
কিছুতেই হই নাই এত মর্মাহত ;
স্থথময় স্থরদাল তথন যৌবনকাল,
কাজেই হৃদয় ছিল মহোৎদাহে ভ্রা,
অধুনা জরার রাজ্যে জীয়ন্তেই মরা।

(~)

ভবিশ্বৎ-মন্দিরের সৌন্দর্য্যের খনি
নয়ন-সমীপে ধরি' দিবস-রজনী,
উদ্দাম ইন্দ্রিয়গণে বিষম বিষয়-বনে
অনর্গল মাতাইয়া স্কচারু-হাসিনী
সূহসা পলা'ল কোথা আশা কুছকিনী;—

(२৯)

অধুনা এ হৃদয়ের তাই ধ্যান-জ্ঞান, বিখময় করিমাত্র তাহারি সন্ধান ; এমন করিয়া যে সে ভুলা'য়ে মধুর হেসে' একবারে চিরতরে করিবে প্রস্থান, স্বপনেও করি নাই হেন অনুমান।

(%)

সে সময়ে মৃতু হাসি' মধুরভাষিণী
কত কি শুনা'ত আশা স্থধামাথা বাণী ;
আমিও সে ছলনায় গলিতাম ক্ষিপ্তপ্রায়,
ছুটে'ছে আশার নেশা জননি ! এখন,
ভেঙে'ছে আশার বাসা জনম-মতন।

(%)

আগে মনে হ'ত যাহা শান্তির আগার, তীষণ শাশান হেরি আজি সে সংসার ; জননি গো! কাজে কাজে ভব-বাজারের মাঝে, বাজিছে হৃদয়-তন্ত্রী আজি অনিবার বিরাগের ভরে, যথা বীণা ছিন্ন-তার।

(७२)

রাঙতায় মোড়া ছিল আগে এ ভুবন, ভিতরের খড় মাটি দেখিনি তখন ; কিছুই যে নাই সার, কেবল যে ফকিকার, বাহ্য চটকেই হায়! ভুলিমু তখন, বিলক্ষণ জ্ঞান কিন্তু হ'য়েছে এখন।

(22)

আজি এ সংসার আর নাই মা নৃতন,
হাড়ে হাড়ে পরিচয় পে'য়েছি এখন;
আগে ভাবিতাম ধরা পরম আনন্দে ভরা,
নব অনুরাগ আর নাই মা! তেমন,
নিরাশা-সাগরে আজি হ'য়েছি মগন।

(98)

ভাল নাহি লাগে আর উৎসবের মেলা,
জর্জর হ'য়েছি হেরে' অদৃষ্টের থেলা;
কিদে শান্তিময়ী বেলা ভবপারে এই বেলা
লভি' ঘুচাইব ঘোর সংসার-যাতনা,
অধুনা ইহাই মাত্ত মনের বাসনা।

(90)

তুরাশার ছলনায় বহুদিন তরে,
যে জন স্বদেশ ছাড়ি' যায় দেশান্তরে;
আশৈশব অনায়াদে প্রিয়জন-সহবাদে
স্থাথে দিন গেল যেথা, যথা তাঁর মন
জনম-ভূমির তরে হয় উচাটন;—

(৩৬)

তথা ছাড়ি' মর্মভেদী স্থদীর্ঘ নিশ্বাস কাঁদিছে উদাস প্রাণ না মানে আশ্বাস ; বিদিও চলে'ছে দেহ লক্ষ্য করি' নিজ গেহ, শৈশব-সঙ্গিনী ভাবি' হৃদয় আমার, ফিরিয়া তোমার পানে চাহে বারবার।

(৩৭)

দিবানিশি হেন চিন্তা করি মনে মনে, তব গুরু ঋণভার শুধিব কেমনে; এ জীবনে কিনা তুমি ? শৈশবের ক্রীড়াভূমি, যৌবনের কর্মাক্ষেত্র, প্রবীণ দশায় জীবন ধারণ করি তোমারি কুপায়।

(৩৮)

তুমি যাই শিক্ষা দিয়া দেখা'লে শরণি,
চোক্ কাণ ফুটিয়াছে তাইত জননি !
তব প্রবর্ত্তিত পথ স্থির ধ্রুবতারা মত
লক্ষ্য কর্মি' এ সংসারে চলি অনিবার,
তুমি বিনা আর কেবা আছে অভাগার।

(৩৯ •)

হে সংস্কৃতপাঠশালে ! জননি আমার,
এ ভবে তুমিই মম ঐশর্য্যের সার ;
কে আমি নগণ্য ছার, তবু ধন্য শতবার
আপনারে মানি, ওমা জননী-রতন !
তোমায় জননী বলে' করি' সম্বোধন।
(৪০)

জননীর **জীচরণে পায়** যদি স্থান,
ব্রহ্মপদ নাহি চায় অভাগার প্রাণ;
বেঁচে' র'বে যতদিন,
বেন কভু এই দীন
নাহি ভোলে জননীর যুগল-চরণে,
এ আশিষ ক্ষুত্র ওয়া! স্থপ্রসম্মন্ত্র।

(83)

বড় দাধ ছিল তব বদন-মণ্ডল,
পরকাশি' গুণরাশি করিব উজ্জ্বল ;
জগতে লাগা'ব তাক্, সে কথাত দূরে থাক্,
হেন জড় বুদ্ধি ল'য়ে সংসারে আসিমু,
নিক্ষলক্ষ মুখ চাঁদ মলিন করিমু।

(82)

চটক্ দেখা'য়ে উঠি সমাজ-শিখরে, এ প্রেক্টি উদিল না কদাপি অন্তরে; অথবা শক্তি নাই, কি গুণে উন্নতি চাই, অধুনা কামনামাত্র শান্তি সহকারে, জননি! যাইতে পারি ভব-সিক্কু-পারে।

(89)

অভাগা সন্তান সেই কালের আজ্ঞায়,
' ক্ষুণ্ণ-মনে তব কাছে মাগিছে বিদায়,
জনমের মত আজি কেমনে যাইবে ত্যজি'
জীবন-সর্বাস্থ-ধনে, এই ভাবনায়
কালিছে পরাণ তার ক্রিয়াগ-ব্যথায়।

(88)

কি ল'য়ে বিমনা হ'য়ে কাটা'ব ভূবনে জননি ! জীবন-শেষ তোমার বিহনে ;— হেন গুরু চিন্তাভার হুদে জাগে অনিবার, তু'নয়নে দর দর বহে বারি-ধার, জননি ! বিষম দায়ে পড়ে'ছি এবার।

(8¢)

অথবা কি বলিতেছি আমি মূঢ়মতি,
হেন শক্তি কার রোধে নিয়ক্তি গতি;
জননি! তোমায় ত্যজি' অভাগা চলিন্ম আজি,
মনে করি ফিরি, কিন্তু নাই সে উপায়,
কাজেই মনের থেদে যাচিগো বিদায়।

(89)

ঘন অন্ধকারে যথা দীপ-দরশন,
তথ-অবসানে তথা স্থখ-সজ্ঞটন ;
আগে ভূগে' নানাস্থখ, যে হেরে তুথের মুখ,
যার-পর-নাই তুখী সেই অভাজন,
জীবন মরণ তার মরণ(ই) শরণ।

(89)

আগে স্থী করে' মোরে ঠিক্ সেইরূপ,
বিধাতা আমার প্রতি হ'য়েছে বিরূপ ;
অথবা প্রত্যেক জনে জানে ইহা এভুবনে,
আলোক-ছটায় অগ্রে সংসার উজলি,'
দারুণ অশনি হানে পশ্চাৎ বিজলি।

(85)

জীবন-নাটকে হ'ল পট-আবর্ত্তন,
আজি হ'তে আরম্ভিল জীবনে মরণ,
তোমারি মা আশীর্ব্বাদে কাটা'লাম নির্ব্বিবাদে
এতকাল মহাস্তথে মুহুর্ত্তের স্থায়,
আনমনে থাকি তব চরণ-দেবায়।

(8৯)

জীবনের শেষভাগ কার্টিবে কেমনে,
এই ভাবনায় ভীত হইতেছি মনে,
কেননা অনহামনে কি শয়নে কি স্থপনে
তব যে চরণ-ধ্যানে ছিলাম মগন,
আজি তাহা হারা'লাম জনম-মতন।

((()

চিরদিন কারো ভাগ্যে না যায় সমান,
কেমনে লজ্মিব ইহা বিধির বিধান ;
স্থপন-সমান ধরা বিবিধ বিবর্ত্তে ভরা,
চক্রবৎ স্থখন্থ করিছে ভ্রমণ,
আনন্দ-বিষাদ-রোলে পূর্ণ অনুক্ষণ।
(৫১)

সংসারের পরীক্ষায় যমের তাড়নে,
কাতরতা নাহি ঘটে মনস্বীর মনে;
স্থথে তুথে সমজ্ঞান প্রলয়ে ভাঙেনা ধ্যান,
বিকার কাহাকে বলে তাঁদের জীবনে,
পরিচয় নাই কভু ভুলেও স্থপনে।

(৫২)

অতীব অসার-চিত্ত আমি গো জননি !
কেমনে সহিব হেন বিরহ-অশনি,
নবম বর্ষের কালে
যথন জননী বলে
মা ! তোমারে মনে মনে করে'ছি বরণ,
তথন কেমনে ভুলি থাকিতে জীবন।

(৫৩)

অথবা পবিত্র তব স্মৃতি কোনমতে, আশ্বস্ত করিবে র'ব য'দিন জগতে ; কিছু স্থায়ী নয় ভবে, কেন মিছে কাঁদি তবে, অনিত্য সংসার এই পরিবর্ত্তময়, হেথা কার্ নাহি হয় দশা-বিপর্যায় ?

(@8)

নিবে'ছে স্নেহের দীপ হৃদয়-মন্দিরে, কাল-বাত্যাবশে কত বিশ্বৃতি-তিমিরে; কিন্তু ও পবিত্র ছবি, যেন চিরদীপ্ত রবি, জাগিবে হৃদয়াকাশে দদা সগৌরবে, ইচ্ছাময় যে ক'দিন রাখিবেন ভবে।





হৃদয়োচ্ছাদ।

()

অগত্যা আদি মা ! তবে প্রণমি' চরণে,
দয়া করে' আশীর্কাদ কর গো এক্ষণে,
উদার পবিত্র মনে দিও স্থান অভাজনে,
কালের তরঙ্গে যেন না যাই ভাসিয়া,
বিশ্বৃতি-জলধি-মাঝে অভাগা বলিয়া।

(2)

নাহি ধরি বিভা বুদ্ধি রচনা-চাতুরী, না আছে স্মরণশক্তি বচনে মাধুরী, বাগ্মিতা কাহাকে বলে জানিনা মা! কোন কালে, তাই বলে' পদে ঠেলে' মরমে বেদন, দিওনা মা! অধীনের এই নিবেদন।

(0)

অতি অকিঞ্চন আমি জানি মনে মনে,
আকিঞ্চন করি তবু লুঠিতে চরণে;
"কুপুত্র যদ্যপি হয় কুমাতা কদাপি নয়,"—
আপামর সবে ইহা জানে বিশ্বময়,
দে বিশ্বাদে হ'য়েছে মা! এ উচ্চ আশয়।

(8)

বিশেষত জননীর নির্প্তণ সন্তানে
সমধিক স্নেছ হয়, শুনি যাই কাণে,
চাই হ'ল এ বাদনা, না করিয়া প্রবঞ্চনা
রেখ গো মা ! ও অভয় পদ-কোকনদে,
কি বিপদে কি সম্পদে দদা নিরাপদে।

(a)

স্বার্থপর এ সংসারে গুণের আদর
সবে করে, গুণহীন সদা হতাদর ;

নিয়ম অন্যে থাটে, কিন্তু ইহা নাহি আঁটে
অকারণ স্নেহময়ী জননীর প্রতি,

যাঁর স্নেহ-তটিনীর নিম্নদিকে গতি।

(&)

রূপ নাই, গুণ নাই, তবু স্লেহ চাই,
কেননা তোমার স্লেহে ক্ত্রিমতা নাই;
'নির্গুণ স্ন্তান পর মার মায়া দৃঢ়তর,'—
এ গাথায় গাঁথা তব বিজয়-কেতন,
অপত্য-স্লেহের ইহা ফুন্দুভি-ঘোষণ।
(৭)

ক'দিন বা র'ব আর এ মর-ভূবনে,
সত্বর যাইতে হ'বে শমন-সদনে;
হ'য়েছে আয়ুর শেষ, জরা-ধবলিত কেশ্
ভব পারে যাইবার করি' আয়োজন,
অপেক্ষায় আছি কবে ডাকিবে শমন।

(**b**)

যত কাল তব অঙ্কে করিয়া শয়ন
ছিলাম মা! সদানন্দে করে'ছি যাপন;
হুকুমার হুরসাল, সরল শৈশব-কাল
সে আনন্দ সঙ্গে ল'য়ে গিয়াছে জননি!
জীবন-মরুতে তাই নির্বারণী গণি।

(&)

স্বার্থপর সংসারের বিষম শঠতা, অদৃষ্ট-চক্রের তথা ঘোর জটিলতা, কা'রে বলে সে সময়ে, নাহি ছিল এ হৃদয়ে পরিচয় লেশমাত্র, তাই হেন গণি, শৈশব হুখের উৎস উৎসবের থনি।

(>0)

যৌবনের উপভোগে নাই আর সাধ,
তুচ্ছ অর্থ তরে আর না চাই বিবাদ;
বিদ হেলাগোলা মনে মনোমত সঙ্গী সনে
পারি মা! শিশুর মত খেলিতে আবার,
তবে যেন নরজন্ম হয় অভাগার।

(>>)

আবার হুখের বাল্য যেই চলে' যায়,
থন মা ভবের লীলা সংবরি হেলায়;
নিজ্বা জনমে ছাই, এ জনম নাহি চাই,
মানব-বিবেক মম লাগিবে কি কাজে,
কেবল লাঞ্চনা-ভোগ হ'বে বিশ্ব-মাবে।

(>2)

নিশা অবদান হ'লে যথা তারাগণ
গগন-দাগর-মাঝে হয় নিমগন,
তেমতি মা! একে একে আমাকে একাকী রেথে'
অনেক সতীর্থ মম করে'ছে প্রয়াণ,
না হেরি তা'দের মত স্নেহভরা প্রাণ।

(50)

আবার মা ! ইচ্ছা হয় তাহাদের সনে
তোমার উৎসঙ্গে থেলি পুলকিত-মনে ;
সংসারের হলাহলে শোকরাশি-তুষানলে
সে সময়ে পারে নাই কাঁদা'তে পরাণ,
সে তুথ স্থপন সম এবে হয় জ্ঞান।

(38)

নিশা-শেষে রাজ্য-হারা হইয়া যেমতি,
তিমির-বসনাঞ্চলে ঢাকিয়া মূরতি,
শশী গাত্র-অলঙ্কার ছিন্ন ভিন্ন তারা-হার
ছড়া'য়ে গগনাঙ্গনে অস্তাচলে ধায়,
শৈশব-রাজ্যের দশা তথা দেখা যায়।

(>0)

গ্যু-লোকে গে'ছেন গুরু, বাল্য-সহচর, গু'চারিটী মাত্র(১) হয় নয়ন-গোচর ; বার্ত্বকের বশীস্থৃত রোগ-শোকে অভিস্থুত, হেরে' সে প্রাচীন মূর্ত্তি না হয় প্রত্যায়, কাল-জোড়ে কা'র সাধ্য সমভাবে র'য় !

(১৬)

কত শত অপরাধ চরণ-কমলে,
বাল্য-কালে করিয়াছি জ্ঞান-হীন বলে';
সেদোষ না হৃদে তুলে' জননি গো! ষে'ও ভুলে,'
আপনার নৈসর্গিক উদারতা-গুণে,
হিতাহিত-বোধ কবে থাকে মা! নিশ্রণি ?

())

তুমি বিনা অভাগার আর কেহ নাই,
থাকিতে তোমার কাছে তাই এত চাই;
কি নিকটে কিবা দূরে, নিখিল সংসার ঘুরে'
দেখিকু সন্ধান করে' সমুদ্য ঠাই,
ভুড়া'বার স্থান হেন কোথাও না পাই।

⁽১) ক্রোড়পত্র দেখ।

(>>)

জনম-জনমান্তরে যদি ভবে আসি,
তব পদ সেবি' যেন স্থথার্ণবে ভাসি;
জপ, তপ, ধর্মা, কর্মা, কিছুরি জানিনা মর্মা,
কি কাজে লাগিবে ওমা! গুণের সম্ভার ?
জানিত সম্ভাবে মার বাৎসল্য অপার।

(\$\$)

স্থানান্তরে নাহি ঘুরে' উন্নতি-আশার,
সঁপিকু জীবন তব চরণ-দেবার;
দিবানিশি স্বতনে থাটিয়াছি প্রাণপণে,
লঘু করিবার তরে গুরু ঋণভার,
কি সাধ্য শুধিব আমি মা! তোমার ধার।

(2.)

নির্ন্থণ হইয়া সেবি' ধনান্ধের বার,
পরিচয় দিই নাই নীচাশয়তার;
তোমার সন্তান হ'য়ে তোমারি মা! মুথ চে'য়ে,
পরম-গৌরব-ভরে যাপিয়াছি কাল,
ভবার্ণবৈ ছাড়ি নাই ভূলে' ধৈর্য্য-হাল।

(23)

এক-দৃষ্টে তব পদ ধ্রুব লক্ষ্য করে', আত্মাকে রেখে'ছি ধরে' আবর্ত্তের ঘোরে ; অক্ল পাথারে দিক্ সদা রাখিয়াছি ঠিক্, চারি ধারে নেহারিয়া প্রবল তুফান, করে'ছি অশান্ত প্রাণে সাস্ত্বনা-বিধান।

(22)

করম-সাগরে কভু না করিয়া ভুল,
জননি ! নির্কিন্মে এবে পাইলাম কূল ;
কি বিপদে কি সম্পদে মতি রেখে বিভূ-পদে
এইরপ নিরাপদে ভব-সিন্ধু-পারে,
যে'তে পারি এ আশিষ কর মা ! আমারে ।

(२७)

যথন উদরে ধরে' বাড়া'লে সম্মান,
কুপণতা কর'না মা ! দিতে পদে স্থান ;

মকুতী তনয় আমি,

তাহে কিবা ক্ষতি দৈব হইলে সহায়,

এক ভাগ্য ল'য়েত মা ! এদে'ছি ধরায়।

(38)

পুত্র-ভাগ্য ধন-ভাগ্য যশোভাগ্য আদি,
নানাবিধ সৌভাগ্যের নাহিক অবধি;
সব ভাগ্য একাধারে নাহি ঘটে এসংসারে,
তাই বলি এ দীনের আছে এক বল,
জননি ! জননী-ভাগ্য পরম সম্বল।

(२৫)

সোভাগ্য না থাকিলে মা ! কেন দয়া করে', রক্ষ-গর্ভা তুমি মোরে ধরিবে জঠরে ? নিরাশ্রয় দেববাণী আপন সৌভাগ্য মানি', একদা তুদ্দিনে যাহে লইল শরণ, সে উদরে জম্মে হেন স্থক্তী ক'জন ?

(२७)

জননি ! মুসলমান-রাজ্য-অবসান
হ'ল যাই, তাই তুমি লভিয়া পরাণ,
কোলে ল'য়ে দেববাণী, কলিকাতা-রাজধানী
অলঙ্কত করে' আজি করিছ বিরাজ,
এ তব অক্ষয় কীর্তি, স্থসভ্য ইংরাজ !,—

(२१)

চিরকাল কাল-বক্ষে রহিবে ক্ষোদিত, কৃতজ্ঞ ভারত কড় হ'বে না বিশ্বত ; পাঠশালে ! তুমি যাই কেন্দ্ররূপে আছ তাই, চতুষ্পাঠী-সৃষ্টি হ'ল বঙ্গময় যত, বিটপী-শাধার মত বর্ণিব তা' কত।

(২৮)

পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণ তব ছহিতার আদর করেন করি' গুণের বিচার ; প্রাচীন ভারত নাই, স্বাধীন হৃদয় নাই, ভারত আপন ধনে চিনিতে না পারে, রত্নাকর ছেড়ে' রত্ব খোঁজে অক্তি-পারে।

(२৯)

স্বরগীয় উইল্সন, গোল্ডফুকর,
•স্তার্ উইলিয়ম্ জোন্স্, রথ্, মোক্ষমূলর,
বোথলিঙ্ক্, ওয়েবার্, কোলক্রন্ক, বুল্হার,
উইলিয়ম্, কাউএল্, টনি, থ্রিফিথ্, হুইলার্,
ব্যালেন্টাইন্-আদি কাছে কত মান তা'র।

(00)

জননি ! বিদরে হৃদি বলিতে এ কথা,
কাহারে বা বলি হেন হূথের বারতা ;
একদা মা ! যে ভাষায় ঋক্-গানে এ ধরায়,
পঞ্চনদ-তীরে মেতে' আর্য্য-ঋষিগণে
বিশ্ববারা আদি পুণ্য মহিলার সনে,—

(%)

অতি পুরাকালে এই নিথিল ভারত,
পবিত্র করিল, যবে সমগ্র জগৎ
অজ্ঞান-তিমিরারত হ'য়ে ছিল ভূ-পতিত,
আজি সেই ভারতের স্থযোগ্য সম্ভান,
পদে পদে সে ভাষাকে করে তৃণ-জ্ঞান।

(७२)

ভারত-তুর্ভাগ্য-বশে আজি দেববাণী অর্থকরী নহে, ইহা শিরোধার্য মানি'; কিন্তু ভারতের ধর্ম ভারতের সর্বকশ্ব মর্ম-বোধে যে ভাষার নিত্য প্রয়োজন, তা'র এ তুর্গতি, একি বিধি-বিড়ম্বন!

(99)

যত রূপ ভাষা আছে ত্রহ্মাণ্ড-ভিতরে,
স্বারি জনম দেব-বাণীর জঠরে(২);
তাই বলি হেন বাণী, পরম সৌভাগ্য মানি'
কণ্ঠহার কর সবে মহা সমাদরে,
ঐহিক ও পারত্রিক মঙ্গলের তরে।
(৩৪)

ইংরাজি-শিক্ষার গুণে নানা উপকার
হ'য়েছে যে এ ভারতে করি তা' স্বীকার;
কিন্তু বিজাতীয় শিক্ষা মূল-মন্ত্রে হ'লে দীক্ষা
ভারতের সর্ব্বাঙ্গীণ হ'বে না কল্যাণ,
ভাগ্য-দোষে হারা'য়েছে ভারত এ জ্ঞান।

(၁৫)

ভারত-উন্নতি-কল্পে সংস্কৃত ভারতী
সবিশেষ চর্চা করা আবস্থাক অতি ;
বিদেশীয় উপাদান নহে ভারতের প্রাণ,
বাহ্য শিক্ষা আভরণ হ'ক ক্ষতি নাই,
সংস্কৃতের মৌলিকতা রক্ষা করা চাই।

^{.(}२) কোড়পত্র দেখ।

(৩৬)

সংস্কৃত সাহিত্য-শাস্ত্র বিনা বিলোড়ন,
বঙ্গভাষা-অঙ্গভ্ষা না হ'বে সাধন;
জাতীয় ভাষার পুষ্টি- বিষয়ে রাখিলে দৃষ্টি,
জাতীয় গৌরব তবে হ'বে সম্পাদন,
অন্যথা উন্নতি-আশা রথা আকিঞ্চন।

(৩৭)

যে ভাষার এ ভারত আগু লীলাস্থলী, ভারতের কৃতবিগু যুবক-মণ্ডলী যত দিন সে ভাষার না বুঝিবে উপকার, তত দিন পূর্ব্ববং দিব্য জ্যোতি ধরে' উদিবে না ভাগ্য-রবি ভারত-অন্বরে।

(%)

যে ভাষায় আদি-কবি শোকাশ্রু-সিঞ্নে রোপিলেন কাব্য-কল্প-তক্ষ রামায়ণে; রামায়ত পানে যা'র মুগ্ধ হ'য়ে এ সংসার, ভারতেরে দিয়াছেন হু-উচ্চ আসন, ভক্তিভরে দে ভাষার কর আরাধন।

(・ めか)

কবিত্ব-গগনে পূর্ণ শারদেন্দু-ছবি,
বাণী-বরপুত্র যাহে কালিদাস কবি,
স্বর্গীয়-প্রতিভা-ছলে নিখিল জগতী তলে
কবিতা-অমৃত-সিন্ধু করিল বর্ষণ,
সে দেব-বাণীর সবে ধর শ্রীচরণ।

(80)

অশনি-ভৈরব রবে সিংহনাদ ছাড়ি',
পবিত্র প্রবাহে যার লাগাইয়া পাড়ি,
মহাকবি ভবভূতি নিজ ওজস্বিতা-ভূতি
দেখা'লেন বীরমদে বিশ্ব তৃণ মানি',
ভাগ্য-দোষে ভিথারিণী আজি সেই বাণী।
(8>)

কাব্য-রাজ্যে যথা এই মধ্যম পাণ্ডব,
'সংগ্রাম-শ্মশান-শৈল-বর্ণনে বিভব
দেখা'লেন এসংসারে স্তব্ধ করি' হুভ্স্কারে,
ভাষাস্তরে হেন শক্তি ধরে কোন্ কবি,
চিত্রিবে যে চিত্ত-পটে সে জ্বলম্ভ ছবি ৪

(82)

আবার করুণ-রস-উদ্দীপন তরে

যবে কবি খেদ করি' বীণা ধরি' করে,

ফেলিলেন অশ্রু-ধারা বিশ্ব কেঁদে' হ'ল সারা

টুটিল বজ্রের হৃদি সে মঞ্জু বিলাপে,

হে ভারত! সে ভাষারে ভুলিলে কি পাপে?

(89)

বাহার লালিত্য-গুণে জয়দেব কবি,
রেখে'ছেন মন্ত্র-মৃগ্ধ করে' বিশ্ব-ছবি ;
সে ভাষার স্থধাপান করে' অগ্রে পাও প্রাণ,
পশ্চাৎ করিও সবে দেশের কল্যাণ,
নতুবা এখনি ছাড় উন্ধতির ভাগ।

(88)

এ দেব-বাণীর মত শক্তি সঞ্জীবনী,
সঞ্চার করিতে পারে অন্য কোন্ বাণী ?
শিলা ভাসে রত্নাকরে জড় বিশ্বে অশ্রু ^{বারে},
হেন যাতুকরী বিদ্যা ধরে যে ভারতী,
অনাস্থা করিয়া তা'রি আজি এ **ছ**র্গতি।

(80)

পরাণ-মাতান হেন বাণী বহুমানি',
ভক্তিভরে সেবা কর হ'য়ে পুটপাণি;
ফদেশ-উন্নতি তরে বিজ্ঞাতির পদ ধরে'
চলিলে হ'বে না কভু উন্নতি-বিধান,
হৃদয়-মন্দিরে ধর এখনো এ জ্ঞান।

(88)

যাহার হৃদয়-যন্ত্রে কভু একবার,
বাজিয়াছে এ বাণার সম্মোহন তার ;

মুহতের পারাবার না লাগিবে ভাল তা'র,
কি ছার কিমরী-গান, ভ্রমর ক্সার,
কোকিল-কণ্ঠের কিবা স্বর-উপহার।

(89)

নিশীথে স্থদ্র হ'তে বেণু-বীণা-স্বনে,
শুনিয়া সে ভৃপ্তি-বোধ করিবে না মনে;

সদয়-ভাণ্ডার তা'র পরিপূর্ণ অনিবার,
গীর্ব্বাণ-বাণীর স্থধা-রসের নির্বরে,

হেন শক্তি কিবা ধরে তার মন হরে।

(81-)

কাব্যাম্বর-তলে যিনি সমুস্থল রবি, সে সেক্ষপিয়র মানি মৃত্যুঞ্জয় কবি ; চরিত্র-চিত্রণে তাঁ'র ক্ষমতার নাই পার, মুক্তকণ্ঠে করিতেছি তাহাও স্বীকার, বঙ্গভাষা তা' হ'তে কি পা'বে উপকার !

(88)

অধ্যয়ন করিয়াছি একদা যতনে,
বাইরন্ কাউপার্ স্কট্ শেলিও মিণ্টনে;
অমর এ কবিগণ স্বভাবের যে বর্ণন,
করে'ছেন চিত্ত-পটে আজো আঁকা আছে,
কিবা ইফলাভ হবে ভাঁহাদের কাছে!

(00)

পরস্পর ভিন্ন ছুই ভাষার মিলনে
অসংশয় সঙ্করতা ঘটিবে গঠনে;
দেব-মূরতির মাঝে ছাট কোট নাহি সাজে,
হেন বোধ ছাদে যেন থাকে জাগরিত,
নক্তবা এ ভাষা হ'বে জগতে লাঞ্ছিত।

((()

স্তনশ্বর শিশুদের মাতৃ-স্তগ্য-পান
সমধিক রূপে করে দেহে বলাধান ;
কিশোরী এ বঙ্গভাষা সমূচিত অঙ্গ-ভূষা
পে'তে পারে একমাত্র দেববাণী হ'তে, ব তাই বলি তা'রি চর্চা কর বিধিমতে।

(a2)

জনম-ভূমির যাহে প্রকৃত কল্যাণ
হ'তে পারে কর হেন হিত অনুষ্ঠান ;

হ'য়ে বদ্ধ-পরিকর শ্রম কর নিরন্তর,
করিবারে মাতৃভাষা-মুখঞী উজ্জ্বল,
ভাষার শ্রীরৃদ্ধি হয় জাতি-গত বল।

(00)

এ ভারত যা'র কর ধারণ করিয়া উমতির তুঙ্গ শৃঙ্গে একদা উঠিয়া কুপা করে' নিজ করে জ্ঞানের বর্ত্তিকা ধরে' প্রবৃদ্ধ করিল মোহ-নিদ্রিত জগতে, তা'র অনাদর আজি কেন এ ভারতে ?

(68)

একি নারে সে ভারত রতনের খনি,
তদ্ধন-জীবন যা'র ছিল দেববাণী,
যোগ, যাগ, দান, ধ্যান, সোম-পান, সাম-গান,
মুনিগণ দিব্য-জ্ঞান, আদর্শ-রমণী
সতী, শৈব্যা, দময়ন্তী, জনক-নন্দিনী ?

(@@)

প্রাচীন ভারত বলে' না হয় বিশ্বাস,
সেভারত হ'লে কোথা গেল সে বিকাশ !
জ্ঞান-গুরু ছিল যা'রা, কেন তা'রা দিশে-হারা !
মোহ-ঘোরে কেন ঘেরা ভারত-আকাশ !
কেন বা অসাড় প্রাণে নাই সে উচ্ছাদ ?

(&9)

কাল-স্রোতে পূর্ব্ব চিব্ন সবি মুছে' গে'ছে
স্থথ-স্থপ-স্মৃতিমাত্র আজো জেগে' আছে;
তথাপি যে বর্ত্তমান ভারতের এত মা স্থসভ্য-সমার্জে, তা'র প্রধান নিদান,
চির-সভ্য ভারতের ক্রেশার্জ্বিত জ্ঞান।

(49)

সেই দিব্য জ্ঞানরত্ব-অনস্ত-ভাণ্ডারে, সংস্কৃতের দার বিনা কে পশিতে পারে ? শ্রুতি, দরশন, অলঙ্কার, ব্যাকরণ, মীমাংসা,জ্যোতিষ, তন্ত্র, সাদ্য্য,পাতঞ্জল, বেদান্ত, পুরাণ, ছন্দ, স্বারি সম্বল,—

(&>)

এ ভাষারে অবহেলি' কর'না বিদায়, ভক্তি-ভরে সবে মিলি' ধর তা'র পায় ; যেমাতা সোভাগ্যে মেলে, একবার চলে' গেলে,' ফিরা'তে তাহারে আর র'বে না উপায়, নব্য জাতি যত্নে তা'রে রাখিবে মাথায়।

(৫৯)

ভারতের পূর্ব্বদশা করহ স্মরণ,

* আধুনিক অবস্থাও কর দরশন;

ফবারে মিনতি করি মোহনিদ্রা পরিহরি'

জ্ঞাননেত্র মেলি' হের সংস্কৃতের দশা,

অাবার উন্ধৃত হ'বে নাই সে ভ্রসা।

(%)

একদা ভাষার রাজ্যে ছিল যেই রাণী, ভিথারিণী-বেশে ফেরে আজি সেই বাণী; সেহশূন্য দীপ-দশা সম আজি তা'র দশা, নির্ব্বাণ-উন্মুখ-প্রায় হেরিয়া নয়নে, ভারত! নিশ্চিন্ত মনে র'হে'ছ কেমনে ?

(&\$)

বাণিজ্য ঐশ্বর্য্য রাজ্যে হ্রাস বৃদ্ধি নাশ, অনিত্য-সংসার-মাঝে ঘটে বারমাস ; উন্নতি ও অবনতি মাত্র নিয়তির গতি, কোথা আজি গ্রীস রোম কোথা বা মিসর, কাল-স্রোতে সবি ভেসে' গে'ছে পর পর।

(७२)

কিন্তু ভাষা ল'য়ে জাতি ধর এই মতি,
তা'রি অবনতি হয় চরম হুর্গতি;
যাহা ভারতের প্রাণ যা'র বলে অভিমান
আর্য্য বলে', সেই বাণী যদি যায় চলে,'
ভারত ! কেমনে মুখ দেখা'বে ভুতলে ?

(৬৩)

পাঠশালে ! আমাদের ছখিনী জননী নব বঙ্গভাষা তব ছহিত্-নন্দিনী ; তিনি যাই দয়া করে' সম্মুখে দে'ছেন ধরে' রতনের খনি, তাই বঙ্গমাতা আজি সমাজে দেখায় মুখ নানা সাজে সাজি'। (৬৪)

(%8)

যাহে জিমা' স্বদেশের বদন-মণ্ডল

'অলোকিক প্রতিভায় করিল উচ্ছল,
প্রাতঃস্মরণীয় কত স্থসস্তান অবিরত,
দে তব উদরে জিমা' তব প'দ দেবি'

জনম সফল মম হইয়াছে দেবি !

(&c)

কোথা তব বরপুত্র দয়ার সাগর,
তেজস্বী ঈশ্বরচন্দ্র(৩) বিভার সাগর !
ট্লার-প্রকৃতি, ধীর, সত্য-সন্ধ, দান-বীর,
গাঁ'র কাছে ধনী নিঃস্ব সবাই সমান,
পদমানে ছিল ধাঁ'র সদা তৃণ-জ্ঞান ;—

^{. (}৩) ক্লোড়পত্র দেখ।

(৬৬)

সহৃদয়, মাতৃভক্ত, অতি মহাপ্রাণ, ভারত-অম্বর-মণি হেন স্থসস্তান জনমি' দরিদ্র-কুলে কীর্ত্তি-ধ্বজা হস্তে ভুলে' স্বদেশ কাঁদা'য়ে স্বর্গে করিল প্রয়াণ, এ হেরে' কেমনে ওমা ধরিছ পরাণ ?

(৬৭)

যত দিন অধ্যক্ষতা ছিল তাঁ'র করে,
উঠে'ছিলে উন্নতির অত্যুচ্চ শিখরে;
ধুরন্ধর সে তনয়ে এবে তুমি হারা হ'য়ে
পূরব গৌরব বিনা হ'য়েছ শ্রীহীন,
হেন আশা নাই আর ফিরিবে সে দিন।
(৬৮)

যে স্নেছ করিতে দেব ! ছেন অভাজনে,
পাশরিতে পারিব না জীবন-ধারণে ;
ভূমি লোকোত্তর নর, শাপভ্রম্ভ বা গমর
আগে তা' বুঝিনি' অছে নির্ধনের ধন !
ভারতের-জগতের স্থছদ্-রতন !

(৬৯)

তোমারে করুণা-সিন্ধু বলে' জানি যাই,
সাহসে করিয়া ভর আসিয়াছি তাই
পরম যতনে ভুলে' মালা গাঁথি' বন-ফুলে
কবিতা-কুস্থম-হার দিতে উপহার,
দয়া করে' শ্রীচরণে ধর একবার।

(90)

প্রত্যাখ্যান কর যদি তা' হ'লে কাঁদিব,
তুমি কাঁদ কিনা দেব ! তাহাও দেখিব ;

ফদি বল ভাল নয় সে দোষ আমার নয়,
জানত অপটু আমি কুস্থম-চয়নে,
তাই দিগ্ধ করিয়াছি ভকতি-চন্দনে।

(43)

জ্ঞানের উদয় হ'তে কাঁদিতেছি ভবে,
'অভাগা কাঁদিলে দেব! কিবা ক্ষতি হবে ?
শিরীষ-কুস্থম সম ও হৃদয় অকুপম
ব্যথা পে'লে পা'ব আমি মরমে বেদনা,
দয়া করে' এ দীনের পূরাও বাসনা।

(9২)

তুথের কাহিনী শুনে' জনম-ভূমির
কেলিতে হেরে'ছি বাঁ'রে নয়নের নীর,
দর দর অবিরত বৎসলা মাতার মন্ত,
সে ভূমি আমারে হেরে' করিতে রোদন,
কেমনে করিবে দেব! অঞ্চ-সংবরণ ?

(99)

দয়াময়-নামে নব কলঙ্ক রটিবে, গুণাকর! তাহাও ত পরাণে বাজিবে, উভয় সঙ্কট হ'তে যে উপায়ে মুক্ত হ'ডে পারিব আজি হে! কর তাহারি বিধান, হেদেব ঈশ্বচন্দ্র করুণা-নিধান!

(98)

দয়ার সাগর অহে ! হারা'য়ে তোমারে,
অনন্য-শরণা আজি দয়া এ সংসারে ;
সদা স্বদেশের তরে অকাতরে শ্রম করে
বিশ্রাম করি'ছ এবে স্থররুক্ষ সনে,
পরম-ভকতি-ভরে বিন্দি শ্রীচরণে।

(90)

কোথা আজি উইল্সন কোথা বা মার্শেল! কোথায় বা ঋষিকল্প শ্রীযুত কাউএল!

সদয়-ছাদয় তথা প্রসন্ধকুমার(৪) কোথা !
কর্ণধার বিনা হয় তরণী যেমতি,

এসব নায়ক বিনা তব সে তুর্গতি।

(৭৬)

স্থরগুরু সম যাঁ'রা ও চরণ সেবি', একদা গোরব তব বাড়াইয়া দেবি! গিয়াছেন স্থরলোকে নাজানি তাঁদের শোকে কোমল হৃদয়ে পে'লে কতই বেদন,

> দিবানিশি ভাবি তাই জননী-রতন ! (৭৭)

কোথা আজি পৃজ্যপাদ সেই গুরুগণ ?
নাহেরি যাঁ'দের মত পণ্ডিত-রতন ;
কোথা দেব প্রেমচন্দ্র ! কোথা বা ভরতচন্দ্র !
কোথা তারানাথ ! কোথা জয়নারায়ণ !
স্বরপুরী হ'তে কর প্রণাম-গ্রহণ ।

⁽⁸⁾ ক্রোড়পত্র দেখ।

(46)

প্রেমময় প্রেমচন্দ্র (৫) নব কালিদাস ! তব প্রতি শ্লোকে বহে কবিত্ব-উচ্ছাস ;

সমকক্ষ অলঙ্কারে কেবা তব এ দংসারে? নৈষধ ও কাব্যদর্শ রাঘব-পাগুবে, তোমার টীকার নাহি উপমা সম্ভবে।

(৭৯)

জ্ঞানের মূরতি গুরো ভকতি-ভাজন ! অশেষ গুণের তব না হয় বর্ণন ;

ধর্মনিষ্ঠ, সদাচার, সোজত্যের একাধার, সদাই বিনয়-নত্র, কত্র-দরশন,

প্রণমি চরণে দেব। শিষ্য অভাজন।

(%)

কপট কাছাকে বলে ও পবিত্র মনে, পশিতে পারেনি' কভু ভুলেও স্বপনে;

আজো হেন অনুমানি সে তব অমির-বাণী

শ্রবণে বাজিছে, যবে প্রদন্ধ হইয়া প্রশংসা করিতে গুরো। 'সাবাস্' বলিয়া।

⁽e) ক্রোড়পত্র দেখ।

(64)

বহুকাল গত হ'ল তবু হয় জ্ঞান, বিশ্বময় হেরি দেই মোহন বয়ান ; কাষ্ঠময়-পীঠোপরি চরণ বিস্থাস করি' যে সকল স্থধাপূর্ণ উপদেশ দিতে, মনে লয় আজো যেন পাই তা শুনিতে।

(४२)

যে দিব্য দীপ্তির ছটা প্রশস্ত ললাটে
বিরাজিত' আজো আঁকা আছে চিত্তপটে ;

কুল অরুণ জিনি' জীচরণ সুই খানি
ভূলিব না গুরুদেব ! জীবন-ধারণে,
কি পাপে হারা'লে ওমা ! এ হেন নন্দনে ?

(64)

যাঁ'র মুখ-বিগলিত উপদেশামূত
হাদ্য-চকোর পিয়ে আনন্দে নাচিত;

সাধি' কলাদান-ব্রত স্বর্গ-অক্তাচল-গত
সে কাব্য-কৈরব-চন্দ্র এদেশ আঁধারি',
সে শোক পাশরি' কিসে আছ প্রাণ ধরি ?

(38)

রসিকের চূড়ামণি কবিতার খনি,
হেন স্থত ক'টি জন্মে জগতে জননি ?
মোহ-পাশ কাটাইয়ে তব-ব্রত উদ্যাপিয়ে
ছ্যু-লোকে গেলেন চলে' নিজপুণ্য বলে,
মা হ'য়ে স্বচক্ষে তাহা হেরিলে কি বলে ?

(>&)

তুমি কি পদার্থ যদি আগে জানিতাম,
তব পদাম্বজ গুরো! নাহি ছাড়িতাম;
গুরুজনে অবহেলে' বাল্যকাল হেসে' থেলে কাটা'য়েছি মৃঢ়মতি, তাই অনুক্ষণ অনুতাপানলে আজি করি'ছে দহন।

(৮৬)

দশন-মর্য্যাদা বোঝে থাকিতে দশন,
হেন বৃদ্ধিমান্ গুরো! ভবে কয় জন ?
ভাবিতাম সমভাবে চিরদিন কেটে' যা'বে,
একদা হ'বে যে তুমি ফুর্লভ-দর্শন,
এ দগ্ধ হৃদয় নাহি বৃঝিল তথন।

(**b**9)

জীবন-পরিধা-পারে চরণ-দর্শন
পাইব যে, নাই ছেন স্থক্ত-সাধন ;
যে অশ্রু নয়নে ঝরে, যদি তা' শকতি ধরে
স্বর্গে যে'তে, সঁপিমু তা' ভক্তি-উপহার,
ইহাই সম্বল তব শিয়া-অভাগার ।

(৮৮)

কাতর এ শিয়াধমে প্রকাশি' করুণা, লহ গুরো! তুচ্ছ বলে' বিমুখ হ'ওনা;

নত্রজল-মুক্তাসার, ভকতি-নলিন-ছার, মানস-সরসী হ'তে তুলি' যে রতনে, এ দীন করুণ-সূত্রে গেঁথে'ছে যতনে।

(ኑ৯)

দার্শনিক-শিরোরত্ব জয়নারায়ণ ! (৬)
তব শিফীচারে বশ ছিল শিষ্যগণ ;

ম্মায়িক সম্ভাষণ, 'বা বা' বলে' সম্ঘোধন,
শুনে' দ্রবীভূত হ'ত পাষগু-ছাদয়,
পলা'ত তোমারে হেরে' দূরে অবিনয়।

⁽**৩**) ক্রোড়পত্র দেখ।

(%)

না জানি দেবতা কোন্ শাপ-ভ্রফ হ'য়ে,

এদে'ছিলে বিনয়াদি নানাগুণ ল'য়ে;

য়গৃহীতনামা তুমি, পাপময় ময়ড়ৄয়ি

য়্যোগ্য বসতি নহে, এই ভাবি' মনে,

বুঝি পুনরায় গেলে য়য়-নিকেতনে।

(&)

রূঢ় কথা বলে' ব্যথা কভু কা'র' মনে,
দেও নাই গুরুদেব ! জীবন-ধারণে ;
সার্থক তোমারি জন্ম, সার্থক তোমারি ধর্ম,
যাবৎ তোমার নাম এ ভবে রহিবে,
কেই বা অজাত-শত্রু পাণ্ডবে কহিবে ?

(\$2)

কাজে অবসর ল'য়ে যবে পরিণামে,
বসতি করিলে পুণ্য বারাণসী-ধামে,
যোগ-শাস্ত্রে অবিরত সংসার-বিরত কভ,
দণ্ডী ও পরমহংস যতি ব্রহ্মচারী,
যে তোমার পাদ-মূলে বদি' সারি সারি,—

(50)

উপদেশায়ত পিয়ে স্থী হ'ত মনে,
অকৃতী এ অন্তেবাসী বন্দে সে চরণে;

য় সকল জ্ঞান-মণি, দিয়াছিলে গুণ-মণি!
একদা করুণা করি' এই শিষ্যাধ্যম,
হরে'ছে বিশ্বৃতি-চৌরে তাহাক্রমে ক্রমে।

(88)

মনস্বী ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যার দাগর,
তথা শ্রীমহেশচন্দ্র মনীধি-প্রবর,
একদা বে শ্রীচরণ, দ্যতনে আরাধন
করিয়া কৃতার্থন্মন্ত হ'লেন হৃদয়ে,
দে পদ পামর বন্দে জোড়-কর হ'য়ে।

(৯৫)

তাহে তব মহিমার নাহি হ'বে ব্রাস,
মধ্য হ'তে চরিতার্থ হ'বে এই দাস;

একত মহান্ যাঁ'রা, প্রাণান্তেও কভু তাঁ'রা
উচ্চ নীচ কাহাকেও না করি' বঞ্চন,

স্বারে আশ্রয় দেন যে লয় শরণ।

(১৬)

মহাপুরুষের এই প্রধান লক্ষণ,
রত্নাকর এ বাক্যের শ্রেষ্ঠ নিদর্শন;
ছোট বড কত নদী.
পিডতেছে নিরবাং

- মৌক্তিক শন্থক নক্ৰ আছে অগণন, হৃদি-মাঝে বাড়বাগ্নি হৃদে অমুক্ষণ।

(59)

বারাণদী-ধামে কৃত রহে'ছে পাতকী,
কাশীর পূততা-নাশ হ'তেছে তা'তে কি ?
পবিত্র জাহুবী-তীরে, কিংবা পুণ্য গাঙ্গ নী
ভাল মন্দ কত বস্তু আদে ত ভাদিয়া,
তীর্থের মাহাত্য গুরো। না যায় কমিয়া।

(みょ)

মুক্তি-আশে কাশী-বাসে ছিলে গো! যথন, স্ব-শিষ্য ঈশ্বরচন্দ্রে করি' দরশন, বলে'ছিলে মহোল্লাসে 'একি হেরি ক্রোণাবা কি হেতু সহসা আজি আগত অর্জ্জ্ন!' কোথা মা! সে দ্রোণ তব! কোথা বা অর্জ্জ্ন!

(\$\$)

অতুল সে স্নেছরাশি ভূলিয়া কেমনে,
অনায়াসে গেলে গুরো ! অমর-সদনে ?
জ্ঞান-দ্যা-বিতরণে, তুষিয়াছ শিষ্যগণে,
শিক্ষাদান-ত্রত এবে উদ্যাপন করি',
আশ্রয় করিলে দেব অমর-নগরী।

(> 0)

ধন্য আমি ! ধন্য মম জীবন জনম !
কা'র ভাগ্যে ঘটে হেন গুরু অনুপম ?
কি প্রকার সরলতা, কতদূর বিনয়িতা,
ছিল তব, না পারিমু দেখা'তে তা'সবে,
এ খেদ হৃদয়ে গুরো ! চিরদিন র'বে।

(303)

ওরুদেব ! যে ক'দিন আছে আর বাকি,
ও চরণ কভু যেন ভুলে' নাহি থাকি ;
।ত্-পুণ্য-ফলে বিধি, দিয়াছিল হেন নিধি,
ভাগ্য-দোষে হারা'মু ভা' শিষ্য অভাজন,
পরম-ভকতি-ভরে বন্দি শ্রীচরণ।

(>0 <)

তোমাতে ভরতচন্দ্র (৭) স্মার্ত্ত-শিরোমণি !
মহাপুরুষের চিহ্ন বহু ছিল গণি ;
তব সৌম্য মুখামুজ, আজামূলম্বিত ডুজ্

হেম-গৌর দীর্ঘাকৃতি, রাজীব-লোচন,

মেঘ-মন্দ্র ধ্বনি, আজো হ'তেছে স্মরণ।

(>00)

করিয়াছি অপরাধ কত জীচরণে,

ক্ষম দেব ! সে সকল দয়া ভাবি' মনে ; অকাতরে বিভাধন, আজীবন বিতর

করিয়া হেলায় গেলে অমর-নগরে, মহাত্রত-মহাফল ভুঞ্জিবার তরে।

(3.8)

না জানি কি স্নেহ-ডোরে করে'ছ বন্ধন, গুরুদেব! সাধ্য নাই ভুলি ঞীচরণ;

অন্তাপি হৃদয়ে জাগে, প্রত্যেক বাক্যের আ

'যেন কেহু নাহি শোনে'—হেন মাত্রা দিয়ে, ঢালিতে যে বাণী কর্ণে অমৃত সিঞ্চিয়ে।

(৭) ক্রোড়পত্র দেখ।

(300)

একদা বদিয়া তব জ্রীচরণ-তলে,
কুতৃহলে কুড়াইয়া হৃদয়-অঞ্চলে,
রাথিকু যে জ্ঞান-ধন, হ'য়ে অতি স্যতন,
প্রমাদের ছিদ্র দিয়া গেল ক্রমে ক্রমে,
নাহি পাই নিদর্শন তা'র এজনমে।

(১০৬)

দেব-লোক হ'তে আদি' গেলে দেব-লোকে,
ভাগ্যহীন শিশ্বগণে ফেলে' রেখে' শোকে;
হেন গুরু হ'য়ে হারা, যা'রা কেঁদে' হয় সারা,
এ ধরায় কি রাখিলে তাহাদের তরে?
সদয়-হৃদয় গুরো! বল দ্যা করে'।

(309)

অধুনা ত্রিদিবাবাদে দেবগণ-পাশে,
তোমার স্বর্গীয় মূর্ত্তি গৌরবে বিকাশে;
ভেদি' ভব-কুহেলিকা, জীবনের প্রহেলিকা
সাঙ্গ করি' লভিয়াছ বৈজয়স্ত-ধাম,
ভক্তি-ভরে করি গুরো! চরণে প্রণাম।

(302)

কুশাগ্রীয়-মতি দেব গুরো তারানাথ!(৮)
শব্দ-শাস্ত্র তোমা বিনা আজি হে! অনাথ;
'বাচস্পত্য-অভিধান' করিতেছে সপ্রমাণ তোমার অশেষ শাস্ত্রে প্রগাঢ় দর্শন, অমানুষী সহিষ্ণুতা, অম্ভূত স্মরণ।

(১0%)

শব্দের প্রয়োগ ল'য়ে শিশু সমুদ্র যে সময় হ'ত গুরো! সন্দিগ্ধ-হৃদয়;

সে শব্দ কাহার' মনে হ'তেছে না, হেন কণ আচম্বিতে সমুদিত হ'ত কোথা হ'তে,

হে দেব ! সবার আগে তব স্মৃতি-পথে।

(>>)

অভ্যক্তি গুণের যাঁ'র ভূতার্থ-ব্যাহ্নতি,
তাঁ'র স্তাতি করে হেন আছে কোন্ কৃতী?
তব হৃদি শৃত্য করে' হতবিধি নিল ^{হরে'}
গুণনিধি হেন স্থতে, হেরিয়া নয়নে,
জননি ! পরাণ ধরে' রহে'ছ কেমনে ?

⁽৮) ক্লোড়পত দেখ।

(>>>)

জননীর শ্রীচরণে যেন মতি রাথি'
হেগুরো! শমনে অন্তে দিতে পারি ফাঁকি;
এ আশিষ কর মোরে, সংসার-আবর্ত্ত-ঘোরে
তুফানের মাঝে নাহি ছাড়ি' ধৈর্য্য-হালু,
লক্ষ্য স্থির রাখি যেন আছি যত কাল।

(>><)

আজীবন বিপ্রোচিত অধ্যাপন-ব্রত সাধিয়া মনের মত গুরো ! অবিরত, গাপন স্কুক্ত-বলে অনায়াসে গেলে চলে' জ্যোতির্ময় দিব্যধামে ভব পরিহরি,' সাফাঙ্গ প্রণাম তব শ্রীচরণে করি।

(>>>)

পাঠশালে! তোমারে মা! শোকের সাগরে
কেলে' তাঁ'রা গিয়াছেন অমর-নগরে;

অলস্কার, দরশন, স্মৃতি আর ব্যাকরণ,

এই চারি শাস্ত্রে চারি স্তম্ভের মতন,
জননি! ছিলেন যাঁ'রা তব আলম্বন।

(>>8)

পাঠশালে! সেশোকে কি হ'লে অিয়মাণ ? অথবা হৃদয় তব কঠিন পাষাণ ;

জননি গো! তা'না হ'লে, কাল-সাগরের জনে গেল চলে' চিরতিরে সে স্থাথের দিন,

অথচ কেমনে আছ হ'য়ে ভাগ্যহীন ?

(>>@)

যাবৎ দ্বারকানাথ! (৯) থাকিব জীবিত,

হে গুরো! তোমার গুণ হ'বনা বিস্মৃত ; কি তব কর্ত্তব্য-জ্ঞান! কিবা তব শিক্ষা-দান!

তব 'দোম-প্রকাশের' রচনার কাছে,

বঙ্গভাষা বিধিমতে ঋণ-বন্ধ আছে। (১১৬)

হে চন্দ্ৰমোহন(১০)গুরো! কি তব ধীষণা!

তব সনে সম্ভবে না কাহার' তুলনা ;

যথা ব্যাকরণ-শাস্ত্রে সেইরূপ স্মৃতি-শাস্ত্রে

পরম আশ্চর্য্য তব ছিল অধিকার,
হৈন গুরু ভবিয়তে মিলিবে না আর i

(৯), (১০) ক্রোড়পত্র দেখ।

(229)

হেরাম গোবিন্দ (১১) গুরো গোস্বামি-রতন !
না হেরি পুরাণ-বেন্তা তোমার মতন ;

দিয়গণে ইহলোকে, অক্রেশে ফেলিয়া শোকে
অমর-দদনে গেলে বলগো কেমনে ?
অভাজন শিষ্য তব প্রণমে চরণে।
(১১৮)

জ্রীগুরো গিরিশচন্দ্র! (১২) কেবা এ সংসারে ভবাদৃশ উপাধ্যায়ে পাশরিতে পারে ?

াবে পশি বিভালয়ে, আদি শিক্ষা এ হৃদয়ে
তুমিই দিয়াছ গুরো! আছে হে স্মরণ,

ভক্তিভরে করি তব চরণ-বন্দন।
(১১৯)

এ ভবে তুমিই ধন্য বিচার রতন !

मक्त जनम जर मक्त जीवन ;

ংক্রেশার্জিত ধনে অক্রেশে অনাথাগণে

মৃক্তহন্তে বিতরিয়া করে'ছ সার্থক,

স্বৈশি যাচি দেহ তব নিরাময় হ'ক্।

^{· (}১১) (১২) ক্রোড়পত্র দেখ।

(>> .)

শ্রীগুরো মহেশচন্দ্র (১৩) মনীধি-রতন ! তব সম বুদ্ধিজীবী না হেরি এখন ;

কেমনে উন্নতি-পথে উঠা যায় এ জগতে,

র্থা দিলে হেন[®]শিকা নিজ নিদর্শনে, তোমার এ মূঢ্মতি শিশ্য-অভাজনে।

(>>>)

্শেমুধী সর্বতোমুখী হে গুরো ! তোমার, সকল শাস্ত্রেই তব তুল্য অধিকার ;

অলস্কার, দরশন, তুই শাস্ত্রে দরশন

তুল্যরূপ তব সম কা'র এ ভুবনে ? টোলের পরীক্ষা-সৃষ্টি তোমারি যতনে।

(>>>)

করে'ছি চাপল্য-বশে পদে কত দোষ,

বন্দি শ্রীচরণ গুরো! না করিও রোষ; সমূদয় অপরাধ ক্ষমি' কর আশীর্বাদ

বেচা কেনা সায় করি' ডবের বাজারে,

যেন পারে পারি যে'তে শান্তি সহকারে।

(১৩) ক্রোড়পত্র দেখ।

(320)

কাজে অবসর ল'য়া দারুণ এমন,
হেন বোধ নাহি ছিল আগে কদাচন ;
গুরুগণ ! একে একে শিশুগণে ফেলে' রেখে'
যখনি করিতে তাই বিদায়-গ্রহণ,
হেরিতাম তোমা' সবে সজল-নয়ন।

(>> 8)

কত শত কণজন্মা সন্তান তোমার গেল চলি' হুর-ধামে সন্থ্যা নাই তা'র ;

্স সব তনয়-ধনে হারা হ'য়ে মনে মনে চিন্তা-বশে হইয়াছ অস্থি-চর্ম-সার, হে সংস্কৃত-পাঠশালে। জননি আমার।

(>> ()

জননি ! তোমার প্রতি বিধি হ'ল বাম,
কোণা নিমচাদ আজি কোণা নাথুরাম ;
যোগধ্যান, কাশীনাথ, শস্তুচন্দ্র, হরনাথ,
কবিতাবতার জয়-গোপালের সনে,
একে একে হারাইলে নিথিল রতনে ?

^{* (}১৪) হইতে (২০) পর্য্যস্ত ক্রোড়পত্র দেখ।

(১২৬)

কোথা রামদাস! কোথা সৌম্য রামময়!
কোথা শ্রীশচন্দ্র! তারা-শঙ্কর তনয়!
প্রাণকৃষ্ণ, প্রিয়নাথ, মাধব ও যত্নাথ,
রামগতি, রুদ্রমণি, মদনমোহন,
কোথায় বা স্থরসিক রামনারায়ণ!

(>29)

হারামকমল(৩৩) দেব! কেনগো অকালে,
অমূল্য জীবন ধন হেলায় হারা'লে ?
তব মুধপানে চে'য়ে সব শোক পাশরিয়ে,
হ'য়েছিল জননীর যে আশা অন্তরে,
সে আশা মগন হ'ল নিরাশা-দাগরে।
(১২৮)

কি করিতে কি করিতু আজি মৃঢ়মতি,

না জানি চরমে মম কি হবে তুর্গতি; না ভাবিয়া পরিণাম. পুণ্যাত্ম-গণের নাম,

পাপ-মুথে করিলাম কেন উচ্চারণ ?

নিশ্চিত তাঁ'দের হ'বে পাপ-পরশন।

⁽২১) **হইতে (৩**২) ক্রোড়পত্র দেখ। (৩৩) ক্রোড়পত্র ^{দেখ}

(>>>)

ক্বতাঞ্জলি হ'য়ে তাই যাচিগো ! সকলে, মার্জনা করিবে ক্রটি বোধহীন বলে'; শোকের আবেগ-ভরে, পাপ-মুখে নাম ধরে', সঞ্চিত করিমু আজি যে পাতক-রাশি, তা' হ'তে নিস্তার কর করুণা প্রকাশি'।

(১৩0)

শান্তি-ভঙ্গ করিয়াছি ধরি' যাই নাম,
দেবগণ ! করি তাই সাফাঙ্গ প্রণাম ;
ক্রমি' মম অপরাধ, কর হেন আশীর্কাদ,
জননীর শ্রীচরণে যেন মতি রাথি',
ভব-পারে যাই দিয়া শমনেরে ফাঁকি।

(>0>)

আত্মারামগণ ! এবে না হইয়া বাম,
শান্তি-ধামে কর স্থথে অধুনা বিশ্রাম ;
এ আশিষ ছাত্রগণে করি' স্থপ্রসন্ধ-মনে
তোমাদের পাদ-পদ্মে যেন দৃষ্টি রেখে',
গৌরব-শিখরে দবে ওঠে একে একে।



ছাত্রগণের প্রতি।

()

বিদায় লইয়া এবে যে'তে হ'বে চলে',
তাই হেন ইচ্ছা হয় যাই কিছু বলে';
প্রিয়তম ছাত্রগণ! অথবা হে ভাতৃগণ!
কনিষ্ঠ-সোদর-বোধে দিই উপদেশ,
জীবনে ভুলনা কভু এ মম নিদেশ।

বর্ণিতে প্রকৃত তত্ত্ব বিফল-প্রয়াস

হইলেও তোমাদের দিয়াছি আভাস^{*};
অতএব সবে জেন² রত্ন-প্রসবিনী হেন জননী সবার ভাগ্যে কদাপি না ঘটে, এ কথা অক্কিত রাখি² হৃদয়ের পটে,—

(9)

জননীর মুখ যাহে না হয় মলিন,
হুদি-মাঝে হেন চিন্তা ধরি' অফুদিন,
সদা হ'য়ে স্যত্তন উপার্জিয়া জ্ঞান-ধন
ভায়-পথে বিচরিবে হ'য়ে সাবধান,
চরিত্র-বিহীন জ্ঞানী পশুর স্মান।

(8)

পূর্ব্ব পূর্ব্ব মহান্থার পদ-চিহ্ন ধরে',
চলিবে জীবন-পথে নির্ভীক-অন্তরে;
সঙ্কল্ল-সাধন কিবা দেহের পাতন কিবা,
করম-ভূমিতে যা'র এ প্রতিজ্ঞা জাগে,
বিদ্ন বাধা কিছু নাহি লাগে তা'র আগে।
(৫)

পৃষ্ঠ-ভঙ্গ নাহি দিয়া সক্ষন্ন-সাধনে,

সংসার-সমরাঙ্গণে যুঝ প্রাণ-পণে;

বাক্ প্রাণ থাক্ মান',— দিবানিশি হেন জ্ঞান
হৃদয়-মন্দির-মাঝে প্রতিষ্ঠিত করে',
পরম-সাহস-ভরে কীর্তিধ্বজা ধরে',—

(&)

মনস্বী অগ্রজগণ যে পথে চলিয়া,
হ'য়েছেন বরণীয় স্বদেশ জুড়িয়া;
সেই পথে দৃষ্টি রেখে' চল সবে একে একে,
তোমরাও কীর্ত্তি-দেহে র'বে বর্ত্তমান,
কীর্ত্তিই ছুর্লভ ভবে থাকে যেন জ্ঞান।

(9)

তোমরাও আমা' মত দরিদ্র-সন্তান,
সে নাম ঘুচা'তে সবে হও যত্নবান্;
অবহেলি' তুচ্ছ ধনে প্রাণ-পণে এক মনে
পরিশ্রম করি' হও বিল্লা-ধনবান্,
ভূপালও তোমাদের না হ'বে সমান।

(৮)

সকল গুণের হয় বিনয় ভূষণ,
তাই বলি হও সবে বিনয়ী স্কজন;
তরু থাকে অবিরত ফল-ভরে অবনত,
তোমাদেরি কালিদাস বলেন এ কথা,
করিওনা এ কথার কদাপি অন্যথা।

(&)

তনয়ের শিক্ষা-দান কর্ত্তব্য পিতার,
যাঁহার উপরে থাকে হেন কার্য্য-ভার,
পিতার স্থানীয় তিনি, মনে মনে ইহা মানি'
আচরিবে এইরূপে হ'য়ে সাবধান,
যাহাতে অকুণ্ণ থাকে শিক্ষকের মান।

(>0)

গুরুজনে সেবা-ভক্তি উচিত যেমতি,
নিক্ষেত্র প্রতি স্নেহ বিধেয় তেমতি;
কে না সাধু ব্যবহারে বশ হয় এ সংসারে ?
তাই বলি হও সবে স্নেহার্দ্র-হৃদয়,
তা' হ'লে হ'বেনা কেহ বৈরী বিশ্বময়।

(>>)

বাল্য-সহচর সম কভু ভবিশ্বতে,
পা'বে না প্রাণের বন্ধু আর এ জগতে;

ফুচরিত মিত্র বিনা কা'র' সনে মিশিও না,
শিশুদের শুণ-দোষ করয়ে নির্ভর,
প্রধানত ভাল মন্দ সঙ্গীর উপর।

(>2)

কিবা সথ্য কিবা বৈর তুর্জনের সনে,
দেখিও কর' না যেন ভুলেও স্বপনে ;
অসাধু জনের ঠাই কিছুতে নিঙ্কৃতি নাই,
অঙ্গার দৃফান্ত তা'র, যাহা শীততায়
করে কৃষ্ণ করে, দগ্ধ করে উষ্ণতায়।

(>0)

কটু কথা বলে' ব্যথা কাহার' অন্তরে দিও না, জগতে আদি' ছু'দিনের তরে ;
যে জন আত্মীয়ে পরে সাধু আচরণ করে,
হেন স্থত স্থবিরল সংসার-ভিতরে,
অসাধু কতই জন্মে জননী-জঠরে।

(28)

আত্ম-পরে ভেদ ভূলি' কর বার মাদ
নির্বিশেষে দর্বজীবে করুণা-প্রকাশ ;
দয়া দম গুণ নাই,
তাহার প্রমাণ হের বিশ্ব-বিধাতার
বিবাজে নিথিল জীবে করুণা অপার।

(>0)

করিবে নিঃস্বার্থ-ভাবে পর-উপকার,
অসার সংসারে ইহা সর্ব্য-ধর্ম-সার ;
কেবল যে উপকৃত হ'য়ে থাকে প্রমুদিত
ইহা নহে, কিন্তু সদা উপকারী জন হয় সমধিকতর সন্তোধ-ভাজন।

(36)

অতি নীচাশয় সেই কৃত উপকার
অকপট-চিত্তে যেই না করে স্বীকার ;
কৃতজ্ঞ স্থজন যাঁ'রা তাঁ'রা কিন্তু হ'ন সারা
কেবল অনস্থ-মনে ভেবে' নিশিদিন,
কিসে উপকারকের শুধিবেন ঋণ।

(29)

সত্যই পরম ব্রহ্ম, সত্যের উপর
নির্ভর করিয়া বিশ্ব চলে নিরস্তর;

সত্তব অফুক্ষণ উপার্জিবে সত্য-ধন,
মিথ্যার আশ্রয় করি' কছু এ জগতে,
কোনলোক পারে নাই লাভবান হ'তে।

(>>)

ঈশ্বরের কাছে যদি নিজে ক্ষমা চাও,
তা'হ'লে দোষীর প্রতি তিতিক্ষা দেখাও;
ক্ষমা না করিয়া পরে, তুমি বা সাহস করে?
কোন্ মুখে তাঁ'র কাছে মাগিবে মার্জ্জনা,
সে প্রার্থনা হ'বে মাত্র র্থা বিজ্ফনা।
(১৯)

জীবনে কদাপি ভ্রম না হয় যাহার,
এরূপ সোভাগ্যবান্ লোক মেলা ভার ;
এমন কি মুনিগণ মাঝে মাঝে ভ্রান্ত হন,
এ ভেবে' প্রস্তুত র'বে করিবারে ক্ষমা,
তিতিক্ষা গুণের নাহি সম্ভবে উপমা।

(२०)

ক্ষমা-গুণ তেজস্বীর যেমতি ভূষণ,
সেইরূপ তপস্বীর পরম সাধন ;
ঐশ্বরিক গুণ ক্ষমা এ জগতে অনুপ্মা,
হৃদয়-মন্দিরে যেন থাকে এ ধারণা,
ক্ষমা বিনা কার্য্য-সিদ্ধি অসাধ্য-সাধনা।

(<>)

কুশলে থাকিতে সদা থাকে যদি মন,
করিবে সরল-ভাবে সবে আচরণ;

য়ুঠ অভিসন্ধি করে' যে মূঢ় অন্থের তরে
না বুঝিয়া ধূর্ত্তার ফাঁদ কভু পাতে, অাপনি জড়িত হ'য়ে পড়ে গিয়া তা'তে।

(२२)

অলসতা সমুদয় দোষের আকর,
আলস্থের পরিহার করিবে সম্বর;
যে মানব এ জগতে চায় পূর্ণকাম হ'তে,
তাহার উচিত করা সবিশেষ শ্রম,
শ্রম বিনা সিদ্ধি-লাভ আশা করা ভ্রম।

(२७)

সমূদায় কাজে যা'র হুদে জেদ থাকে, কে পারে উন্নতি-পথে বাধা দিতে তা'কে ? বিবীর এ ভব-হাটে, কিছুতেই নাহি হুটে' জীবন সঙ্গ্রাম হ'তে বিমুখ না হয়, জয়-লক্ষ্মী তাহারেই করয়ে আঞ্রয়।

(28)

কাপুরুষগণ করে দৈবের উপর
সাংসারিক সব কাব্রে সদাই নির্ভর;
মানব-সমাজ-মাবে পৌরুষ ব্যতীত কাজে,
পূর্ণ-মনোরথ হ'য়া একাস্ত কঠিন,
তা'দের বিষ্টু চিত্ত এ জ্ঞান-বিহীন।

(२৫) .

লভিতে বিমল শাস্তি চাও যদি মনে,
কামাদি ছুর্জয় রিপু রাখিবে শাসনে;
বিনা ইন্দ্রিয়ের জয় সর্বাঙ্গীণ অভ্যুদ্য

লাভ করা এ সংসারে বড়ই কঠিন, রাখিবে এ উপদেশ হূদে চিরদিন।

(२७)

ভোগ-তৃষা একবারে করিবে বর্জ্জন, বাসনা-অনলে দগ্ধ মানব-জীবন ;

অমুদিন নব নব বাসনা-অঙ্গুরোন্ত্র

হৃদয়-বিপিন-মাঝে হয় কত শত, তাহাতে প্রঞায়-দান না হয় সঙ্গত।

(२१)

এরপ অকার্য্য কিছু নাই এ সংসারে,
ক্রোধান্ধ মানব যাহা করিতে না পারে;
যে হয় কোপের বশ না মানে সে অপযশ,
নর-হত্যা তা'র কাছে অতীব স্থকর,
সে জন নাহিক গণে কভু আত্ম-পর।

(২৮)

যে থাকে সৌভাগ্যে মেতে' গরবের ভরে,
মনের সহিত তা'রে কে না ঘ্ণা করে ?
আনন্দ-বিষাদে ভরা এ স্থন্দর বস্থারা
পরীক্ষার স্থান, নহে গরবের স্থান,
যেথা কা'র' চিরদিন না যায় সমান।

(₹%)

প্রকৃত মহান্ যাঁ'রা তাঁহাদের মন,

অবস্থার দাস নাহি হয় কদাচন;

অবস্থার কাহি হ'ন আত্ম-হারা,

উদয়ান্তে তুল্যরূপ লোহিত-বরণ,

সর্বোপরি দিনকর তা'র নিদর্শন।

(%)

পরিবর্ত্তময় এই অস্থির জগৎ,
সকলি কালের বশ ক্ষুদ্র কি মহৎ;
সমভাবে বিশ্বময় কিবা চিরদিন রয় গ
মনোমধ্যে ইহা ভাবি' কভু জ্ঞানী জন,
কি সম্পদে কি বিপদে অধীর না হ'ন।

(%)

লোভ ছেড়ে' পান কর সন্তোধ-অমৃত, সকল দশায় হ'বে তা' হ'লে স্থবিত ; বিধাতা দেবেন যাহা স্থাপে র'বে ল'য়ে তাহা, লোভ-বশে বিশ্বময় কর'না ভ্রমণ, লোভে পাপ পাপে মৃত্যু শাস্ত্রের বচন।

(७२)

লুক্ক হ'য়ে করে যেই পরস্ব-হরণ,
কে তা'রে ঘৃণার চক্ষে না করে দর্শন ;
হেন জন কে বা আছে, তক্ষর আসিলে কাছে,
দূর দূর করে' যেই না তা'রে তাড়ায় ?
বিশ্ব জুড়ে' ঠাই নাই যেথা সে জুড়ায়।

(00)

পর-শ্রী-কাতর কভু হ'ও না জীবনে,

যাচিবে বিশ্বের হিত সদা এক মনে ;

পরানিষ্ট যেই জন চিস্তা করে অনুক্ষণ,

তাহারি কপালে হয় অনিষ্ট-ঘটন,

সাধনা যেমন, হয় সিদ্ধিও তেমন।

(98)

যাহাতে বিপৎপাত নাহি হ'তে পায়, অবহিত-চিত্তে হেন করিবে উপায় ; বিপদ্ ঘটে'ছে দেখে' সে সময়ে ধৈর্য্য রেখে' প্রতীকার চিন্তা করা উচিত সবার, বিপদ্-সাগরে ধৈর্য্য এক কর্ণধার।

(00)

মনে মনে না বিচারি' কভু কালাকাল,
'ধর্মার্চ্জনে স্বতন হ'বে সদাকাল;
নত্বা ঠকিবে শেষে, যুখন ধরিবে কেশে
ছরম্ভ কৃতান্ত, যা'র নাই কালাকাল,
শিয়রে দাঁড়া'য়ে যেই আছে হামেহাল।

(৩৬)

মানবের ধর্ম্ম-সম বন্ধু নাই আর,
দেহান্তে যে করে' দেয় ভব-নদী-পার;
যথন ছাড়িবে দেহ, সঙ্গে নাহি যা'বে কেহ,
আত্ম-জন হার হার ছু'দিন করিয়া,
চিরদিন তরে শেষে যাইবে ভুলিয়া।

(৩৭)

অতএব এই বেলা ধর্মারূপ ধন
অনলদ হ'য়ে দদা করিবে অর্জন;
চির-অমুগামী হেন মিত্র আর নাই জেন'
অসহায় মানবের অনিত্য সংসারে,
ধর্মাই কাগুারী এক ভব-নদী-পারে।
(৩৮)

আহার-নিদ্রার বশ হয় পশুগণ,
তাহে তৃপ্ত নাহি হয় মাকুষের মন ;
নর-ছদে ধর্মা-জান- লাভাগ্রহ বলবান,
ধর্মার্জন-ক্ষুধা আর জ্ঞানের পিপাসা,
না মিটিলে মানবের র্থা হুখ-আশা।

(৩৯)

ভারতের রাজ-ভক্তি ভুবন-বিদিত, যেথা দেব-বোধে হয় নৃপতি পূজিত ; অরাজক জনপদে দোষ ঘটে পদে পদে, তুফের দমন বিনা শিষ্টের পালন অসম্ভব, সদা ইহা করিবে স্মরণ।

(80)

ছাত্রগণ! সমাজের দৃষ্টি নিরন্তর রহিয়াছে তোমাদের সবার উপর; দদা ইহা মনে রেখে' কভু না আলস্থে থেকে' অহার্য্য অনর্ঘ আর অক্ষয় রতন বিস্তা-ধন উপার্জিবে হ'য়ে স্যতন।

(83)

জননী জনম-ভূমি আত্মীয় স্বজনে,

সদাই করেন হেন আশা মনে মনে;

ক্রমে বয়োর্দ্ধি সনে

জান-রত্ন লভি' আর হ'য়ে গুণবান্,

করিবে মোদের স্বধী যুবক সন্তান।

(82)

দেখিও সে আশা যেন হয় হে সফল, সন্তান-কামনা যেন না হয় বিফল ; সে স্ততে কি প্রয়োজন ? যা'রে লভি' আত্ম-জন ্সমাজে দেখা'তে মুখ সদা লজ্জা পায়, সর্বাংশে প্রশস্ত তা'র না আসা ধরায়।

(89)

ছুথের কাহিনী মম করি সমাপন,
শেষ কথা বলে' এবে প্রিয় ছাত্রগণ !
তোমরা আমার তরে র্থা ছুখ নাহি করে'
মম উপদেশ মত কর' আচরণ,
তাহাই ভাবিব গুরু-ভক্তির লক্ষণ।

(88)

গরলে অমৃত করে অমৃতে গরল,
ইচ্ছাময় বিনা হেন আছে কা'র বল ?
পরম-মঙ্গলালয় ঈশ্বরের রাজ্যম্য
নিথিল প্রজার যাহে ঘটিবে কল্যাণ,

সর্বত্র বিরাজে হেন শৃঙ্খলা-বিধান।

(80)

হয় ত অজ্ঞান নর ইফ যা'রে গণে,
অহিত তা' জ্ঞানময় বিভুর নয়নে;
তাই অন্তে ছথ-কর আপাতত মনোহর
এমন বস্তুর তরে চিন্তাশীল নর,
প্রাকৃত জনের মত না হন কাতর।

(8%)

বার্দ্ধকে উচিত হয় করম-বন্ধন
ক্রমশ ছেদন করি' স্থপথ-চিন্তন;
তাই আর্য্য ঋষিগণ হ'য়ে অতি স্যতন
চরমে বিধান দেন অরণ্য-গমন,
বিদায়-গ্রহণ নহে ছুখের কারণ।

(89)

শান্তি-মার্গে স্পৃহাবতী যে জনার মতি, পংসার-বিরতি তা'র আবশুক অতি ; শংসারিক ভালবাসা না গেলে শান্তির আশা কদাপি উপায়ান্তরে সম্ভব না হয়, সে উপায় চিন্তিবার জরাই সময়।

(81-)

পরিবর্ত্তময় এই অনিত্য জগৎ,
কিছু স্থির নহে হেথা ক্ষুদ্র কি মহৎ ;
হেথা ছাদ রৃদ্ধি নাশ বিশ্ব জুড়ে' বার মাদ
পল অণুপলে ঘটে বিধির বিধানে,
চির দিন কা'র' ভাগ্যে না যায় দমানে।

(&8)

অত এব না হইয়া ক্ষুণ্ণ মনে মনে,
আপন কর্ত্তব্য সবে সাধিবে যতনে;
পরম-মঙ্গল-সেতু এ নহে তুখের হেতু,
এ ভেবে' চলিমু গৃহে বিশদ-অন্তরে,
প্রাণের সহিত সবে আশীর্কাদ করে'।





উপদংহার

()

শীযুত অধ্যক্ষ আর শিক্ষক-নিচয় !
নিবেদি সবার কাছে হ'য়ে সবিনয় ;
यদি কোন' আচরণে কোন' দিন কা'র' মনে
উৎপাদন করে' থাকি বিরাগ-কারণ,
এক্ষণে যেন তা' কা'র' না থাকে সারণ।

একমত হ'য়ে সবে প্রশংসে যাহারে,

•হেন লোক স্থবিরল নিখিল সংসারে;

একবারে দোষ-হীন লোক মেলা স্থকঠিন,

মাদৃশ ন-গণ্য ছার অতি মূঢ়-মতি,

নির্দোষ যে হ'বে ইহা অসম্ভব অতি।

(9)

তাই এ সবার কাছে মিনতি-বচন,

যেন না দীনের ক্রটি করেন গ্রহণ;

হেরিলে অন্সের দোষ, স্থজন না করি' রোষ, নিজ উদারতা-গুণে ক্ষমেন তাহারে.

'চির দিন হেন রীতি চলিছে সংসারে।

উদ্দেশে প্রণমি অগ্রে প্রীগুরু-চরণে,

সমাদর-পুরঃসর ডাকি বন্ধুগণে;

এদ সব ভাতৃগণ! প্রাণভরে' আলিঙ্গন

করিয়া অধুনা করি বিদায়-গ্রহণ,

মনে রেখ' এ দীনের এই নিবেদন।

বহু কাল এক সঙ্গে ছিলাম যথন,

কত দোষ করিয়াছি করিবে মার্জন:

কোন' দিন এ জীবনে. হয়ত কাহার' দনে

হ'তে পারে দেখা, কিংবা জনম-মতন,

বন্ধুগণ! আজি এই শেষ দরশন।

শিবমন্ত।



ক্রোড়পত্র।

- (১) বাল্য-বন্ধগণের মধ্যে পণ্ডিতপ্রবর শ্রীযুক্ত বাবু শিবনাথ ারী এম্ এ. শ্রীযুক্ত বাবু গোলাপচন্দ্র শাস্ত্রী এম্. এ. শ্রীযুক্ত ার ক্ষীরোদচন্দ্র সিংহ এম্. এ. শ্রীযুক্ত বাবু ভারাকুমার বিরহ্ন, শ্রীযুক্ত বাবু ব্রজনাথ দে, শ্রীযুক্ত বাবু অনাথ নাথ াব, প্রভৃতি কতিপন্ন মহাত্মা অদ্য পর্যন্ত বর্ত্তমান আছেন।
- (3) "So far as the etymological investigations of Example Sanskrit have hitherto afforded satisfactory sults, it may certainly be considered as the parent took of all the known languages."—Mr. Hammer.

"The world does not now contain annals of nore indisputable antiquity than those delivered own by the ancient Brahmans."—Mr. Halhed.

(৩) ১৮২০ খৃ: অব্দের ২৬এ সেপ্টেম্বর বীরসিংহ গ্রামে । । ১৮২৯ খৃ: অব্দে ইনি । ১৮২৯ খৃ: অব্দে ইনি । ১৮২৬ খৃ: অব্দে ইনি দার-পরিগ্রহ । ১৮৪১ খৃ: অব্দে সংস্কৃত কলেজের পাঠ শেষ করিয়া , দার্ট উইলিরম কলেজে প্রধান পণ্ডিতের পদে নিযুক্ত হন।

১৮৪৬ খৃ: অব্দে বেতালপঞ্বিংশতি মুদ্রিত করেন, এবং ১ অব্দেই সংস্কৃত কলেজের সহকারী সম্পাদকের পদ প্রাপ্ত इत्। ১৮৪৯ খৃঃ অবেদ ইনি ফোর্ট উইলিয়ম কলেজের প্রধান কেরানঃ পদে নিযুক্ত হন। এই সময়ে জীবন-চরিত ও বোধোদয় গ্রা প্রকাশিত হয়। ১৮৫০ খঃ অসে ইনি সংস্কৃত কলেছে অধ্যাপক নিযুক্ত হন, এবং ১৮৫১ খৃঃ অন্দে অধ্যক্ষের পদ প্রাপ্ত হন। এই সময়ে উপক্রমণিকা ও কৌমুদীর প্রথম ভাগ এর এক বৎদর পরে কৌমুদীর ২য়, ৩য় ভাগ প্রকাশিত হয়। ১৮৫8 थः अत्य वाकाला मकुखना त्नत्थन, এवः विधवा-विवाहत প্রথম পুস্তক প্রচার করেন। ১৮৫৫ খু: আবেদ ২য় ভাগ প্রকাশিত হয়। ১৮৫৬ খৃঃ অন্দে গবর্ণমেণ্ট ইহাঁর প্রার্থনাত্নায়ে বিধবা-বিবাহ-বিষয়ক ১৫ আইন প্রবর্ত্তিত করেন। ১৮৫৬ গ্র अरम श्रीमहत्त्व विमातिक व्यथम विधवी-विवाह करतन । ১৮৫৫ हा **जरक** हैनि छशनी, वर्कमान, स्मिनिनेश्वत এवः निनीया (कनाः ইনম্পেক্টরের পদ প্রাপ্ত হন। ইহার পর বর্ণপরিচয় ১ম ६ ২য় ভাগ, কথামালা এবং চরিতাবলী প্রচারিত হয়। ১৮৫৭ 🕫 चारक होने कृषिकां जा विश्व-विषाधनात्रत्र मुप्तमा नियुक्त हन विश তৎপরবৎসর গবর্ণমেন্টের কর্ম ত্যাগ করেন। ইহার ^{প্} रकोमूमोत्र 8र्थ ভाগ ও **সী**তার বনবাস मूखिङ कर्त्रन ১৮৬০ খু: অংকে আখ্যানমঞ্জরী ১ম ভাগ ও হুই তিন বংগ পরে হয় ভাগ প্রচারিত হয়। ১৮৬৮ খৃঃ অবেদ মেণ্ডে টীকা মুশ্রিত করেন। ইহার পর ভ্রান্তিবিলাস, দটীক উত্তরচরি^ছ ও শক্ষলা প্রকাশিত হয়। ১৮৭১ খৃ: অন্দে কুলীন-কন্তাদিগে

ছাথে ছাথিত হইরা বছবিবাহ নামক গ্রন্থ প্রচার করেন।
আনেক পণ্ডিত ইহার বিরুদ্ধে লেখনী ধারণ করার ইনি তাঁহাদের
মত খণ্ডনার্থ ইহার ২য় ভাগ প্রচার করিতে নাধ্য হন। ইনি
নিজ গ্রামে একটা বিদ্যালয় ও দাতব্য চিকিৎসালর প্রতিষ্ঠা
করিয়াছেন। কিন্ত ইহার প্রধান কীর্ত্তি ৩টা শাখার সহিত
মেট্রোপলিটন বিদ্যালয়। ১৮৯১ খৃঃ অব্দের ২৮এ জুনুটে ইনি
ক্রিকাতা মহানগরীতে মানব-লীলা সংবরণ করেন।

দর্প, বীর্য্য, পাস্তীর্য্য, বিনয়, ভক্তি, স্নেহ, দয়া, নির্ভীকতা,
মদম্য উৎসাহ, অবিচলিত অধাবদায়, বাধীন-চিত্ততা প্রভৃতি
মহাপুরুষের যে কিছু লক্ষণ, সে সকলই ইহাঁতে ছিল। এ দেশে
মাধান-কুদ্ধ-বনিতা দয়ার সাগর বিদ্যাদাগরের বিষয় অবগত

মাছেন। অবিতীয়গামী বিদ্যাদাগর এই উপাধিই অনাম-থ্যাত
এই মহান্মার পর্যাপ্ত পরিচায়ক।

(৪) হগলি জেলার অন্তঃপাতী খানাকুল ক্ষ্ণনগরের সন্নিহিত রাধানগর নামক গ্রামে ১৮২৫ খৃঃ অব্দে মহান্তা প্রসন্নকুমার দ্বাধিকারীর জন্ম হয়। ১৪শ বংসর বর্যক্রম কালে ইনি বিভাধ্যয়নার্থ কলিকাতা হিন্দুকলেজে প্রবিষ্ট হন। কি সাহিত্য, কি গণিত, কি পদার্থ বিষ্ণা, কি প্রার্ত্ত, সর্ব্ব শান্তেই ইহার দ্বারূপ অধিকার ছিল। ইনি লাইবেরি পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইরা নিশ্য যশস্বী হন। ইহার পারদী ভাষার জ্ঞান ছিল। ইনি বিশ্ব বন্ধ ঈশ্রচক্র বিষ্ণাসাগরের নিকট সংস্কৃত ভাষা শিক্ষা দ্বিয়াছিলেন। সর্ব্ব প্রথম পাটীগণিত প্রণয়ন করাতে ইহাকে দ্বিত-শান্তের পারিভাষিক শব্দ উত্তাবন করিতে হইরাছিল।

देनि निक वाद्य च्यास विद्यानम् दाशन कद्यन, ध्वर क निक्ष वानात्कत (वजन निक इहेटज निज्जन। हेनि क्रमाहाः ঢাকা-কলেজ, ছিন্দু-কলেজ ও সংস্কৃত-কলেজে শিক্ষকত। করেন। বি. এ. ক্লাস খুলিবার কিছু দিন পূর্ব্বে ইনি সংস্কৃত কলেছে? অধ্যক্ষ নিযুক্ত হন। ইনি অতিশয় তেজস্বী লোক ছিলেন। ইহার অসম্বতি ক্রমে সংস্কৃত কলেজের লাইত্রেরি নিম্নতন্যে পুত্ত নামাইয়া দিবার প্রস্তাব হওয়াতে ইনি পদ পরিত্যাগ করেন। পশ্চাৎ উর্দ্ধতন কর্মচারিগণ আপনাদিগের ভ্রম সদয়স্ম ক্রিয়া ইহাঁকে পুনরায় স্বপদে নিযুক্ত করেন। মহাত্মা এইচ, উত্তো সাহেব ইহার পুন: সংস্থাপন বিষয়ে প্রধান উলোগী ছিলেন। কিছু দিন বহরম. কলেজের অধ্যক্ষতা, ইন্পেইয়ে কার্যা এবং প্রেসিডেন্সি-কলেজে ইংরাজী দাহিতোর অধ্যাপকল করিয়া পেন্দন্ গ্রহশানস্তর ১৮৮৭ খুঃ অকের এই নভেয় প্রলোক গমন করেন। ইনি আমাদের প্রম-ভক্তি-ভাক অধ্যাপক ছিলেন। ইনি যেরপ দক্ষতার সহিত মহাক্ষি মিল্টনের 'পারা ডাইস্ লষ্ট' নামক পত্ত কাব্য এবং সেক্ষপির্রে क जिल्य नांठेक मिक्ना पित्राहित्यन. এ कीवतन कनांशि विश्व হইতে পারিব না।

(e) জেলা বর্দ্ধমানের অন্তর্গত থানা রায়নার দক্ষিণ শাব রাঢ়া (শাক-নাড়া) প্রামে ১৮০৬ খৃঃ অকে পূজ্যপাদ প্রেমচর ভর্কবাগীশের জন্ম হয়। সংস্কৃত কলেজের তদানীস্তন অধ্যব উইল্সন্ সাহেব ইংগার মন্তক-দর্শনে বৃদ্ধিমান্-বোধে লোগ রচনা করিতে বলায়, ইনি এক লোকে কলেজের ও তিন লোগে সাহেবের বর্ণনা করের। ৪ বংসর সমরের মধ্যে ইনি কাব্য, জনরার ও স্থৃতি পড়িয়া ভার-শাত্র পড়িতে আরম্ভ করেন।

১৮০১ খৃঃ অব্দে অবস্থার শাস্ত্রের অধ্যাপক নাথ্রাম শাস্ত্রী ৬ মাদের অবকাশ লইয়া কাশীবাদ করাতে গুণগ্রাহী উইল্সন গাহেব প্রেমচক্রকে প্রতিনিধি-অধ্যাপক নিযুক্ত করেন। পর বংসর নাথুরামের মৃত্যু হওয়াতে ইনি উক্তপদে স্থাুরী-ভাবে নিষ্কু হন। অধ্যাপক হইবার পরেও ইনি সায়ং প্রাতে নিম্চাদ শিরোমণি, হরনাথ তর্কভূষণ, শস্কুনাথ বাচম্পতির নিকট স্থায়. শুতি, বেদাস্ত আদি পড়িতেন। বাল্যকাল হইতেই ইনি বাঙ্গালা ভাষার উন্নতি-সাধনে যত্নবান ছিলেন। কলেজে প্রবিষ্ট হইবার ২। ০ বংদর মধ্যে ৰঙ্গ-কবি ঈশ্বরচন্দ্র প্রপ্রের সহিত বন্ধুস্থ ^{১ওয়ার} ইনি 'সংবাদ প্রভাকর' সমাচার পত্রের প্রচারে সহায়তা क्रिट्टन। প्रतिभारम हेनि वाक्राला-त्रहनाग्र त्वथनी मःयङ ক্রিয়া সংস্কৃত রচনার দিকে দৃষ্টি নিক্ষেপ করেন। ইনি শকুস্তলা, উত্তর-রামচরিত, অনর্ঘ-রাঘব, রাঘব-পাগুবীয়, পূর্ব্ব-নৈষধ, কাব্যাদর্শ, চাটুপুপাঞ্জলি, মুকুল-মুক্তাবলী, দপ্তশতী প্রভৃতি খনেকগুলি প্রস্থের টীকা করিয়া মুদ্রিত ও প্রচারিত করেন। ^{ক্তক}গুলি নৃতন গ্রন্থ ও লিখিতে আরম্ভ করেন, কিন্তু চুর্ভাগ্য-^{ক্রমে} দেওঁলি পরিসমাপ্ত হয় নাই। ইনি ১৮৬৪ খৃ: অবেদ পেন্সন্ ^{नहेड़ा} ८ **व**९मत कानीक्षात्म ख्वानाञ्चनीनन, त्यांश-माक्षन, मार्थुडारवत ^{টকীপন}, বি**ন্তা-বিতরণাদি কার্যো ব্যাপৃত থাকি**য়া ১৮৬৭ খৃঃ ^{মনে} ২৫এ এপ্রেল ওলাউঠা রোগে আক্রান্ত হইয়া মণিকর্ণিকার ^{পটে পার্থিব দেহ পরিত্যাগ পূর্বক মুক্তিলাভ করেন। প্রেমচক্ত}

বোগ-বেতা ছিলেন এবং কুস্তক করিতে করিতে অনেক সময়ে ভ্তল হইতে উর্দ্ধে উঠিতেন। ইনি কীদৃশী কবিদ্ধান্ত লইয় পৃথিবীতে অবজীগ হইরাছিলেন ইহাঁর প্রতি কবিতার তাহার পরিচর পাওয়া যার। স্বর্গীর স্থার রাজা রাধাকান্ত দেব, মহাল্বা উইল্সন্, প্রিলেপ্ ও শ্রীযুক্ত কাউএল সাহেব ইহাঁকে যথেই সম্মান ক্রিতেন। অনেক লব্ধ-প্রতিষ্ঠ ব্যক্তি এই মহাপুক্রের ছাত্র ছিল। তন্মধ্যে স্বর্গীর ঈশ্বচন্দ্র বিস্থানাগর, মদনমাহন তর্কালকার, দ্বারকানাথ বিস্থাভ্যণ, রামনারায়ণ তর্করের, মৃক্রায় বিস্থাবাগীশ, রাম কমল ভট্টাচার্য্য, শ্রীযুক্ত গিরিশচন্দ্র বিস্থারর ও মহামহোপাধ্যার শ্রীযুক্ত মহেশচন্দ্র স্থাররত্ন সি, আই, ই, সমধিক উল্লেখ-যোগা।

(৬) কলিকাতার দক্ষিণ, চবিবশ পরর্গার অন্তর্গত মুরাদিপ্র প্রামে ২২১১ সালে পৃজ্ঞাপাদ জয়নারায়ণ তর্কপঞ্চাননের জয় হয় । ১৮৪০ খৃঃ অব্দে কলিকাতা সংস্কৃত কলেজে দর্শনশায়ের অধ্যাপক নিমাইটাদ শিরোমণির মৃত্যু হওয়াতে ইনি উক্তপদে নিযুক্ত হন । ১৮৬৯ খৃঃ অব্দে ইনি পেন্সন্ গ্রহণ পূর্বাক কাশীধামে যাত্রা করেন । ইনি বেমন স্প্রসিদ্ধ দার্শনিক, তেমনি স্কৃকবি ছিলেন । 'ভৈরব পঞ্চাশিকা,' 'চামুগুাশতক', 'তারকেশ্বরন্তব' নামক গ্রন্থে ইহার অসাধারণ কবিত্ব-শক্তির বিলক্ষণ পরিচয় পাওয়া যায় । এডজ্রিয় ইনি 'কণাদ-হক্ত বিবৃত্তি' নামে এক থানি বৈশেষিক দর্শনের টীকা ও 'পদার্থ-ভত্তদার' নামক স্থায়গ্রন্থ প্রচারিত করেন । এতরাতীর ইনি 'পঞ্চদশ দর্শন' ও 'শঙ্কর দর্শনের' স্কুল মর্য্য ব্দ

ভাষায় সকলিত করিয়া 'সক্রদর্শন সংগ্রহ' নামক পুস্তক প্রচারিত করেন। এই গ্রন্থ এরূপ বিশদভাবে লিখিত যে. সংস্কৃতানভিজ্ঞ ব্যক্তিরাও বঙ্গভাষায় অনুদিত উক্ত দর্শন গ্রন্থ দুমুহের তাৎপ্র্যাত্তে সমর্থ হইয়া তর্কপ্ঞানন মহাশ্রের ভ্যদী প্রশংসা করিয়া থাকেন। ইনি অতিশয় বিনয়ী, অমায়িক ও অসামান্ত-গুণ-সম্পন্ন ছিলেন। এক সময়ে সংস্কৃত কুলেজের গুণগ্ৰাহী অধ্যক্ষ কাপ্তেন মার্শেল ও মহামতি ই. বি. কাউএল নাংহৰ ইহাঁকে যার-পর-নাই ভক্তি করিতেন। ইনি ১২৮০ বাবে কাশীলাভ করেন। ইহাঁর ছাত্র-মণ্ডলীর মধ্যে অনেকেই এ দেশে বিলক্ষণ প্রতিপত্তি লাভ করিয়াছেন। ইহাঁর কলেজের চাত্রমধ্যে পণ্ডিত-প্রবর ঈশ্বরচক্র বিস্থাদাগর, তারাশঙ্কর তর্করত্র বামকমল ভট্টাচার্য্য প্রীযুক্ত বাবু নীলমণি স্থায়ালঙ্কার এম. এ. গ্ৰীয়ক বাবুক্লফকমল ভটাচাৰ্যা এম. এ. শ্ৰীযুক্ত ৰাবু নীলাম্বর श्याभाषाम वम. व. वदः हजूष्णांत्रेत हाजनिरगत मर्पा ন্থান্থোপাধ্যায় রাথাল দাস ভায়রত্ব ও মহামহোপাধ্যায় প্রীযুক্ত মংমাচক্র সায়রত্ব সি. আই. ই. এদেশে সমধিক লব্ব প্রতিষ্ঠ।

(৭) চবিবেশ পরগণার অন্ত:পাতী কলিকাতার দক্ষিণ নাদলবেড়ে নামক গ্রামে পূজ্যপাদ ভরতচন্দ্র শিরোমণি জন্মগ্রহণ করেন। বাল্যকালে চতুম্পাঠীতে তৎপরে সংস্কৃত কলেজে মধ্যন করিয়া ল-কমিটির পণ্ডিত ও জজ-পণ্ডিত হন। ইহার পর বহুকাল সংস্কৃত-কলেজে স্কৃতি-শাল্তের অধ্যাপকতা করিয়া কাাছেল সাহেবের রাজন্ধ-কালে পেন্সন্ গ্রহণ করেন। ১২৮৫ সালে ২২এ অগ্রহারণ ইনি ৭০। ৭৫ বংসর বয়াজ্রুমকালে জ্ব

বোগে মানব-লালা সংবরণ করেন। স্থতিলাস্তে ইহার প্রগা
বিদ্যা ছিল। ইনি ধর্মণাস্তের ব্যবস্থা বিষয়ে প্রমাণ-স্থল হইল
উঠিয়া ছিলেন। কাব্য ব্যাকরণ অলমারাদি শাস্তেও ইইল
বিলক্ষণ বাৎপত্তি ছিল। এই অদিতীয় সার্ত্ত শিবোমণি মহাশয়ে
সম্রমের পরিদীমা ছিল না। এমন কি একপত্তী ছিলেন বলিনে
অভ্যক্তি-হয় না। ইহার আক্রতি বেরপ স্থলর প্রকৃতিও তরণ
উত্তম ছিল। ইনি সরল, অমায়িক ও মিইভাষী ছিলেন, এবং
বিকের একজন প্রাত্তেরেবার স্পপ্তিত। হিন্দুসমাজ ইঠায়
নিকট বহু বিষয়ে ঋণী। ইনি দত্তকমীমাংসা ও দত্তক চল্রিকার
টীকা, দত্তক শিরোমণি, বিষ্ণাদি শতক, ময়ুসংহিতার বাঙ্গালার্ফ্রবার বাবে ও থানি টীকার
সহিত দায়ভাগ গ্রন্থের একটী অতি উৎকৃষ্ট সংস্করণ করেন।

(৮) ১৮১২ খৃ: অব্দে পুজাপাদ তারানাথ তর্কবাচন্দানি কালনায় জন্মগ্রহণ করেন। ১৮৩০ খৃ: অব্দে সংস্কৃত কলেজে তৎকালীন অধ্যক্ষ বাবুরামকল সেন ইহাঁকে সস্কৃত কলেজে অলকার শ্রেণীতে প্রবিষ্ট করিয়া দেন। ইনি আজীবন কলাদি বুথা কালহরণ করিতেন না, স্কৃত্রবাং অলকার অধ্যয়নাত্তে কার বেদান্ত ও জ্যোতিষ শাস্ত্র শিক্ষা করিতেন। মহান্মা ক্রুরগোগা তর্কালকার, নাথুরাম শাস্ত্রী ও যোগধ্যান মিশ্র যথাক্রমে তৎকাল সংস্কৃত-বিদ্যা-মন্দিরে পূর্ব্বোক্ত শাস্ত্র-ত্রেরের অধ্যাপক ছিলেন ১৮৩১ খৃ: অব্দে ইনি স্তার্থের শ্রেণীতে তৎকালীন বঙ্গাণেশ ক্রেরন। ১৮৩৫ খৃ: অব্দের ১৫ই ভাতুরারি কলেজ পরিগ্রাণ

हाति है हैनि उर्कवाहम्माज डेशिथि खाश्च हन। हैहात खान्न ভন চারি বৎসর পরে ইনি ৮ কাশীধামে গিয়া এক পরমহংসের নকট স্থায়শাস্ত্রের মধ্যে অতি চুরাহ আহর্ষকৃত থণ্ডন-থণ্ড-াদ্য নামক গ্রন্থ অধ্যয়ন করেন। অধ্যাপনাম্ভে ঐ পর্ম-াদ "তুমি দর্শশাস্ত্রে অপ্রতিহত-বৃদ্ধি হইবে"—এই বলিয়া টাকে আশীর্কাদ করেন। কাশীতে অবস্থান সময়ে ইনি অন্তান্ত াণ্ডিতের নিকট পাণিনীয় ব্যাকরণ, সভাষ্য বেদ বেদাস্ত, সাঙ্খা, গাতঞ্জল, মীমাংসা, দর্শন, গণিত ও ফলিত জ্যোতিষের নানা প্রস্থ মধায়ন করেন। ইনি স্বাধীন-চেতা পুরুষ ছিলেন। কাজেই १०३-ভাবে জীবন-যাতা নির্বাহের জন্ম নানা ব্যবসায়ে লিপ্ত াকিতেন। বস্ত্র, শাল, কাষ্ঠ, চাউল প্রভৃতি এরূপ ব্যবসায় गरे गराटक रेनि रखल्का ना कतिशाह्न। ১৮৪৫ थृ: अटक গণীয় মহাত্মা ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর মহাশয়ের অফুরোধে ইনি ''য়ত কলেজে অধ্যাপনা-কার্যো প্রবৃত্ত হন। ১৮৬২ খু: অকে টন বাৰসায় নিৰন্ধন প্ৰায় লক্ষ্ণ টাকা ঋণগ্ৰস্ত হওয়াতে সংস্কৃত ক্লেজের তৎকালীন স্থযোগ্য অধ্যক্ষ মহামতি কাউএল সাহেবের গ্রামর্শে তর্কবাচম্পতি মহাশয় তাৎকালিক হস্ত-লিখিত বছ গাচীন স্বভরাং চম্প্রাপ্য সংস্কৃত ব্যাকরণ, সাহিত্য, অনন্ধার, ্তি, ভার, বেদ, বেদাস্ত, সাঙ্খ্য, পাতঞ্জল, মীমাংসা, উপনিধদ গ্রন্থতি অসংখ্য ও অশেষবিধ গ্রন্থ বৃত্তি-সহ মুদ্রিত করিয়া জগতের ^{বিস্তর} হিত-সাধন করিয়াছেন। ইহাঁর মত স্মরণ-শক্তি প্রায় অন্ত कारात ७ (नथा यात्र ना। श्रीयुक का छे वल मारहत देहाँ रिक यथन ^{বাহা} জিজ্ঞাসা করিতেন, তাহারই সত্তর পাওয়াতে ইহাঁকে

ভক্তিপূর্ব্বক "এন্দাইক্লোপীডিয়া অভ্ শংস্কৃত লার্ণি" – এই আখা।
প্রদান করেন। ১৮৭৪ খৃঃ অন্দের ১লা জামুয়ারি ইনি পেন্দন্
গ্রহণ পূর্ব্বক সংস্কৃত কলেজ হইতে অবসর গ্রহণ করেন।
বাচম্পতি মহাশয় সাতিশয় ধর্মনিষ্ঠ এবং হিন্দুশাক্তামুমোদির
কার্য্য-কলাপে শ্রদ্ধাবান্ ছিলেন। ইনি হবিবাাশী ছিলেন। সংগ্রে
পাক করিয়া আহার করিতেন এবং পিতৃশ্রাদ্ধোপলক্ষে রাদ্ধা পণ্ডিতগণকে স্বয়ং বিবিধ প্রকার মিষ্টার প্রস্তুত করিয়া আহার
করাইতেন। পাক-করণে ইছার স্বিশেষ দক্ষতা ছিল। ইনি
১৮৭০ খৃঃ অন্দ হইতে ১৮৮৪ গৃঃ অন্দ পর্যান্ত এই অষ্টাদশ র্বা নিরস্তর অসামান্ত পরিশ্রম করিয়া নিজ অন্বিত্তীয় কীর্ত্তি-গৃষ্
বাচম্পত্যাভিধান প্রস্তুত করেন। ১৮৮৫ খৃঃ অন্দের ফাল্পনার্দ্ধন ধারান্দ্রীধানে যাত্রা করিয়া ঐ বংসর ৭ই আবাঢ় পার্থিব দেহ বিস্ক্রন পূর্ব্বক মৃক্তিলাভ করেন।

(৯) চবিবশ পরগণার অন্তঃপাতী চাংড়িপোতা গ্রামে ১৭৪০ শকে পূজাপাদ ঘারকানাথ বিদ্যাভ্ষণ জন্মগ্রহণ করেন। ১০ বংসর বরুসের সময় ইনি সংস্কৃত কলেজে ভর্ত্তি হন। পূর্বে পিতার নিকট ব্যাকরণ পড়িয়া ১১।১২ বংসর ইনি সংস্কৃত কলেজে সাহিত্য, অলস্কার, শ্বৃতি, জ্যোতিষ, ত্যায় ও বেদাস্ত, অধার্ফ করিয়া কলেজ পরিত্যাগ পূর্বক ফোর্ট উইলিয়ম কলেজে সিবিং সার্কেট পড়াইতে আরম্ভ করেন। ইংরাজী ভাষার ইইটি বিলক্ষণ অধিকার ছিল। তংপরে সংস্কৃত কলেজের ২য় ব্যাকরণা ধ্যাপকের পদে নিযুক্ত হন। ইনি ক্রমাগত ৩৭ বংসর সংকৃত্তি করেন

টনি সাতিশয় পরিশ্রমী, অধ্যবসায়ী, দৃঢ়প্রতিজ্ঞ, সত্যনিষ্ঠ, তেজমী ও নিতব্যনী ছিলেন। ইনি নিজ ব্যয়ে হরিনাভিতে একটা উচ্চ শ্রেণীর ইংরাজী বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা করেন। ইনি বিনক্ষণ দাতা ও পরোপকারী ছিলেন। যথন কলেজে শিক্ষক ›ইয়াছেন, তথন আ**ক্ষণ-পণ্ডিতগণের বৃত্তি লওয়া অ**ক্সা**র** বোধে ^{हेनि} কদাপি পত্রের বিদায় লইতেন না। সমাজ-সংস্কর্ণ বিষয়ে ট্রার বিলক্ষণ যত্ন ছিল। ইনি বৈদিক জাতির কুলপ্রথা অনুন গারে বিবাহ দেওয়া রহিত করেন। ইনি গ্রীস ও রোম রাজ্যের ংখানি বিস্তৃত ইতিহাস, নীতিসার ১ম, ২য়, ৩য় ভাগ, বিশ্বেশ্বর-বিলাপে, এবং উপদেশমালা ১ম ও ২য় ভাগ, দাঙ্খাদর্শন ও ^{চুহ্}বসার ব্যাকরণ **প্রণয়ন করেন। ইনি কর**ক্রম নামক এক ধনি প্রসিদ্ধ মাসিক পত্রও প্রচার করেন। কিন্তু ইহার প্রধান গীর্ত্তিন্ত দোমপ্রকাশ নামক সাপ্তাহিক সংবাদপত্ত। বাঙ্গালা গ্রার স্ক্রুকি নহকারে সমাচার পত্র প্রচার-প্রথার ইনিই প্রথম প্রদৰ্শক। ইনি বছমূত্র রোগে আনফাস্ত হইয়া জ্ববলপুরের ^{রন্তর্গত সাতনা নামক স্থানে বায়ু পরিবর্ত্তনের জ্বন্থ গমন ক্রিয়া} ং১০ সালের ৮ই ভাদ্র বেলা ছই প্রহরের সময় গলদেশে ছই ণ হওয়ায় দেহত্যাগ করেন।

(১০) ১২৮১ সালে যথন পূজ্যপাদ চক্রমোহন তর্কসিদ্ধান্ত ইংলাক পরিত্যাগ করেন, ইহাঁর ক্রতিমান্ পুত্র শ্রীযুক্ত বার্ গনকীনাথ ভট্টাচার্য্য এম, এ, প্রেমটাদ ট্রুডেণ্ট ত**ু**কালে অতি ^{মন্ত্রমু}র ছিলেন, স্ক্তরাং তাঁহার নিকট অন্সন্ধান করিয়া গুরু-সুবের জীবন-ইভাক্ত বিষয়ে সবিশেষ কিছুই জানিতে পারি নাই। আমি এই পর্যান্ত জানি, ভূ-কৈলাসে রাজবাটীতে ইহাঁর বিলক্ষ্ণ প্রতিপত্তি ছিল, এবং ইনি বোপদেব-কৃত কবিকল্লজম নামক সংস্কৃতগণপাঠ গ্রন্থানিকে ১৮৬০ খৃঃ অবেল সরল বাঙ্গালা ভাষাঃ ভাষান্তরিত ও বিশদ করিয়া প্রচারিত করেন।

- (১১) ১৮১০ খৃঃ অবেদ শান্তিপুর প্রামে পুজাপাদ রাম গোবিল গোস্বামীর জন্ম হয়। ১৮২২ খৃঃ অবেদ মহাত্মা রামকলন দেন ইহাকে কলিকাতার আনর্যন করেন, এবং সংস্কৃতকলের স্থাপনের পরেই ইহাঁকে উক্ত কলেজে বিদ্যাধ্যয়নার্থ প্রক্তিক শিরোমণি উপাধি লইয়া রামগোবিল বিদ্যালয় হইটে বহির্গত হন। ১৮৪০ খৃঃ অবেদ ইনি সংস্কৃত কলেজের সাহিত ও বাকেরণশান্ত্রের অধ্যাপকতার নিযুক্ত হন। ১৮৬০ খৃঃ অবেদ ইনি সংস্কৃত কলেজের সাহিত ও বাকেরণশান্ত্রের অধ্যাপকতার নিযুক্ত হন। ১৮৬০ খৃঃ অবেদ ইনি সংস্কৃত কলেজের সাহিত ও বাকেরণশান্ত্রের অধ্যাপকতার নিযুক্ত হন। ১৮৬০ খৃঃ অবেদ ২৮ বেশ মার্চ্চ ইনি বিস্তৃতিকা রোগ-প্রস্তুত্ত ইইয়া ইহলোফ পরিত্যাগ করেন। ইনি দেখিতে গৌরবর্ণ, দীর্ঘাকার ও অফ্ স্পুক্রম ছিলেন। পুরাণ-পাঠ ও শ্রীমন্ত্রাগব্ত প্রভৃতি বৈষ্ণ প্রব্যাধা। বিষয়ে ইহার বিলক্ষণ স্ব্যাতি ছিল।
- (১২) জেলা ২৪ পরগণার অন্ত:পাতী রাজপুরগ্রামে দ ১২৩০ সালে পূজাপাদ ত্রীবৃক্ত গিরিশচক্ত বিভারত্বের জন্ম হয় ইং ১৮২৪ খুঃ অব্দে সংস্কৃত কলেজ প্রতিষ্ঠিত হইলে ইনি দ বর্ষ বন্ধসে তথার প্রবিষ্ট হইরা সাহিত্য, ব্যাকরণ, অলঙ্কার, লা দ্বতি ও বেদান্ত অধায়নানস্তর ১৩ বংসরের পর বিল্পালয় আ করেন। প্রথমে সংস্কৃত কলেজে প্রকাধ্যক্ষের পদে নির্ ছইয়া জনমশঃ নিয় অধ্যাপকের পদ হইতে প্রধান অধ্যাপকে

পদে উন্নীত হইয়া ১৮৮৪ খৃঃ অবেদ পেন্দন্ গ্রহণ করেন। সন ১২৬০ খৃ: অব্দে যে মুদ্রা-বন্ধ স্থাপন করেন তাহার আয় হইতে উদ্ত ২০,০০০ মুদ্রা ব্যয় করিয়া ১৮৮৮ থৃঃ অবেদ স্বগ্রামের জন্ম দরিদ্র-ভাণ্ডার (Poor fund) সংস্থাপন পূর্ব্বক উপযুক্ত हेशैগণের হত্তে কার্যাভার সমর্পণ করিয়াছেন। বিস্তর অর্থ বার করিয়া স্বগ্রামের জল কণ্ঠ নিবারণের জন্য হুইটা পুন্ধরিণী ধনন করাইয়া দিয়াছেন, এবং লোকের যাতায়াতের স্থবিধার জ্ঞ দের সমেত ছইটী পাকা রাস্তা নির্মাণ করাইয়াছেন। উক্ত রাস্তা इरेंगे रेंश्र नार्ये नाम श्राप्त रहेशारक। এर मकल एम्पिक-ক্ব কার্য্যের অনুষ্ঠান করিয়া বাল্যাবস্থায় অর্থাভাব নিবন্ধন বে কেশ ভোগ করিয়াছিলেন সে কেনভ মিটাইয়া জীবন সার্থক ^{*} করিয়াছেন। নবম বর্ষ বয়:ক্রম কালে যথন সংস্কৃত কলেজে প্রথম প্রবেশ করি, তথন ইহাঁরই শ্রীচরণ তলে বদিয়া আনদি শিক্ষালাভ করি। কলেজ পরিত্যাগ করিবার পূর্কের যথন বি, এ, ্রেণতে অধ্যয়ন করি, তথনও ইহার শ্রীমুথ হইতে উপদেশ পাই, আবার কলেজে অধ্যাপকের পদে নিযুক্ত হইয়া প্রায় ১০ বৎসর দান ইহার ঐ।চরণ দর্শন সূথ অনুভব করিয়াছি। ফলতঃ 🍳 জীবনে ইহাঁর শ্রীচরণ-যুগল বিশ্বত হইতে পারিব না।

(২০°) ১৮০৬ পৃঃ অব্দের ২২এ ফেব্রুয়ারি হাওড়া জেলার মন্ত:পাতী নারিট গ্রামে পৃজ্যপাদ শ্রীমহেশচক্ত ভায়রত্বের জন্ম রি। বাদশ বর্ষ বয়:ক্রম কালে ইনি মেদিনীপুর জেলার অন্তর্গত শিক্গঞ্জ গ্রামে ৮ ঠাকুরদাস চুড়ামণির নিকট সংক্ষিপ্তার শিক্রণ অধ্যয়ন করেন। ১৮৫২ পৃঃ অক্টেনি কলিকাতায়

আসিয়া নিজ পিতৃব্য ৮ ঠাকুরদাস চূড়ামণি এবং সংস্কৃত কলে এ প্রেমচক্র তর্কবাগীশের নিকট অলম্বার শিক্ষা করেন। পঞ্জার দেশীয় পরম হংস জ্যোতি:স্বরূপ তৎকালে কলিকাতার উপন্তিত থাকাতে ইনি তাঁহার নিকট বেদান্ত এবং শ্রীহর্ষকৃত খণ্ডন-ধঞ থান্য নামক ভার-গ্রন্থ অধ্যয়ন করেন। পরে কালীনাথ তর্করা নামক আচার্য্যের নিকট ফলিত জ্যোতিষ শিক্ষা করেন। ১৮৬১ थः व्यत्म हेनि 🗸 कामीधारम सहिन्ना मधी विश्वकानम बार्य প্রভৃতি কতিপর পণ্ডিতের নিকট বেদ, উপনিষদ, পাতঞ্ব ধ মীমাংসা দর্শন শিক্ষা করেন। ১৮৬৩ খৃ: অব্দে ইনি ৮ মহারাজ ক্ষণকুষ্ণের সহায়তার উপর নির্ভর ক্রিয়া একটা চতুপার্ট পুলিলেন। সংস্কৃত কলেজের তংকালীন অধ্যক্ষ শ্রীযুক্ত কাউঞ সাহেব ইতিপুর্বে শ্রীঘুক্ত ভাররত্ব মহাশরের নিকট ভার শা শিক্ষা করিয়া তদীয় বিদ্যাবত্তা অবগত ছিলেন, স্থতরাং ১৮৬৪ গৃ অবেদ পূজ্যপাদ ৮ প্রেমচক্র তর্কবাগীশ পেন্সন্ লওয়ায় তিনি ইহাঁকে সংস্কৃত কলেজে সাহায্যকারী অধ্যাপকরূপে নিযুষ করেন। প্রথমে কলেজে প্রবিষ্ট হইয়া ইনি ইংরাজি শিথি। আরম্ভ করেন। কিছু দিন পরে ইনি স্থায়িরূপে যুগপৎ অলহার শ্বৃতি ও স্থামের অধ্যাপক পদে নিযুক্ত হন। ১৮৭৭ খৃঃ অ ইনি কলেজের অধ্যক্ষতার পদ প্রাপ্ত হন। ইনি আসিয়াটিক ^{সোগ} हेिं, विकान-मछा, विश्व-विमानम, हिन्म-हार्डन, त्वथून कर्^{त्व} শিবপুর এন্মিনিরারিং কলেজের সভা ও মেম্বরের কার্যা করেন ইনি উপাধি পরীক্ষার সৃষ্টি করিয়াছেন এবং ১৮৮৭ খৃঃ ^{জ্বা}

নর্ড ডফরিনের সময়ে দেশীর শাস্ত্র শিক্ষার জন্ম মুসলমান জ্বাতির মধ্যে শামসউল নামা এবং হিন্দুদিগের মধ্যে মহামহোপাধ্যার উপাধি দিবার প্রথা প্রবর্ত্তিত করিবার জন্ম গভর্ণমেণ্টের নিকট আবেদন করার সেই সময় হইতে উক্ত উপাধি-দানের স্ত্রপাত হইয়ছে। ১৮৮১ খৃঃ অবেদ ইনি দি, আই, ই, এবং ১৮৮৭ খৃঃ অবেদ মহামহোপাধ্যার উপাধি প্রাপ্ত হন। ইনি বিস্তৃত টীকার মহিত কাবাপ্রকাশ নামক অলঙ্কার গ্রন্থ প্রকাশিত করেন। ইনি ১৮৬৬ খৃঃ অবেদ ছর্ভিক্ষ-পীড়িতগণের সাহায্য করেন, এবং ১৮৭০ খৃঃ অবেদ বিজ্ঞান-সমিতিতে যথেষ্ট দান করেন। ইনি স্বগ্রামে একটা বিদ্যালয় স্থাপন, সন্নিহিত স্থানের পথ ঘাট সংস্করণ, এবং গ্রামের গাড়ী প্রচলন বিষয়ে সবিশেষ অমুক্লতাচরণ করিয়াছেন।

- (১৪) থ্যাতনামা নিমাইচাঁদ শিরোমণি খৃঃ অব্দ ১৮২৪ ^{।ইতে} ১৮৪**০ প্**যাস্ত কলেজে ভায় শাল্তের অধ্যাপক ছিলেন।
 - (১৫) नाथुताम थुः खक (১৮२१ ১৮৩২) खलकाताशाপक ।
- (১৬) যোগধান ১৮২৬ খৃঃ অব্দের মার্চ্চ মাদে জ্যোতিষ শাস্ত্রের অধ্যাপকতা পদে নিযুক্ত হন। জ্যোতিষ শাস্ত্রের মধ্যাপনা রহিত হইলে ইনি লীলাবতী শিক্ষা দিতেন।
 - (১৭) কাশীনাথ 'দেড়ে কাশীনাথ' স্থৃতির অধ্যাপক।
 - (১৮) শস্তুচক্স বাচম্পতি বেদান্তের অধ্যাপক।
 - (১৯) হরনাথ তর্কভূষণ ব্যাকরণের অধ্যাপক।
- (२॰) সহদয়তার অবতার জয়গোপাল তর্কালভারকে ^{অবজ্ঞ} উইল্সন্ সাহেব বারাণসী হইতে আনাইয়া ইহাঁর হতে ^{ইনেজে}র কাব্যাখ্যাপনার শুক্ত ভার সমর্পণ করিয়াছিলেন।

- (२) त्रामनाम व्याकत्रन भारत्रत्र व्यथानिक हिल्लन।
- (২২) রামময় তর্করয় ৮প্রেমচন্দ্র তর্কবাণীশের চতুর্থ সংহা দর। সংস্কৃত কলেজের ভূতপূর্ব ছাত্র এবং কাব্যের অধ্যাপক। এই মহাঝা অতি বিনয়ী ও অত্যন্ত অমারিক এবং কাব্য ও অলক্ষার শাল্তে বিলক্ষণ ব্যুৎপন্ন ছিলেন।
- (২৩). ৮ প্রীশচন্দ্র বিদ্যারত্বের ক্ষমভূমি থাঁটুরা গ্রাম। ইনি
 সংস্কৃত কলেকে অধ্যয়ন করেন, এবং কিছু দিন অধ্যাপকতাও
 করিয়া ছিলেন। ইনি যথন ১৮৫৬ খৃঃ অবেদ সর্ব্ব প্রথমে
 বিধবা বিবাহ করেন, তথন বিবাহ সভায় অনেক অধ্যাপক
 নিমন্ত্রিত হইয়া ছিলেন, বঙ্গের ছোট লাট পর্যান্ত উপস্থিত হন।
 বিদ্যাদাগর মহাশয় এই বিবাহে ১০ সহস্র টাকা বায় করেন।
- (২৪) তারাশঙ্কর ভূত-পূর্ব্ব বিখ্যাত ছাত্র। ইনি সংস্থা কাদম্বরী এবং ইংরাজী রাদেশাস বঙ্গভাষায় অনুদিত করেন।
- (২৫) প্রাণক্ষ বিদ্যাসাগর খৃঃ ১৮৪৪ অবল ব্যাকরণে অব্যাপক হন। ইনি ৮রামনারায়ণ তর্করত্বের জ্যেষ্ঠ। ইইার্গনিকট সর্বাদা একটা বস্তুময় গোলা থাকিত। পাঠ-কালে কেঃ গ্রু করিলে বা অন্তুমনক ছইলে ইনি স্বস্থান পরিত্যাগ নকরিয় গোলা বর্ষণ পূর্বাক তাহাকে পাঠে অভিনিবিষ্ট করিতেন
- (২৬) প্রিয়নাথ কলেব্লের ভূতপূর্ব ছাত্র ও সাহিত্যাধ্যাপক নিবাস খ্যাথালা। বহু দিন মুক্তেফের কার্য্য করিয়া ছিলেন।
- (২৭) মাধ্বচক্র গোৰামী কলেব্রের ছাত্র ও অধ্যাপক 'কারাস্থ বালরাজ' নামক গ্রন্থ প্রণয়ন করেন। দেবাবস্থার ব দিন স্কুল-ইন্স্পেক্টর ছিলেন। নিবাস বালিগ্রাম।

- (২৮) ষহনাথ হই জন ছিলেন। এক জন আহীরীটোলা ক্ষেবিন্যালয়ের প্রধান পণ্ডিত, দ্বিতীয় ব্যক্তি ৮ বিছাসাগর নহাশয়ের ভগিনীপতি 'ভামিনী-বিলাস' প্রণেতা, এবং কলেজের মন্ত্রম স্ক্রেম্যাস্য সাহিত্যাধ্যাপক।
- (২৯) ১৭৫০ শকে পাণ্ডুয়ার সন্ধিহিত ইলছোবা নামক এমে রামগতি স্থায়রত্ব জন্ম গ্রহণ করেন। ইনি অন্ধক্পু হত্যার ভিহাস ইংরাজী হইতে বঙ্গভাষার অনুদিত করিয়া প্রচার হবেন। তদ্তির বস্তবিচার, বাঙ্গালার ইতিহাস ১ম ভাগ, রোমা-ভী (উপস্থাস) শিশুপাঠ, নীতিপথ, বাঙ্গালা ব্যাকরণ, ঋজ্-াাথ্যা, দময়ন্তী, মার্কণ্ডেয় চণ্ডীর অন্ধ্বাদ, বাঙ্গালা সাহিত্য বসমক প্রস্তাব এবং ভারতবর্ষীয় ইতিহাসের সংক্ষিপ্ত বিবরণ গ্রহার করেন।
 - (৩০) রুদ্রমণি দীক্ষিত বেদাস্তের অধ্যাপক।
- (৩১) ১২২২ সালে নদীয়া জেলার অন্তর্গত বিল-পুক্রিণী
 গ্রামে মদনমোহন তর্কালকারের জন্ম হয়। ইনি সংস্কৃত রসইরদিণীর বাঙ্গালা অন্ত্রাদ এবং বাসবদত্তা গ্রন্থ থানি পদ্যে

 চিনা করিয়াছিলেন। ১২৫৭ সালে ইনি শিশুশিক্ষা প্রথম,

 ইতীয়, তৃতীয় ভাগ রচনা করেন। ১২৬৪ সালে বিস্টিকা রোগে

 নিজাত্ত ইইয়া ইহলোক পরিত্যাগ করেন।
- (৩২) ১৭৪৪ শকে হরিনাভি গ্রামে রামনারারণ তর্করত্বের মহর। ইনি কনিকাতা সংস্কৃত কলেজের ছাত্র এবং অধ্যা-ক। ১৮৫২ খৃঃ অকে ইনি পতিত্রতোপাখ্যান এবং ১৮৮৪ খৃঃ কি কুলীন-কুল-সর্কান্ধ নাটক লেখেন। ইহার পর রন্ধাবলী,

বেণীসংহার, শকুস্তলা, নবনাটক, মালতীমাধব ও কৃস্থিনীইর। নামে ৬ থানি বাঙ্গালা নাটক এবং দক্ষয়ত্ত নামক একথারি সংস্কৃত কাব্য রচনা করেন।

(৩৩) রামকমল অসাধারণ ধীশক্তি-সম্পন্ন ছাত্র-রত্ব। ইর্নিক্টু কাল কলিকাতা নর্ম্মাল বিদ্যালয়ের অধ্যক্ষ ছিলেন। ইর্নিরাজ হইতে বঙ্গভাষার 'বেকন-সন্দর্ভ' অনুদিত করেন, এর এক থানি নৃতন জ্যামিতি গ্রন্থ প্রণয়ন করেন। উক্ত গ্র ইউক্লিডের মত তত অধিক প্রতিক্তা স্বীকার করিতে হয় না।

সংস্কৃত কলেজের সংক্ষিপ্ত ইতিয়ত।

১৮২৪ খৃঃ অব্দে স্বর্গীয় গভর্ণর জেনেরল মহামতি গ আমহস্তের শাসন-সময়ে কলিকাতা মহানগরীতে সংস্কৃত পাঠশাল প্রতিষ্ঠিত হয়। পাঠশালার প্রথম পত্তন ছই এক বংসর প্রে ইইলেও তৎকালে ইহার অধিবেশনের জন্ত কোনও স্বতন্ত্র বা নির্দিষ্ট না থাকায় ১৮২৪ খৃঃ অব্বই ইহার জন্ম-বর্ধ ধরিতে হইটে

সে যাহা হউক, বিভালর সংস্থাপিত হইল বটে, কি বিভার্থীর অভাব। রাজা বে নিঃ মার্থভাবে কেবল নিজু কর্ত্তন বৈধে প্রকৃতি-পুঞ্জের কল্যাণের দিকে দৃষ্টি রাখিয়া ক্ষনকোনও রূপ দেশ-হিতকর কার্য্যের অনুষ্ঠান করেন, বহুক রিয়া মুদলমান নবাবগণের শাসনাধীন বিধিমতে উপত্র প্রভাবর্গের হৃদরে ঈদৃশী ধারণা আদৌ না থাকাতে সক্ষেত্রশাশকা করিতে লাগিলেন, ইহার অভ্যন্তরে গুঢ়ভাবে রাজপুর

দিগের কোনও না কোনও কু অভিসন্ধি আছে। সেই ত্রভিসন্ধি সাধনের অভিপ্রারেই তাঁহোরা এত অধিক ব্যর স্বীকার করিয়াও বিভালর নির্মাণ করাইয়াছেন। উপদেশ-চ্ছলে বালক-বৃন্দকে ধীরে ধারে খৃষ্ট-ধর্ম্মে দীক্ষিত করাই তাঁহাদের মুখা উদ্দেশ। এরপ সিদ্ধান্তে উপনীত হওয়াতে, কাহারও নিজ সন্তানকে অধ্যয়নার্থ বিভালয়ে প্রেরণ করিতে প্রবৃত্তি বা সাহস জন্মিল না। রাজুপুরুষণণ গভান্তর না দেখিয়া ছাত্রদিগকে উৎকোচ দিবার ব্যবহা করিলেন।

প্রত্যেক পাঠার্থীকে মাসিক পাঁচ টাকা করিয়া বৃত্তি দিবার প্রথা প্রবর্ত্তি হইল। ঈদৃশ বন্দোবস্ত হওয়াতে ক্রমশ: ছুই একটা করিয়া স্বল্লকাল মধ্যে সর্ক্র-দাকল্যে পঞ্চাশটি ছাত্র সমবেত ইন। এই পঞ্চাশটি মাত্র ছাত্র লইয়া রাজপুক্ষণণ বিভালয়ের কার্যারস্ত্র করিতে সঙ্কল্ল করিলেন। প্রথমতঃ প্রত্যেক বালকের রি তুল্যরূপ হইলেও পশ্চাং কেবল সাহিত্য ও ব্যাকরণ শ্রায়নার্থী ছাত্রগণেরই মাসিক বৃত্তি পাঁচ টাকা হারে চলিতে গিল; ভার, স্মৃতি, বেদান্ত প্রভৃতি অন্তান্ত শ্রেণীস্থ ছাত্র-বর্ণের বিক বৃত্তি পরিবর্দ্ধিত হইয়া আটে টাকা হইল।

কণার বলে "শ্রেরাংনি বছবিদ্নানি,"—অর্থাৎ শুভকর্মে নানা নিছ। এটা বে বণা কথা এ স্থনে তাহা সপ্রমাণ হইতেছে। দিও কঠে স্থার প্রথম অন্তরায়টি অন্তরিত হইল বটে, কিন্তু প্রতি আর এক বিভাট উপস্থিত! বিত্যার্থিগণকে অধ্যাপনা রাইবার লোক পাওরা ছর্ঘট হইল। ভগবান্ মহু বলিরাছেন, দিবা শ্রুত্রিরাধ্যাতা,"—অর্থাৎ রাজদেব। কুরুরের বৃত্তি। হেন কিন্তু কার্গ্যে প্রস্তুত্ত হইলে পাছে সমাজে স্থিত হইতে হয়,

পাছে জীবিকা-নির্বাহের প্রধান উপায়-ভৃত ধনাটা ব্যক্তিগণের ভবনে পত্রের বিদায় বন্ধ হয়, এই সাত পাঁচ ভাবিরা কেইই গভর্ণমেন্টের কার্য্য স্থীকার করিতে সাহসী হইলেন না। পাঠক। বেন স্মরণ থাকে তথ্নকার সমাজ এখনকার মত উদ্ভৃষ্য ও শিথিশ-বন্ধন ছিল না!

ইতিমধ্যে রাজপুরুষগণ কিরূপ আয়ে সচ্ছদে জীবিক নির্বাহ হইবে কতিপর পণ্ডিতকে জিল্ঞাসা করায় ভোগ-নিশ্যু পণ্ডিত-মগুলী এক বাক্যে উত্তর করিলেন, 'দৈনিক এক টাকা' রাজপুরুষগণ স্বতঃ প্রবৃত্ত হইরা দৈনিক ছই টাকা অর্থাৎ মাদিব ৬০ টাকা বেতনে পাঁচজন এবং ৪০ টাকা বেতনে তিনজ্ব পণ্ডিত-কুল-তিলককে কার্য্যে নিযুক্ত করিলেন। পাঠক। দেখু অল্পকালের মধ্যে দেশের কীলৃশ পরিবর্ত্তন ঘটিরাছে। সম্প্রাইহার দশ গুণ আয়ে সংসার চলা স্কুকঠিন। ইহা সামাজিব উন্নতি বা অবনতি ভগবান্ই জানেন।

তালিকা।*

পূর্ব্বোক্ত ৮ জন অধ্যাপকের মধ্যে (২০), (১৪), (১৯), (২০ (৩০) ক্রোড়পত্র দেখ। ১৮৪৩ খৃঃ অব্দে বেদান্ত উঠিয় বায় ৬ঠ (অলভার) কমলাকান্ত বিদ্যালভার। কিছু দিন পরে ই

^{*} কৃতজ্ঞতার সহিত বীকার করিতেছি কলেজের ৪র্ব ইংরাজী বিদ জীবুক্ত বাবু দেবেজ্ঞবাধ ঘোষ বি, এ, দয়া করিয়া কলেজের প্রাচীদ দেশ জন্তুবাদ পূর্কক বিয়লিখিত বিবয়গুলি বাহির করিয়া দিয়াহেন।

হিন্দু পুরাবৃত্ত শিক্ষা দিতেন। ৭ম (স্মৃতি) রামচন্দ্র বিভাবাগী । মধ্যে স্মৃতির ছই শ্রেণী হয়। ৮ম (পাণিনি) গোবিন্দরাম। গাণিনি উঠিয়া গেলে ব্যাকরণের ৩য়শ্রেণী হয়, অধ্যাপক গদাধর তর্কবাগীশ। ১৮৬৩ খৃ: অব্দে পাণিনি ৩ বৎসরের জন্ত পুনরারন্ধ হয়, অধ্যাপক ৺তারানাথ তর্কবাচস্পতি। ১৮২৬ খৃঃ মদে জ্যোতিষ ও বৈদাক শিক্ষার জন্ম ২টী শ্রেণী প্রতিষ্ঠিত হয়। জ্যোতিষ (১৬) ক্রোড়পত্র দেখ। বৈত্যক শ্রেণীর ১ম পণ্ডিড ৮কুদিরাম কবিরাজ, ২য় ৺মধুস্দন গুপ্ত। ১৮৩৫ গৃঃ **অং**ক মেডিকেল কলেজ স্থাপিত হওয়াতে বৈদ্যক শ্রেণী উঠিয়া যায়। নধ্তদন তথায় ভর্ত্তি হইয়া এদেশে সর্বাত্যে শব চেছদন করাতে তোপ-ধ্বনি হয়। পূৰ্বে কেবল সংস্কৃত শিক্ষা হইত। ১৮২৮ খৃঃ ^{জন্দে ৪০জন ছাত্র আবেদন করায় ইংরাজি শিক্ষার স্ত্রপাত হয়।} মাদিক ২০০, টাকা বেভনে M. W. Woolaston, এবং গঙ্গাচরণ দেন ও নবকুমার চক্রবর্ত্তী শিক্ষক নিযুক্ত হন। ১৮৩৫ থৃঃ অবদ ^{দ্র্}য়স্ত এই ব্যবস্থা থাকে। ১৮৪২ খৃ: অন্দে পুনরারক হয়। ১ম শিক্ষক রসিকলাল সেন ২য় শ্রামাচরণ সরকার। ১৮৫৩ পুঃ আংকে ^{পুন:সংস্থাপন। সাহিত্যের প্রোফেদর ৮প্রদন্তমার দর্কাধিকারী,} দঙ্কের প্রোফেসর প্রীশ্রীনাথ দাস। ১ম শিক্ষক কালীপ্রসন্ধ ^{চট্টোপাধ্যার}, ২ম্ন তারিণীচরণ চট্টোপাধ্যার, ৩ম্ন প্রসন্মকুমার রাম। ^{প্রথম} ছাত্র প্রাহ্মণ ও বৈদ্য। ৮ বিস্থাসাগরের আমলে কার্যন্তর वित्य । हे,वि, काञ्जे अन मारहरवत्र ममरत्र स्वर्ग विविद्यत श्रादम । Council of education (শিক্ষা সমিতির) অধীন (Sub-Pommittee (নিয়দভা) বারা কার্য্য দম্পাদিত হইড।

খৃঃ অন্ধ (১৮২৪-১৮৩১) অবৈত্যনিক ১ম সেক্টোরি W. Price. খৃঃঅন্ধ ১৮৩২র (জাছ্মারি—আগষ্ট),, ২য় সেক্টোরি H. Todd. খৃঃঅন্ধ ১৮৩২র (সেপ্টেম্বর—৩৪) ,, ৩য় সেক্টোরি A. Troyer. খৃঃ অন্ধ (১৮৩৫—৩৮) ,, ৪র্থ সেক্টোরি রামকমন সেন। ,, ,১৮৩৬র কিছুদিন ,,৫ম সেক্টোরি J. C.C. Southerland খৃঃ অন্ধ (১৮৩৯ জুলাই—১৮৪০ মার্চ্চ) ,, ৬য় G. F. Marshall. সহকারী সম্পাদক মধুস্দন তর্কালকার।

খৃঃ অন্দ ১৮৪ (বার্চ্চ — এপ্রিল) ,, Thomas A.W. Wise M D
,, ,, (১৮৪১ — ১৫ •) মাদিক ১০ • , বেতনে রসময় দত্ত।
সহকারী সম্পাদক রামচন্দ্র বিদ্যাবাগীশ। পরে রামমাণিঝা
বিদ্যালকার। ১৮৪৬ খৃঃ অকে ৮ বিদ্যাদাগর।

১৮৫১ খৃঃ অব্দ ৺বিদ্যাদাগর মাদিক ১৫০, বেতনে Principal (অধ্যক্ষ) ১৮৫৮ খৃঃ অন্দে কর্মত্যাগ। ইহার সমরে অইমা প্রতিপদাদিতে ছুটি বন্ধ হইরা রবিবারে অবকাশ দিবার প্রধ হয়। ১৮৫২ খৃঃ অব্দের আগষ্ট মাদে ২ টাকা মাত্র admis sion fee, ও ১৮৫৪ খৃঃ অব্দে ১ টাকা মাদিক বেতন হয় খৃঃ অব্দ ১৮৫৮—১৮৬৪ পর্যান্ত প্রেসিডেন্সি কলেজের পুরার্জ্ঞ ধ্যাপক ই, বি, কাউএল অধ্যক্ষ। অধুনা ইনি ইংলং

খৃ: অক (১৮৬৪—১৮৭৭) ৮ প্রসন্নকুমার সর্কাধিকারী অধাক মধ্যে ৩ মাস সেঙারস্ সাহেব উক্ত কার্য্য করেন। ১৮৭ খৃ: অক্টেইটার পীড়া নিবন্ধন বি, এ, শ্রেণী প্রথমত: প্রেসি ডেন্সি কলেন্ত্রের অক্ত্ ক্র হয়।

Oxford (উক্ষতর) বিশ্ববিদ্যালয়ের সংস্কৃতাধ্যাপক।

়ে অন্ধ (১৮৭৭—১৮৯৫ মার্চ্চ) শ্রীমহেশচন্দ্র স্থায়রত্ব সি,আই,ই। , ,, (১৮৯৫—১৯০০ ডিনেম্বর ৭ই)শ্রীনীলমণি স্থায়ালকার এম,এ,। ় অন্ধ ১৯০০ ডিনেম্বরের ৮ই হইতে শ্রীহরপ্রসাদ শান্ত্রী এম,এ,।

বিদায়।

কি বিষম সমস্যা উপস্থিত। আজি যেন মদীয় জীবন-নাটকের प्राप्ता অভিনয় আরম্ভ হইল ! ১৮৫২ খুঃ অফে যথন নবম বর্ষ अक्रम काटन अधायनार्थ विना। मिनदत अविष्ठे हरे, आजि एवन ানরায় দেই সময়ে বিদ্যমান আছি ! কারুণ্য–রত্নাকর দেবোপম ওকগণের উদার মৃর্ত্তি, সম-ছংথ-স্থথ স্থন্তদ্-বৃন্দ ও সভীর্থ**গণে**র ংাস্ত মুথকমল আজি যেন চতুর্দিক হইতে আসিয়া আমাকে রইন করিল। পরম স্বেহ্ময়ি জননি। পরমারাধ্য জনক। প্রাণ-প্রতিন অনুজ্বপণ্ তোমরাই বা আজি কোথায় রহিলে ? দ্বরের কোন রাজ্যে গিয়া উদয় হইলে ? তোমাদের সেই মৃত নিয়াদিনী চির-পরিচিত বাণী অদ্যাপি মদীয় কর্ণ-কুহরে ষহুরণিত হইতেছে। সেই স্নেহোজ্জ্ল বদন-স্থাকর নিথিল ^{বিশ্ব}-দর্পণে বিশ্বিত রহিয়াছে। অথবা তোমরা অদ্য পর্যাস্ত এ অভাগাঁকে ভূলিতে না পারিয়াই বুঝি সংসার-তুষানলে অন্তর্দগ্ধ ^{এ হত} হদয়ে সাম্বনা-বারি সিঞ্চন করিতে আজি আমার অন্তিক-^{रही} रहेग्राह ? स्वामि विमानिएम श्विष्ठे रहेनाम, क्रममः **ल**श ^{পড়া} শিথিয়া মাতুষ হইব, তোমাদিগকে সুথী করিব, **ঈ**দৃশ ^{নর্ন}বিক্লিড কত শত স্থর্ম্য থ-হর্ম্য না জানি তৎকালে তোমাদের নেত্রোৎসব বিধান করিয়াছিল! অমরগণ! তোমাদের সেই ভবিশ্বতের অবলম্বন, আজি নিরাশ্ব হইরা বিকর্ণ ভেনার স্থার ঘোর সংসারাবর্ত্তে সমস্তাৎ প্রারামান হইতেছে, প্রতিমূহুর্ত্তেই তলসাৎ হইবার সম্পূর্ণ সন্তাবনা। হায়! শরদন্রচলা মান্তুরের আশা কি অচির-স্থায়িনী! বালুকামর সেত্র স্থায় কি ক্ষণ-ভঙ্গর। দেবগণ! আমি আগণ-শীর্ষ অনন্ত হংখ-সাগেরে নিময় থাকিয়াও যথনই ভাবি, ভোমরা নিরাপদে শান্তিধামে উত্তীর্ণ হইয়া আয়ি পরমানন্দে নন্দন কাননে বিচরণ করিতেছ, তথনই মহোয়াসে বিভোর হইয়া আয়-হংখ বিশ্বরণ পূর্ব্বক কিঞ্চিৎ কালের জন্ত আয়াকে চরিতার্থ বোধ করি।

কি চমৎকার! এই সকল আনন্দ-মৃত্তি এতকাল যেন হৃদয়ের
অস্কত্তলে কোথার বিলীন ছিল, আজি যেন হঠাৎ নবীভূত হইর
নিবাত-নিক্ষপা সরসী-সনিলে প্রতিমা-শশাঙ্কবৎ রুগপৎ আমার
নেত্র-পথের পথিক হইরাছে! পরম ভক্তি-ভাজন প্রাতঃশ্বরণীর
আচার্যাগণ ও পরমারাধ্য প্রত্যক্ষ দেবতা স্বরূপ মাতা পিতা প্রভৃতি
গুরুজনের প্রতি আস্তরিক ভক্তি, নিষ্পাপ ও সরল-তিত্ত সংহাদর
ও সহাধ্যায়িগণের প্রতি অকপট মেহ, জীব-জগতের সহিত
সহাস্থভূতি এবং পরম করণাময় বিশ্ব-পতির অসীম বিশ্ব-রাজ্যের
সর্বাত্ত শৃদ্ধলা ও অত্যাশ্চর্যা পারিপাট্য-সন্দর্শনে বিশ্বরেসে আপুত নবীন ও অকলুব অস্তঃকরণের নৈস্বর্গিকী ভক্তি
প্রবণ্তা প্রভৃতি যাবতীয় শোচন ও স্থকোমল মনোবৃত্তি এক
কালে মনীয় মনোরাজ্য অধিকার করিল! আজি যেন আমি
স্কুস্মার-মতি পবিত্র-হৃদয় তাৎকালিক একটা নবমবর্ষীয় নব-

ক্মার! এ জীবনে আরে কথনও ঈদৃশ অভ্তপূর্ক ভাবান্তর মনোমধ্যে সভূত হয় নাই।

ধন্ত কাল ! তোমার কি মোহিনী শক্তি ! তুমি চিরাতীত रहा छ छ नि আ कि कि अक्ष स्वर्भा करतरे मनीय हिछ- फन दक কোদিত করিয়াছ। কি সমুজ্জল বর্ণেই রঞ্জিত, প্রতিফলিত ও উদ্ভা-দিত করিয়াছ। তোমার গর্ভ-শ্যাগত প্রত্যেক পদার্থের সৌন্দর্যা শলে পলে পরিবর্দ্ধিত হয়। আজি যাহা হৃদয় বিনোদন করিতে জনমর্থ, ছ'দিন পরে, তাহারই আর মাধুরীর পরিদীমা থাকিবে 🗐,—যাহা কিছু অতীতের কুক্ষিণত তাহার আর স্থৰমা ধরে ন। তাই আজি তুমি তোমার অনস্ত ভাণ্ডার-স্থিত মদীয় <u>কৌমার রাজ্যের অতৃণ ঐখর্য্য নেত্র-সমীপে ধারণ পূর্ব্বক আমার</u> মুদ্রায় হাদয় বিচুর্ণ করিয়া নিজ অনেস্ত শক্তির পরিচয় দিলে ! খন সে স্থৃতি-স্থুথকর স্থুখের বাল্য এবং সেই বাল্যকালের মুপম বিভব রাশি জনমের মত হরণ করিয়াছ, যথন আর হত্র প্রার্থনায় তাহাদের পুন:প্রাপ্তির সম্ভাবনা রাথ নাই, গ্ৰ কেন আজি তাহাদের মোহন চিত্ৰ গুলি নয়ন-পটে অন্ধিত দিয়া কতের উপর আর বুথা কারাপণ কর ? এ অনিত্য ংগারে দেগুলি হারাইয়াছি বলিয়া থেদ করি না, কেননা শুখলি ধরিয়া রাখিবার বস্তু নহে; তবে কি না যথন তৎসমুদর গ্ৰামার আয়ত্ত ছিল,---যখন আজিকার মত ভাগ্য-লোষে সেগুলি ∛বহিভূতি না হইয়াছিল, তথন কেন এ নিগুঢ় সংসার-রহস্ত ামাধ করিবার সামর্থ্য জন্মে নাই ?.—কেন সে গুলির প্রক্রন্ত ^{ার্}টাদা ব্ঝিয়া দিবানিশি প্রাণ ভরে সাধ মিটাইয়া **ভোগ ক**রি

নাই ? ইহাই একমাত্র ক্ষোভ ও পরিতাপের বিষয়, এই চিন্তাই অবিশ্রান্ত মন্দ্রান্তিক বেদনা উৎপাদন করিয়া আজি আমায় হর্ম্মল ও হতাশ হৃদয়কে বার-পর-নাই অন্থির করিয়াছে।

অথবা দর্ম-দাফিন্ দণ্ডধর কাল! যথন স্থকর্ম-দত্তে বর প্রত্যেক জীব নিজ কর্ম ফল ভোগের জন্মই এই কর্ম ক্ষেত্র অবতীর্ণ,—যথন কত শত দেবতুল্য মহা-ভাগাধর পূক্ষ ও তোমারই কঠোর শাসনে,—অথবা তোমারি পক্ষণাত-শূর স্থবিচারে,—একদা সজল নয়নে বনে বনে ত্রমণ করিয়াছেন, তথন ন-গণ্য পামর আমি কেন আর নিজ দোবে তোমাকে জড়ত করি ? কেনই বা ব্থা রোদন করিয়া সকলের স্থার গলে ছংথের অঞাহার তুলিয়া দি ?

বন্ধুগণ ! অধুনা তোমাদের যথাযথ নমস্কার ও আশীর্কাট করিয়া বিদার হুই। অবদর ক্রমে এক এক বার মনে করিবেন, একদা দোষ গুণে জড়িত এক ভাগ্য-হীন জীবন-পথে পথিক কার্য্য-গতিকে কিছু দিনের জন্ম সংস্কৃত-পাছ-শালাঃ অবস্থিতি করিয়া মনের ছুংথে কোথায় চলিয়া গেল, আন্ত ভাহার নিদর্শন নাই।

অতিক শিবম।



यीयादवेश्वर तकंरत्नेन प्रचीतं।

श्रीहन्दावनचन्द्र भद्दाचार्व्वेच प्रकाधितं । रक्षप्रधनीयभावा व्यवेग सहितं।

संस्कृतयन्त्रे सुद्रितम्।

Calcutta.

PRINTED BY UPENDRA NATH CHARRAVARTI. AT THE SANSKRIT PRESS: No. 62, American Street. 1901,

उत्सर्ग-पत्रं।

उत्स्टिमिद्मश्विन्दुकार्यं प्रतिभा-प्राणिने विदुषे खीमते पूर्णचन्द्रमित्राय महो-द्याय रक्ष-पुराणां वर्त्तमान-प्रासन-कर्ते ग्रन्थ-कारेणेति

अश्विन्द्वायम् *।

विटनेखरि भारतेखरि सारणीयासि सदा यमस्तिनि । परसोकगतासि भासिनः स्थिरमूर्तिर्द्धदेशेष्ट्रता सती ॥ १ ॥

चयि भारतवर्षेष्ठर्षदे जगदुल्वर्षसुधाप्रवर्षिणि । वद कुत्र विभासि भाषिते-नीष्ठि किं न: कुरुषे स्थिरान् सुतान् ॥ २ ॥

विपुत्तं तव राज्यसुक्यसं जसधीनां वसयैर्व्यिजृत्थितं । चित्ततोऽपि विस्तृज्य विस्तृतं इरिद्दक्षोऽपि न धावति भ्रुवम् ॥ ३ ॥

पठितिमिदं इं १८०१ चन्दीय फेनुयारी माचस दितीय-रिक्त भारतेश्वरीपरकोकगमनजनितयोकप्रकाशक्वमाझत रक्त-रिक्तमीकभाषेत्रे।

न तबास्तमयं भवडुवोऽ-चित सीभाग्यरविनसचिति । वस्रधा-द्वदयेवकांचना-म्बुजमिषुं तव कैतवादपि ॥ ४॥

सिललं भयविश्वलं भव-विजवेगञ्च जङ्गाति धावति । वलयैर्वेस्रधाम्बुपायिभिः सित मध्यस्य चजास्ति मासनात् ॥ ५॥

खरसः सरितः सुधासमं सिलनं खच्छतमं विधाय च । पिष च प्रतिसद्य यच्छिति प्रकृतिभ्यस्तव ग्रासनं सदा ॥ ६ ॥

वस्तो नियतं हि वायवो जन्नधीनासुरसा तरिषेटाः । तव ग्रासनसद्य विस्ततोऽ-सरवन्द्ये परिचानयन्ति च ॥ ७॥

चपलापि विदाय चापलं तव राज्ये नितरां स्मिरायते। चपरा खिपिवाधिका सती तव तृची वस्तीव शासनम्॥ ८॥

तव भासनमन्य मूर्बभि-र्दधदुवैस्ततृते तनूनपात्। बहुधाखिसकार्यकार्येटः सति भस्तत् खतु वाष्यसुद्दसन्॥ ८॥

सदये मथनं विना सदा तव रत्नान्त्रलयः पदाम्बुजे। जलधेः पटलैः समर्पिता वसुमत्या च कुलाचलैः समम्॥ १०॥

तव भासनतोऽच दस्यु-भी-में भयं खापदतोऽपि यादसः। जभयं विभदं जलं स्वलं तव पद्या प्रकृतिर्विविद्यते॥ ११॥

सञ्चदार्वयसानिकाचये दश्चनस्ते गुरुशासनादिव । चयमन्तरितोऽपि चर्तवा-ज्ञासति च्योतिरवाविरम् सुष्टः ॥ १२ ॥ गगनं तव गासनं वहद्
विजयस्तक्तपताक्तयोक्त्यसं।
विस्तस्त्रयि रङ्गभूदिदं
रयपङ्तेस्तव ग्रातिरीह्गी॥१३॥
नितरां नगरीकसो नरान्
जननी जानपदान् जनानिष।
व्यतरो भिषजाङ्गणै: सुधासह्यं स्तास्त्रामहर्निशं सित॥१४॥
ग्रमनोऽपि तवाय ग्रासनाद

यमनाऽाप तवाच यासनाद्
बहुधा खाख्यविधानलोकनात्।
पदसुन्नसयंव भीतिमान्
भवि पवाचरणायते पुनः॥१५॥
वसुधा जलवेः सता सदा
भवतीं स्तीति तथा सरस्तती।
विभवो न पुनर्दिवीकसामिष्रपस्तापि तवेव विद्यते॥१६॥
क्यमस्य विद्याय हन्त तं
परलोकं प्रति धावसि प्रस्तु।

भवदुवत-राज्यभूतत्ते जनिमिच्छन्ति चिरं दिवीनसः॥ १०॥

उद्धेवद्तिष्ठदुक्वका कमका रक्वकीः पयोमयात् । धवनावसुधा तदीर्ष्या सुषुवे त्वां किसु सोकमातरं॥ १८॥

दियतो इरिरद्य वारिधी तव निद्राति सुसुद्रितेचणः । चरणाम्बुजमम्ब तस्य तत् सति संवाष्ट्रयितुं गतासि वितं॥ १८॥

षय दुर्व्यातासुपेयुषी सृनि दुर्व्वासस एव किंपुनः। षभिग्रापवर्गगतिन्दिरा वसुधांचांपरिष्ठत्यगच्छसि॥२०॥

परिपीय सुधासमं सदा कर्षास्तन्यमिमाः प्रजास्तव। गिरुतामपद्याय साम्यतं परिवर्षम्त स्वाय विद्या न ? ॥ २१॥ परिश्रस्य श्रांत् प्रसः विश्-नविचित्रस्य प्रभवाद्य विद्यवे । प्रविचित्रस्य भुवीव साम्प्रतं तद मातर्वेद तत्र कार्र्णः ॥ २२ ॥

यतथा यश्वाञ्चनः युनः
समद्यायमयं निजं वयुः ।
प्रविधाय तवान्तिने बभी
नियतं नेत्रयतेरिभष्ट्ते ॥ २३ ॥
तव देवि विभाति चन्द्रवेरियमयापि सुपष्यवीयिका ।
क्यमय विद्याय तां हठाद्
धरणेर्धावसि धाम निञ्चन ॥ २४ ॥

निह तेऽधिकताह्नवः स्वका-त्तपनोऽस्तं न कदापि याति न । षष्ट्रहास्य धरातलं खयं परिक्रत्यास्तमयं निषेवसे ॥ २५॥

तव दिख्यतो गयाधिपो वरमन्त्री ससितः संसिस्वरिः। तक वामत एव वीर्थवान् सुर-सेनाचिपती रवादस् स्थितः ॥ २६ ॥

तव दिचेष भागमास्थिता कमलान्यत्र सरस्रती चिरं। भवदूर्वदियीव संस्थिती द्यितस्रे इषवाइन: यिव: ॥ २०॥

सित विक्रमनेश्यरीकारे चरणं न्यस्य महेकारि खयं। चतनोर्दमुजानचेतसी भयविद्यासित मुर्च्छितान् सुनः॥ २८॥

नयनं जननि दयाधिकं नितरां गौरि दयामयं सति। विद्धासि सितासितं जगत् सहयं सोकितमैव तस्वया॥ २८॥

गुबहीरक धारणच्छनाद धृतचन्द्रा महिषी महिषितुः। दयवाङ्ग बन्नेन दुर्वनान् प्रपणायाय विपत्पयस्वितान् ॥ ३०॥ यरदः प्रसित्र मारदा सरदर्शे मरिक्का गच्चति । त्वसपीखरि चीरकोसवा-चितपादैव सुवोऽद्य गच्छसि ॥ ३१ ॥

विरिजा घरदः परं पुनवेसुधायां ससुपागिमध्यति ।
न पुनर्नरराज कन्यवे
सुवि सम्बाद्धि समागिमध्यसि ॥ ३२ ॥
सिलास्य निमज्जनित्यामवनिः किं विद्धाति साम्प्रतं ।
स्तसुतां जनकामजां पुरा
परिज्ञास धरा चिराय या ॥ ३३ ॥
सित षड्यस्योगतो नदी-

सित षड्यष्टयोगतो नदी
श्रतसार्च्छत् किल ग्रीवर्ण पुरा।

भुवनेष्वरि ते सुतव्रजा

गुरुदुर्भित्तसुखानि लेपिरे॥ २४॥

समरे कति वीरपुष्टवा

वसुधालिक्दितविषदा वसुः।

जितमय जितं खया तती भवतीन्द्रोऽपि चयक्रतोऽच वितं ॥ ३५ ॥

द्यमीखरि भारतावनि-स्तवपादास्नुजमस्य वज्तसा । सति धर्जुमियेष नित्यमो न तु सा पूर्णमनीरयाद्यह ॥ १६॥

तव मातरिनन्धसुन्दरं सित लावस्थतरिक्ततं वपुः। दयया वदनं विभासितं कर्मसासोरिवलीचनं पुनः॥ ३०॥

स्रविलोक्स गिरीन्द्रकन्यका-प्रस्तीनां प्रतिमूर्त्तयसिरम् । वरचित्रकरेष्टिं चित्रिता: चितिगर्भे तदिदं निधास्त्रते ॥ ३८॥

निष्ट नेवलमेव देविनो भुवि सम्बाद्मासि विद्यसेविता। गुरुरस्वपि शिंचणात् पिता इसनास्तं जननी प्रपादनात्॥ ३८॥ परिश्रस महस्रसीतटे मरभूमी प्रसन: स्तांस्तव। विदितावनितोश्य सुत्र ते गतिरेवं वद सुत्र सुत्र ते॥ ४०॥

विजयिन्ययि मातरम्बुधी तव स्नून् चित भारतीकाः। परिमज्जयसीव दुस्तरे नष्टि ये सन्तरणचमाः सुताः॥ ४१॥

सवलाः प्रवलाः सष्टीदरा
यदि नो दुर्व्वलिनः क्षणाच्छिशून् ।
सित निर्देयमद्देयन्ति तान्
प्रति का कोपपरा भविष्यति ॥ ४२ ॥

जननी तनयेषु दुर्खेले-ष्यनुकम्पावभमिति नित्यमः । षयि भारतवर्षवासिन-स्तव पुत्रा रूपपुति दुर्खेलाः ॥ ४३ ॥

तव गासनग्रसितः प्रजो-वतिसुदीका दिवीकासः स्मियः। चवधीरितगीत्रधतवी ससनायै सस्तिप्रजास्ति॥ ४४॥

प्रतिपादयितुं किसुद्यताः सुरराजासनमद्यं ते दिवि। तृपयिक्तसमष्टिकपिणि विदयाभ्यर्षितपादपङ्कजे॥ ४५॥

श्वरि पग्य विमानसुन्नतं विदिवात् प्रेरितमच्य दैवतैः। जड़ितं तड़ितां गुचैरमुं विक्रसत्तारकतोरचोक्कवतं॥ ४६॥

इममावञ्च विमानमुज्यसं वज देवेन्द्रभुवं सरैनुता । सुरराज्य सुशासनात् पुन- 🍌 🎢 भेज तबैव यशस्वरन्तनं ॥ ४७ ॥

सुनुमारकुमारविक्षमें नरसिंहे प्रथमाक्षजे लया। स्वाद्यं भेवनस्य विधिता ्र प्रिट्ट सुत्रविद्येव सुवुद्याकिनि॥ ४८॥ षयस्वतन्ति स्वता

यम् त तनयो नये नृतः ।

परमेमलस्यस्य सहिता
स्वि सम्बाङ् भवतीव दीप्यतां ॥ ४८ ॥

षय यस्य महीजसी यमः
प्रभया भासि कर्णेव निःस्ता ।

तज तत्र विस्त्र्य पार्थिवं

विभवं याहि चिरेण निर्वृतिम् ॥ ५० ॥

ससिनं वदनं मसीमसः
इदयेनाय सलाटपत्तनं ।

प्रियस्थाम इहासितं पटन् ॥ ५१ ॥

इति त्रीयादवेष्वर-तर्भरत्न-विरचित-मत्रुविन्दु-नाम काव्यं समाप्तम् ।

त्रश्रुविसर्जनम्

श्रीयाद्वेश्वरतर्करत्नेन प्रणीतम्।

हयाधारावर्षि-काहष्टिक्या यद्यस्क्रिया रङ्गपुर-नगर-निवासिक्याः त्रीसस्वासङ्गराज्ञ्जाः यरसुन्दरीहेस्या सङ्गोहयायाः सम्मूर्णसाङ्गाय्येन

कलिकाताराजधान्याम्

संस्कृतयन्त्रे

चीडपेन्द्रनाथचक्रवर्त्तना सहितम् श्रीमता हन्दावनचन्द्रभद्दाचार्येण यकाधितञ्ज । संवत् १८५७ ।

ग्रोभावाजार-मानीकत-राजकुल-जलिध-समुळ्णूशमानाय फेण-स्फीत-प्रवहमान-भागीरथी-क्छायापथ-विभात-कतविद्य-स्पतिकुल-नचन्नमालाखचित-वङ्ग-गगनमण्डल-मध्योदीयमानाय
प्राच-पासाख-साहित्य-जगदालोकियग्री-च्योत्साजाल-समुळ्यलाय
राज्ञे श्रीमते विनयक्षण-देववाहादुराय महोदयाय
सदयह्रदयाय सबहुमानमिदमुक्क्यते
यस्यकारेण।

शुद्धिपत्रम्।

बगुबं	गुबं	पत्ने	पक्री
शूभ	गुभ्र	₹ .	११
धोततां	धीततां	₹	१५
गङ्गे	ग क्के	x * .	१०
भीयान्	भौतान्	૭	99
पञ्चपाते	पञ्चपात्रं	~	€
तृत्यन्या	रृ त्यत्या	E	ę 0
तता:पाणिपादा:	सतापाणिपाइं	E	१ o
र्गाल	र्ग रह	૧ પ્ર	१३
म ङ् र्णन्ते	सङ्कूर्णन्ते	२ १	€
भेणित	भेगिति	२६	c
श्रुयते	श्रूयते	₹१	१३
सञ्चारेणर्स-)	वायोव्वंगैरिव-	1	
इवम्हती	विरहितो	}. ^{हर}	१७
जल •	जन	३३	8
ययो	ययौ	₹₹	8
सुखेभ्य:	मुखेभ्य:	₹₹	१४
स्यायमानः	संखायमन्ता	3 9	9

वगुर्व	या	पत्ने	पर्क
महसोते	मश्चसको	82	3
योधा	योधी	४२	ē
वागीयनामः	वाचस्रते:प्राक्	8&	₹
वागीमः	वाचस्रति:	8&	१६
कातन्त्रे ग्	कातन्त्रे	48	२
धुर्क्कंटे	धूर्जंटे	42	१०
विखेखर	विश्वेखर	90	१२

ये खलु मालतीवाचक "सुमनः" "ग्रब्स्थेकल मिप नाङ्गीकुर्व्वन्ति ते तु प्रथमपृष्ठायाश्वतुर्थपङ्किस "सुनसेत्यादी" "सुनसां व्याजतः स्नेरवक्केति" पठन्तु

वंशकीर्त्तनस्य शुद्धिपत्रम्।

षागुर्व	. ग्रज	प्रहायां	पङ्ग
भताः	भुताः	¥	११
त्रितरां	क्षितरां	¥	• २०
सस्तीय:	चस्त्रःस्तुः	5	ŧ
विनिकाय	विंनिमातुं	१२	ŧ

अश्रुविसर्जनम्

एवा धन्या धरणि-युवतीः केशसीमन्तसीन्तः'
स्निश्वन्योति-र्जयति नितरां रम्यसिन्दूरविन्दुः।
काशी यत्र त्रिपुरजयिनो हैमवत्या विलासयन्द्रार्दार्घाकति-सुरधुनी यत्पुरस्ताचकास्ति।१।

पद्धे येयं विससित सुवः कन्यकाकम्मूर्त्ति-गृंक्षाकाश्वीक्षणनमधुरा धूलिकाधूसराङ्गी। हिक्कोलेनाम्बुभवमन्तः स्वाक्षमान्दीलयन्ती-वोद्यानानां स्पुटसुमनसा सिम्मतोष्ठाधरेव। २।

दाथ्यां दोर्थ्यां सदसिवरणाभ्यां भवानीव भर्त्तुं र्था भ्रमूच्यीरसि सुरसरिचन्द्रचूड़ोपगूढ़ा। गाढ़ं वदा हढ़मपि सदाश्चिषपुष्पप्रहासा गङ्गाखूनां प्रचलपृषते: खेदसिक्तेव गौरी। ३।

गङ्गोत्तुङ्गे भुँजगवचिभि भेङ्गिमहिस्तरङ्गे रचत्तेव हुततरगतिः प्रस्थिताऽपि स्वरन्ती । चन्नपाद्रीन् दयितजन्निः फेनिनोहिन्स सर्वः प्रत्याहत्वीत्तरवरसुकी यां चिरं चुन्वतीव । ४।

येयं विश्वेषप्रिविर्याता नन्दनेनापि वन्दाः नन्दोद्यानं भृवि विजयते रिचतं भैरवेण । यस्मिन् नार्थ्यो विकसित ससद्वक्कनित्रप्रस्ना वक्को विद्यासुस्मतरवः पूरुवास स्मुरन्ति । ५ ।

यस्रोद्यानस्थच खतु पुरोजाङ्गवीर्य प्रणासी यस्यां मीना रजतबचयो निर्भयाः सञ्चरन्ति । गोधूमेनोज्जनितवटिका दाचिणास्यै व्यिद्यष्टा दाचिन्सै सीऽपिच जसभवाः सादरं भचयन्ति । हा

या धीताभि धैवलसुधया शूक्तसीधावलीभिः पुष्तीभूता इव विलसिता गावृभूता हिमान्यः। दीर्घा वक्ताक्ततय इव या लच्चणीयाः पुरस्तात् तासां कैसिद् विगलितहिमैजीयते जाक्रवीव । ७।

उड्डीनोर्डे वियति धवताः श्रीणवदा वकाका निन्ने गङ्गा सुरहरपदाहुष्ठतो निःसरन्ती । ध्यामे भूमेक्रसि धवता भारतास्था दधता यस्याः प्रयोगनित जन्मी वैष्टियसार्वमार्ग । ६। सपे रीयोक्यसम्बद्धाः माझवीवारिपूर्तः सृष्टांसोकान् चरितदुरितान् सादतैः संविधाय । उद्वाद्येवोरिसच नरकाद् घोरसंसारनामः सोपानानां विप्रसम्बद्धाः यह समोरयन्ती । ८ ।

चन्द्राकाराममरसितं याङ्गाभीं ईदेशे विन्दुं व्यावेष्यरमपि शिवं व्यासकाम्यां वसनां। या विश्वाचा स्वशिरित किसीङ्गारवर्षस्वरूपा यां भूपाद्या मनुजनिवहा सन्युभीता भजनो। १०।

जहीं बार्षुः सममिवातं सर्वेतः सर्वयोधे दूरासच्चामवनतनभी यां भुवं चुम्बतीव । सीधाः खोपर्युपरिवित्तसच्छेचिवदाः सुनदाः दृश्यनीऽभा दव भवभुवा खोम सीव्यना एव । ११ ।

मेघोसुक्ते विस्तवित नभीमख्यसम्बद्धी दिष्ट्रोदीस्मामिन सिमगिरैः सेखयः सङ्कलाणां। यथा विभाजितनवसुधा घोततां सीधधारा विभाणास्तास्त्रिपुरजयिनो यत्र भूमौ विभान्ति। १२।

वंशोभनी शिवसठवटा-शीर्षन्याः पताकाः वट्पविविद्यत्वनिक्यानन्तरः वान्तराच । विक्रिज्यासा सनसम्बद्धिताः मातस्येष सुन्धाः मुजानभानिय रविकरा विभात सूर्यरागं । १३।

कायान् खच्छैः स्मिटिकसहमैक्तरक्षैः स्मुटिक्क गैक्षाभक्ष्योत्तरसुखतया प्राणिनां संस्थितानां । यत्नोदीचां दिशि प्राणिनिमा भासमानान् वहन्ती स्मेरास्या किं कथयति यमं नापि चैते दिशस्ते । १४

दातुं काम्यां प्रपतितवतः कर्णमूले सुमूर्वी-भैन्द्रं तारं द्ववनतसुखस्वैव मूर्द्दः पपात । गीरीभर्त्तुः किस प्रशिकसोडर्त्तुकामस्य यस्तां गङ्गाभन्त्या विससति पुरः सा चिरं चन्द्ररेखा । १५

जनान्येव विद्यसरितस्तीयराग्रे: पठनाः स्तस्याः स्तोत्रं द्वाविषतिद्यं वासवस्यावनीन्य । दृष्टा गङ्गां स्कटिकधवनामुत्तरङ्गे भुजङ्गे सुत्वे भेत्राा सजनगणना यत्र ते पुष्पवन्तः । १४ ।

यस्या गङ्गास्ववतरिषका मूलनहेषु दीर्घे-स्वभोक्तनेषु तहपत्तवेस्वासनेषूपविष्टाः । भक्ता विषा विश्वतिक्षकाः प्रारभन्ते तुं यावत् स्वीयाऽर्घाऽस्विकत्वसुपादाय दातुं विक्रोक्या १९० तावहेवी रविषद्यते ग्रह्मते तद् प्रहीतं रागारत्त्रस्त्रिदगतिनी पारतीराविनस्तः । प्रधीपारान् स्मृणति च सृहस्तैः सहस्रेः कराणा मृसुतानां किल सुरक्षनी वचसा चालितानां । १८ ।

यस्या गाष्ट्राद्यदि सिललाट् भाजते चण्डभातः सर्वस्थालोसुषि सिरितोऽपीऽन्तरा मक्कयित्वा । . प्रकाल्येव प्रकृति युवित विध्वनायस्य चेटी तसाहस्तीलयित चतुरा प्रत्यहं दृखतिऽत्व । १८ ।

गङ्गास्प्रष्टे समित वियतः प्रान्सदेशे दिनेशः गङ्गे सम्बं चिरविर्चिते चेन्द्रनीसेन कुचे। ग्रश्नास्थानास्तरणवसनेनान्विते हेमस्प्रष्टं विम्बाकारं पशुपतिषठीयम्बसेतत् चकास्ति। २०।

बोमब्याजासाधरिपुरयं दिखणस्यां घिरः सं जला ग्रेते भुजगभयनो वामपार्म्बन सिन्धी। चौरोदास्वेर्डरिपरिवृतस्यायमंगः पुरस्तात् नो गङ्गा नो रविरपि गलाक्षस्वितः कीसुभीऽयं।२१।

निं पूर्वा दिन् किस दिनकरव्याजतः सर्पेसुद्रां रदसाङ्गैं विकिद्दति तथा स्वीमसूर्तीः प्रयम्य । नित्यं प्रातः सुरपतिदियो व्याप्ततं तां विस्रोक्य स्रोरास्येयं स्मुरति परितः काम्रिका जाइवीव । २२।

प्रातर्गङ्गाश्वसि युवतय स्तीरसीपानलने मन्नाः कण्डावधिसनयनाः सूर्यमालोकयन्ति । तासां सीराननरचनया लोचनानां प्रपातैः सूरं दृष्टा सरसिजवनात्मत्र प्रक्षे स्कृटन्ति । २३।

भामक्रीवाऽभसि युवतय स्तप्तहेमावदाता भाक्तस्या रजतधवलीक्रासिवीचिप्रवाहेः। स्मृष्टा नद्यान्कुरितचपले येत्र स्रमाभि भीसो रीप्यैरिव कवस्तिता मान्ति जास्वुनदानां।२॥

सायं प्रत्यूविस च परितः प्रत्यष्टं काशिकायां घण्टाकांस्यध्वनिभिरसक्तक्काष्ट्रते र्भर्भराणां। देवागारेष्यय खलु घटा यत्र निर्भ्रष्टनानां धूपैर्दिपैर्धवन्नविससमामरान्दोन्तनेन। २५।

यखां नित्योत्सवरचनया सौकनित्रोत्सवानां संवर्षन्ते पथि पथि चिरं हेतवः पख्यमासाः । वासासीनां सनयनमनोद्वारिपञ्चासिकानां यत वेद्यः प्रकारसस्वसृक्षवानां ससानो । २६ । दीर्घागरिषु बष्ठषु सतां काकिनाराजसुच्य-द्याधीयानां धवलययसामसस्वाणि यतः। येषु प्रायोदयमघटिकाभ्यन्तरे लोकयाताः संसूयन्ते वचननिवद्या दीयतां भुष्यताचाः। २७।

एको विद्यालय इष्ट महान् संस्कृतव्याह्नतानां समाज्ञराज्ञेरविष्युक्तिर्धेत्र निस्वं चकास्ति । विद्यागारे किल विलसतो हेच गीर्व्वाणवाष्याः कस्त्रीराणामपि नरपते हरिवङ्गाधिपस्य । २८ ।

घण्डामार्गे नवघनघटाध्वानसुत्पाद्य तीवे रखाः प्रस्तदृगुद्दगजनिमेर्योजितस्यन्दनानि । धावन्युचैः पथिकनिवज्ञान् यत्न सुर्व्वन्ति भीयान् येषारुद्धाः स्वमणचतुरा गण्यमान्या व्रजन्ति । २८ ।

सेयं काश्री भवजनिषे यौजिकीव प्रणाली
गम्तव्योऽन्यो भवजनिषि निस्तरक्षोऽनयेव।
यित्रम् गौरी किल शश्चितना वाड्वो नेव्रविक्र र्देभः कामः समजनि यतो यव गक्षाप्रपातः। ३०।

दुर्गादोभि भुंजगपतयोऽसङ्गृता रज्ञजातै: कोङ्गीदस्युमचिस्टस्में प्रस्तियः। योऽयं साचादसतपयसां रामिरेको महीयान् यखार्वेऽदा हरिरपि भजन् योगनित्रां मयानः ।३१।

सीमन्तिन्यो इरियनयनाः ग्रातकुष्मीकवलाष्टः स्नाता गङ्गाऽश्वसिच चपला वालिका वा जरत्यः। वाला हड्डाः पथि पथि चिरं यान्ति तस्यां युवानः कत्वा पाणी सुरगयमठान् गर्गरी-पञ्चपात्रे। ३२।

गङ्गावचस्यपि तरिवटा भाषमाना बजन्ति स्तोकं तस्या द्रुतमपि जरमाङ्गलास्थोत्सविषु ।
तासां वचस्यपि सुवदनासादकास्ट्रो युवस्थो
दृत्यन्यासामपि सुनयने भूलताः पाणिपादाः । ३३।

किन्नयः सुखरघटनया कोकिलास प्रसिद्धाः नासां रूपं लिप च मधुरैः सुखराणां प्रवाहैः। गायन्युनैः सुरसरिदुरो नीषु सद्गायिकानां श्रेखो धन्याः सुललितपदं रूपलावस्त्रवस्तः। ३४।

उत्तिष्ठन्यः खरस्रलिता गीतयो वीचयसा गङ्गाभङ्गा इव विश्वसुखादभासयन्त्री मनांसि । यूनां ताहम् चपलनयने गीयिकानां सुनैत्रैः क्रीइन्ह्यासां सुनववयसामङ्गलावस्त्रभङ्गाः । ३५ । तासां ताहक् सरस्वलिते वसगीतिप्रवाहें नृत्यन्तीनां विगलदस्ते मूर्क्कनामूर्क्कितेस । मन्ये विष्णोर्द्रवसयतनो जोज्ञवीमूर्त्तिकाया नाद्याप्यस्या भवति च पुनर्गावृतीक्कृत्मितायाः ।३६ ।

भायाता येऽखिलजनपदाद्ये च काम्यां वसन्त स्ते ते धौता दव इरपुरसन्द्रस्य्योपरागे। गङ्गागर्भे हुतमवतरत्य्येव वारिप्रवाचा वर्षाजाता दव किल भुवोमग्डलात् खातमध्ये। १७।

भागङ्गाऽस्थोऽम्बुवतर्णिकाश्रेणिषु श्रेणिवद्याः प्रासादानां जलधरघटाचुस्तिचूड्गन्तमेषां । प्रोयद्दीपावलय रष्ट्र तास्त्रत्व दीपान्तितायां भाजनोऽन्यां सरिति च तयोद्दीप्तकाशीं स्टलन्यः ।३८।

ताभि दींपाविकिभिरिव सा काश्वितयं तदानी
मापाद्वायं विलसदुरिस स्नेरवन्ता विभित्ते।
कण्डाद्वियुद्युतिमणिमयीः त्रेणिका मालिकाणां
गङ्गावचस्विप सुसुक्तरे स्वं पुनः प्रस्तीव। ३८।

तस्यामस्यां सचन निषुणा स्तन्तवायाः स्ववाय-यास्या स्वा न्युरितचटिते कटिनीः गाटिकासाः। कुर्वेन्यम्बद्धः च न स्वसा स्वन्तुभिः कोमजाते-विद्युषोतेरिव विजविताः म्हामसा नेघमासाः ।४०

ब्रह्म ब्रह्मव्रतवदनतः शिखते गीयमानं कैसिद् विद्यार्थिभिरतितरां काऽपि वा तत् सुताथां चन्यस्वन्ते पटु वटुगर्ये रङ्गजातानि सम्यक् तैस्तै स्तस्य स्मृतिष्टतियुतैर्ब्रह्मचर्थं वजिक्षः। ४१।

गीयनी वा ज्ञचन वटुमिर्नाम सामान्यसुषा सुवार्यनी सचनजटया जुलविद् वा यजूंवि। सम्मञ्जनी ज्ञचन च ऋच स्ताहमै: सुखरेबां भिक्षनी वा गुवबदनतोऽप्यर्यजातानि तासां। ४१

सम्मळानी कचन च पुराषाणि मेधाविभिर्वा व्याख्यायनी कचन च मधुसाविभिष्टखरेण। संत्रूयनी विषयस्त्रमती: प्रस्थिती: संस्कृतिन्थी भन्नादिनी: कचन मधुरं स्त्रूयते चन्द्रचूष्टः। ४३।

स्नुताऽष्यत्र तिनयनवधू सिक्यम् त्याः सकाये सङ्गीयनी विश्ववदनया सत्तरेसात्पदानि । भैरष्या वा सुनिकतत्त्वा राजवणं स्वत्वा देवी देवी जिन्दा विज्ञानिक जानयनी सजीतिः । 8 भतुम्बादैः पथि पथि महानिदितेईसताबैः मङ्गीर्खन्ते हरिगुषकथा जर्ददीभिनेजितः। वाद्यैवेग्रीनिनदसहितेभीभीरीषां सदङ्ग-धानैरहाध्यनि च पतितेनृत्यविद्यक्षेठितः। ४५।

स्निम्बन्धार्तेर्गुक्निवसती क्रुत्निष्त् पाणिनीयं तद्वाष्यं वा विमक्तमितिभः पत्वते सानुरागं । वङ्गीयैन्त्री क्षचन हरनायादिविहस्तकामात् नयं वा स्थाकरणमभितो स्टब्स्ति सुग्धवीधं । ४६ ।

भारत्या वा कविजनतुतिप्रज्ञयाऽभ्यर्षितायाः त्रूयन्तेऽस्यां कवन समनः कर्षपीयूषचाराः । पादन्यासात् सुललितपदादुत्यितानां मनोज्ञाऽ लङ्काराणां ध्वनय रुष्ट यैनीयते स्वर्नुलोकः । ४० ।

कापि न्यायोत्तरसजसधितिति रत्तरक्रे-रावर्त्यन्ते परिणतिधयोऽन्यत्र जातत्रमा ये। ध्यानेनाऽद्या परमपुरुषो सभ्यते याद्वग्रेन न्यायाऽभावोऽपि स न सस्मस्ताद्दग्रेन त्रमण। ४८

यतेवाऽदित प्रविश्वितविधा क्षेत्रकीय नाम्ब-

तत् प्रत्यसं भवति क्षस्त भाववत् साराप काव्य धन्या दृष्टिर्भृति विजयते नव्यनेयायिकानां । ४८ ।

वेदान्तानां क्षपन पठनं सामिनां सम्बठेषु ज्ञेया स्नान्तर्भवति हि यया दृखते विख्वमितत् । स्नान्त्या सर्वे विजयति जगत् त्वच नाहच नासि स्नान्तिनीसिन् मम निगदिते केवलं सूयते यत् ।५०।

संख्याना वा क्रचन पठनं क्वाऽपि पातस्त्रवानां मीमासा वा क्रचन निषुणै: पळते जैमिनीया। क्वापि ज्योतिर्घटितमपरै: शिखते शास्त्रजातं कैसिकागोति: सुभगनयनैर्दृष्यते मानगेहे। ५१।

योगिन्बोऽन्याः कचन निष्ठणा सोचने भूसताऽनाः पद्मन्वेवाऽनियमनिमिषे चन्द्रचूडं निवेध्य । भूचेपेषोत्मसितमखिसं केनचिद् येन यासा तासा दृश्यामपि संभगवान् बध्यते भूसताभ्यां । ॥

यासामात्रावद एव सक्त् सुख्यरः खेरभावं सं चापसं वित्त परिहरन् वर्तते भीससुनः। शब्दनी ते सुद्विटिपनः सीस्त्रासानि वेन मोत्त्रियाना सर्वास्त्रिता मास्त्रवा विकासारिय।॥ क्षापि ग्यामाचरचग्ररणः कोऽपि योगी विकोपी भूचापान्तः गरमिव चिरं योजयवेकदृष्टिं। गाण्डीवीव दृपदतनयां चेतनां लब्धुकामी लक्षं भेत्तं रहसि यतते निस्तो निस्तरकः। ५४।

विद्युकाला जलधितनया वायवीऽपि प्रमन्ताः
प्रोत्स्रज्य स्नामपि चपलतामत्न कुत्राऽपि भान्ति ।
प्राचास्त्रन्तःपुरमधिगता योगिनां ते कनिष्ठाः
कार्यामस्यामपि धनवतां मध्यमा मन्दिरान्तः । ५५।

क्षापि ग्यामी नवजलधरी राधयालिङ्गिताऽङ्गः
क्षापि ग्यामा ग्रवनिभग्निवीरःस्थले आजमाना।
चापं विश्वज्जनकतनयावज्ञभः क्षापि रामी
दुर्गो क्षापि विनयन-मनोङारिणी सङ्कटाऽपि।५६।

लक्षीः कापि स्मुटयतदलक्षीरवक्का सुनैता कापि ब्राह्मी सितसरसिजप्रेचणीया विभाति। वाष्या लक्ष्मा विलस्ति पुनर्माधवः केयवोऽपि कापि त्रीमाञ्चयति नितनां भैरवः कालनामा।५०।

हेरस्वोऽपि क्षचन बहुधा दुष्किराजादिमूर्स्वा नानास्थाने विवसति प्रनर्श्विङकपी महेगः। देवोऽगस्त्रेखर **रह** पुरो भाति केदारनाथो वोरेगादिःज्वर-**हर: पुष्पदन्तेखरोऽ**पि । ५८ ।

कायुहीप्ता विलसित चिरं नायिका योगिनीनां गङ्गारोधोधवलभवनाऽभ्यन्तरे योतलाऽपि। एकं सिन्धुइदनदनदीनामभिः स्थानभेदात् तैस्तैः यन्दैर्जलमिव यिवबद्यासभिद्यतेऽव। ५८।

नाना वस्तूनि च बहुफलान्याददानाः सुगन्धैः
पूर्णे पात्रं दृष्ट्रपि पुनर्निर्मता नाटकुट्याः ।
यभो यभो धिव धिव वचः सुखरं व्याहरनाः
सन्तः सन्तः सन्तः कति कति पयःपूर्णकुभान् वहन्तः॥

राविरेकप्रहरसमये धूलिपादा विश्वहा विश्वेशस्य प्रतिनिशममी यान्ति निर्मेञ्छनाय । भक्ता भक्तिप्रचितकुश्वहाः कच्छलम्नोत्तरीया स्तस्यामस्यां किल बहुजना भस्त्रभिर्मूषिताङ्गाः । ।

काम्यां विखेषार-पुरहरो भाति नित्यं विनेवी देवो यस्योपरि सुरगणैः सूयमानस्य मभोः। हेको दाका मठघटनया सूर्सकीर्त्तिप्रचारो जन्ने रान्नो सुवि रणजितः सिहविकान्तमके। ह दक्षाच्ये नाऽपि च सुपयसां धारयास्त्रापियत्वा निक्षं गाष्ट्रेधेवलसन्तिचैयेत विश्वेष्यरस्य । धन्याः स्तोतं सुनन्तितपदं सुस्तरं भित्तमन्तो गायन्युचैईरहरहर व्याहरन्तो रजन्यां। ६३ ।

दिग्भ्यः सर्वाभ्य इव युगपत्तावदेन्द्रीमुखीभ्यः प्रागत्याचे शिवशिव वची व्याहरन्तः समन्तात्। ते ते धन्या गलदविरल-प्रेमनिक्राम्बुधारा-स्तं विषेगं कुसुममुकुटं यक नीराजयन्ति। ६४।

कर्पूरैकच्छिलितइविषा ज्यालिता दीपमाला-रुख्न्दोबस्वैदिव बद्दविधैर्घूर्णयन्तोऽपि घूपान्। इन्द्रायीः क्षिं दिगधिपतिभिः प्रेवितास्ते पुरोधी-बाता विखेखरमभिमुखं तैर्ष्टिं नीराजयन्ति। ६५।

गायन्थन्थे डमहनिनदैर्डिण्डिमैर्गानवाद्यै-र्नृत्यन्यन्ये प्रश्चित्रपदेर्डस्ततानं ददानाः । येषां भावोच्छित्तितमनसां व्याप्रतिं तां विलोक्य षावृां धारा गत्तति च सुद्दुः किं पुनःप्राणवन्तः। ६६।

भत्युद्रिताः वनकिवरणा भावसंसित्तचित्ता नार्यो हेमाभरणविभृतेर्हेरिकेर्योतमानाः । कुर्वन्त्वया गिरिममिरसि स्नेरवक्कारविन्दा हेग्रः स्वर्गीदिव भुवि गताः पुष्पष्टष्टिं समन्तात् ।६७।

नायों गीर्याः प्रतिश्व इव भूलतानां विवासैः सन्धीक्रत्येव च सन्यनाः कार्मुकाणां सष्टस्रं । इष्टिव्याकात् क्रसमिविशिखान् कामसेनाः समनादः वर्गनीव स्मरहरशिर स्तव क्रत्या शर्यं । ६८ ।

हन्दाराखाःस्मितसमनसामस्नतीनां सहस्ने-रक्षोभेङ्गोत्पवञ्जनघटामानयाऽभ्यर्चितस्य । प्रासादोऽयं स्मुरति डिमिनेशस्य राज्ञः पुरस्ता-हीवीऽस्युचैरिष्ट किस महान् जानकीवक्षभस्य । ६८

वंशीनादः सुरवसितषु श्चनसनेषु तादृग् यामे यामे भवति च्हुलो यामिनीवासरेषु । ध्वानै: सार्षे सुदिरमधुरैमें हुरैदुंन्दुभीनां यस्मिन् लभ्या स्वमरयुवतिभेष्टृति: को किलाभि: 1%

भूमि खामी भुवनवलये योऽवदादिप्रसादे त्याख्यां धत्ते पुरहरचनखामरामैकमतः। हमीत्र धनीत खतु विजयते यत्र घनीयुविम्नं युत्तं तेजी विकिद्दति विदंतत्र तहस्वते नं। ७१। प्रांसादेशीय नतु दिनसियं ज्येष्ठतातस्य पत्नी बक्तीः साचादिव विजयते तस्य नारायणस्य । मूर्त्तिः प्रोद्यालणकाकिरणा किनु नारायणीयं संस्थास्याः स्थयति चरणी जाक्रवी विज्ञुपादी। ७२।

कालीमूर्त्तिं परिद्वतवती श्रीप्रसन्नादिमया-खां या गौरीं ततुमिन्न यदा विश्वती स्त्रीकरोति। संज्ञचाऽक्वं रहसि स तदा वामवान्नोः कफोणी तसामातुनिवसति चिरं कालिमा कालिकायाः। ७३।

यखां काष्यां भवजनिषेखीरभूमी प्रपत्ना-नुइत्तुं किं यमभयजड़ान् मोहिनीं तां सुमूर्त्तिं सां सीकुर्व्ववस्तमधुनाऽप्यवदानच्छनेन व्याजनाऽस्या विकिरति हरिमीनविभ्योऽपि तेभ्य: १०४।

सौन्दर्थे वा निखिलजगती हीरकाचां युतिं वा लावखां वाऽष्यस्तलहरीं चिन्द्रकां वा तथेन्दी:। प्रानन्दं वा सकलविषयं कलानां वा कवित्वं सौगन्यं वा कुसुमनिवहस्याऽपि सङ्कृद्धायस्या:। ७५।

नो जानीमः कवमपि तथा गावृतायां निवेम्बोत्-कीर्षं यस्या वसुरिव वसुः सङ्कितं विस्त्राता । नेतै: पद्माञ्जलिभिरपञ्जत् पूज्यते यत् समन्तात् सर्वेदेवै: सुरयुवतिभिर्मानवोसानवैस ।७६।

या ब्रह्म्ब्या ग्रसितवपुषिवत्रमस्या न भिना माताऽस्मानं स्मितयुतमुखी दीव्यते चावनेत्रा । पन्तः ज्ञाचा सदयद्वदया गीरमू सिंदभाना पाची पादी ग्रतदन्तिभी विद्यमानी च यस्याः । ७०।

यां भूमूखोरिस स रसिकसम्द्रचूड़ो दधानः खामास्पर्धाननुभवति किं विस्तितः सस्तितः सन्। स्टडा देवो रविजलमबद्ध्योमसोमादिमूर्खा यां तां दुर्गां स्नरति भगवान् पश्चवक्कः कृतार्थः। १९८।

रामोरस्कासुरसि दश्ती काणिका कृष्णकण्ठीं तां किं मूर्त्तिं किल पश्चपतेर्मेन्यमानाऽद्य द्वष्टा। दक्षा कामं सुवि विजयते चादचन्द्राऽर्दभासा च्योत्सागीरी सुसुजसुजगा या द्वाधिष्ठिताऽस्ति।

लेने योमाचरणजनि मं हारि सिबेखरी यद् वर्त्ता नेत्रं मदनदहनं चाव यस्या विलोका । स्रोरास्त्राऽभूकरणजननं मृत्तिक्रस्य पार्तिः यस्याः स्थाना स्वति हृद्यं व्रेडितेस्तेक्ट्सरेः। ८०। वेयं नक्षा दुरितक्रकादमपूर्वाक्षकानाः कक्षीः साम्राद् वस्तितरकात् कीर्म्मते सर्वकीर्मः । विश्वेषां नः सदयद्वदया माद्यतां विश्वती या गभींद्रृतं जगति सुषुवे नैव गौरीव सुनुं। ८१।

या राधावसभञ्चतपदामित्रकच्या तिटिन्या
गङ्गाया वा निवसति तटे सर्व्यकर्भप्रवर्षां।
येयं नारायवज्ञतनति स्तप्तहेमावदाता
दातारोऽपि प्रवतिकृषका भिचवी यत्पदानं। ८२।

बद्धीर्थस्वायरवकमसस्यायतो भाति नित्धं सीदामिन्धां स्मुरवमि तत् यसिङ्का चकास्ति । योगेशो यां इतष्टतमहद् ध्यायति ध्येयमूर्त्तिं यसाः पादौ प्रवमति चिरं जानकीवक्कमोऽपि। ८३।

यसाः सेहो निपतित स्तप्रस्थरामप्रसादे चेने नित्धं वसति वसती सत्यपि स्वातुरक्ते। पड्वेरचे वितुठति स्रीन्ट्रेण पञ्चाननीऽस्था यत् कारुखं पुरितनविधिने पादपद्मार्पणेन। ८४।

येयं गौरी सम्बद्धस्त्री साऽपि कासीम्बाद-जेरास्थाभास्त्रसम्बद्धोन्यसमेगी सुवेशा। हेत्तं पापाऽस्रक्तसमितः सम्बद्धाेषमृत्तिः विभावोष्टासरस्टाससं पाटसं वा विभक्ति । १५॥

यद्वामाऽङ्चेषपरि च तिला भान्ति रक्ता ललाटे ग्रुष्मांखर्दे विलसित तिलो भ्रूयुगाधस्त्रयान्यः। तादृङ् मातुः स्मुरति चित्रको तैर्दनोर्नन्दनानां भक्तानां सा वपुषि दधती ग्रङ्गते रक्तविन्टून्। ८६।

स्रोपासुद्रापितमनुययी सा किसु स्वर्गभूमी: काग्रीसोभादिइसुनिवधूर्भूय एवाऽवतीय्य । कायव्यूहानिव विद्वधती भर्त्तृक्षमसक्रा यसाहास्यादिह न पतयः सार्थकक्ष्यं समनी । ८०

षद्याऽभ्यर्षा भवति महती दुण्डिराजस्य तस्य स्वी वा सस्त्राः सवितुरिप वा भैरवस्यापि देशाः। इ.सं नित्वं भवति जसधावुसवी वारिराग्रिः स्कीतस्त्रस्तिन्ति जनतया वर्षते गास्त्रमानः। ८८।

प्रासादोऽयं विससित पुरो इस्यतामनदाया यो जायाया: सारविजयिन: शैसजाया जयायाः यस दारावधि सगडमां सन्दरीमां सदस्त-व्याजनानं विविद्यति दिन्दं भिस्तिभ्योऽसपूर्यो । प्र भी प्रत्यिं निविद्गनसदिष्टेचयीयं वद्यन्तं स्नाता गङ्गाऽश्वसि युवतयः एष्डदेशे सुठन्तं । नार्यो गीर्यो भववधु भव व्याद्वतिं व्याद्वरन्यो यस्मिन् यान्ति ध्वनितवसयाः वैश्वभारं वद्यन्यः ।८०।

यं प्रासादं सुडुपतिरुचः सम्यगाव्यत्य वस्ता सङ्गुर्णन्ते हरिणनयनाः स्नेरचन्द्राननास्ताः। योऽयं साचाद् भुव दव महारक्षभूताभिराभि-स्ताभिर्हारं विरचितमिव खोतमानं द्याति। ८१ ।

तिस्मन् सीधे विष्टसितमुखी पायसै: पूर्णपात्रं वामे पाणी गिरिशग्टिषणी दिख्णि दिख्लितास्य । विभाणेयं विलसति जड़ो यत्मसादादभुतः खन्नोऽप्यन्थो न खलु भवति काऽपि काग्यां कदापि।८२

दश विश्वीरस्तकलसं बिश्वतीं सूर्त्तिमये भानं कान्तं सारहरमिवालोका तां मीहिनीं या। स्रोकुर्वाणा सुरुचिरतनुन्तामपेका स्रितेन श्रीकराठायाऽपैयति सस्तां पायसाककालेन। ८३।

यसा देवा विससदुपतैः प्राक्त्ये स्नेतकचैः प्रासादस्यं प्रवित्वदिते प्रद्वयाभूनताकैः। वेविद् भक्त्याऽष्टभिरभिमतां मातरं नंनमन्ति प्रीतित्रदासहितमभितो वाग्जज्ञा भाग्यवन्तः । ८४

भक्त्युद्रे के गेंसदिवरसप्रेमने वाम्बुधाराः के चिद् बहाञ्चित्रचनया तत्र दण्डायमानाः। यां पय्यन्तो च्चनिमिषदयो रोमद्वषें दधानाः स्तोत्रेणोचे रवनतियरः कस्वराः संसुवन्ति। ८५।

केचित् पुष्पाञ्चलिमलिकुलैराकुलं गन्धवन्तं सन्तः कालागुरुरसयुतं नहमालूरपत्रं । ष्टष्टं सप्टं सुसुरिभरसं रञ्जनं संवहन्तं यस्या देश्यासरणकमले सादरं निचिपन्ति । ८६ ।

काश्वितार्थोऽस्त्रलिपुटधतैः पुष्पभारेत्दारैः सिन्द्ररेषानतप्रयुद्दयः स्वन्दमानेन गन्धैः। दोपेर्भूपैः सुरभिभरभिप्रेचणीयैर्दूक्तै-रक्ताऽसक्तैर्विमसमुक्तरैर्यामिमामर्चयन्ति। ८० ।

सर्वोऽदृष्टप्रवलमक्तोत्पादितोयस्यक्ते बन्ना गीर्था इव भवजने विम्बितास्ता विभानि। पादी पाषी किस भुजनते स्नूनते सोचनाभ्यां वन्नं हास्यं तदिव समसन्त्यन्ययासं कथनु। ८८। यितिकां स्वयं महायं सिक्तमाही हाने विक्रमाही हाने

नार्या नार्यः स्विभितद्वदयाः प्रथमहामाहर्गना स्तोतं तस्याः सुकत-रिहतास्वद्य ते नोचरन्ति । हा किं जातं शिवशिव वची भग्न-कपटा गदन्ति खासोच्छासं मिलनवदना दीर्घसृष्णं त्यजन्तः ।१००।

तास्तास्तावत् स्तिमिततनवो धेनवो नो घरित सग्ध्यस्तासां विलसति पुनर्नप्रयासोऽद्य कस्मात्। चचुर्थ्यः किंगलति सलिलं तादृशीनां जड़ानां वलास्तासां कथमपि पयो नो पिवन्ति स्तनिभ्यः।१०१

गक्षे चेयं श्विमगिरिस्ततासूर्त्तिरच प्रभाता-नो प्रोज्ञाति स्वगितकरूणा स्वप्रभाभिः प्रभावैः। स्वानास्थेन्दुः कथमपि करे दर्विकामाददानाऽ-भव्यर्षाऽस्थाः किंन भवति पुरः पुष्पकं नेस्वते यत्।१०३।

ज्योति:पुञ्जोक्जवसजसधरम्बाममूर्त्तिर्भवान्या यास्ते गङ्गाइयमखससत्तीर्धपन्नीत्रदेशे । सेयं काली सजलनयना सच्चते रोदितीय भान्तिःकाःस्मितमपि सुर्खेनाऽचादेव्या विभाति।१ः

काय्यां प्रयादमरकुलगुरी रिक्वरीनन्दनस्य स्निम्धच्योतिर्जाङ्गतमपरं सीम्यमूर्खादनतारं। सोद्यं कस्माच्छित शिवकुमारोद्य रीक्यमानी वक्तुं नाद्वस्थिप न किमप्रि व्याकुली वाष्पभारे:।१८

सुब्रह्माखी ब्रतिमन्द वन्त्त्व याचिको याचवस्का-प्रस्थः साचाळ्यति जगित ब्रह्मनिष्ठाप्रतिष्ठः । ते सीमांचे चिरमनुगते यस्य पूर्वीत्तरे हे सोऽप्यसूचां पटलविकले लोचने नाऽद्य मार्ष्टि ।१०

योऽयं साचाद्दविक्कसगुरोगीतमस्याऽवतार-स्तकस्याऽध्वेः विक निरवधेर्धाजते वर्णधारः। यं सेवन्ते नरपतिभिरोष्टीरकोद्भूतभासः सूच्ये तस्वे विकसित मतिर्थस्य नित्यं वृधस्य। १०

ये ये वक्तप्रमुखवसुधाखण्डतोऽध्येतुकामा वाराण्यां विमलमतयो यान्ति विद्यार्थिनोऽस्यां चङ्चियंस्य स्ट्रमति न रजस्तेषु कोऽप्यस्ति किन् प्रोवाहियौ: प्रजतिरचितेरईचैरिर्धितस्य । १०७। नो विच्छेदो भवति दिवसे पाठनानां बहापि प्रायो यस प्रधिनतमते र्वायवैश्वेषिकासां। मीमांसानां श्वतियतिवरीधस्य पूर्वीत्तरायां सात्तेंप्रयोरिप विससतां सांस्थपातस्त्रसानां। १०८।

यस्रैवाऽङ्गादिव निरगमत् सुन्दरत्तीर्मुकुन्दो । नित्यानन्दो यमिष्ठ भजते यत् सदानन्दसाभः । वेद्यो वेदान्तिभिरपि तथा यः पुनन्दार्क्षगम्यो गङ्गेगोऽयं यमिति समितिः पण्डितानां ब्रवीति।१०८।

देवं सोमं स्विधिरसि सदा यः सुमूर्त्तिर्विभिर्ति त्रीर्थ्यत्कर्ग्छे विससित महादेवसेच्यो य एव । प्रकृषिं यस्य प्रमथसहितो वन्दतेऽसी सुरेन्द्रो यं राजिन्द्रः प्रसमित सस्त्वानकीनावरामः । ११०।

यसाऽक्तिं त्रीकरपरिचितं पूर्वचन्द्री द्वार त्रूयनीऽस्थां सहरिहरनाथादिशन्दा यतीऽस्य । काम्यां देव: क्रिस्त प्रसिद्धती भीगिभियींनिभियीः साचाद भक्त्या गुरुवरचती सभ्यते योसनेन । १११ ।

पत्नी गीर्थार्शत च यमिम कुनान्थट-पुषी: सर्वे तन्त्र' निगदित्तामिक वीत्तर पच-वक्तः। तस्तं द्रष्टुं सकसमिव यो जायतेऽपि विनेवः साचाहेवः पद्मपतिरिव भाजते योऽहितीयः ।११२।

यो नो धत्ते गुरुरिव बुधोऽध्यापनायां कदापि यन्यं कश्चित्र च नयनयोस्तत्रपातं करोति । कस्मासीनं पठन-सुखरं तदृग्छदं सेवतेऽख स्तक्षीभूतो वजति च श्चचं सोऽपि कैलासचन्द्रः।११

वात्यानां यो श्रुपनय-विधिं दर्भयन् नृन् सहर्षः (१) म्रास्त्रुत्-वर्षादरचयदपि प्रेमपूर्त्तिं समूर्त्तिः । टीका वह्नीर्भणितचतुरः प्राणयत् प्रार्थमानी योऽयं स्रोकां स्तरस-नयनान् प्रीणयन् विस्तितांस। ११

यत्-सन्धानं नर-पति-शिरो-हीरकैरचैंग्मानं वक्के खेतेषपि विस्तितं वर्षते वर्षमाने । यो सेखन्या विजयमभजत् सर्खतः सर्ख-दिग्भ्यः सीऽत्रृष्यस्मिन् विद्यजति कथं क्रत्रतो राममित्रः॥

योऽयं धन्यो धनिषु विनया-भिन्नतां तामभीर (२) नी जानाति प्रसरतितरां यस्य नित्यं नवित्यं।

⁽१) बङ्गबङ्गिपाध्यावस जीवती रागनिजयासिक्योवर्यनिक्

⁽२) त्रीमतोराजेन्द्रनाराजयवासारतसा ।

पावाचिवाऽप्ययसि पयसीचानचा यस्य वुषिः सूक्षा-प्रेत्वाः प्रविद्यति हृद्या सर्व्यवास्त्र-प्रतिष्ठा ।११६।

सामञ्जर्य सकल-विदुषामयतो दर्भनानां कर्त्तुं योऽयं लिखति रुचिरं सत्य सन्धो निबन्धं। न्याय ग्रन्थो भ्रमति भुवने वङ्गभाषासु यस्य त्रीराजेन्द्रो विलपति कथं गास्त्ररतः पुरस्तात्।११९।

विद्यान् घीमान् प्रमथ-पदभाङ्-नाथ-नान्ना प्रसिद्ध (१) स्तर्काद्याख्यां वित्तसति युवा भूवणान्तां दधानः । शीर्थे धे थें वेदस्य अविकाता नगर्थायकास्ति यः स्नार्त्ताऽध्यापकपदगती राजविद्यावयेऽद्य । ११८ ।

स्त्या बुधिविंससित सतो यस नित्यं समन्ता बानामास्त्रेष्विष गुचवतो विश्वतः स्नित्यसूर्त्ति । सोऽयं ताराचरणतनयो हा गुरो त्वं कुतोऽसी त्यास्त्रे कीष्यैर्व्विसपित कथं सिश्वितैसीर्व्ववीसिः।११८।

हिला तकींपरि परिषदां चीमतामप्रभूमी (२) यो जीवानां प्रवित-विभुतां प्रत्यमेकं खिलेख।

⁽१) श्रीयतः प्रमधनाच तर्वश्रवस्य ।

⁽१) वक्षवक्षेपाध्याकृत्व जीवती राखावराव जावरत्रसः।

वेदान्तानां मतमपि तवीच्छिय वियोतते यः सीऽयं बासाद् विवयतितयां इना राखावदासः ।१३

जर्बे तिष्ठिविव इसधरी व्याप्टितं यस दृष्टा प्रीत्युत्पुत्ते नयन-कमसे नियसे दे द्धार । यो विस्त्वातो जगति जगदीयस्य तस्याऽवतारी सोके सोकेभेद्दति मधुरानाय एवीऽप्यगायि ।१२१।

विद्या-गारं विस्तवित महत् संस्कृतव्याह्नतानां (१)
यत् सन्नाद्गाः विपुस्तकासिकातानगर्यान्तु गौर्थाः।
योऽध्यक्षत्यं निजशुज-वसैः प्राप विप्रापकर्षे
इत्रीत्वर्षेरवनितिसको विप्रसुर्व्वन् हितस्य । १२२।

भानीय स्रोऽभिमत-विषये बुषि-बुक्ति-प्रभावे-यः सम्बाद्धाः प्रतिनिधितमं प्राज्ञवद्वाधिपं प्राक्। विद्योक्षाको जनदुपज्जतिं साध्यामास सम्बक् स्रोधें धेर्षे सुदृद्दमनसो यस्य नित्यं चकास्ति। १२३

समाजी हि:-पठितमहता सन्दर्भनादिमेगी-पाधायाच्यां जगति खसु यः पन्छिताऽधे ससर्व।

⁽१) वकावकोराध्यावस्य वीवारे नहेमच्या सामस्य ।

तेम्बी दस्या स्वयमपि तथा तेन समूपितीऽभूत् सिम्बीरज इरिरिव सरीम्बीऽपैयन् नीसुमन । १५८।

सार्ते वेंयाकरण-क्रितिभ स्तार्क्षिकैः काव्य विक्रि मीमांसाजैः सदसि सततं विज्ञ-वैदान्तिकैस । सांस्थावार्यैः स स इव महाविस्मिते वींश्वति यः कंसागार हरिरिव जनै रङ्ग-भूमि-प्रतिष्ठः । १२५ ।

प्रभ्युत्यानं यदिष्ठ भजते संस्कृतानां सुप्रिचा पूर्व्वारभस्य तु फलमिदं तिष्ठ यस्त्रीद्यमस्य । हेमनोऽभ्युचितमितितरां घालयो यद्यभनी पाहट्-चेष्टाफलमिदमिति जायते नेन वा नी । १२४ ।

योऽयं धन्यो घरणि-तिसको धारया चेष्टितानां ध्वस-प्रायां किस दिविषदां जीवयामास भाषां। नेदाचेषु प्रपतितवर्ती ताप-जातेषु तप्तां स्निषां वस्नीमिव नव-चना वारि-इस्प्रीव दिस्सा।१२९।

तेवूत्तीचेंद्र च विकिरित च्छात्रसचेद्र तैवां सम्बाद् येन प्रखदित इतीऽध्यापकानां गयेद्र । नित्यं भूरि-इविष-निवद्यान् चेत्र-जातेद्व सम्यग् वारोधारा चन देकः विरं वासिती सादतेन । १२८ । भावां सभामपि दिविषदां नीर्षु विद्यार्थिनां यः मेनीपापिर्व्वितरच-विधी ताहगन्यां परीचां। सेमे कीर्त्तिं जगित जनयन् न्यायरको सहेमः सोऽयं त्रीमान् विद्यजित वर्षं चत्तुनीऽजसमसं।१२८

मास्त्री गङ्गाधरवुधवरी द्वारिषः काव्य-द्वाराऽ- (१) सद्वारान् यः सद्वय-गुदः व्यव्हतमं दधाति । विश्वत् प्रग्रत्थापच निष्तितं दर्भनं पाणिनीयं स्वितः स्वातः श्रुति-सुरधुनी-निर्धेलाऽम्बु-प्रवाहे ।१३

सीऽयं ग्रास्ती स्थाति च विना केन स्थेंच नेते पग्ने कानं वदन-कमसं इन्त ग्रान्तो विभक्ति। ते ते गोड़ा द्रविड़-निसयाः पण्डिताः सर्व्व एवं मन्ताः ग्रोकोत्तरस-जसपी नापि किञ्चित् स्थरना।१३

काशीराजी न भजति सभा-मख्ये हीरकार्ये मृता-जाले जिह्तमतुलं रज्ञ-सिंहासनं स्तं। । भूमी-एडे ह्यपविशति किंवेदितो सन्तिसुख्ये हीहतीस्त विस्ति किंवेदितो सन्तिसुख्ये

⁽१) महामहोषाध्यास्त्राम् अतिमुद्धीमञ्जूष्टेश्वर शास्त्रित्राः।

शिवाषां यः विव पति जने गींवते सामिनोऽत्र त्रीमान् सोऽये स्विगत एव विं तारकानन्द एवः।(१) प्रसेन्कात्रैरपि-तनुजजे मेन्दिरे चन्द्रमीचेः साराध्यस्य स्वजति न श्रुचं सोऽपि वासीकुमारः १३३(२)

काक्छाभोनिधिरिति महान् यो विधातु हिं इष्टि नित्यानन्दे कविगुक्तुते त्रीखरे यस्य भक्तिः। काकीनेशः स खलु महिमारस्त्रनसस्य राष्ट्रो मस्त्री मस्त्रं त्यजति हरिनारायणः विंजपस्यः।१३४।(३)

सीरे राधे स्रितिभुजमिते वासरे स्रस्नोः पस्माराखयद्वविधमिते विक्रमादिखवर्षे । विज्ञो जातं दृरि दृरि दृयते कि समन्तात् दादाकारो भुवि निवसता मुखयन्दो महीयान् ।१३५।

तारः कोलाइल इष महान् सुयतेऽव प्रभाताः इड्डोनानां वियति चिटपे तिष्ठतां पश्चिषां कि

⁽१) जीमान् तारकानम् ब्रह्मचारी।

⁽२) जीनानु बाबीजुमार वाबकातिः।

⁽१) रक्षेत्रर-वाविवाराजस श्रीवती विश्वनारञ्जनरावसः भावीसितासेश्वनायकेशेक्षाः।

पत्नात् पत्ने प्रवसमस्ता-चासितामां तक्का-माचातीत्वीऽपि च इष्ट्यं इन्त हा हित राव: ११३

किं निर्घातीत्यत इव महानय हाहित यव्होऽ कस्मात् कसास्क्रवण-विवरं हता नः संप्रविष्टः । तीरं स्टट्टा किस सुरक्षनी नीर-वीचि-प्रवाही हाहा यदं जनयति सठात् किं हठास्क्रूयते सः।१ः

वि ह्याने द्भाग-हय मखे गाङ्ग-तीर्थे जनानां सर्वाः त्रेखोऽस्त्रमिलनहशो व्याकुला वेशश्चाः। द्रष्टुं धावन्ति च विभिन्न विं वालहत्त्रेयुंवानी नार्खो धेर्ळे चुतिमपि परामाददाना वजन्ति । १३

गङ्गातीये सुवहतरयः विं स्थिराः सन्ति तासा-मकस्यां विं विवसति दया सागरीऽस्यां गुवर्नः। भाषादायं सुरभि कुत्तमे रिचेतीऽयं विद्यसा-नन्दः सामी सित-दृत-सुन्धो राज-सोगासनसः।१

योगाक्तो निवसति तरी त्रीगुक्ः किं समाधी जातः किं सित् किस भगवतसेतसी हत्ति-रोधः। समारेक्तं प्रव मकतो निस्तरक् साहागी देवो क्वेन्द्रिय-प्रय-रयो गिक्सक्तेन भाति । १४० तको तको जल-परिवदासकतो इह-म्रहे
योगाचार्यो नट इव जनान् दर्भवत्वेव घोगान्।
म्बोचोरायां निधि निजवपु भौतिकं हा विद्यहानन्दो हित्वा हरसुवि ययो त्रूयते निर्वृति सः ।१४१।

हाहा स्वामिन् चरण-कमने किं कतन्तेऽपराहं
यस्मादस्मानिह परिहरन् भृतने प्रस्थितीऽभृ:।
विद्यार्थी ते प्रिय इति जनै: कव्यतेऽध्येतुकामा
विद्यानीऽमी वदवद गुरो पाठयस्यय किंदा । १४२।

नीलाद्रीचासुपरि जलदी द्वित्र-सङ्गी भवान्या (१) लुङ्गे कीर्त्तिर्व्यक्तर्वात सती मन्दिरं यस्य राजः । दुर्भिचार्त्ता नयनसस्तिकं मार्क्वयन्तः करीदा-दुत्तीस्थोद्धे किल भगवतः स्वस्ति यस्वाऽर्धयन्ते । १४३ ।

सभ्यो मूलाबिटिय कृपते भीरतानां सभाया राज्ञताः पंतामपि च युगपट् यः प्रजानां सुखेम्बः । नित्यं सम्बा सुवि विजयते धन्यवादं पुनर्यः स्थातुं निस्तुः स्वसमपि बुधान् धीसद्वायो विद्याय।१४४

⁽१) वर्षमान-स्काराक्य-बारवक्राक्षिवसीवानि ।

भारं यस्त्रे घरिषपतये भारताधीस्त्री प्राक् प्रायच्छद् यो निगड्-यमित स्तत्परीचीस्तेषु । किस्तृ कालं यश्चि जलधी मज्जयित्वा तुषार-बोतान् पंसीऽपिच निजकति दर्भयन् तं जडीयः ।१४।

यो राजि जैनक इव सत्यिकतानां सहसे क्षेत्रावींचामिवविलसितो मच्छितायां सभायां। स श्रीरामिकरनरपति द्वीरवङ्गाधिपोऽयं स्वामिसी सी नीयनसिलले राष्ट्रवचादुनोति। १४६।

काग्रीकान्तः कयमपि तरी चित्रकारेण सार्षे (१) राजः काग्याः प्रतिनिधिरसी जानकीवक्षभस्य । हायासभ्यासुपविग्रति किं ताहग्रीन्ते प्रहीतुं हाहा स्नामिन् प्रतिक्रतिमिमामास्मितां तह्शायां ।१४

हाहा स्वासिन् सिवनवदनः सोमनायोऽयमस्मिन् (२ योऽयं काम्याः प्रतिनिधितमो हारवङ्गाधिपस्य ।

⁽१) रक्रप्डर-डिनिवाराजस जीनती जानकीयव्यक्षित्व सामीस "स्टब्स्यव्यक्षमाननस्य" राजपावास्याध्यसः

⁽२) द्वारवङ्गाधियते वेदाराजसः साथीज्यप्रासादित्या स्वादेरभाषाः।

हातिं देव-प्रतिम प्रतिमां गाङ्गगर्भे तवास्त्रिम् तां विस्तृष्टुं तटसुपगतः सा क्रिया द्रस्वतिऽया । १४८ ।

यास्त्रस्यसादवनि वसयावाक-सोकं विचिन्स् प्राक् किं सम्भीस्वरनरपति द्वीरवङ्गाऽवनीयः। (१) दीपा-सोकै: किससयमये स्तोरणानां सद्दस्तैः सज्जीकर्त्तं सुर-पुर-भुवं पुष्पभारेरगच्छत्। १४८।

सङ्गाराणां नरपति वरो सङ्गवद् यो विसीनः (२) मभोरभोत्द-निभ-पदे राजकार्यं विस्वयः । सोऽयं काम्यां तव विरङ्जं दुःसभारं न सोढुं मक्रोत्यार्यार्थमणि चसिते पद्मवत् पश्चिमार्याः ।१५०।

कम्मीराणां नरपितवरः श्रीप्रतापादि-सिंहे- (१) त्याख्यां विभवदिविटिय-तृपते यीं जयस्त्रभूरूपः । दृष्टा दूराद् यमिष्ठ ष्टि दृढ्ं भू-प्रतिष्ठं गरिष्ठं लोभा-क्रद्योऽपि च भयस्वीकेष (४) एव प्रयाति।१५१।

⁽१) भूतपूर्वेद्वारवङ्गाविव्रतिः।

⁽२) भक्तारप्रदेशसा राजा।

⁽३) बाखीराधिषति नेष्टाराजः श्रीमान् प्रतापसिंदः।

⁽⁸⁾ रामीबाधिपतिः।

राज्ञी यस्मार्श्यस्त्रतिषयाः स्वष्ट्रमानामसंस्थे वेत्रैर्वर्षस्मापं विश्वरिम स्वर्षवर्षानजसः । स्त्रीयासनाःपुरसुवि घरा-हेम-हार-प्रभाषां तासामक्रयुतिभिरनियं सुन्दरीयास्र ताहन् ।१५२।

सीऽयं सुर्खान्ययभवद्यपे गौरवं भारतानां भैयों किश्वित् कथमपि तथा नाय प्रक्रोति धातुं। तं भूपालं प्रयतमयते पादयोर्भूकिरीटं किश्वास्त्रसं भुवि सुरगुरो सदगिरा नो करोषि।१५३।

इन्होरेन्द्रोविनपित शिवाजीस्तथा सिन्धियेशो गोयानीयावनिपतिरसी दृखतां सास्त्रनेतः। हात्र्यास्थावनिपतिवधूरच रीदित्यजस्तं नेत्रहम्माट् विगलितजनं धीरवस्तो सजन्ती।१५४।

हित्वा वङ्गानिप सत्ववः पाद-मूलं तवैव प्राप्तो भक्तो गुरुषु गिरिजानाथ एव प्रपतः । भूकमोन व्यथित-सदयो वर्षते काश्विकायां राजानं तं सुपदियसि नो दैव दीनाज-पुर्खाः ।१५५॥(१)

⁽१) हीनावप्रराचां वक्षाराजः श्रीवृत्त् तिरिवानायः।

काग्रीराजः प्रश्नपदमुखीं यो हि नारायकास्यां (१) सिंहोपाधिर्नरपतिरयं साधुधत्ते धरिव्रगां । एकं सन्धा श्रत-जल-निधिं त्यां स रक्षं महार्घें रक्ष-त्रिकी-परिवदि वसद् विक्रमार्के जिनायं। १५६।

तस्योपास्यः स चगित महाकालनाचा प्रसिदः किं जुदः संस्त्रिभुवन-गुदस्यां जहारीक्वहार । हाहा कामी तृपतिरनुसन्धायमानः समन्तात् त्यां न प्राप्य स्वसिति विषयं निकेसिः किं फ्यीव ।१५७

साचाहेवी इरभुवि भवान् नित्यमेवाऽपराच्चे इतिरस्पेरपि किस कथा व्याजती व्याजहार । यां यां वाचं सुत-विषयकस्त्रत्व तत्नोपदेगो सन्बोऽस्नाभिः सततमञ्ज सर्व्यते वर्ष्यं, ते सः ।१५८।

तेज:पुक्की वपुरितरां तेजसाबीतमानं नेत्र-इन्दं वदनमि ते भाखरं तेजसैव । वाचंस्तेजांसिच सुषुविरे त्रीतगीभिः सुनदाः कस्मिक्दा ब्रजति विस्तयं सर्व्यमेतत्तवाद्य । १५८ ।

⁽१) बाबीनरेवः चीनान् नकाराजः प्रश्वनारावय विकः।

पसामापद्भवति वसतेरैकराशी ग्रष्टाणां (१) सर्वे पूर्वे फलमतितरां सम्मामामिरस्याः । इन्द्रस्वाद्यम् विसयमगमस्येष्ठ-रत्नं मद्यार्थे स्वामिस्वाद्यम् क्षतमिति वयं स्वी दरिद्रावराकाः ।१६०

विं सूढ़ानां जनपदसुवां निर्धनानां जनानां

त्वायायांन्ये विसल-सिललां काऽपि वापीं चकर्ष।
ज्ञानाऽ-स्मूनां वुध-जन-गणानान्तु देव इदीऽभूः
सत्वं ग्रुक्तो प्रष्ट-गण-समाविष्यतः प्रकारिऽद्य । १६१।

लच्छोकान्नि-ज्वसित इदयाः कातरामातरः स्नान् पुतान् कन्या भिप किससय-प्रेचयीयास्त्राजन्ति । किंनी जातं गिवग्रिवगुरी दृखतां भारतानां पूर्वे भूतं फसमदृद्ध नः कारणात् कर्यदोषात् ।१६२।

⁽१) यहाचानेकस्थिन् वहि मनति पस्तां निवसति-स्वादा गोकोशोगः प्रस्तुवपहिनन्द्रोऽपि सभते । स्वपायां नाशः स्वाच्नस्वति वस्तुभा ग्रुव्यति नदी भवेद्वोको रङ्गः परिकरति प्रसन्ध सनगी । द्वति च्योतिग्रोः समसन्ति ।

माशिलालकाठमटनकं भिषया चन्नुरखां लब्बा प्रिप्तं कति च दिवसान् पादमूलात्तवैव । नम्ना मम्ना यशसि जलधी केऽपि पूजां लभन्ते लिन्निकीणावधि तु भजने वाससो नो विसर्गः। १६३।

तुष्यं वासी वपुरिप वर्षः सारयेः खेतवाह-स्याकष्यें वेष्ट हिं न जहिय प्राक् प्रपूतान्तरीयं। सत्योकर्त्तुं हरि सुख कथामद्य कायेन तेन त्यक्रचेचच्चपलमभितः किन्त्यया चच्चलेन। १६४।

खामिनसांस्तमसिच भवान् मक्जयिलाऽम्बुरायी नोदस्वाऽसिनिजभुजमिव प्रावलम्बं प्रतस्ये। विद्याऽद्योद्यहुउतिरपि यया वस्तमेनेन सानं स्रेणेव सुत-क्वय-दिवा भास्तता भोस्वयैव। १६५।

सम्बेंहेंवै: 'सुरपितसुखै: प्राधित: प्राग्दघीचि-हिला देहं सदुपक्ततये वजुमिकान् समर्ज। कस्मे वजु जगित जनयन् केन वाडम्यर्थित: सं-स्यका कायं बजिस भगवन् चित्यतेडसासु योडसी।१६६

यामीं मैत्रावरिवरगमत्तां दिशं विश्वगर्वे खर्जीकर्तुं विपुत-वपुता प्राधितो लेख-जातैः। प्रत्यावित्तर्भे भवति वतस्तासुदीचीमगच्यः कस्य ध्वस्तस्तिभुवनगुरो तेन स्रोराऽभिमानः ।१६७।

भासीद्गन्नी भरतत्वपतेर्भूमिखण्डस्य चण्ड-स्वामासाय वृटित-सन्नतस्याऽच नि प्रस्थितः सन्। स्वामिस्तस्य स्वगयसि सतस्तं तथोश्वाऽभिमानं न स्वातन्त्रंत्र न च खलु वसं नापि नुष्टिस यस्य ।१६८

पत्नी गौरी सहदिप हरिर्मृत्युभीताविव ही न्योतिर्ज्ञांनैर्व्विजल्ति वपुर्यस्य सत्युद्धयस्य । वामाहंनाऽपि च विविधतुर्दे विवाहंन तस्य वस्तोस्त्योस्वमपि च तनूमनाराऽख प्रविष्टः ।१६८।

लां निष्ठूतं जलिध-तनया-वक्षभीर:-ख-हारा-देकं रत्नं भरततृपतिभीविनीभूरवाप्य । पस्पर्दे तिं मिष-गण-प्रिरोरत्न-हीरं दधस्या सम्बाद्याऽपि सुत-गुणतया हारितं हा तद्य ।१७०।

काले घोरे वयमिन्न कलेर्मानवा दानवाः स्रोऽ-स्नाकं तेषां गुरुरिति भवांस्वां कविं किं विविच । जयासीयः स गरल-गलो धूर्जिटिव्यों सवेयः यसोः ग्रकः किल निरमसत् सन्तु नो निर्मतोऽम्:।१९९ घानि चित्रा सह क्षणभुजी गीर्भुजकाधिपस्त प्राचीवाचः कपिलविद्वेषो योगविद्यायः(१) बक्ताः । हे मीमांसे तदुपनिषदस्यां महाहचमितं नो लम्मा तं भुवि निपतिता हन्त हाहा सुठन्ति।१७२।

वाराणस्यां भुवि भगवतोऽप्यागतोऽस्यां कट्टाचिद् भिन्नः किसत् सुविदितदयानन्दनान्ना प्रसिष्ठः । नास्तिक्यं स्नोपदियति नरान् वेद पूजाऽपदेशाद् योऽयं साचात् कपटवचनसार चार्व्वाक मूर्त्तिः।१७३।

नाऽन्या मान्या मतिमिति मनी: संहिताती विभिन्ना गच्यं रामायणमपि पुराणेषु तद् भारतच्च । त्रय्यः पूज्याः खत उपनिवन्नालिकास्ताः सभाष्या चन्चे ग्रन्थाः ग्रठ-विरचिता नाद्रियन्तेऽस्मदीयैः ।१७४।

कस्माइवप्रतिक्रति क्रतिः केन वा सर्व्वलोकै-रभ्यक्रिक्ते चगति खतु ताः पापमूलानि या हि। नास्ति ग्रन्थेषु च स हि विधिनीमयोक्तेषु नोनो तस्मादृरीकुक्त परितो निक्रमालास्तयाऽर्चाः ।१७५।

⁽१) चठमन्त्रादियोगाः।

इत्यं वाची खनु निरममद् मद्वरात् तस्य वक्का-दाहत्वादम् स्मृटतरपदा संस्कृत-प्रस्कदेन। देवाः साटीः प्रपरिद्वती स्मिष्क्रनारीव साचा-दासन् भीता वुधपरिषदः कस्तदमं जगाम। १७६।

काशीराज़िन खन्न नितरामधितस्वाऽर्चितस्य स्तोक्षेस्ताहम् विजयनगराधीम्बरेषाऽपि तेन । श्रुत्वा तास्ताः प्रजपन कथाः गास्त्रमुक्तिप्रयोगैः सोऽप्येकस्य स्वमितमस्त्रो ते परास्तः प्रतस्ये । १९७।

भासीस्वाहम् जमित भगवन् पिस्तितानां स योधा तस्तादेवा पुरसर पुरी काशिका रिचताऽभूत्। न स्वास्वाहम् यदि पुनरही विश्वनायस्य लिङ्गं को वा प्रस्नेत् क इस पुरतो देवता वा प्रपस्नेत्।१७८।

यत्रो चने स खलु भगवान् विश्वमञ्द्रहरः प्राष्ट् नाना वीदान् बडुजनपदाच्छास्त्रयुक्त्या निवार्थः। एकं जिला जगित च दयानन्दमस्त्रिन् हि काले तकात्तसादपि गुद्तरं कार्यजातं चक्के। १७८।

प्रधामक्केड् यदि पुनर्य ताहमी वा बदाविः बानामस्त्रेविष सुनिपुची दुविमान् नास्तिकोऽन्यः। को वा पायादश्य जनकात्तस्य दैवीहि मूर्ती-र्शा नः स्नामं स्वयि भगवति प्रस्कित सर्व्यनायः ।१८०

मान्धाताऽध्वाऽध्वर-भवफलं भोत्नुमूर्वक्रतोऽभूद् याते ब्रह्माव्यनि परिचितिभींचदेषस्य भस्म । द्रोचेनाऽस्माद्दृततरमयो विदुतं निद्रितं वा कर्षः पूर्वाऽर्चवतनमतः साखिकः सास्विकासा ।१८१

विन्हान् देवान् जगित जयते तोषितः खाखावकां यस्मे चापं रद्यमपि ददी खाय्डवेनाऽपितेन । यत् सारयं जसधरवपुः स्वत्यचन्द्रोऽप्यकार्षीत् पार्योऽपार्थोऽभवदतितरां सोऽपि गाय्डीवधन्या ।१८२।

योदारस्ते भुवन-जयिनो भीति-सम्पर्कशृत्या विभ्यो भीतैस्त्रदश्यदवी प्रोव्हिता दैवतैस्तैः । एकेनैवाऽमितवस्रस्ता इन्त कासेन तेनो-हीसा दीप्रा युधि ययुदिने ताहसीन्तामवस्तां । १८३ ।:

नो न: क्लेगो भवति च तथा भीष-कर्षार्जुनादी नदोहीक चुभितमनसां पाव-वदीरसां न । याहम् जातो जगति महतः ग्रहराषार्थ-सुस्थान् सुक्ष-प्रेचाः किस विद्यतो नाधुनासीकसाचात्।१८४ भावो विद्वान् जगित कपितः प्राहुरासीद् धरित्रा भव्यास्तावनृपति भरताधिष्ठितायाः सुप्रतः । न्यायाचार्थ्योऽभवदपि सुतो गोतमः स्थातनामा सुतः वङ्भिः कणभुगपि च प्राक्पदार्थैः कतार्थः ।१८५

योगाचाय्याँ भुवनविदितो नागराजोऽप्यनन्तो वैदार्थानामजनि च विनिसायको जैमिनिर्यः । ब्रह्मद्वानार्थव इष्ट पुरा खानितो येन सोऽभूत् क्षणाहैपायन इति पुनर्थासनामा प्रसिद्धः । १८६ ।

ते ते सर्व्वे सुनय इन्ह ये तत्काथास्तामिदानीं ये ये पूर्व्वे कतिपय-दिनेभ्योऽभवन् भो धरण्यां ते ते धन्या जगति जरतीं मातरं तां धरित्री सुत्सृज्वेव प्रक्रति-क्वपणाः ग्रोक-सिन्धौ क्व याताः ।१८७

भावार्थीऽस्थां न च विजयते शक्करोदेव-मूर्त्तं-नींगक्केशो न स खदयनी नाद्य वाचस्पतिस । नो वा भद्दो न च वरक्चिः पाषिनि दुर्गसिंहो नाऽद्य सात्तीं नस्तु जगदीशादिनैयायिकास्ते।१८८।

रकस्थेयं तवसुखमभिप्रेष्य मृः स्थातनाची विस्मृत्येवं सत-गण-एषः सिमाता सुस्थिताऽभूत्। एकं लां नो गुष्टिनमवनेरम् इष्ट्रैन तेवां मोकाऽ-भोधिर्भवति स मणांखाइगुद्देशितस् ।१८८।

विद्यांसी वा विदित-चरिता भूमुजीवा महिब्बी याः सर्त्तव्याः पर मुषित वाऽन्यास धन्या धरक्यां। चासन् ये भू-मुक्कट-कवयो योगिनी योगिनी वा प्राक्ते ते ते परभुविगताः शान्तिरस्याः कथे तु ।१८०।

दिच्या श्यामाचरण-कमलं काश्विकायां सरस्यां नि:स्पन्दं यद् विकश्वितमपि स्तन्धिते माक्तेऽभूत्। जातं पञ्चानन-परिचितं चन्त तद्युत्तस्यक्तं दृग्धामन्तर्त्वितमय कथं प्राग्दिनिस्य: कियद्वा: ।१८१

मातित्याख्यां भुवनविदितां या दघारोज्जहाराऽ-पाणं प्राणेष्यपि च वरणा-तीर-भूमी गुहायां। सा योगान्नि-प्रशमित-मना हन्त मार्सण्ड-सूनी दें द्रोसुक्ता हरहर! गुरी, नार्य्यपीयं न चासीत्।१८३।

यस्याः कीर्त्तिमंगधवलयेऽचापि तस्यां गयायां लक्षीमर्तुंबरण-कमलाङ्गोपरि स्पष्टमुर्वैः । प्रासादोऽयं सुदृदृ-दृष्पदां नाट-गेष्टेन सार्धे काम्सामस्यामपि विजयते भूरिदेयासम्बर्धः । १८३ । इन्होरेग्रे खतु नरपती स्वामिनि सः-प्रयातिऽ-'इस्या हासाहसमिव निर्ज राज्य-भारं विद्युच्य । नानातीर्थेष्वपि वहुविधा इत्यसुचैः प्रतिष्ठाः कीर्त्तेः क्रत्या विस्तयमभजत् साऽपिनास्तित्वदानीं।१८४

यागोर्षासङ्गितिरिवभुवः सत्यवत्यत्युदारा (१) राज्ञो राज्ञो दियत-रघुनायस्य याऽभूवरिक्रां। षासीत् स्थातं नव-विधमचो नो नवं भूतलेऽस्मिन् यस्या राज्यं विपुलमिष्ट बाहारवन्यादिनान्ना।१८५।

यखाः सख्यं भुवि समभवत् सत्यवाष्ट्या भवान्या तथ्यां राज्यं विनिश्चितवती याश्चि काम्यासुवास । गर्भे चक्रे जनकतनयां भूरितीव स्नरन्ती तां जवास स्नरहर-पुरी काभिका-ऽपीर्ष्यया विं।१८६

एतैः काश्रीपुर-वसितिभः सर्व्वदा सर्व्वलोकै- (२) वैवाऽव्यापि स्नृतगुषक्षयैगीयते श्वसपूर्वा । प्रासादानां वद्ववितरचैन्नीश्चाचेभ्यो वद्वभ्य स्तत्तदृष्याजात् कतिकतिशिवस्थापना या चकार।१८०

लशः वाहारवन्दादि भूभागस राजी वलवती।

⁽१) टाजवाड़ी प्रदेशानां राजी भवानी।

. स्वर्ग-हारा-विधमपि हन्नमार्गसस्मासिकीर्ध-नीमूच्छतः विस्त दयसुद्धः सर्वसीकाधिराजः। पद्मत्रोयो स्नमव-विधमे पात्र-यासाय दीर्घं या प्रत्यानं नयति मसुजान् स्वर्धि निर्मायं निर्स्थं।१८८

कामीखको-चरित-चरिता विश्वती चन्द्र-खकं काव्यामखम्भति कतिभिद्देश्वते नो भवानी । किं साऽस्माकं सुक्तति-विभवैराविरास्ते भवानी कक्षीकत्व प्रकृति-दिचरां यां कथासीकानानां ।१८८।

सा प्राक् प्राक्ती वसयमवनीः प्राज्य-राज्यश्व राक्ती प्रोकृत्य स्नानिव सुतगसान् नस याता भवानी । दृष्टा यूना सुर-सरिति या मज्जता स्नानकासे कासीमूर्त्तिः प्रसरस्करा केनसित् कामुकेन ।२००।

दीनेभ्योऽर्घानिव वितरितुषाभयं त्रीनिवेष्या (१) देवी साचादिव दयशुजा भूशुजा पूजिता या । योर्गेन्द्रस्य सारविजयिन: कामिनी स्नेरवक्षाऽ-गच्छदृगौरो परिकृतवती सा मरशुन्दरी नः। २०१।

⁽१) प्रतीवा प्रदेशका भक्ताराची घरत्वक्री।

वृति-ज्योतिर्जगति परितो यस्य चक्री प्रशुखं ज्योति-सक्री नमसि चिति यी बभूवाऽदितीयः। यूरोपास्य-चितितसमपि प्रोद्गता यस्य कौर्तिः पंसामीर्षे मतमधिगती वापुरेवः स नाऽवा ।२०२। (१)

मभान्तो योऽभवद्तितरां दर्भने पाचिनीये (२) राजारामः स्वत-मय-मद्या-राम-विद्याम-धामा । भानर्कार्थे यमवनितत्ते मोचमूलारमद्दः सोऽप्यस्तां नो विस्तरति सतामयत्तीः साधिकायां ।२०३

कन्दपी वा कणक-किरणः कार्त्तिकेयोऽयवा यः (३) साज्ञाबारायण इव परो गौरमूर्त्तिं दधानः । नानामास्त्रेष्पि दृद्गमितर्यस्य नित्यं चकावे काम्या मूर्त्तौ विनय इव यो बासमास्त्री न सोऽद्य । २०४

की वा वतुं प्रभवति सतः कुच्छिता कुन्न बुद्धि-वीचसालं जन-परिचितं भाति यस्वाभिधानं।

⁽१) च्योतिः घाकाध्वाधवायको मङ्गमङ्गेपाध्याको वाह्रदेवचाकी (काचीवाकी)।

[&]quot;(२) व्याकरशास्त्राध्यापकः राजाराम शास्त्री (काशीवासी)।

⁽१) काबीसः वासवासी।

तारानाबस्य च सुविदुषस्तर्भवागीयनाचः काम्यां विखेखर-सरपुरो सन्त सीऽस्तं जगाम ।२०५।(१)

योऽयं न्यायादिषु कविगुरः स्वायास्त्रेषु तुष्यं (२) रेमे काव्येष्वपि च सुवपुस्तप्तचामीकराभः । योऽचक्कारोऽजयदिष्ठ गिरां मूर्त्तिमानेव देखाः काग्यां ताराचरण इष्ट नो भाजते सोऽख विद्वान् ।२०६

यः क्षणोऽभृत् सुकविकविता-गोपवाला-सहस्नाऽ-लङ्काराणां ध्वनिभिरसकत् पूर्ण-कर्णोद्युदीर्णैः । व्याख्या-विश्व क्षणनमपि यः स्नीरवक्कः प्रकुर्व्वन् स्मीतां चक्रे हृदययसुनां प्रेमचन्द्रः स नास्ति।२०७।(३)

कारुखेर्यो जलनिधिरभृद् विद्यया सागरोऽपि सेर्डेर्यसात् कति जलधराः प्रादुरासस्त्रगत्यां। खातः प्रब्दो श्वमति नितरामीखरश्रम् युक्तः सर्वेषां नः परिचिततमो वाचकलिन यस्य।२०८। (४)

⁽१) विश्ववातासंस्कृतविद्यास्याध्यापकः मङ्गमङ्गेपाध्याय-स्वारानायतर्क्कवानीयः।

⁽१) काशीनरेशस सभापिएतसाराकरच तर्करतः।

⁽३) विविवातार्थंकतिविद्याखयाध्यापयः प्रेमचन्द्रतर्वेशानीयः।

⁽३) देखर्चन्द्र विद्यासागरः।

यापभ्रष्टो दिव इव सुरो विष्युतः कोऽपि स्रोकी
यो दीनानां नयनसस्तिस्तिस्तवकः स्म मार्ष्टि।
राजदारं किस निजक्तते स्वर्गसाय्यमेको
यसास्राजं ज्वसनसद्वयस्तेजसा सोऽपि नावा। २०८।

उन्धयाऽन्तिं तपनतनयो वङ्गनामानमितं ता: पञ्चामत्परिमितसमा निष्ठरः क्रीर्थ्यनिष्ठः । उन्नृत्योद्वृत्य च स इतको च्चेकमो न्यायवेन्तृन् रक्कानि स्वं निजयमनयदन्त नाप्येकमत । २१० ।

तकीचार्यो य इष्ट जयनारायणेति प्रसिषः (१) स्नेष्ठो यस्याऽपतदतितरां समाहे त्रीमहेग्रे। अध्याक्तृं चरमपदवीं तर्कपत्राननं यं काऽपि सार्वो सुतजलनिधेनीभजद् विस्नुतस्य।२११।

यः सन्देशनभनगनियं नव्यनैयायिकानां जिज्ञास्नां घरणिधिवणीऽगाधिवयो दयार्द्रः । चामुख्यायाः यतकमतनोद् भैरवस्तोत्रसुचै-स्तादृग् यः स स्मर्यतरणिदीयिते नाऽय काग्यां ।२१२

⁽१) कविकातार्थकतिवद्याचवाध्वापकः स्वतनारायच तर्क-पञ्चाननः।

न्यायेनोचे: कठिनदृशदा निर्मासे यो नवीनां (१) काचित् काव्योत्यितवरतन् कस्पनाया बलेन। शब्दो यस्य ज्वलति सततं राजपूर्वः कुमारो नेवानो नो इरिइरि कविः सेवते सोऽपि निद्रौ । २१३

विद्यारक्षो भुवनपदभाङ्मोहनान्ताभिधानः (२) प्राधान्यं योऽलभतलसतां सर्व्वनैयायिकांनां । जातः स्थाते भुवनविदिते ह्यन्वये प्रत्यकर्त्तुं-र्यो गङ्गेशोपरि निजयशसन्द्रसृचैस्ततान । २१४ ।

विद्यारतः स किसु भुवने वर्त्तते नाद्य नाद्य प्रायस्ते ते अनविधिजनिधं संस्रतिं नाम तेनः ।
ये यज्ञाग्नि-प्रतिज्ञति-समास्ते त्रयो न प्रसन्ना (३)
हाहाहा रामधन(४) इह नो हत्न नो दीनवन्धः। २१५(५

⁽१) राजकुमार न्यायरहः।

⁽२) नवद्वीपस्य सर्व्यप्रधाननैयायिको सङ्गलङ्गोपाध्यायो स्वत-• भोङन विद्यार्ज्ञः।

⁽१) एको विल्लपुल्लिरियीवाधी मङ्गमङ्गेपाध्यावः प्रवस्त्रकरू ज्यायरत्नः, द्वितीयी नवद्वीपनिवासी प्रवस्त्रकरू तर्करत्नः, स्तीयो विक्रमपुरनिवासी प्रवस्त्रकर्त्रकर्ताः।

^(॥) बुक्व्दियामनिवासी सङ्ग्रिपाध्यायी रामधन तर्क्षपञ्चाननः।

⁽५) बोचनरयामनिवासी महाबद्दीपाध्याबी दीनवन्तु स्वावरतः।

काशों सब्बेव च सुरसरिकीर-संसिक्ततीरे (१) न्यायाश्वीचेरविधरिष्ठतस्वैव सांयाविकीऽत्र । बालापत्यां पतिश्रविचतीत्यानतः सिबद्दक्तां पत्नौं बक्षीमिव किश्यलय-प्रेक्कवीयं सुतस्व । २१६ ।

हृद्दाह्य चितिसरवरः यभुचन्द्रं नरेन्द्रं काकोनेगं कविकुलरिवः नेगवादीखराख्यः। पाह्नतो ऽत्तं प्रसम्पतिना यभुनाऽम्बुप्रमेण प्राप्तः कार्यो न खलु भवता यभुना प्राक्ततेन । २१७।

एता कान्ता शिश्वस्वतिममं प्रापयाश्च खदेशं ब्याक्टल्लेति विद्यतिटिनीवारिमम्बार्वकायः । श्रम्भुवादि-चितिपति सुखं कामिनीं भूजुठन्ती-मज्ञालाऽपि खजनक्दितैर्ब्यासमुचैक्टनां । २१८ ।

कुर्बेबुर्ख्यां शिश्वस्तवधूं श्र्यवस्यं विस्वज्य स्मेरास्थेन्दुः कमिव कनकप्रेचयालिङ्गिताङ्गं। साचाडिव्या रजतधवलं वीस्य चन्द्रार्वचूड्ं तस्येवाऽङ्गे विलयमभजत् सोऽपि वाल्यावतंसः। ११८।

⁽१) रक्कप्रदेढाक्कमारीयामनिवासी सेमनेकर तर्वपञ्चाननः।

यं द्वाविंगत्वद्यमितवयोवासमुक्य माता (१) मानिन्यास्था विमलिनमुस्ती संस्थितेन प्रियेष । प्रोद्दीतेश्रध्यनिभिरविशद्शायमानं चितानिं या क्रान्ट्रेखर-वृधवरस्वेन्द्रिवेन्द्र-सूर्त्तः। २२०।

यो धत्ते स्म स्मरहरवधू चिन्तन-स्मेरवन्ते। नाम स्थामो भुवनविदितं मङ्गलं रुद्रपूर्वे। तत्नालेऽपि कचन च बुधो न्यायश्रास्त्रीयवृद्धाः कोऽप्यासीको विपुलवसुधामण्डले यस्य तुस्थः। २२१।

तीर्त्वानोमं चिकतिविषुधं यमाच्यासाच्याद् गोनोकच स्थिरमपि दृढं स्वाभिभूतं चकार । न्यायानद्वार इति जगति स्थातनामाद्वितो यः सोऽयं कृद्रो सुविन च पुनर्ळियते ऽद्याऽदितीयः। २२२।

तारातारा इति स निगदंस्तारसारखरेण प्राणान् हिला सुरपतिनुतं स्वन्दनं प्राचरोह । मेने लोको वियति चलितं यलतिध्वानमध्दं युला स्वर्गं प्रतिगतवतः स्तिकास्तस्य वाचं । २२३ ।

⁽१) रङ्गप्रदेशकुमारीयामनिवासी सुप्रसिद्धनैयायिको देह-मंजूब न्यायाबङ्कारः।

रामानन्दः किस सुसपितदुर्गसिंदावतारो (१)
यः कातन्त्रेः स्कृतिस विदितोऽध्यापकः पिक्तानां ।
कत्याचीन्द्रेखरवरस्ता यश्व पश्चाननाद्धं
पश्चास्त्रीयं जगित सुसुवे सोऽपि नो विद्यतेऽस् । २२४।

षासीद् गृङ्गीषार्वधवरी यामदम्बप्रभाव- (२) खासन् यस्त्रोडमितमस्स्री भीरवी भूमिपालाः । योऽयं साखाद् भुवनविदितो मूर्त्तिमद् ब्रह्मवर्षी गङ्गागर्भे खलु निजवपुः सोऽपि स्त्रोत् ससर्ज ।२२५।

कालीनायादिप च हरिनायात् कवीनां विधातः पयाज्ञातीऽसुज इव कविः कारकः कारिकाणां। चक्रे यन्यं कमपि भवनेत्वाद्यवीधं सुवीधः सीऽप्यास्ते नेष्करपदमुखीं कान्तसंज्ञां दधानः। २२६।(३)

यं भक्तारं इर इति मतिर्बद्धमय्या विरासीद् (४) गोविन्हे ति प्रमुद्दितमनाः चैवितुं सारदाऽपि ।

⁽१) र**क्ष**पुरेटाकुबारीनिवाकी रामानम्ड पञ्चाननः ।

⁽२) रङ्गप्ररेटानुमारीयामनिवासी गङ्गेत्रर भट्टाचार्थः।

^{&#}x27; (३) रक्रपुरेडाक्रवारीयामनिवासी देवरसान्त म्यावपद्याननः।

⁽३) रक्कपुरेटाक्रमारीयाननिवाची क्रूरगीनिव्हविद्यानवागीयः।

नानापत्नाः स्कृतिसयपटे पत्ननं प्रापुरस्य प्रायो यस्वाऽवनिषु सरगोविन्दनान्ना प्रसिद्धिः ।२२७।

न्नातारो ये न खलु कतिनो यस्य मीमांसितानां गर्फ ते ते धरणिवलये विश्वता निषयेन । नो यस्य व्याकरणघटिता भानितरासीत् कदापि प्राप प्रोते व्रजपति सुते मित्रणं सोऽपि स्नत । २२८ ।

योऽभूत् स्मान्तीं भुवनविदितः पूजितो भूपतीनां (१)
विवारको बजपदमुखो वाचको यस्य नायः।
वक्ता भक्तो ब्रजपतिस्रतस्याऽपि गीरेऽसुरक्तः
विवे कालेऽभवदितितरामद्य येते क सोऽपि। २२८।

धीमानिन्द्रेखरसुतवरी विद्यया भूषितीऽभू- (२) बान्ना ख्याती भुवि च इरकान्तेति यान्तान्तरामा । यो जञ्चाल ज्वलन-सहयीमोजसा ग्रुवमूर्त्तिं विभागो भूपतिगणगुरुर्वद्वादो ब्राह्मणानां । २३० ।

विप्र: चिप्रं किल मध्यतां दुर्ग-दुर्गाच्रिपद्मे लब्बा मत्ती य इह च वभी नियललं दधानः।

⁽१) नवडीपस्य सर्व्यप्रधानकात्ती प्रजनाय विद्यारतः।

⁽२) रक्कपुरेटानुनारीनिवानी करवान विद्याभूवयः।

कान्तारिऽस्मिन् निविद्-विषये सोभनीयेषु नाना-पुष्पेष्वेषु स्मितयुतसुखेष्वेषु यो नो पपात । २११ ।

राजप्राधो नरपितिधरो मीलिनदाष्ट्रिपद्यः पद्यादृष्ट्या परिचित द्वैष्वर्थमुक्कीस्व लेभे । नित्यं देवोस्तद्रचनया यः धरस्वो धरस्वां स्मर्त्त्रयो अमृदृष्ट्य सनसद्योतगीरः स नाऽद्य । २३२ ।

भूमीस्वामी कमलमिति यो वाचकलेन ग्रन्टं (१) स्थातोऽभूद् भूवलयविदितं नीलपूर्वं दधानः। स्वातो देव्यां गिरि इरजटाभ्रष्टनद्यां निबन्धं कालार्वायाः कमि खलु यो निर्भमे निर्ममलः। १२३३

यस्य ज्येष्ठो जगित तनुजः त्रीगुरुपान् प्रसन्ने-त्यास्यां धत्ते धनिगुणनिधिर्धर्मबन्धुर्धरस्यां । प्रन्यः त्रीमान् विस्तति सुतः त्रीभवानीप्रसन्नः प्रास्त्र-चौरो-दिधिषु धवसा मज्जनाद् यस्य बुद्धिः ।२३४

मिसन् यो भूबलयमखये चन्दनः सान्दगन्धं दिव्यं दिग्भो ऽचिपदतितरां कीर्त्तिजातेर्भेवज्ञिः।

⁽१) रक्षपुरनवडाक्षाभूकामी नीववनववाक्षिकी विद्यासागरः।

यो वा वक्कोत्तरदिधि दिवः पारिजातो विधानीत्-सृष्टो भान्तेन च किसु पुनः कर्त्तितः सोऽपि तेन ।२३५

कोषं कचिद् विपुलवपुषं "ग्रन्दकल्पहुमा" खं (१) स्थातसकी य इह मतिमान् धर्मानिष्ठो गरिष्ठः। राधाकान्तो नरपतिवरः ग्रास्त्रचर्चानुरक्तो, वृन्दारस्थे इरिहरि वपुः सीऽपि तत्याज भूपः। २३६।

यः चित्राणां किल सुरगिरां पण्डितः पण्डिताना- (२)
माद्रीभावं द्रविण-निवज्ञान् कर्त्तुकामो ववर्षे ।
यस्माज्ञाता विपुलतिटनी यळवारिप्रवाष्टेः
प्रायो वक्षेष्यपि च सततं सन्ति सिक्तानि तानि ।२३०।

यो भूदेवो रुचिरवपुषा चैतसस्तेजसय प्राप्योचलं सचितितिमदं विष्यसुचैयकार। प्रिचामागोचतमपदवीं राजकीयाच लम्बा संब्रह्माच्छंय इष्ट न जडी हा! जडी सोऽपि कायं।२३८

⁽१) विवातायीभावाकारराजः खार् राधाकान देवः।

⁽१) क्रगविंकुनुकानिनावी भूदेन संखीपाध्यायः।

भावं "वार्त्तावह"मिति जनैः सर्व्वतोऽज्ञायि यत्तत्(१) पत्रं साप्ताहिकमितितरां सत्यसिन्धुर्नरेन्दुः । यः कुष्डोभो नरपति-कविः कालीचन्द्रो वितेने काशीचन्द्रानुपपरिषदः पत्युरेकः कनीयान् । २३८ ।

ययं कायं (२) प्रथममवनी वङ्गभाषासु योऽसा-वाविस्रक्ते कुलजपतनज्ञापकं गीयमानः। तैर्व्वङ्गीयैः कविभिर्रानग्रं रामनारायणेन प्राप प्राम्तं स हि चरणयोर्भूपतिर्भूतभर्त्तुः। २४०।

चक्रे यक्रो भुव इव दृपः यभुचन्द्रो नवीनां (३)
रक्षेयंक्षे नेविभरवनी पर्कदं इर्षदां यः ।
भूगोलोकं खपुरमि यः प्रोखदुद्यानधारां
हाराकारामुरसि च दियो वक्षतुक्रोक्तरस्याः । २४१।

यः काकीनानरपतिरयं भारतं विक्रमोयं खच्चभ्रोकोट्यथितमभितः कारयामास राजा।

⁽१) रक्रपुरकुर्व्होभूखामी काजीचन्द्र राव चतुर्पुरीयः।

⁽२) कुलीनकुलसर्वासं नाम क्रपनं।

⁽१) रङ्गप्रसाकिनापतिः यशुचन्द्र राज चत्रंपुरीचः।

वास्थादद्रेः ससुदितममुं त्रीम्बरं (१) गीर्षिषेव्यं म्यामाप्रेमार्षेवमभिनवं कालिदासं दितीयं । २४२ ।

येष्ठान् वैयाकरणक्तितनोऽन्विष्य ग्रिष्यैः समिता-नानीय स्त्री सदनसदिस स्नेरवक्तसकार । कोषं कश्चिद् विपुलमिखलैः पण्डितैरवतैस्तै-स्थाद्यन्तानां यद्ग्डमितमान् वाचकानां क्रियाणां।२४३

पारस्थानामपि नरपितः संस्क्रतानाञ्च वाचां योऽभूत् प्राच्चो भुवि किल तथास्त्रोकिमिंलख्डजानां । संवादानां जनपदभुवां चात्तसाप्ताञ्चिकं य-स्त्रेने पत्नं किमपि भुवने "दिक्षप्रकार्यं" प्रकाख्यं ।२४४

सुद्रायन्त्रं निजनिवसती स्थापयामास योऽसा वायुर्वेद्यीषध-वितरणागारमेकस्वकार । इंस्वच्डाानां प्रचलितवतां भाषितानान्त्रथोसे-र्विद्यागारं गुरुगुणधरस्त्रचिकिसासयस्व । २४५ ।

स्यापत्यानां चरमपदवीसुज्ज्वलं ताजसीधं धीतं काब्येरिव कवितया वर्षयामास तूर्षे।

⁽१) जीवर विद्यासङ्घारं।

नानाकाव्यानि च कविगर्षे क्रिक्सेने कर्काठो यः सोऽपि प्रापेखरपदतले सुनिसुक्तोऽत्र कार्याः। २४६।

गोविन्देखाइयमिति कती मोइनानं दधानः (१) कायस्थोऽिप सुतचरिषकां सारदां यः सिषेवे । भान्ति ग्रन्था सुवि सुवस्त्वो वङ्गभाषासु यस्य श्रीकान्तांडुौ निलयमगमत् सोऽिप विद्याविनोदः।२४०

क्रणेत्याख्यां धनपदपरां घोषस्तुर्विरेजे (२) यो विश्वाण: स्मितयुत-वची यो ह्युवाचीक्वन-त्री:। स्यामी वामी वयसि च युवा राज-विद्यास विद्वान् सर्वैर्वेदो विनसित वपुर्वेद्यराजोऽनवद्य:। २४८।

घोरावत्तं विषुत्त-जलिषं फेणिलं वीचिजाते-सुक्वैभेक्वैहिंमगिरिनिभेभेषिणं भीमनादं। इंलच्डाख्यं जनपदमतो यो ययौ केग्रवेन (३) ग्रोत्तीर्य्यार्ज्जवमिष जवात् पोतमाक्क विश्वत्। २४८

⁽१) काविनाराज-प्रधानमन्त्री गोविन्द्रभोच्चन राव विद्याविनीरः।

⁽१) सिवित्तरार्जन् ने, जि घोषसृत्तिका निश्चित् किटाते निरः।

⁽३) जाञ्चाचार्य केमवचन्द्र सेनेन।

खिला तत्र प्रचित्तिमनाः खास्त्राविज्ञानसुचै-यैः गिचिला मिसकात-महातर्भविद्यां विदिला। प्रत्याव्योत्तरदिग्रि ययौ वङ्गभूमेनियुक्तः खास्त्रोवस्या दिग्रमपितां ताच चन्ने जनानां।२५०।

इंलफ्डानामिव क्चचयारेजिरे च्छिनभीर्षा-स्ताद्दक् सज्जामपि नुभुजिरे स्तोकग्रक्षेय केसित्। तवत्यानामिव ग्रभिशरस्त्राणमुचेदिंदीपे चेलानास्वाऽभवदपि पुनर्यस्य तादृग् विलासः।२५१।

यः प्रासादोपिर नरपतेः सेव्यमानो मरुक्तिः पत्तीकृतैः सदसि च कदाप्युद्गतत्रीर्व्विरेजे । दीनानां वाष्युटजभवने रोगिषामार्त्तनादं तक्तमुनां नयनसलिलं वारयन् सन्दिदीपे । २५२ ।

त्रश्रीभावात खलु भविता सचिकिसेति चिन्ता नासीत् केवामपि जनपदे तत्र यस्मिन् रृदेवे । यः स्तरं स्त्रैरपि बहुविधं क्रीतमिष्टं सुपयं यच्छन् धन्यो धरणिवसये निर्धनेभ्यो बभूव । २५३ ।

इंलच्छ्यानां परिवदिगतः पूजितो यो जनानां विव्यस्तोऽसूत् सकलविषये मन्त्रिवन्त्रस्त्रणादः । खेतदीपोद्वववरवधूमण्डले मण्डिताङ्गः कण्यः साचादिव सुवि वभी योऽपि गोपीसइस्त्रे ।२५४।

योच्चाक्ट्रो रथवरमनेनैकसुख्यभावो वलाष्ट्रस्विरसङ्घरेणाऽर्ज्जुनेनेव क्षणः। ख्यातां गोतामिव मिलक्षतां तर्कविद्यां जगादाऽ-स्यास्ये स्नेरे नयनकमसे चारुणी हे निधाय। २५५।

पत्यानस्ते हृष्टदवयवाः प्रान्तरं तत् सरस्यः कृतृनां वोपरि च सरितां त्रेणयः पादपानां । उद्यानानि स्मुटतरयग्रो रष्ट्रपुर्थां नगर्थां गायन्युचैरपि जनपदे खूलनायाच्च यस्य । २५६ ।

क्षेदक्तित्रं मिलनसिललं खातवरं प्रभूतं दूरीकर्त्तं कतकसरितं रङ्गपुर्यां चकर्तः । योऽप्यखाखां इरिरिव ततः कालियं विप्रचक्रे कायाचित्रं इदयफलकेऽचापि यखाऽस्ति नृषां ।२५०।

माता काग्यां किल पितरता वैद्यनाथे च पत्नी हाविंलण्डाह्मयभृवि सती कुनचित् स्तुरन्यः । दूरे कन्याऽपि च सञ्चजनुर्योवदन्यन तस्तु-स्तावत् प्राणानस्ह ! सुखनाभूमिस्रण्डे जही सः ।२५६० ध्यायन्ती संस्थितपतिपदं वास्त्रमारभ्य नैवी-(१)
सीस्त्र स्तोवं नयनमपि याऽपग्यद्गापि किसित्।
पातिब्रत्यं किमिव तदशो दर्भयन्या चरन्ती
सर्व्याक्रीकान् जगित जननी विस्तितान् या चकार।१५८

हेनां दानेर्बस्वितर्शेरमदानेरजसं चेनोस्गैर्जनघटघटाप्रापेशेगेविसर्गैः । चक्रे स्वीयं सफनमिव या नाम कामीम्बरी सा हित्वा प्रचानिव तृपवधूर्णना नोऽत्र प्रतस्थे । २६० ।

भगे जम्मः पिष निजयभः पुष्पमानाविकीर्यं स्वीक्षयेते विमन्नचितास्ते त्यगामिलमिखं। विद्यन्ते ये भवि परिमितास्ते ऽपि मक्के निम्न् सर्वे स्वामिन नुपदमिमे ते तुरायिलमेवं। २६१।

स्वायं स्वायं गिरिनदनदीसिन्धुभिः प्राग्धरोरः-कम्पो (२) जातो हद्ददितरां स्वर्थते यसिराय ।

⁽१) फतेपुराव्य भूखग्डस भूखामिनी कागीवरीसिक्स गुच्यते।

⁽२) "चाक्ने इंचिषभागे हा घसां विष्कुरचं भनेत्। खप्रयस्तं तवा वाचे प्रत्यक्ष श्वद्यस्य च।" इति याक्तनिकाः पठिना।

चन्तर्दानं तव किसु फलं दृष्यतेऽखेव तस्याः सर्व्वेषां नो भुवि निवसतां साध्यसं यस्ततान । २६२ ।

त्रन्यासां वा सदिस क्वितनां काचतीनां कयास्ते यो भूकम्पोऽगमयदवनेर्नाकसोकं तमेकं। दिध्योदीच्याः पतिरिव महाराजगीविन्दसासी (१) योऽभूद्रयस्याऽपि च धनदतां विस्तिता वीक्य सर्वे।२६३

मुक्तं गौरी गुक्-गिरि-मिरो गाद्रभूतैसुषारै-राव्यत्यन्तं निज-सित-यमो-धारया यो धरेन्द्रः। चक्रे ग्रुष्यं ममधरमुखीनामजस्तं सङ्ग्वै-क्हीयन्ते ज्ञिनदित नगे कीर्त्तयो यस्य ग्रुष्टेः। २६४।

यो श्रुवानं निजनिवसतेवत्तरस्थामदूरे चक्रे नानाकुसुमतक्षाः स्थावरैसाक्पत्रैः। चन्यताऽपि स्नित-कुसुमितैर्जकुमैः पादपैस्तै-र्व्वाक्रवातैक्पवनगणानुत्रविवालयांस्य। २६५।

⁽१) रक्कपुरनगरवासिनं मङ्गाराजं खत्नोंकगतं गोविन्द्काव स्त्रिक्य ग्राच्यते।

धाराह्या धनपतिसमी यो धनानामजस्तं इभागं मभागदमतितरामुचमीषं चकार। इस्त्रीत्नीर्षाः मतदनमतिर्धाप्तमानोकजानै-र्धक्रभस्यं सुहहृद्दिभतः प्राङ्गणं प्रान्तराभं। २६६।

यः प्रासादो विपुनविततैर्दारचनुःसस्कै-रुसुतैर्स्तिर्व्यमनिकरणैर्द्यकान् मोस्यद्भः। तैरेखर्य्येगेजपतिगणैरुद्यमाणैर्व्विमानैः स्विसंस्तादृग् भृवि च भवनेन्द्रत्वसुत्रैस्ततान। २६०।

योऽयं राजा ब्रिटिश-तृपतेराजधान्याच धन्यः
पक्षां मक्षीसमसितक्चामेविमंलच्छजानां ।
एकं सीधं जलधरदलस्पर्धि तत्कार्य्यदर्धी
कुर्व्वाचोऽपि स्वतनुमधुना नापि कुत्राऽपि पाति ।२६८।

योऽयं राजा निजभुजवनैष्वतीनान्ततीनामृत्तीर्य्याऽन्ये वयसि विनयी दीर्घसीपानधाराः ।
तूर्षे ग्रेषं पदमधिगतस्तत्र वित्रामनेश्रो
नास्तीत्यक्षी नवधनतनीः श्रीपतिक्ष्णगाम । २६८ ।

योऽयं राजा रजतघटिते चार्यस्यातले प्राङ्-सुक्रहारे हितल-धवलोद्वासि सीधे कदाऽपि। पचोडूते महित जलघी नो निदद्री ग्रयानः सोऽयं भूमी-चरमग्रयनीऽचेतनो निद्रयाऽद्य । २७० ।

नाऽयं कान्तां भुवि निपिततां धूलिकाधूसराङ्गी-मञ्जिकाननसरसिजं बालगोपाललालं । तादक् कन्यां नयनज जले: म्नाविताङ्गीख इन्त । द्रष्टुं नाहीं धरणिययनो निद्रयाऽभूकाहत्या । २०१ ।

जसृज्याऽस्यां भिव भववपूरामकणानुभावां देवीं साचादिव दयभुजां त्रीयरसुन्दरीन्तां। दीप्तो राजीचितसुमुकुटो भीगढमो दितीयां प्रान्तःकान्तांसरसिजमुखीं इन्ता!सीऽन्तर्हितोऽभूत्।२०२

भूमिर्भग्नाऽनवरत-महाकम्पनात् सीधमाला भग्नाभग्नं निजवपुरिष श्रीनिषेव्यं विलोक्य । नो यवास्ते सुरहरपरे भूमि-सम्पर्कत्वेश-स्तवोत्याय श्रमपरिचितः क्षिं विश्वशाम भूषः । ५७३।

प्रायः सीधो भुवि निपतितो भूमिकम्पस्य वेगै-र्थ्यस्यांप्रस्रोपरि नरपतिर्देचिणामोष्टनोऽस्थात्। (१)

⁽१) टेपाभूकामिनं इजिकामो इनतिक्त गुच्यते ।

नी तत्यातोऽभवदिष महायिताभितिष्रभावाद्
गन्तुं यत्तः स्थविर इव यः पादमेकं न चासीत्। २०४।

योऽस्यो म्बस्योवितरणविधी सुक्षहस्तः सदासी-वित्यं मन्त्रप्रजपनक्षती मालिकावद्यपाणिः । दुर्गापादास्युरुहरसिकस्तत्पदध्यानमन्नः सोऽस्यां काग्यां वपुरपि निजं पातयामास पाता ।२०५।

या निस्तारिखमितकरणाख्यातनान्त्री महिन्ना(१) धान्ना खेन स्मरहरवधूमूर्त्तिकेवाविरासीत्। साचाक्क्सोमिव भृवि विराजादिमोहिन्युपाधीं कान्तां सुनो: सुतमपि जही खेन देहेन साऽपि। २७६।

खामासन्दर्धनयदभितःशीर्धवीर्योदधेर्थं (२) कामं क्रोधं प्रवतमसुरं दीपग्रन्थं निग्रन्थं । दभं दश्वीत्वतिशयदृढं तस्व धूश्वात्तसुर्यं साऽम्तुर्हानं स्नरहरभुवी हा दधी ध्येयमूर्त्तिः । २०० ।

 ⁽१) राधावञ्चभनिवासिनो भूस्यिधकारियः त्रीमङ्ख्रहाप्रदाह
 वैनस्य भातरसञ्ज्ञस्य ग्रन्थते ।

⁽२) डिमिलाराजस्य त्रीमतो जानकीवञ्चभ सेनस्य मातर-सिक्स्य ग्रस्थते।

देवी लक्की: यतदलमुखी भारतेम्बाविरासीत् (१) सर्व्ववैदाऽपतदतितरां यद्द्याष्ट्रष्टिधारा । यस्या भान्ति स्मुटमिव सदा कीर्त्तयो मूर्त्तिमत्यः यापेनाऽस्थोनिधिमधिययौ कस्य दुर्व्वाससः सा ।२०८।

मा त्रीः साजाद भुवनविदिता भारतानां रमाऽभूत् सर्वेर्ज्ञोतेः सुतचरिषका या सरस्वत्युदारा। तामाकीयां कथितुमन्ते नाद्य ग्रक्ता भवामः सा इन्ताऽसान् परिष्ठतवती भित्रभावं जगाम ।२७८।

भौधत्रेखो विजयमगमनेकतो भूमिकम्पा-दन्यनाऽप्यईति दिग्रि महामार्थ्यजस्तं तृजोकान् । पातुं ग्रक्ता न च निजवपुः खापदानां मुखेम्यो दुर्भिचार्त्तास्वपरदिग्रि ते ग्रेरतेऽप्यस्थिग्रेषाः । ২८० ।

हताऽन्यस्यां दिशि च सिलनप्रावनात् नेऽपि देशा हस्त्यस्वसम्धतिपश्चिमानुषेरालयैष । श्रृत्याः श्रृत्या विटपिभिरपि प्राक् च पश्चाच जातं सर्वे स्वामिन् व्यसनमभितस्ते गतेरैवमेव। २८१।

⁽१) सवसनसिङ्ख्यागाद्यानिवासिनो मङ्गराजस्य त्रीमतः द्वर्यकानस्थाचार्यस्य मातरसञ्जलस्य ग्रन्थते।

नेतव्यं नो किमपि भगवन् म्रस्मयं क्वाऽपि काम्या-स्तत् स्थात् सर्वे किस पग्रपतेः कामिकास्पर्यनेन। वाराणस्यां निजवपुरतः पार्थिवं पातथिलाऽ-गच्छः स्वच्छं किसु कमपितं सीकमिकं दुरापं।२८२।

यासीत् काशीकनकघटिता-नन्दकान्तार एषा शान्तिस्तापा-नल-विकलतां विभातां सर्व्वतीऽभूत्। श्रद्यानन्दस्य च न कियका शान्तिलेशोऽपि नाऽद्य लां नीलाऽनां ज्वलतिसमङ्द् घोरमेषा समानं।२८३।

प्राक् कालाम्ने स्त्रिभुवनभुवां सङ्घ-संद्वारिणोऽस्मिन् विद्युक्ताला-जिल्ति-वपुषी धुर्ज्जटेन्यमूर्त्तः। याताः सर्व्वे विलय-पदवीं प्रक्षरा-चार्यभुख्या धिङ्नो भाग्यं तमपि चत्रया गच्छसि स्नास्मसाने।२८४।

कामं वामं युवित-नयन-भूलता-चाप-इस्तं मत्तं दृत्या सुष्टत-वपुषं यद्भवान् सन्ददाह । भद्रं तबः क्षतमिति कथं ज्ञान-मूर्त्तिं विश्वदाः नन्दं दन्धा नयनदहनैः क्षिं क्षतं वामदेव । २८५ ।

यकान् दातुं विमपि कलये पाण्डु-वंशा वर्तसं तंसमाजं खलु सङ्गुरुं विणुरातं स्वाहार्वीः। ताहक् किं नो गुरुमिप इरन् साम्प्रतं तैरुपायै-राज्ञाधीनान् कलि-नरपतेरुप्र-मूर्ते ! चकर्ष । २८६ ।

सर्व्या नन्दो भुवि विजिद्धितो दुःखभारेर्जनाना-मानन्दः सोऽपि च मिलनतां पद्म-सङ्गाहधाति । आसीदेकः किंत जिनमतां समातो यो विग्रदा-नन्दः सान्दः ससमपद्धतो निष्ठुरेषाऽख धाता ।२८७।

दिध्याऽष्ठस्था-प्रतिकति-युतो द्यन्न-सत्रस्य तस्याः प्रासादोऽयं तुष-गुरु-मठं स्रोरसि भ्याजमानं । धत्तेरचा-कवसमिव यं रीप्य-पात्रा-वगूढं हा ! तहैवा-पद्यत-कवसं भाजनं गूम्यमद्य । २८८ ।

भो भो काग्री-गमन-विधये चेष्टितं दृखते वो नाऽस्थां विखेखर इष्ट तथा नापि-तज्-ज्ञान-वापी। नो जानीम: किमिव दुरितं सर्व्वयाऽनुष्ठितं यत् सोऽनाईको खलु निजभुव: साऽपि शुष्कलमित। १८८।

यस्मादुत्सा-दुपल-घटिताऽपूर्यंत ज्ञान वापी सोऽवावदः सुदृदृदृशदा केनचित्रिष्ठुरेण । वाराणस्यां यदि जिगमिषा गच्छत स्नातरोऽस्यां तस्यो प्राग् यत् सुफलमस्तं तस्तु नो लस्यतंऽद्य ।२८०। भारांजिवो जवन-तृपतिस्तस्य धर्मालयस्य यावृां पामेह दृतरममु विम्बनायं ववन्य । नत्वावद्यः स हि पग्रुपतिस्थस्य देवस्य माया-जालैवेदं नियतमस्विलं विम्बमितद् विधाता । २८१ ।

सोऽयत्तोऽभूषरिरिव पुनर्व्विखनायोऽन्यतस्तू-द्रान्तः काला-इय-जवनतो भीषणाद्गीरुरेषः । कस्याश्वित् किं निस्त्तमसताऽ श्वायमानोगुष्टायां गूढ़ाङ्गः सन् निवसति दृणां सिवधानात् पलाय्य ।२८२।

जहें कञ्चिक्रसिधमवनिरन्तरा द्वारकाव-विष्कूलञ्चाऽस्रत-रसमयं दुर्गमं देदविद्वः । नागैबैदां वियद-नगरीं किञ्चनिश्वाय काञ्चित् तस्यां देवो निवसति गुरुर्यूर्त-विखेखरोऽद्य । २८३ ।

रति तर्भरक्षोपाधिक श्रीयादविष्यरशम् विरचितमञ्ज-विसर्जनं नाम काव्यं समाप्तं।

ग्रन्थक तुर्विं शकी र्त्तनम्।

यिगुरिं नन्द-कुमारा श्माधां गाइस ना चपलवसनाम्। इङ्निवयति यिगुनारो नहितो भीवर्ड्रिकविति॥१॥

चहिवाय रामकण्य चन्द्रोवास्त्वान्यवोहघेरत्वः। वस्राक्तमितस्रापि वेद्यं विद्योतयन्ति कौष्ठदाः॥ १॥

सधिकरण-कौछही-क्रति राजीकवति किस जैमिनेर्वसः। मार्गेस्टजस्य तस्य तक्षेत्रताकुत्ततमम्बद्धम्॥ १॥

भट्टाचार्य उदीच्यः स्थातिर्यस्य विदिता समित समर्थैः । निवस्तिरिटानुमारी पामी पामस महत्वास्य ॥ ८ ॥

वो वंगेऽकिन् जातो हिल्लीचर-विनिहित-पर्-भूषस्य। भीनपानीसस्य सनपतिनदृशस्य नाविहासस्य॥॥॥॥

नं सुचमपि किच सिवनं ब्रह्मा थिर इति निगद्यते क्रतिभिः। तेनैतेवानायः काषो जातस्रतः स स्वि॥ ६॥

तस्य च तनया चारंचलारो मञ्जूच इत स्वि वेदाः। कोनो चक्रेत्रर इति बचितो रक्लेचरोऽपकानि ॥ ७॥

यः म्ह्यानयुम्हरोऽसूत् च हतीयो हि धननेत्ररोऽस्तवसः । तेभ्यो कातैः धुवनै रिटासुमारी सम्हूचा मानीत् ॥ ८ ॥ बाध्यिता किय ज्ञतिकि सैसैरीयरपरान्तनानोत्तैः ।
तैसैः यैवैकिक्नै मौति हि वाराण्यवि चिरम् ॥ ८ ॥
हिमगिरिविनिगैता किय विश्वयति चित्रता च दिण्य दिणं या।
व्याद्य युर्वेमिप विद्योत्तरवाष्ट्रिनी गक्ता ॥ १० ॥
काशीयरी-कर-कमय- सक्ता-चै-ईए-पुरुजनपुरा ।
विद्यार्थि-जुन्दोद्वारित इरइरशब्दस्यरा यासीत् ॥ ११ ॥
हिवस्त्रकाकिक्तस्य विक्रग- जुन्दक्ष्तस्य रासीत् ॥ ११ ॥
हिवस्त्रकाकिक्तस्य विक्रग- जुन्दक्ष्तस्य रासित् पि यस्ताम् ॥१२॥
साल जुन्दास्य प्रजानित क्षत्रक्षेत्रस्य व्याप्त्रभवद्वनितः ।
भातिदिनम् मात् स्वित्रस्य ज्ञानदानानि ॥ १६ ॥
स्वस्त्रस्य क्षतिनी राजारायक्षप्रपानितायां ते ।

रक्रपुराभिध्वनपद्-पादी यस्याधिकत व्यासीत् ॥ १८॥ (१)

⁽१) 'आवीचन्दिक्वेन्द्र्क्वेन्द्र्क्वेन्द्र्वे व्योजनार-काखनोर्भप्रस्ट्रम्स सृततः प्रस्रो वभी वृद्धिमान्। विख्वातोऽत्र इरम्याद इति यो गङ्गामसादकातः यक्षांग्रमितमो वभूव तत्रज्ञचक्षीमसादकातः॥ यक्षिचरकाभिभः स स स्तत्तक्ष्येव तस्रात्मज-यक्षीदास इति प्रयां द्रभ्रदेतो जातो रमावङ्गभः। तत्मुल्लस्थ नरेश्वरस्थ च रमानायस्य भूतः स्तःः। 'त्रीक्षण्यः स्तु तस्य नन्द्रनवरो नन्द्री जगळ्योवनः॥

[1]

सम्बन्धिक स्वयो से स्व प्राभूत फतेष्ठरं विषवः।
जुमारनन्द्रान्वयजः वामनो थो हि जवन सम्बाजः ॥ १५ ॥
रहे बरस्य तनयो जीवेबर नामधेव रह जातः।
तस्य स्वतौ क्रितनौ हा वमरे बरस्य जगही बरौ सुकवी ॥ १६ ॥
स्वमरेश्वरस्य तनयः स च चितीश्वर इति क्रियतः प्रथमः।
पूर्णेश्वरो हितीयो यस्य च तहु जास्त्रयो जाताः ॥ १७ ॥
प्रथमो बच्छीश्वरकः क्रमेश्वरोऽस्य हितीय इह सुनितः।
बेसे गीते चिले क्रमतो वाणीश्वरोऽस्य श्वर ॥ १८ ॥
तहु जाः चितीश्वरस्य पश्चस्या इत यराव पश्चेव।
साद्योग्रहु गेश्वरो गौरीश्वर इति निगहितनामाऽपि ॥ १८ ॥
स्वेश्वर इति क्षित स्वारिस्याहीश्वरोऽपि गहितोऽन्यः।
ते चतारो भरणी विन न नाकन्तु गतवनः॥ २०।
श्वीश्वर नामा सुमनाः सर्वेकनिनो सहाकविभीति।
विद्यालक्वार-प्रकाग विद्योतत इह हि काकिनायां यः। २१।

त साहाविरभूहभूतवपुषा हाजिय्वजेनेव यः प्रावो यस्य करार्श्वितार्ययज्ञवेहीर्षापकाराविनः । वेनाल प्रतिपाहिता न वश्वधा वस्त्रेडयो न दिजो राजाराय कृति जितौ नरपतिः स्थातः स्तृतो राजभिः॥ कृतस्यव्यव्यवस्थितः।

कतयी वच्छती यस सरतः कातस्य कातिहासस्य। विक्रमभारतमाद्य माद्याचतकञ्च साप्त्रचतिकञ्च । ११ । कौमारं कार्व्य किल चन्युचन्यकविर्वितमाचेव। व्यपि विजयिन्यूहाइं इसोहाइ।हिकानि स्वि । २१। पुंस्कोतिनस्य कविता भङ्गतिमाकस्य यस्य कवयोऽसः। मूका जाता हि पिकाः सन्तीः स नीवरो जवति । २४। यख च हुर्वाचीना खामा निर्खं मनीरमा भाति। गणपतिकुनारसहयो कुमारको च सुकुमारवपुषो हो । २५ । चाद्यो गोपासेवरः स कोकिसेवर इति गहितोऽप्यपरः। ू तेने द्युपाधिनेने काव्यौपाधिकपरीचितोऽत्यवयाः। २६। गोपाखेश्वरकविता स्रतिसुखजनिकेन्द् स्वय्डकविकेव। को जिन्न विता भन्ने भारविकवितार्घगौरवं गङ्के। २०। ब्रचीचर इति वधितः कोविजतत्त्रज्ञचकास्ति स्वुलस्दुः। ब्रह्म ब्रह्म सुषोषे राशीर्भिदीर्षजीवी सन्। १८। जातो हितीयप्रस्रो चानेश्वर इति पितामकाख्यातः। भ्रवात सोऽपि स्निग्धो दोर्घायुव्यत्विरं विद्वान् । २८ । जगहीत्ररदुधसूतु र्नामा चर्छत्ररः स चर्छाग्रः। तस्य च दसवपुत्री वाषीत्रर इति ऋषिईतः। ३०। मूर्त साचाद गिरिय सपास्त यं जाक्रवीवधतदेश। , उदर्ति सा च योऽसां सारकमन्त्रं दियन त्रोले। ११।

अय तार्वेचर इति कविती यो जानकीचरोऽप्यपरः। नससौ ह विभातो हो सर-इवया सतावन्त्री। १२। चीभारतीचर इति नामा कामेचर इति कचितोऽन्छः। दोर्घायुष्की भवता सवतां दयवा दिवीकसासवची । ११। धवनेश्वरस्र ततुजः ख्वाती देवेश्वरी गुदः क्रतिनां। रक्रपुरेषु च बखाऽ द्यापि प्रचलति मतं चृतिषु । १८। विश्वक चर्यान्ठितां प्रतिपद्मानिष च काकिना-प्रतिना । यास्त्रप्रस्तृ इतनुं त्रियमितिमत्वा महामहिमा। ३५। तस सुतास्तव कासनु प्रथमी बोकेवर इति सुवि विदितः। अनुजो नरेश्वर इति ख्वातो मङ्गेश्वरस्तृतीयोऽपि। ३६। तनयः सरेवर इति जनित्रे सोकेवरेख नवनीतः। गङ्गेत्ररस्य तहजा महजेषु विहिततवा श्वासन्। ३७। प्रथमो रमेश्वरोऽभूत् सुभूतिकमवेश्वरोऽपि तसुकोऽसः। परमेन्द्रस्य नमन सार द्रव शिवनवमद्यनपरिभक्तः । १८। प्रवमी बच्चेश्वर इति-नामा बोगीश्वरच तनबौ हो। त्स रमेश्वर-विद्वयो विद्यत इङ्ग त तबोरेबः। १८। कमलेश्वरस्य तमय खाद्यस्य चिवेश्वरो न भुवि वातः। वैज्ञुच्छेचर इति विच विचयति विदितो द्विजाशीर्भः। ४०। तस च सहसो वासी गोसोकेचर इति कथित सहसः। मुझायीर्भिक्तरां हीर्यांदुक्तः सदा स स्वि भूबाव् । ४१ ।

स म्यामसुन्दरतनयः प्राचित्रर इति स्वि गहितोऽभूहु बः। रचानरस्ततुन्तु साख्य च तव्यापि श्ववि वष्टवः। ४२। यो रामकान इति श्रवि विहितः स्तिशिः शिरोमनीभूतः। नैयायिकचुन्धितपदी च्छेडः श्रेडः स खलु विदुषां। ४१। रासेन्दर इति नामा तस्य सुतोऽभूद्धनेन्दरकनेर्यः। चनेवासी इयसा बघुरपि गुरूरेव निसर्द्रा। ४४। रैचरका नोष्यपरी वस्रव क्रतिराश्चवोध इति यस्य। यस च निपीय कवितां मधुरां महिरां अगन्त्रह्माति । ४५ । अपरस्तु गौरकानः पुरुषदरश्चेन्द्रकाननामान्यः। ऋषि सूर्यकानारं त्री धारावित्रान्तिरिष्ठ इन । ४६। वेनोचाहेर्भेसि विरचितपूर्वी विहितगुचा पूर्वैः। राजादेरिय दक्ति रजनि स रह्नेश्वरी रसवित्। ४७। रले बरख तनवा चलारी जसभय द्रव भानि सा। मयमस्तः कागीचरः गिवेचर क्ति द्वितीयस्त्रीऽभृत्॥ ४८॥ क्षणेश्वरस्त्रतीयः सर्वेश्वर इति चतुर्वस्त एवास्। काशीश्वरतनबोऽभू दिन्द्रेश्वरनाम बख दुध विहितस् ॥ ४८ ॥ यसै गास्ताम्ब्यवो निर्वेतरत्ननिवद्धं किस्पन्नसः। तनवी धनेश्वरीऽख महामतिः यक्तिगद स्रतिरख ॥ ५० ॥ यखाऽत्येऽपि च वयसि विविधिने प्रतिभवा विश्वम् । दैनवतैरिव विद्वा मध्यापिपदपठितमपि शासंबः॥ ५१ ॥

चन्यो जनेचरीऽख इसी हाराधनीऽपि नीतोऽभूत्। जगतीं परिकृतवन्ती गतवन्त को स्रवी नाकम्॥ ५२॥ निगेख सुद्गिरितो सनयामासुर्जेसिमिस सि न्दाः। इन्द्रेश्वरतो द्वन्तिरौ जनवामासत्तरिमावस्त्री॥ ५३॥ एको रामानन्दी नान्ना खबु स्ट्रमङ्गल द्रति परः। कल्याची प्रथम्सं भानिन्यपरस्य माताभूत्॥ ५.८ ॥ कान्तवपुर्करकान्त इन्द्रेचर-क्रति-सुतः क्रनिष्ठोऽभूत्। चोरान्बुधयो वेन यशका रचिता महानोऽत्र ॥ ५५ ॥ इरिरिव यः प्रनरेष चीराबिषु निजजनैरिवासच्यः। लच्छीवाचीपाचि सेवित इत किस सुनिद्राति॥ ५६॥ सोमासन्दर्थिभितो रमेव रङ्गाकराह् ग्रुरोर्थकात्। **उत्यायाप तमिन्द्रमारायणमिइ पतिं विष्णुम् ॥ ५७ ॥** तत्तनयो राजेन्द्र नारायषविवुधभेन्द्रदियाय। पूर्व्यविवद्पन्नाय पश्चिममधुनोज्यसङ्करोति च यः॥ ५८॥ आद्यो इरकाल-सुतो दुर्गाकालः सुचादरासीह यः। कालीकाम्नोऽप्यपरोऽ- प्यवश्वनामा हतीयोऽभूत्॥ ५८॥ यः खब् वयसित वालो वृद्धी हत्री बुवासतावासीत्। इत्तकप्रस्वसारो सधुरवप्रमीधवेत्ररकः ॥ ६० h इरकानस्य सुतानां सोऽपि च नो माधनेवरः स्ट्रतः। तस्य च इलिमपुली विसंसति रजनीचरी भरखी॥ ६१॥

भर्षीचर इति तनव साख च तर्षीचरी हितीबीऽस्ति। कम्बोऽम्बन्ति च तहक स्ते वर्द्धनां शिवाशीर्भः॥ ६१॥ जननीचर्षाम्बजयुग-हाससाधीत् चिनेचरस स्तः। विश्वेश्वर इति नामा गमधामा योग्यलोकल्रतिः॥ ६३॥ तक्षच तनवा चासन् गौरीनाथस्त मध्यमस्तेषां । यस सुतो भवनाथो राधानाथस ससीयः॥ ६८॥ अपि बद्रनाथ इति स्तत आगमवागीधकस्य तस्य श्रवि। तेषु उद्येष्ठः श्रेष्ठः क्षति इरिनाषी सङ्गकं विभूवने ॥ ६५ ॥ रसनारक्रधिव कने नृत्वद्वाणीपदयुगमञ्जीरात्। चिञ्जितभिव मञ्जकवितां निषीय यस च जगन्मुह्यति ॥ ६६ ॥ प्रतिपदमस्तं वस्यो द्विरति च.मधुरा चिराय कवितासः। हिला मधु यां पीला पूर्वं समुद्धमें हीपतयः ॥ ६० ॥ पुच्च गुष्पोत्क वें वी-इप्तोऽस्थो द्वाटनं पिता विद्धे। जगति जनस्तिरेषा विजयसत्तादयामास ॥ ६८ ॥ अव अवानाव इति स्तः तक्षलेको वभूव सहयमनाः। वर्ष्यदुतमङ्गलाख्या घन्या कन्यास्य भाति विरम् ॥ ६८ ॥ सम्बन्धितिहा निहः कालीनायी विचिद्वपुर्वेषु । वीच्य सुस्तकमत्रमासी ब्रुच्छीव प्रयोमेहानु कत्रहः ॥ ७० ॥ स समधुराक्रतिर्नयः समधुरक्विताविरचविता च वभौ। कविकाखिदासवरदिच-पदवी हा भातरी ह ती बाती। ७१ ॥

नचोचरस विद्या-सकरोहाटितहंदयकपाटस । बुधरामगङ्कर द्रति कवितस्तनयः सुजात एकीऽस्य ॥ ७२ ॥ यः चिशुपासवधस्य टीकानेका प्रचीय सन् विनवी। विकापयित का विर्यं प्रतिमत्तां मित्तानायमपि॥ ७३॥ अजनि भवानीयक्करो क्येडः स्तुसतोऽतुजातस्। कविकेथवेयरोऽभूत् तमयसाख च महेयरोऽप्यजनि ॥ ७४ ॥ वोवालियापुरिवसति योऽयं हारैवहारचरितोऽखास । चाहिप्रकास वसती सद्यती सस्ति च चिरं चार ॥ ७५ ॥ तनयः स्रोबर इति यैनेकरकी द्वितीय इन्न चान्छे। योगेवर इति कतिनो यतीवरस्ततसङ्गतासुनेवरकः॥ ७६ ॥ वादे नियुक्तपञ्चा- खख च तस कर्यार्ट्र हृदयस। राज्ञो विद्याचनखाऽ-स्रोहार्ननियतरतसास ॥ ७७ ॥ ते ते तनवाचनियतं सैः सैईवितैच दुष्टितरोऽपि च ताः । गुरु सुरविपायी भि ही बांयुष्का समन्त थिवैः ॥ ७८ ॥ सर्वेषरतनयाः वट् वन्तुस्ववन्तुस्व गणा द्रव क्ये हाः। वागीयरनन्देयर गोविन्देयरसुनामानः॥ ७८॥ ... बाबीचर रति भूखा ख्वातोऽजनि खबु पतिव्रताकानिः। सर्वेमनिको गङ्गा-नारावण इति सुविहितोऽभूत्॥ ८०॥ काकीचराइनुमत् ईरिनारायण इति विदितो विदुषां। ज्योतिषि यस यन्नो विवस्ति रचितः प्ररः कृतिनां ॥ ८१ ॥ .

श्वतजन्धिः सनु यस क्रीइ। धन्तरपहिमस्तिनसर्दी। कविता चुचुम्ब वहमं यस्य घिवान्या सन्तैव चिरश ॥ ८० ॥ यस पदचरपङ्क्ति रद्यापि ज्यवति तारकश्रेषी। रसनासंघुता यस प्राभूहचरविजेहत्वम् ॥ ८३ ॥ य य च भगिनी तनयः स क्ट्रकान्ती ऋपगणद्वितीऽभूत्। विदुषां विदूषकानां शक्तिः कुरादाविधायिनी वसः ॥ ८४ ॥ चडमहिमत्रया सर्वे कवितां क्रतितां प्रदर्श्व तेऽपि च ते। विहित महिमान बास द्वातानमित च निद्धेयन्त्रीऽचिन्॥ध इरिनारायखतनया जयनारायख उमेन्द्रो जातः। चानन्देश्वर इव पुन- रामन्देश्वर इच्च हतीयः ॥ ८६ ॥ चारीत् सुन्दरमूर्त्ति मीरायण इत सुतप्रहेमवयुः । यः खन् परोपकतमे प्राचान् विजिन्तासरमासीत्॥ ८७॥ या योगिनीव भगिनी भगणनिषेवितभुवीणितः बाम्याम् । यस्य च चन्द्रमचिः सा इरविघुलोकन विगसितेष॥ ८८॥ बद्दनिता चित्रमणि व्यिनीतचरिता पतिव्रतानां वा। व्यपि निजवुतपरस्रतयोः सममतिरासीत् सवावपि या ॥ ८९ गर्भभराजसद्यिता मनिद्तिनिपदी चिन्द्र सुती हा हो। चल्पवयको जरतीं जननी रिकतां सङ्घायेन ॥ ८०॥ खक्क विकाय मक्भुवि द्धिवामनस्विधपूतस्वि **यवि**तः। सन्दर्शतगुर्वरयधिरा मूखे मानूरसाबस्य ॥ ८१ ॥

का वपु रविदितदिशिक्तविदु यंथी जगतः। इति तनवोऽख च माधनेचरोऽप्यासीत्॥ ८२॥ तनदाः गिद्रीयचन्द्रवपरियन्त्रो वेवम् । त्रीमान् सतीयचन्द्रः सम्बद्धामितः ॥ ८ रं ॥ विनयी दुष्टिता द्वितेन हेमचन्द्रेष । विक्रांचा तो हो होर्घायुवा वसताम् ॥ ६४ ॥ क्षेत्र विक्रिके किताना भासाभेष स च यादने करकः। नाम समवे- चरोऽपि च गुरू खुतौ यस ॥ ६५ ॥ क्षिर्यक्षेत्रस्य ग्रह ईरगो विन्दो वृधेन्दु वस्रतधीः। युक्ः त्रीवर एव हि सुकविरेकः॥ ८६॥ वास- चन्द्रो न्वावे विरोमिषः क्रतिनां। क्षिक्रीक्री हम् इर्थन-विषयमगुरुथेख ॥ ८७ ॥ क्रिके अधिहेत माल मारीन्यातापितामही किस यं। **१व-महर्म विवाही** प्रयोग धन्मैजननी पद्मात्॥ ८८ ॥ । भूषी शिक्क रजामृत्ति र्यागौराक्ती प्रसद्गमयनघा। निवास निपानारायणस्य वधुः॥ ८८॥ क्षिक्रीयशुपत्य- भिष्टित-वसतिर्गगेन्द्रवरकम्या। क्षितक्षा भविचिन्य महाज्ञता भाति॥ १००॥ विवास का वाणिसरसिजं प्रसन्नमिय यसाः। निप निसनं प्रसद्धनिति या प्रसन्तमयी॥

नमनीवता वर्षेष किन्न वस्ताः नमनीवता सन रूपगुष्यमिटिरिव या जाता विजयते अवृति। यसायरची चाके विरमत्त्रिक्त च विधिकिति पद्मे वनुषपरिमनं गिरीयमहतामहाकारे ॥ १० यसा वामे चर्चे तर्कान्यक्ट्योर्पर्यनः। रक्षां को उस्ति भन्ने रिपितका को रिविन्कुरिव 📳 विकथितसरसिजनयना वनिता जगहीत्ररी सर बखा ज्वलता महसा अद्भितो विमतः पतिर्नित नैवारिवर्यत्वा महिवा यखः च र क्रण्यन्ह्रो। तस च वेर्थ कर्म्या भन्या मान्यो ऋपस्त्रीचास ॥ े मातामहोऽख यस मोहोत्तीर्थी महामहामहः कण्पिवापतिरस् संघानाची । द्रिरिव कतिनाम भारतुतः सन् वस वजनायोऽयपर इत श्वनि प्रस्नोऽस क्ष्णनायः चिरोमचिक्तस विद्यावार त्रीवाहनेश्वरत्ततो हन्दावनचन्द्र नामधेबोऽसौ ुव्यपि काखिहास वीरे- ऋरब्रेजेकर गिरापि को द्धिवामनद्ववासी गुरुषुर्विप्राधियां क्रुसैनि स्विरमतिरगाधिवदी होधीयुन्तो विनीतीऽस् मञ्चानामिक मञ्जां मञ्जां वेषां निगदितपूर्व्यापि नामानि पितामच्चा तेवां तानि ह विविधिता

रुम्पूर्विनिदं वंघनीर्त्तनम् ।



